निःशुल्क वितरण हेतु

समाज का अध्ययन : भारत और उसके आगे

कक्षा 6 के लिए
सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक

0683

सत्र 2026–27

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मंशा है कि शिक्षा को समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाए। यह इस संकल्प को भी लेकर चलती है कि शिक्षा व्यवस्था जनहित के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृति से विद्यार्थियों को जोड़कर रखें। रचनात्मकता के साथ सृजन की अभिवृत्ति को बल मिले। वह समाज के विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह करने की शिक्षा भी प्राप्त करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें छत्तीसगढ़ राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक ज्ञानवर्धक, दक्षता आधारित एवं 21वीं सदी के कौशल की वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तकों के रोचक विषयवस्तु के माध्यम से राज्य के बच्चों को संस्कृति एवं संदर्भों को समझने का अवसर मिलेगा। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें वैश्विक नागरिक बनाने में मददगार होगी।

विद्यार्थियों में अपने आस-पास का वातारवण और समाज की गतिविधियों से सतत् जुड़ाव रहें इसका भी प्रयास किया गया है। अपने देश प्रदेश के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा हो और इतना ही नहीं लोकल टू ग्लोबल की ओर बढ़ते हुए विद्यार्थियों के ज्ञान और समझ में संवृद्धि हो इस आवश्यकता को भी महत्व दिया गया है। सामाजिक विज्ञान की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में भारत एवं विश्व, आधारभूत लोकतंत्र, अतीत के चित्रपट, आस-पास का आर्थिक जीवन आदि से संबंधित सामग्री को सुंदर चित्रों, आरेखों, मानचित्रों, रेखाचित्रों के द्वारा रूचिकर बनाया गया है। जिसमें विषय -विशेषज्ञों, अध्यापकों, विद्धानों, शिक्षाविदों की महती भूमिका रही है। इस पाठ्यपुस्तक के साथ अन्य उपलब्ध संसाधनों, सामग्री, ज्ञान, अनुभव और मार्गदर्शन की भी अध्ययन के दौरान अपेक्षा की जाती है।

हम एनसीईआरटी के निदेशक के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एनसीईआरटी दिल्ली द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तक को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित करने की स्वीकृति एवं बहुमूल्य

मार्गदर्शन देकर पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता व सुधार हेतु आवश्यक सुझाव एवं सहयोग किया है। साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति के अध्यक्ष एवं अन्य सभी सदस्यों को इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देते हैं एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारता पूर्ण सहायता प्रदान की है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं पाठ्यसामग्री पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और शिक्षाविदों के सुझावों, उपयोगी सम्मतियों का हृदय से स्वागत है, जिससे इस पाठ्यपुस्तक को भविष्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बनाया जा सके।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश के लिए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की अनुशंसा करती है जो प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय प्रयास व ज्ञान की भारतीय परंपरा और सभ्यता की उपलब्धियों पर आधारित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति की आकांक्षाओं को *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में सभी स्तरों एवं सभी विषयों की पाठ्यचर्या में सुव्यवस्थित ढंग से रखा गया है। बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर बच्चों का पंचकोशीय विकास सुनिश्चित करते हुए इसने मध्य स्तर पर उनकी शैक्षिक विकास यात्रा का मार्ग प्रशस्त किया है। इस प्रकार, तीन वर्षों का यह मध्य स्तर जो कक्षा 6 से कक्षा 8 तक विस्तृत है, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्‌देश्य विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना है, जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करे और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करे। मध्य स्तर पर पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को सम्मिलित किया गया है जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (भारतीय मूल की कम से कम दो भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी सृजनात्मक परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए कुछ अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इनमें से एक है विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता जो पढ़ने-पढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी। ऐसी भूमिका जो कि बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के मध्य एक विवेकपूर्ण संतुलन स्थापित करेगी। दूसरी आवश्यकताओं में कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन स्थापित करने हेतु शिक्षकों की तैयारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। विभिन्न विषयों में पाठ्यचर्या समूहों का गठन किया गया है। इनमें सम्मिलित संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों ने ऐसी गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें बनाने हेतु हर संभव प्रयास किया है। सामाजिक विज्ञान की यह पाठ्यपुस्तक विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अक्षरश: अनुपालन करती है। विषय सामग्री कम रखते हुए भी यह पाठ्यपुस्तक

मुख्यत: मूल अवधारणाओं और प्रमुख घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करने का एक नवीन प्रयास करती है। इन्हें अनेकानेक चित्रों, आरेखों, मानचित्रों और लेखाचित्रों (ग्राफिक्स) के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। यह सर्वसमावेशी प्रारूप इन पाठ्य सामग्रियों को अधिक रुचिकर बनाकर जीवंत कर देता है। यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अभ्यासों, चिंतन-मनन, गतिविधियों और परियोजनाओं द्वारा उन्हें स्वयं अन्वेषण करने के लिए प्रेरित करती है। पाँच विषयों का चयन एक बहुविषयी परिप्रेक्ष्य बनाए रखने की महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक जड़ों में दृढ़ विश्वास हमारे एक विषय 'हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपरा' तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह अन्य विषयों में भी समाहित है। आशा की जाती है कि विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के लिए इस पाठ्यपुस्तक का पठन-पाठन सुखद और ज्ञानवर्धक अनुभव प्रदान करेगा।

इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त इस स्तर पर विद्यार्थियों को विविध शिक्षण संसाधनों की जानकारी हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को इस दिशा में मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी। इसके साथ ही हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जिनसे भावी संस्करणों को और भी उत्कृष्ट बनाया जा सकेगा।

दिनेश प्रसाद सकलानी

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
31 मई 2024

विद्यार्थी के नाम पत्र

प्रिय विद्यार्थी,

अब आप मध्य स्तर में प्रवेश कर गए हैं और नए विषयों के बारे में जानेंगे। उनमें से एक विषय है — सामाजिक विज्ञान। आपने पहले भी इस विषय में कुछ पढ़ा है, किंतु कक्षा 6 से आप अपने आस-पास की दुनिया के बारे में और अधिक जानेंगे। इसका आरंभ अपने देश भारत से करेंगे। हमने इस पाठ्यपुस्तक को यथाशक्ति रोचक बनाने का प्रयास किया है।

- हमने यथासंभव आपके आस-पास के परिवेश को ही यहाँ लिया है। इसका आरंभ वहीं से किया है, जिससे आप परिचित हैं।
- हमने महत्वपूर्ण विचारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पाठ्यसामग्री को कम से कम रखा है। निस्संदेह ये ऐसे विचार हैं जिनसे जीवन में आपका सामना होगा। भारत और विश्व को समझने के लिए ये विचार आपकी सहायता करेंगे।
- हमने आपको विषय का अन्वेषण, खोज, चिंतन, सृजन, प्रश्नोत्तर के लिए प्रोत्साहित किया है। शिक्षा का उद्देश्य रटकर पढ़ाई करना नहीं है, अपितु पाठ्य सामग्री को समझकर उस पर विचार करना है।
- हमने पहले की तुलना में इस बार चित्रों को अधिक सम्मिलित किया है, क्योंकि लंबी व्याख्याओं की अपेक्षा चित्र अपना संदेश अधिक प्रभावशाली रूप से व्यक्त करते हैं। पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों को पढ़ने-समझने के क्रम में ये चित्र पुस्तकों को अधिक जीवंत और आनंदप्रद बनाते हैं।
- हमने पाँच मुख्य विषयों का चयन किया है जिन्हें आप विषय-सूची में देखेंगे। इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों की जानकारियों को हम एक विषय में सम्मिलित करने में सक्षम हुए हैं। ऐसा करने से यह हमें जीवन की यथार्थता के और निकट लाता है।
- अंततः हमने भारत के मूल को समझने पर कुछ बल दिया है। भारत पुरातन सभ्यता वाला एक युवा देश है। पुरातन के बिना नवीन की परिकल्पना नहीं की जा सकती।

इस पाठ्यपुस्तक को परिश्रम के साथ प्रेमपूर्वक तैयार किया गया है। पुस्तक के पृष्ठ पलटते हुए यत्र-तत्र दिए गए कुछ चित्रों या मानचित्रों पर यदि आपका ध्यान जाता है, या कोई प्रश्न या

चुनौतीपूर्ण सूक्ति आपको रोमांचित करती है, तो हमें प्रसन्नता होगी। हम आशा करते हैं कि आप खोज की इस यात्रा का पूरा आनंद उठाएँगे। यह पाठ्यपुस्तक आप के साथ-साथ हम सबके बारे में है।

ꕥ ◆ ꕥ

यहाँ हम कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी दे रहे हैं। इस पाठ्यपुस्तक का प्रत्येक भाग, जैसे – पाठ्य सामग्री, पार्श्व प्रकोष्ठ (साइड बॉक्स), चित्र अथवा मानचित्र, मूल्यांकन एवं आकलन का विषय हो सकता है। इसके चार अपवाद हैं—

- *सूक्ति/सूक्तियाँ* अध्याय के पहले पृष्ठ पर दी गई हैं। कुछ सूक्तियाँ सीधी-सरल हैं, तो कुछ गहन विचार लिए हैं। यदि ये आपको पहली बार पढ़ने पर समझ में नहीं आएँ, तो कोई बात नहीं। ये आपको प्रेरणा या प्रोत्साहन देने के लिए हैं।
- *पाठ्य सामग्री में जहाँ भी लिखा हो, "इसे याद रखने की आवश्यकता नहीं है।"*
- *परिचय* (पृष्ठ 1)
- *शब्दावली* (पाठ्यपुस्तक के अंत में)

उपरोक्त चारों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

ꕥ ◆ ꕥ

इस पुस्तक के साथ आपकी यात्रा

कक्षा 6 के विद्यार्थियों की यह पाठ्यपुस्तक बहुत ही ध्यान से और प्रेम के साथ से लिखी गई है। इस वर्ष आप सामाजिक विज्ञान विषय पहली बार पढ़ेंगे। यह विषय हमें अपने आपको और हमारे आस-पास की भूमि और अन्य लोगों को समझने में सहायता करता है। पहले लोग कैसे रहते थे? हमारा देश इंडिया अर्थात भारत कैसा दिखाई देता है? उसके पर्वत, नदियाँ और मैदान कैसे दिखाई देते हैं? इसी प्रकार के और भी बहुत से प्रश्न हैं।

इस नई पाठ्यपुस्तक की अनेक विशेषताएँ हैं। हमें आशा है कि वे आपको रोचक और आनंदायक लगेंगी। आप जैसे ही पृष्ठों को पलटेंगे, कई प्रकार के रंगीन आरेख, चित्र, मानचित्र और चित्रकला देखेंगे। आइए, आपको पुस्तक और इसकी विशेषताओं की झलक दिखाते हैं। आपके शिक्षक भी इस संदर्भ में आपका मार्गदर्शन करेंगे।

प्रत्येक अध्याय का आरंभ किसी सुप्रसिद्ध व्यक्ति अथवा ग्रंथ के सुविचार से होता है। उसे पढ़िए और याद रखिए। इनमें से कुछ सूक्तियाँ गहन विचार रखती हैं। यदि ये आपको समझ न आएँ, तो घबराएँ नहीं। आप बाद में उन्हें फिर से पढ़कर कक्षा में उनपर चर्चा कर सकते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं—

> *हे ईश्वर! मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें कि मैं अनेकता में एकता के स्पर्श का आनंद कभी न गवाँ सकूँ।*
>
> —*रवींद्रनाथ टैगोर*
>
> *...विविधता में एकता का सिद्धांत सदैव से भारत के लिए स्वाभाविक रहा है और यह उसकी प्रकृति एवं अस्तित्व के लिए आवश्यक है। एक में अनेक का यह भाव भारत को उसके स्वभाव व स्वधर्म की सुनिश्चित नींव पर स्थापित करेगा।*
>
> —*श्री अरविंद*

मूल पाठ सरल भाषा में लिखा गया है। आप भारत और अन्य स्थान के लोगों एवं स्थलों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

तकनीकी शब्दों को पाठ के हाशिए में समझाया गया है। इन शब्दों को पुस्तक के अंत में दी गई **शब्दावली** में भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त हमने कुछ शब्द सम्मिलित किए हैं जिनसे हो सकता है कि आप परिचित न हों। शब्दावली को प्राय: देखते रहें।

- **भू-विज्ञानी** (चित्र 4.2.1) पृथ्वी के भौतिक स्वरूपों जैसे – मृदा, पत्थरों, पहाड़ियों, पर्वतों, नदियों, महासागरों एवं पृथ्वी के अन्य हिस्सों का अध्ययन करते हैं।
- **जीवाश्म विज्ञानी** (चित्र 4.2.2) **जीवाश्म** के रूप में करोड़ों वर्ष पूर्व के पेड़ों, पशुओं एवं मानवों के अवशेषों का अध्ययन करते हैं।
- **मानव विज्ञानी** (चित्र 4.2.3) मानव समाजों एवं संस्कृतियों का अतीत से लेकर वर्तमान तक अध्ययन करते हैं।
- **पुरातत्व विज्ञानी** (चित्र 4.2.4) मानव, पौधों एवं पशुओं द्वारा अपने पीछे छोड़े गए अवशेषों जैसे – उपकरण, घड़े, पात्र, मनके, मूर्तियाँ, खिलौने, हड्डियाँ, पशुओं और मानवों के दाँत, जले हुए अनाज, घरों एवं ईंटों के हिस्से एवं अन्य वस्तुओं का उत्खनन करके अतीत का अध्ययन करते हैं।

जीवाश्म
जीव-जंतुओं के पदचिह्नों या पौधों के अवशेष चिह्न जो कि मृदा अथवा शिलाओं की परतों के बीच संरक्षित पाए जाते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *लोग विभिन्न प्रकार की किन-किन गतिविधियों में सम्मिलित होते हैं?*
2. *हमारे दैनिक जीवन में इनका क्या योगदान है?*

हमें अध्याय को पढ़ते हुए **'आइए पता लगाएँ'** और **'आइए विचार करें'** जैसे कुछ अनुभाग मिलेंगे। इसमें गतिविधियाँ, पाठगत अभ्यास या वह विषय दिए गए है, जो गहन चिंतन के अवसर प्रदान करते हैं।

आइए पता लगाएँ

क्या आप जानते हैं कि उस समाज को क्या कहते हैं, जहाँ लोग अपने नेता का चयन करते हैं? आपके विचार से लोगों को ऐसी स्थिति से कैसे लाभ होता है? यदि वे अपने द्वारा नहीं चुने गए नेता के अधीन रहते हैं तो क्या हो सकता है? (*संकेत – 'शासन और लोकतंत्र' विषय में आपने जो पहले पढ़ा है, उस पर विचार कीजिए*) अपने विचार 100–150 शब्दों में लिखिए।

आइए विचार करें

क्या आपने कभी अपने घर अथवा आस-पास पुराने सिक्कों, पुस्तकों, वस्त्रों, आभूषणों अथवा बर्तनों को देखा है? इन वस्तुओं अथवा पुराने घरों एवं भवनों से हम किस प्रकार की सूचनाएँ एकत्र कर सकते हैं?

ध्यान रखें

हमारे अनेक संस्थानों के आदर्श वाक्य हमारे प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान से प्रेरित हैं। उदाहरण के लिए, भारत सरकार का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' है, अर्थात "सत्य की ही विजय होती है"। सर्वोच्च न्यायालय का आदर्श वाक्य 'यतो धर्मोस्ततो जय:' है, जिसका अर्थ है "जहाँ धर्म है, वहाँ विजय है"।

इसे '**ध्यान रखें**'। यह आपकी जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए रोचक व मनोरंजक तथ्यों को प्रस्तुत करेगा।

प्रत्येक पाठ के अंत में '**आगे बढ़ने से पहले...**' दिया गया है जो पाठ के मूल विचारों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात अभ्यास, प्रश्न अथवा परियोजनाएँ दी गईं हैं।

आगे बढ़ने से पहले...

→ परिवार मानव समाज का आधार है। आदर्श रूप में परिवार के सदस्य अपने अनेक कर्तव्यों और कार्यों में एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करते हैं।

→ समुदाय अपेक्षाकृत बड़ी इकाई है। इसका अर्थ यह भी है कि लोग एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास करते हैं। 'समुदाय' को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है और समुदाय अनेक प्रकार के होते हैं।

→ अंतत: समुदाय एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर एक **क्यू.आर. कोड** दिया गया है जो आपको पाठ की विषयवस्तु से संबंधित रोचक वीडियो, पहेली, खेल, कहानियों आदि तक ले जाएँगे। यह आपको आगे की खोज के लिए प्रेरित भी करेंगे। इनको स्वयं अथवा किसी वयस्क की सहायता लेकर स्कैन कीजिए और सामग्री का अवलोकन कीजिए।

इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन में आपके शिक्षक आपके साथ होंगे। हम आशा करते हैं कि आप इस पुस्तक के कुछ अंशों का अध्ययन अपने माता-पिता या अभिभावकों के साथ भी करेंगे। संभवत: कुछ गतिविधियों को उनके साथ करना आपको अच्छा लगेगा।

हम सामाजिक विज्ञान के अध्ययन द्वारा मानव जीवन एवं समाज पर गहरी अंतर्दृष्टि विकसित करने की आपकी इस यात्रा के आनंदप्रद होने की कामना करते हैं।

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *आचार्य*, प्रिंसटन विश्वविद्यालय (**सह अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व-महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *आचार्य*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *अतिथि आचार्य*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)*, हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.आई.पी.ए.

चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

मार्गदर्शन

महेश चंद्र पंत, *अध्यक्ष,* एन.एस.टी.सी. एवं कुलाधिपति, एन.आई.ई.पी.ए., नई दिल्ली

जगबीर सिंह, *अध्यक्ष*, एन.ओ.सी. एवं *कुलाधिपति,* पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी. एवं *आचार्य*, प्रिंसटन विश्वविद्यालय

अनुराग बेहर, *सदस्य,* राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा परिवेक्षण समिति एवं *सी.ई.ओ.*, अज़ीम प्रेम जी फाउंडेशन, बेंगलुरू

गजानन लोंढे, *प्रमुख*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.; तथा *संस्थापक सदस्य*, संवित रिसर्च फाउंडेशन

***अध्यक्ष,* सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान) (सी.ए.जी-एस.एस)**

मिशेल डैनिनो, *अतिथि आचार्य*, आई.आई.टी. गांधीनगर

***अध्यक्ष,* सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)**

संजीव सान्याल, *सदस्य*, ई.ए.सी.-पी.एम.

सहयोग

अंकुर कक्कड़, *सह-आचार्य,* सेंटर फॉर इंडिक स्टडीज, इंडस यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

अजीज महदी, फारसी अध्येता एवं *पूर्व फैलो*, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, शिमला; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

आशीर्वाद द्विवेदी, *सहायक आचार्य*, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

एम.वी. श्रीनिवासन, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

उदय कुलकर्णी, *सर्जन कमांडर* (सेवानिवृत्त), भारतीय नौसेना एवं *इतिहासकार*; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

के. वसुंधरा, *उप-प्रधानाचार्य*, चिन्मय विद्यालय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, विरुगम्बक्कम्, चेन्नई

जॉनसन ओडाक्कल, *कोमोडोर* (सेवानिवृत्त) एवं *पूर्व निदेशक*, मैरिटाइम हिस्ट्री सोसाइटी; *फैकल्टी*, आदित्य बिड़ला वर्ल्ड एकेडमी; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

जावेद इकबाल भट, *सहायक आचार्य*, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, कश्मीर विश्वविद्यालय; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

तनु मलिक, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिव्या इंद्रा चटर्जी, *चार्टर्ड अकाउंटेंट* और *कंसलटेंट,* कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

नबज्योति डेका, *सहायक आचार्य*, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

प्राची लाहिरी, *शिक्षक* (इतिहास), नेशनल पब्लिक स्कूल, बेंगलुरू; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

प्रियदर्शिनी सामंत राय, *सहायक आचार्य* (समाजशास्त्र), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

फणीन्द्र शर्मा, *कंसलटेंट,* कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

भावना पालीवाल, *एजुकेटर* और *कंसलटेंट,* कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

राधा नारायणन, *शोधार्थी* और *लेखक,* इतिहास पाठ्यपुस्तक, चिन्मय मिशन, चेन्नई; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

रिद्धि गर्ग, *शोध लेखक* और *संपादक,* दिल्ली

रुचिका सिंह, *सहायक आचार्य*, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय; तथा *कोऑर्डिनेटर*, आई.के.एस. डिवीजन, शिक्षा मंत्रालय

लोपामुद्रा मैत्रा, *एंथ्रोपोलोजिस्ट*, सीनियर रिसर्च सेंटर फॉर स्टडीज इन लीगल हिस्ट्री, वेस्ट बंगाल, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जूरीडेकल साइंसिस, कोलकाता

वी. सेल्वाकुमार, *सह-आचार्य,* डिपार्टमेंट ऑफ मैरिटाइम हिस्ट्री एंड मरीन आर्केलॉजी, तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी (सामाजिक विज्ञान)

संदीप कामरा, *एजुकेटर,* शिव नादर स्कूल, गुरुग्राम; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

संदीपा मदान, *एजुकेटर,* शिव नादर स्कूल, गुरुग्राम; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

सुखविंदर सिंह, *सह-आचार्य*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सुपर्णा दिवाकर, *एजुकेटर* और *डेवलपमेंट सेक्टर प्रोफेशनल*; तथा *चीफ कंसलटेंट*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

सुरेन्द्र सी. ठाकुर देसाई, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष,* भूगोल और ग्रामीण विकास, गोगटे जोगलेकर कॉलेज, रत्नागिरि; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

सृष्टि चौहान, *यंग प्रोफेशनल,* (ई.ए.सी.-पी.एम.) नीति आयोग

सौम्या डे, *आचार्य,* ऋषिहुड विश्वविद्यालय; तथा *सदस्य*, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

समीक्षक

अदिति मिश्रा, *निदेशक प्रधानाचार्य*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम; और *शिक्षक* — कनु चोपड़ा, लीजा दत्ता, अवनी मेहता, ममता कुमार, सुपर्णा शर्मा

अनुराधा चौधरी, *सहायक आचार्य*, आई.आई.टी. खड़गपुर; तथा *संयोजिका*, आई.के.एस. डिवीजन, ए.आई.सी.टी.ई.

अपर्णा पांडे, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई; तथा *सदस्य,* एन.एस.टी.सी.

गण्टि एस. मूर्ति, *राष्ट्रीय संयोजक*, आई.के.एस. डिवीजन, शिक्षा मंत्रालय

पी.के.मंडल, *आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; तथा *सदस्य,* एन.एस.टी.सी.

भैरू लाल यादव, *सह-आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

विनीता रिखि, *संयुक्त निदेशक*, ला मॉनडिएल ग्रुप, ला मॉनडिएल एकेडिमिआ

सदस्य समन्वयक, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

अपर्णा पांडे, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

शिप्रा वैद्या, *आचार्य* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

हिंदी अनुवाद

अवंतिका त्रिपाठी, *कंसलटेंट*, नई दिल्ली

तरुण मिश्रा, *टी.जी.टी.*, शासकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, कोर अकादमिक यूनिट, मुख्यालय, डी.ओ.ई., सामाजिक विज्ञान, नई दिल्ली

रेवा शर्मा, *उप-निदेशक* (ओ.एल.) (सेवानिवृत्त), भारत मौसम विज्ञान विभाग, लोधी रोड, नई दिल्ली

श्रीपाल जैन, पूर्व *वरिष्ठ संपादक*, हिंदुस्तान, एच.टी. लिमिटेड, नई दिल्ली

हिंदी अनुवाद समीक्षा

अपर्णा पांडे, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कृष्ण चंद्र पांडे, *सहायक आचार्य*, हिंदू अध्ययन विभाग, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

कुमारी रोहिणी, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

गौरी श्रीवास्तव, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

जगदेव कुमार शर्मा, *आचार्य* (हिंदी), मानविकी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत केंद्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

जया सिंह, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

तनु मलिक, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

नीरजा रश्मि, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रतिमा कुमारी, *सह-आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रत्यूष कुमार मंडल, *आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रियदर्शनी सामंतराय, *सहायक आचार्य* (समाजशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

फणींद्र शर्मा, *एजुकेटर* एवं *कंसलटेंट*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

बीरबल लूनीवाल, *सहायक आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भावना पालीवाल, *एजुकेटर* एवं *कंसलटेंट*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

भैरू लाल यादव, *सह-आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मृण्मयी रे, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रश्मि, *सह-आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रामनाथ झा, *आचार्य*, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
शंकर शरण, *आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शिप्रा वैद्या, *आचार्य* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सविता सागर, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
साईनाथ शंकरराव कबाड़े, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
साकेत बहुगुणा, *सहायक आचार्य* (भाषा विज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान— दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली
सारिका चंद्रवंशी साजू, *आचार्य* (समाजशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सीमा शुक्ला ओझा, *आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुखविंदर, *सह-आचार्य,* शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुभाष सिंह, (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

संयोजक

व्ही.के तिवारी, कौस्तुभ चटर्जी, डॉ.ललित साहू

संपादन सहयोग

दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य),
डॉ.ओ.पी.मिश्रा (सचिव, राज्य शिक्षा आयोग), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक

दिव्या क्लारेट लकरा (प्राध्यापक)

सहायक विषय समन्वयक

डॉ.सीमा श्रीवास्तव, लीना नेमपांडे

सहयोग

डॉ.के.के.अग्रवाल, डॉ.खिलेश्वरी साव, डॉ.सरिता साहू, डॉ.सुष्मिता मुखर्जी, भारती दुबे, मनीष मुखर्जी,
अमृत लाल साहू, विद्या सक्सेना, ललित साहू, डॉ. मीनाक्षी बाजपेयी, भागवत यादव, उत्तम कुमार साहू

राज्य शिक्षा स्थायी समिति

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) के सभी सदस्यों तथा सामाजिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र के पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) के अध्यक्षों एवं सदस्यों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा ओवरसाइट समिति (एन.ओ.सी.) के अध्यक्ष तथा सदस्यों द्वारा दिए गये बहुमूल्य सुझावों के लिए भी कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान) और सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र) के सदस्यों की भागीदारी और सहयोग सराहनीय रहा है। परिषद्, इस पाठ्यपुस्तक में क्रॉसकटिंग थीम को समाहित करने के लिए दूसरे अन्य सी.ए.जी. के अध्यक्षों और सदस्यों का भी विशेष आभार व्यक्त करती है।

इस पाठ्यपुस्तक को तैयार करने के प्रत्येक चरण में एन.एस.टी.सी. के कार्यक्रम कार्यालय और सामाजिक विज्ञान के सदस्य समूह के अथक प्रयासों के प्रति भी परिषद् आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है जिन्होंने प्रत्येक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग दिया। परिषद्, श्वेता उप्पल, *मुख्य संपादक* (सेवानिवृत्त), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. एवं अन्य संपादकों द्वारा इस पुस्तक के संपादन और वर्तनी संशोधन प्रक्रिया में दिए गए बहुमूल्य सहयोग के लिए भी आभारी है। हम पाठ्यसामग्री के संपादन के दौरान अनेक संशोधनों के लिए एन.एन. अंजासी और रिद्धि गर्ग के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं।

पाठ्यपुस्तक के आवरण और प्रारूपण के लिए हम श्वेता राव के अनुगृहीत हैं। चित्रकार अलबर्ट श्रीवास्तव, आशुतोष कांबली, अत्रि चेतन, चंद्रिमा चटर्जी, नूतन किशोर, प्राची सहस्त्रबुद्धे और प्रशांत सिंह पाठ्यपुस्तक में नवीन डिजाइन, चित्रकारी और रेखाचित्र के लिए प्रशंसा के पात्र हैं। मानचित्रकार सतीश मौर्य का योगदान भी सराहनीय है। पाठ्यपुस्तक निर्माण में विभिन्न स्तरों पर

सहयोग के लिए हम सुनील सिसोदिया एवं नीरज कुमार, *जे.पी.एफ.*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग की सराहना करते हैं।

वी.एन. प्रभाकर ने उदारतापूर्वक अपने मानचित्रों को साझा किया है, इसके लिए हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

परिषद्, इस पाठ्यपुस्तक के भाषा संपादन और प्रकाशन हेतु इसे अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग की आभारी है। इस प्रक्रिया में श्रेया गुप्ता, प्रियंका व गरिमा, *प्रूफरीडर* (संविदा), राहुल सेमवाल एवं अंजू शर्मा, *सहायक संपादक* (संविदा) तथा पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ एवं नरेश कुमार, अनीता कुमारी, राजश्री व विपन कुमार शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रति परिषद् आभार व्यक्त करती है।

विषय-सूची

प्राक्कथन *iii*

आमुख *v*

विद्यार्थी के नाम पत्र *vii*

इस पुस्तक के साथ आपकी यात्रा *ix*

परिचय — सामाजिक विज्ञान क्यों? **1**

विषय (क) — भारत एवं विश्व : भूभाग एवं उनके निवासी

1. पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति 7
2. महासागर एवं महाद्वीप 27
3. स्थलरूप एवं जीवन 41

विषय (ख) — अतीत के चित्रपट

4. इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्रोत 59
5. हमारा भारत 75
6. भारतीय सभ्यता का प्रारंभ 85

विषय (ग) — हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएँ

7. भारत की सांस्कृतिक जड़ें 105
8. अनेकता में एकता 125

विषय (घ) — शासन और लोकतंत्र

9. परिवार और समुदाय 137

10. आधारभूत लोकतंत्र — भाग 1: शासन 149

11. आधारभूत लोकतंत्र — भाग 2: पंचायती राज, नगर पालिका और नगर निगम 163

12. आधारभूत लोकतंत्र — भाग 3: जिला प्रशासन 181

विषय (ङ) — हमारे आस-पास का आर्थिक जीवन

13. कार्य का महत्व 187

14. हमारे आस-पास की आर्थिक गतिविधियाँ 199

15. सामान्य चेतना 213

शब्दावली *223*

बाह्य स्रोतों से चित्र और मानचित्र *234*

वसुधैव कुटुम्बकम्
संपूर्ण विश्व एक परिवार है

परिचय — सामाजिक विज्ञान क्यों?

आइए पता लगाएँ

- → ऊपर दिए गए चित्र को देखिए। आपने क्या देखा?
  - झील में पानी कहाँ से आ रहा है?
  - सड़क का निर्माण किसने एवं क्यों किया?
  - इन छोटे-छोटे घरों में रहने वाले लोग क्या-क्या गतिविधियाँ करते होंगे? उनका क्या इतिहास रहा होगा? उनका क्या भविष्य है?
- → अपने उत्तरों को लिखिए एवं अपने साथियों के साथ इस पर चर्चा कीजिए।
- → अब, मुखपृष्ठ पर दिए गए चित्र को देखिए, आपके मन में क्या-क्या सवाल आते हैं? उनको लिखिए।
- → इन दो चित्रों से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों को जानने के लिए आप किस प्रकार प्रयास करेंगे?

ऊपर दिए गए हमारे प्रश्न सामाजिक विज्ञान से किस प्रकार संबंधित है?

हम 21वीं शताब्दी में हैं (यदि आप इसे नहीं समझ सके हैं, तो जल्दी ही इसके बारे में पढ़ेंगे)। इस बात से सभी सहमत हैं कि यह समय मानव सभ्यता के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। एक तरफ तकनीक में तीव्र विकास हुआ है जिसने हमारी जीवन-शैली में विभिन्न बदलाव किए हैं। दूसरी ओर, इस समय संसार विभिन्न युद्धों, सशस्त्र संघर्षों और बढ़ते सामाजिक तनावों का सामना कर रहा है एवं हमारे ग्रह के प्राकृतिक पर्यावरण

पर भारी दबाव पड़ रहा है। हम असाधारण संभावनाओं के युग में असामान्य चुनौतियों के साथ जीवन-यापन कर रहे हैं।

विश्व-भर में, अधिकाधिक लोग यह सोच रहे हैं कि मानवता के समक्ष आने वाली समस्याओं को किस प्रकार हल करें? हमारा समाज किस प्रकार शांति एवं समरसता के साथ जीवन जीना सीखे? हम किस प्रकार इस सुंदर ग्रह पृथ्वी (जिसे हम सभी साझा करते हैं) की रक्षा न केवल अपने लिए अपितु इस पर रहने वाली सभी प्रजातियों के लिए करें।

यह मौलिक प्रश्न बहुत सरल है, परंतु इसके उत्तर उतने सरल नहीं हैं। यह सरल हो भी नहीं सकते क्योंकि मानव समाज अधिक विविध एवं जटिल है। यदि हम इन प्रश्नों के उत्तर खोजना एवं उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें विश्व को और विशेष रूप से मानव समाज को समझना होगा। यही सामाजिक विज्ञान का सार है।

आप सोच रहे होंगे कि सामाजिक विज्ञान, भौतिकी या रसायन विज्ञान की तरह कोई विज्ञान है, किंतु ऐसा नहीं है। यह विषय जहाँ तक संभव है, वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करता है (आप इस पाठ्यपुस्तक में कुछ उदाहरण देखेंगे), लेकिन इसका केंद्र मानव समाज है जो स्वयं में इतना विविधतापूर्ण है कि विज्ञान की तरह निर्धारित प्रक्रियाओं को अपनाने और निश्चित परिणामों को प्राप्त करने की संभावना को क्षीण कर देता है।

सामाजिक विज्ञान के कई उपविषय हैं, जैसे – भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान, पुरातत्व विज्ञान, मनोविज्ञान इत्यादि। आपके

लिए यह रोचक एवम महत्वपूर्ण रहेगा इनमें से कुछ उपविषयों का अध्ययन आप माध्यमिक स्तर पर करेंगे, मध्य स्तर पर हमने इस तरह का वर्गीकरण नहीं किया है। इसकी जगह हमने पाँच प्रमुख विषयों का उपयोग किया है। आइए, इस पर एक दृष्टि डालते हैं।

विषय (क) — भारत एवं विश्व : भूभाग एवं उनके निवासी

इस विषय में हमारे आस-पास की भौगोलिक दुनिया की बुनियादी बातें एवं हमारे ग्रह की कुछ मुख्य विशेषताओं और उन्हें मानचित्र पर दर्शाने का तरीका शामिल है। यह विषय महत्वपूर्ण क्यों है, जबकि हम मोबाइल पर शानदार मानचित्र प्राप्त कर सकते हैं? वास्तव में यह विषय मानचित्रों से इतर भी चर्चा करता है। इस विषय के माध्यम से पता चलता है कि संपूर्ण इतिहास के दौरान मानव सभ्यता के फलने-फूलने में भौगोलिक संरचनाओं (समुद्र, पर्वत, नदियाँ आदि) ने किस प्रकार की भूमिका निभाई। भारत के संदर्भ में यह विषय बताता है कि भारत की प्राकृतिक अवस्थिति ने उसकी प्राचीन सभ्यता को किस प्रकार अनूठी पहचान प्रदान की।

विषय (ख) — अतीत के चित्रपट

चित्रपट कैनवास जैसा एक बड़ा टुकड़ा होता है, जिस पर चित्र एवं डिजाइन बने होते हैं। कभी-कभी ये ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं। इसे आमतौर पर दीवार पर लटकाकर रखा जाता है। इस चित्रपट में अतीत का चित्रण हम भारत के अतीत से करना आंरभ करेंगे। शायद आप यह सोच रहे हों कि अतीत को लेकर चिंतित क्यों होना चाहिए? वास्तव में यही वर्तमान को समझने की कुंजी है, और इस विषय में दिए गए अध्याय आपको इसके बारे में अधिक स्पष्ट करते दिखेंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो अतीत हमारी पहचान का मुख्य स्रोत है जो हमें यह समझने में सहायता करता है कि हम कौन हैं और कहाँ से आए हैं? अन्य शब्दों में कहें तो अतीत अभी हमारे साथ है। चूँकि दुर्भाग्य से इतिहास केवल सुखद विकास यात्रा नहीं हैं, अपितु यह लोगों, सरकारों और शासकों द्वारा की गई गलतियों एवं उन गलतियों के कारणों को समझने में हमारी सहायता करता है। इसको समझने के उपरांत ही आशा है कि हम इन गलतियों को दोहराने से बचेंगे।

विषय (ग) — हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएँ

प्रायः ऐसा माना जाता है कि भारत की संस्कृति अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है। यह सत्य भी है, परंतु इसकी प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? इसके मार्गदर्शक सिद्धांत क्या हैं? भारतीय इतिहास में यह किस प्रकार प्रकट हुए? और हमारे समय की समस्याओं को सुलझाने में किस प्रकार सहायक होंगे? यह कुछ प्रश्न हैं जिनका अन्वेषण इस विषय में किया

जाएगा। इनका उद्देश्य होगा कि प्रत्येक विद्यार्थी हमारी सभ्यता की नींव को समझे एवं उसके मूल्यों की प्रशंसा करे।

विषय (घ) — शासन और लोकतंत्र

प्रत्येक देश के नागरिकों को उस देश की राजनीतिक कार्यप्रणाली की समझ होनी चाहिए। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ विभिन्न स्तरों पर कार्य करने वाली विस्तृत शासन प्रणाली अपनाई गई है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ एवं घटक क्या हैं? शासन में लोग किस प्रकार भागीदारी कर सकते हैं? उनके अधिकार क्या हैं एवं उनके कर्तव्य अथवा धर्म क्या हैं? क्या अन्य देशों में अलग प्रणाली अपनाई जाती है, यदि हाँ, तो वे कौन-सी हैं? विभिन्न देश आपस में किस प्रकार संपर्क स्थापित करते हैं? इस विषय का अध्ययन कर हम अधिक जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे और यह समझ सकेंगे कि सरकार के विभिन्न अंग किस प्रकार कार्य करते हैं। साथ ही, हमें प्रभावित करने वाली स्थानीय अथवा राष्ट्रीय नीतियों पर अपना वक्तव्य प्रभावी ढंग से रख सकेंगे।

विषय (ङ) — हमारे आस-पास का आर्थिक जीवन

कोई भी परिवार दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुओं, जैसे प्राथमिक स्तर पर भोजन, वस्त्र, आश्रय, जल की उपलब्धता एवं द्वितीय स्तर पर वयस्कों के लिए आजीविका और युवाओं के लिए शिक्षा के बिना खुश नहीं रह सकता। इसी प्रकार, सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के बिना कोई भी देश सामंजस्यपूर्ण ढंग से उन्नति नहीं कर सकता। परंतु भारत जैसे विशाल देश में अर्थव्यवस्था कैसे कार्य करती है? मुद्रा वास्तव में क्या है? इसकी उत्पत्ति कहाँ होती है? इसे कैसे बढ़ाया जा सकता है? किन-किन आर्थिक गतिविधियों में लोग शामिल होते हैं? प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का किस प्रकार सर्वाधिक उपयुक्त प्रबंधन किया जा सकता है? यह विषय कुछ प्रमुख अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को निर्धारित करेगा जो हमें इन प्रश्नों के उत्तर खोजने में सहायक होगा।

आपने देखा कि पिछले अनुच्छेद में कई प्रश्न हैं। यह ठीक उसी प्रकार के हैं, जैसा इन्हें होना चाहिए। सामाजिक विज्ञान भी सही प्रश्न पूछने की कला के विषय से संबंधित है। जब हम सही प्रश्न पूछते हैं, तभी हम सही उत्तरों की खोज कर सकते हैं। सामान्य चेतना से संबंधित कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है, इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय की शुरुआत 'महत्वपूर्ण प्रश्न' से की गई है, जो उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करता है।

भूगोल से संबंधित अध्यायों में शतरंज के खेल और कुछ प्राचीन तमिल कहानियाँ आपको रुचिकर लगेंगी। सांस्कृतिक विरासत वाले अध्याय में साड़ी के उपयोग पर चर्चा की गई है। अर्थव्यवस्था केंद्रित अध्याय में सेवा की अवधारणा और त्योहारों का वर्णन किया किया गया है। ऐसा जान-बूझकर किया गया है। हम विभिन्न क्षेत्रों के समस्त

पहलुओं को एक साथ लाने में विश्वास करते हैं (इसे बहुविषयकता कहा जाता है, जिसे आप बाद में पढ़ेंगे।) यह हमारे दृष्टिकोण को समृद्ध करता है। वास्तव में, जब जीवन अनगिनत तत्वों का मिश्रण करता है, तो हमें क्यों नहीं करना चाहिए?

अब तक यह स्पष्ट हो गया होगा कि सामाजिक विज्ञान वर्तमान को समझने के लिए एवं बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए अतीत का निरंतर उपयोग करता है। यह अन्वेषणपूर्ण एवं रोमांचक कार्य है।

अध्याय 1

पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति

पृथ्वी अंतरिक्ष में स्थित है, जो जल, पृथ्वी, अग्नि और वायु से बनी है और यह गोलाकार है। यह सभी स्थलीय और जलीय प्राणियों से घिरी हुई है।

—आर्यभट्ट (लगभग 500 सा.सं.)

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *मानचित्र क्या है और हम इसका उपयोग कैसे करते हैं? इसके मुख्य घटक क्या हैं?*
2. *निर्देशांक क्या हैं? पृथ्वी पर किसी स्थान को अंकित करने के लिए अक्षांश और देशांतर का उपयोग कैसे किया जा सकता है?*
3. *देशांतर से स्थानीय समय और मानक समय कैसे संबंधित हैं?*

0683CH01

कल्पना कीजिए कि आप पहली बार किसी नगर की यात्रा कर रहे हैं। उस नगर में आप जिन स्थानों की यात्रा करना चाहते हैं, उनका पता कैसे लगाएँगे? आप सहायता के लिए किसी स्थानीय व्यक्ति से पूछ सकते हैं अथवा उस नगर के मानचित्र को देख सकते हैं। पिछली कक्षाओं में आपने मानचित्र के बारे में कुछ बातें सीखी थीं और इस अध्याय में हम उनका विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

आइए, एक खेल खेलते हैं। नीचे दिए गए एक लघु नगर के मानचित्र का निरीक्षण कीजिए (चित्र 1.1)। कल्पना कीजिए कि आप रेल्वे स्टेशन पर एक रेलगाड़ी से अभी-अभी उतरे हैं और मानचित्र पर अंकित बैंक में जाना चाहते हैं। आप किस मार्ग से जाएँगे? क्या कोई अन्य संभावित मार्ग भी हैं? क्या आप इसी मानचित्र में सार्वजनिक उद्यान, विद्यालय और संग्रहालय का भी पता लगा सकते हैं? यदि आप बैंक से बाजार तक जाना चाहते हैं, तो आप किस मार्ग को चुनेंगे? ऐसी परिस्थिति में ही एक मानचित्र उपयोग में आता है।

चित्र 1.1 — एक काल्पनिक लघु नगर का मानचित्र

मानचित्र स्थानों का पता लगाने के लिए एक मार्गदर्शक की तरह है जो यह दर्शाता है कि किसी स्थान की स्थिति कहाँ है और वहाँ तक कैसे पहुँचा जा सकता है। मानचित्र के दाएँ कोने के शीर्ष पर स्थित चार तीरों पर ध्यान दीजिए। हम आगे देखेंगे कि वे कैसे कुछ विशिष्ट दिशाओं को इंगित करते हैं और मानचित्रों को समझने में अधिक सहायक होते हैं।

आइए पता लगाएँ

→ पृष्ठ 8 पर दिए गए चित्र 1.1 में —

1. चिकित्सालय को अंकित कीजिए।
2. नीले रंग से दिखाए गए क्षेत्र क्या दर्शा रहे हैं?
3. विद्यालय, नगर पंचायत या सार्वजनिक उद्यान में से रेल्वे स्टेशन से कौन-सा स्थान सबसे अधिक दूरी पर है?

→ कक्षा के एक क्रियाकलाप के रूप में तीन या चार विद्यार्थियों के अलग-अलग समूह बनाइए। प्रत्येक समूह से अपने विद्यालय तथा उस तक जाने वाले कुछ मार्गों और पड़ोस के भवनों का मानचित्र बनाने को कहिए। अंत में सभी मानचित्रों की तुलना कीजिए और उन पर चर्चा कीजिए।

मानचित्र और उसके घटक

हम इस साधारण उदाहरण से समझ सकते हैं कि मानचित्र किसी भी क्षेत्र का एक प्रतीकात्मक चित्रण या रेखांकन है — यह एक लघु क्षेत्र (गाँव या कस्बा), एक वृहद क्षेत्र (मान लीजिए कि आपका जनपद या राज्य) अथवा भारत जैसा एक अति विशाल देश या संपूर्ण विश्व भी हो सकता है। मानचित्र में आप सतह को ऐसे देखते हैं, जैसे आप उसे ऊपर से देखते हैं।

एटलस (मानचित्रावली) मानचित्रों की एक पुस्तक या संग्रह है।

जैसा कि आप जानेंगे, मानचित्र अनेक प्रकार के होते हैं —

- **भौतिक मानचित्र** मुख्य रूप से प्राकृतिक आकृतियों, जैसे– पर्वतों, महासागरों और नदियों को दर्शाते हैं। (उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक में चित्र 5.2)
- **राजनैतिक मानचित्र** देशों या राज्यों, सीमाओं, नगरों आदि को दर्शाते हैं। (उदाहरण के लिए, सभी राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और उनकी राजधानियों को दर्शाता भारत का एक मानचित्र)
- **थिमैटिक मानचित्र** विशिष्ट प्रकार की सूचना प्रदान करते हैं। (उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक में चित्र 6.3 और 8.1)

किसी भी मानचित्र के तीन मुख्य घटक होते हैं — **दूरी, दिशा और प्रतीक चिह्न**। आप चित्र 1.1 को देखते हुए प्रथम दो के बारे में पहले ही जान चुके हैं। आइए, अब हम इन्हें अधिक सटीक ढंग से परिभाषित करते हैं।

क्या आप कभी अचंभित हुए हैं कि एक वृहद क्षेत्र को कागज के एक छोटे टुकड़े पर कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है? यह मानचित्र के स्केल की सहायता से किया जाता है। आइए, हम एक लघु नगर (चित्र 1.1) के हमारे मानचित्र पर वापस जाते हैं। मानचित्र, जैसा कि यहाँ मुद्रित है, इसका प्रत्येक सेंटीमीटर धरातल पर एक निश्चित दूरी का प्रतिनिधित्व

करता है। माना कि यह 500 मीटर है, तो हम कहेंगे कि स्केल 1 सेंटीमीटर = 500 मीटर है। अब इस पाठ्यपुस्तक के अध्याय 5 के चित्र 5.2 में भारत के मानचित्र को देखिए।

स्केल, नीचे बाएँ कोने में एक रूलर के द्वारा दर्शाई गई है जिसकी लंबाई के ऊपर '500' और किनारे पर 'कि.मी.' लिखा हुआ है। सामान्यत: इसका अर्थ यह होता है कि जो रूलर मुद्रित मानचित्र में 2.5 से.मी. मापता है, वह भूमि पर 500 किलोमीटर को दर्शाता है।

इसलिए मानचित्र पर चिह्नित किन्हीं दो बिंदुओं के बीच की वास्तविक **दूरी** उस स्केल पर निर्भर है, जिसका मानचित्र उपयोग करता है।

आइए पता लगाएँ

- → किसी विद्यालय के खेल-मैदान का एक साधारण मानचित्र बनाइए। मान लीजिए कि यह 40 मीटर लंबा और 30 मीटर चौड़ा आयताकार क्षेत्र है। इसे अपने रूलर की सहायता से 1 सेंटीमीटर = 10 मीटर के स्केल पर सटीक ढंग से खींचिए।
- → अब इस आयताकार क्षेत्र के विकर्ण को मापिए। आपके द्वारा की गई माप कितने सेंटीमीटर की है? स्केल की सहायता से खेल-मैदान के विकर्ण की वास्तविक लंबाई की मीटर में गणना कीजिए।

आइए, लघु नगर के मानचित्र (चित्र 1.1) के दाईं ओर शीर्ष पर स्थित चार तीरों पर वापस आते हैं। ये चार **दिशाओं** को इंगित करते हैं— शीर्ष पर उत्तर और घड़ी के काँटे की दिशा में घूमते हुए पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम। इन्हें **चतुर्दिश या प्रधान बिंदु** भी कहा जाता है। इनके अतिरिक्त, मध्यवर्ती दिशाओं— उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम का भी उपयोग किया जाता है। अधिकतर मानचित्रों में 'उ०' अक्षर से अंकित एक तीर होता है, जो उत्तर दिशा को इंगित करता है।

आइए पता लगाएँ

- → लघु नगर के मानचित्र पर पुनः विचार कीजिए। नीचे दी गई सूची में सही और गलत कथनों की पहचान कीजिए—
  1. बाजार, चिकित्सालय के उत्तर में है।
  2. संग्रहालय, बैंक के दक्षिण-पूर्व में है।
  3. रेल्वे स्टेशन, चिकित्सालय के उत्तर-पश्चिम में है।
  4. झील, आवासीय भवन के उत्तर-पश्चिम में है।
- → अपने विद्यालय को प्रारंभिक बिंदु मानते हुए, क्या आप जानते हैं कि आपका घर लगभग किस दिशा में स्थित है? अपने शिक्षक और माता-पिता से चर्चा कीजिए।

प्रतीक चिह्न मानचित्रों का एक और महत्वपूर्ण घटक है। हमारे मानचित्र में वास्तविक भवनों और कुछ अन्य अवयवों के लघु आरेख (ड्राइंग्स) हैं, लेकिन एक बड़े नगर या एक देश के मानचित्र पर इन सभी के चित्रण के लिए पर्याप्त स्थान नहीं होगा। इसकी जगह, इन आकृतियों के रेखांकन के लिए चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, भवनों के विभिन्न प्रकारों (जैसे — रेल्वे स्टेशन, विद्यालय, डाकघर), मार्गों, रेल्वे लाइनों और नदी, ताल या वन के लिए प्रतीक चिह्न। इस तरीके से मानचित्र पर उपलब्ध सीमित स्थान पर अनेक विवरण दर्शाए जा सकते हैं।

विभिन्न उपयोगकर्ता मानचित्र को अधिक सरलता से समझें, इसके लिए मानचित्र निर्माता विशिष्ट प्रतीक चिह्नों का उपयोग करते हैं। विभिन्न देश प्रतीक चिह्नों के अलग-अलग समुच्चय का उपयोग करते हैं। सरकारी निकाय भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने भारत (या भारत के भागों) के मानचित्रों के लिए प्रतीक चिह्नों का एक संकलन निर्धारित किया है। उनमें से कुछ चयनित चिह्नों को पृष्ठ 11 के चित्र 1.2 में दर्शाया गया है।

आइए पता लगाएँ

अपने घर, विद्यालय और कुछ अन्य महत्वपूर्ण भू-चिह्नों सहित अपने स्थान या अपने गाँव का एक मानचित्र बनाइए। चतुर्दिश को दर्शाइए और दर्शाई गई कुछ महत्वपूर्ण आकृतियों को अंकित करने के लिए कुछ चिह्नों का उपयोग कीजिए जो चित्र 1.2 में दर्शाए गए हैं।

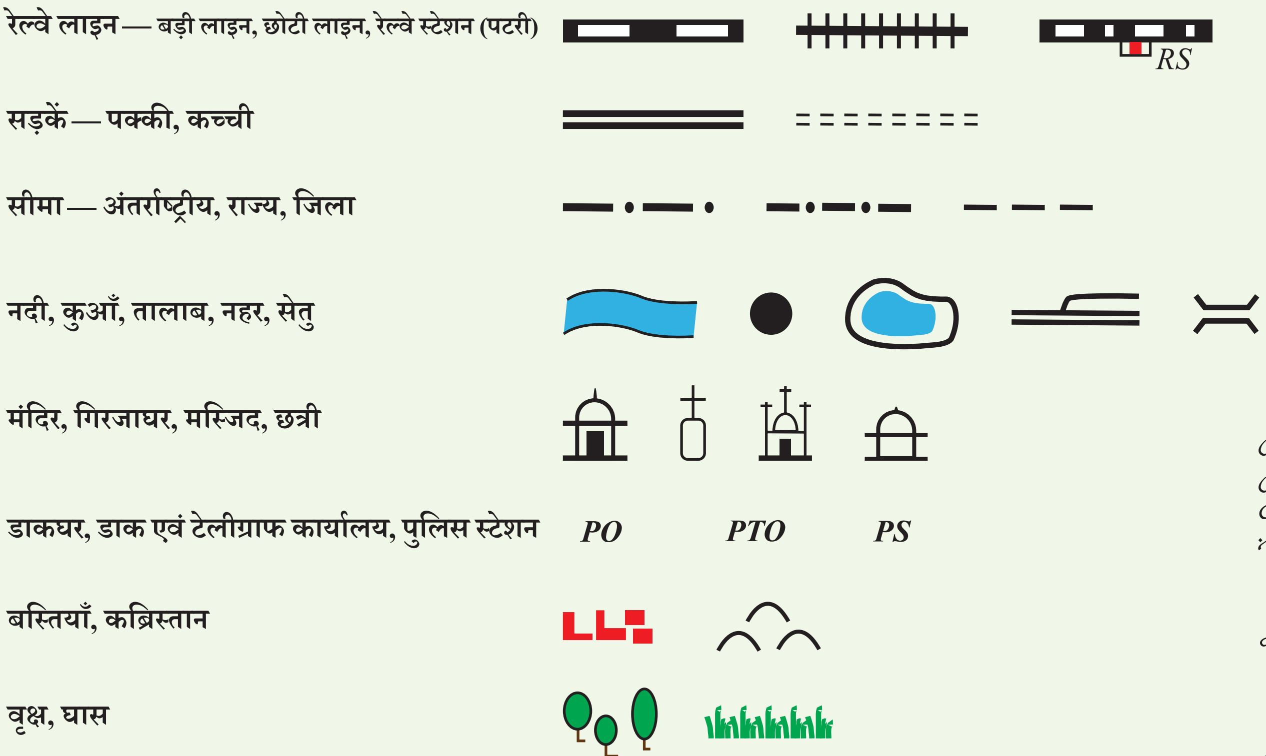

चित्र 1.2 — मानचित्रों में सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले प्रतीक चिह्न

पृथ्वी का मानचित्रण

पृथ्वी का मानचित्रण कुछ अधिक कठिन है क्योंकि हमारे ग्रह का आकार चपटा नहीं है। इसकी आकृति लगभग गोलाकार है (हम 'लगभग' इसलिए कहते हैं क्योंकि यह पूर्ण गोलाकार नहीं है, अपितु ध्रुवों पर थोड़ी चपटी है। हम इसे व्यावहारिक दृष्टि से गोलाकार मानेंगे)। कागज के एक समतल पृष्ठ पर एक गोलाकार वस्तु को यथावत चित्रित करना संभव नहीं है। ऐसा क्यों है, इसे समझने के लिए एक संतरे को इस प्रकार छीलिए कि आपके पास उसके छिलकों के केवल तीन अथवा चार टुकड़े हों। इसके बाद, एक मेज पर उन्हें चपटा करने का प्रयास कीजिए। आप पाएँगे कि किनारों को तोड़े बिना आप यह नहीं कर सकते।

अब एक **ग्लोब** पर विचार कीजिए, जो एक गोल आकृति जैसा है और उस पर एक मानचित्र बनाया गया है। यह पृथ्वी, चंद्रमा, मंगल ग्रह, तारों और तारा-मंडल आदि का भी एक मानचित्र हो सकता है। इस पृष्ठ पर दिए गए प्रथम चित्र पर दर्शाई गई वह भौतिक वस्तु, जो गोलाकार है, सामान्यतः धातु, प्लास्टिक या कार्डबोर्ड से बनी होती है।

हम यहाँ पृथ्वी के भूगोल का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्लोब का अध्ययन करेंगे। चूँकि ग्लोब और पृथ्वी का आकार एक समान (गोलाकार) होता है इसलिए एक ग्लोब, किसी समतल मानचित्र की तुलना में पृथ्वी के भूगोल का बेहतर प्रतिनिधित्व करता है।

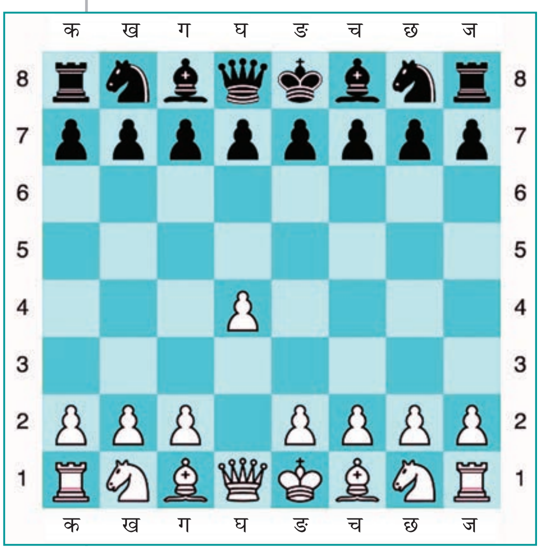

आइए, इसकी कुछ विशेषताओं का पता करें।

(क) निर्देशांक को समझना

किसी नगर या कस्बे के एक बड़े बाजार की कल्पना कीजिए जिसमें सीधी पंक्तियों में समान आकार की दुकानें हैं। आप बाजार में एक स्टेशनरी की दुकान पर अपने मित्र से मिलना चाहते हैं, लेकिन आपका मित्र यह नहीं जानता कि दुकान कहाँ पर है। अत: आप उसे इस प्रकार का निर्देश देंगे— "प्रवेश द्वार से 5वीं पंक्ति की

7वीं दुकान पर सायं 6 बजे मुझसे मिलें।" इससे आपका मित्र आपकी सही स्थिति को निर्धारित कर पाएगा।

अब शतरंज के पटल पर विचार करते हैं। आगे बढ़ने वाले खिलाड़ी की चालों को दर्ज करने के लिए मुख्य खानों पर अक्षर ('क' से 'ज' तक) और दोनों ओर के बीच अंक (1 से 8 तक) लगाए जाते हैं (चित्र देखिए)। इस साधारण प्रणाली से खिलाड़ी प्रत्येक वर्ग को अंकित कर पाते हैं और प्रत्येक चाल चिह्नित करते हैं। यहाँ पर सफेद पक्ष की रानी के सामने वाले प्यादे को दो चाल आगे बढ़ाकर (एक बहुत सामान्य चाल) खेल का आरंभ किया गया है। अत: प्यादा 'घ' 2 से 'घ' 4 की ओर आगे बढ़ा है।

आइए पता लगाएँ

यदि आपको काले पक्ष की ओर से खेलना हो और उसी विधि से प्रत्युत्तर देना हो, तो इन्हीं नियमों का उपयोग करते हुए अपनी चाल लिखिए।

इन दो उदाहरणों में प्रयुक्त प्रणाली को **निर्देशांक** प्रणाली कहा जा सकता है। इनके दो निर्देशांकों की सहायता से स्टेशनरी की दुकान के साथ-साथ शतरंज के पटल पर वर्गाकृति को भी ठीक-ठीक निर्धारित किया जा सकता है।

मानचित्र पर किसी स्थान की स्थिति के निर्धारण के लिए निर्देशांकों की इसी प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। आइए, देखें यह प्रणाली कैसे काम करती है।

(ख) अक्षांश

आइए, ग्लोब को पुन: देखते हैं। इस पर उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव की पहचान करना सरल है। ग्लोब को घुमाइए। जब यह घुमाया जाता है तो ऊपरी और निचले स्तर पर स्थित बिंदु दो ध्रुव हैं। इनके मध्य में भूमध्य रेखा (विषुवत वृत्त) होती है। उस वृत्त को पहचानिए जो इसे चिह्नित करता है (चित्र 1.3)।

कल्पना कीजिए कि आप **भूमध्य रेखा** पर खड़े हैं और दोनों ध्रुवों में से किसी एक ध्रुव की ओर यात्रा कर रहे हैं। ऐसा करते समय भूमध्य रेखा से आपकी दूरी बढ़ती जाएगी। **अक्षांश**, भूमध्य रेखा से इसी दूरी को मापता है। आप इस यात्रा के किसी भी बिंदु पर एक काल्पनिक रेखा खींच सकते हैं जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व से पश्चिम की ओर जाती है। इस प्रकार की रेखा को **अक्षांश (समानांतर)** कहा जाता है और यह पृथ्वी के चारों ओर एक वृत्त बनाती है। पुन: ग्लोब पर यह सुनिश्चित करना सरल है कि सबसे बड़ा वृत्त, विषुवत वृत्त है, जबकि हम जैसे ही उत्तर की ओर या दक्षिण की ओर आगे बढ़ते हैं तो अक्षांश द्वारा अंकित किए गए वृत्त छोटे होते जाते हैं (चित्र 1.3)।

अक्षांशों को **अंशों (डिग्री)** में व्यक्त किया जाता है। परंपरागत रूप से विषुवत वृत्त अक्षांश 0° या शून्य अंश है, जबकि दो ध्रुवों के अक्षांश क्रमशः 90 अंश उत्तर और 90 अंश दक्षिण है। इसे 90° उ० और 90° द० के रूप में लिखा जाता है।

अक्षांश और जलवायु के बीच एक संबंध है। भूमध्य रेखा के चारों ओर जलवायु सामान्यतः गरम (इसे उष्ण भी कहा जाता है) होती है। जैसे ही आप भूमध्य रेखा से दूर दो ध्रुवों में से किसी एक की ओर यात्रा करते हैं, तब अक्षांश की डिग्री बढ़ती जाती है और जलवायु शीतोष्ण हो जाती है। उत्तर या दक्षिण ध्रुव के निकट जलवायु शीत (ठंडी) होती है। आप विज्ञान में पढ़ेंगे कि ऐसा क्यों होता है और यह भी कि हम एक वर्ष की समयावधि में विभिन्न ऋतुओं का अनुभव क्यों करते हैं?

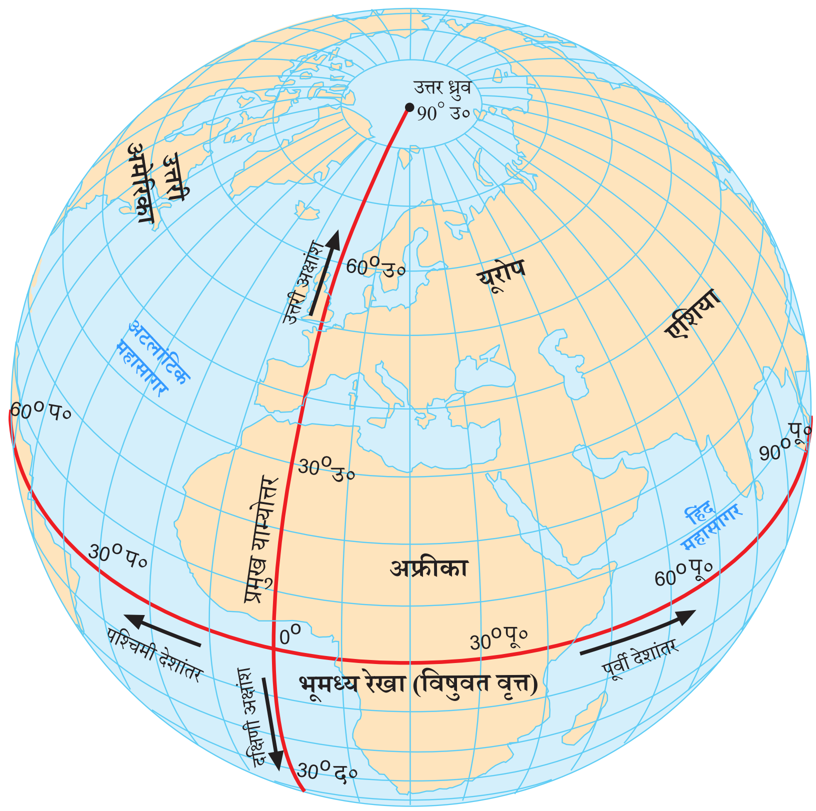

चित्र 1.3 — यह ग्लोब अक्षांशों के समानांतरों और देशांतरों के याम्योत्तरों, दोनों को दर्शाता है।

(ग) देशांतर

अब कल्पना कीजिए कि आप संभवत: सर्वाधिक छोटी रेखा पर उत्तर ध्रुव से दक्षिण ध्रुव की ओर यात्रा कर रहे हैं। ग्लोब का अवलोकन कीजिए। आप पाएँगे कि यूरोप और अफ्रीका के मार्ग से जाने की जगह आप एशिया के मार्ग से भी जा सकते हैं और दूरी एक समान होगी। इन रेखाओं को देशांतरीय याम्योत्तर **(मेरिडियन ऑफ लाँगिट्यूड)** (चित्र 1.3) कहा जाता है। ये अर्धवृत्त हैं, जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक जाते हैं।

आप विज्ञान में यह भी सीखेंगे कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। इसे सरलता से समझने के लिए एक टेबल लैंप को अपने ग्लोब से थोड़ा दूर रखिए और कल्पना कीजिए कि यह सूर्य है, जो पृथ्वी को प्रकाशित कर रहा है। ग्लोब को पूर्व की ओर घुमाने पर हम देख सकते हैं कि पृथ्वी पर कुछ स्थानों पर प्रात:काल है, अन्य स्थानों पर मध्याह्न, सायं या रात्रि है। जब एक देश में प्रात: नाश्ते का समय होता है, अन्य देश में मध्याह्न भोजन का समय होता है और किसी तीसरे देश में लोग रात्रि भोजन कर गहरी नींद में सो रहे होते हैं। इसी कारण एक स्थान के देशांतर के माप द्वारा हम उस स्थान के समय को भी मापेंगे। आइए, देखें कि यह कैसे होता है।

देशांतर को मापने के लिए हमारे द्वारा **प्रमुख याम्योत्तर** (पृष्ठ 14 पर चित्र 1.3) कहे जाने वाले संदर्भ बिंदु को परिभाषित करना आवश्यक है। इसे ग्रिनिच याम्योत्तर भी कहते हैं क्योंकि वर्ष 1884 में कुछ देशों ने तय किया कि इंग्लैंड में लंदन के एक क्षेत्र ग्रिनिच से गुजरने वाली याम्योत्तर, प्रमुख याम्योत्तर के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक मानी जाएगी। इसे 0° देशांतर के रूप में अंकित किया जाता है।

यदि आप ध्रुवों में से किसी एक की ओर यात्रा करते हैं तो जिस प्रकार अक्षांश भूमध्य रेखा से दूरी का एक माप है, उसी प्रकार यदि आप भूमध्य रेखा के साथ-साथ यात्रा करते हैं तो **देशांतर** प्रमुख याम्योत्तर से दूरी का एक माप है। देशांतर को भी डिग्री में मापा जाता है। पश्चिम हो या पूर्व, इसका मान 0° से 180° तक बढ़ता है तथा इसमें पश्चिम के लिए 'प०' तथा पूर्व के लिए 'पू०' वर्णों को जोड़ा जाता है। उदाहरणतया, पूर्णांक का उपयोग करते हुए न्यूयॉर्क का देशांतर 74° प० है, जबकि दिल्ली का 77° पू० और टोक्यो का 140° पू० है।

ध्यान रखें

जैसा कि आप देशांतर के याम्योत्तर को ग्लोब पर देख सकते हैं, 180° प० और 180° पू० एक ही देशांतर हैं। इसलिए इस देशांतर को प० या पू० न लिखकर 180° ही लिखा जाता है।

अक्षांश और देशांतर मिलकर एक स्थान के दो **निर्देशांक** होते हैं। इनके साथ आप अब पृथ्वी पर किसी स्थान का पता लगाने में सक्षम हैं। इस प्रकार जब यह कहा जाता है कि "दिल्ली 29° उ० अक्षांश और 77° पू० देशांतर पर स्थित है", तो इसे आप भलीभाँति समझ सकते हैं। यद्यपि यह डिग्री आनुमानिक रूप से पूर्ण है, किंतु सटीक नहीं है।

पृष्ठ 14 पर चित्र 1.3 में नीली रेखाएँ ग्लोब पर अक्षांश और देशांतर के याम्योत्तर को दर्शाती हैं। यह सभी रेखाएँ मिलकर ग्लोब पर एक **ग्रिड** बनाती है जिन्हें ग्रिड रेखाएँ भी कहा जाता है।

आइए, पता लगाएँ

यदि आपकी कक्षा में ग्लोब या मानचित्रावली में स्पष्ट रूप से अक्षांश और देशांतर अंकित हैं, तो (1) मुंबई (2) कोलकाता (3) सिंगापुर और (4) पेरिस के अक्षांश और देशांतर के लगभग मान को लिखने का प्रयास कीजिए।

चित्र 1.4 — यह चित्र दर्शाता है कि कैसे प्रमुख याम्योत्तर पृथ्वी को पश्चिमी गोलार्ध और पूर्वी गोलार्ध में, जबकि भूमध्य रेखा उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध में विभाजित करती है।

ध्यान रखें

वास्तव में ग्रिनिच याम्योत्तर, पहली ज्ञात प्रमुख याम्योत्तर रेखा नहीं है। अतीत में अन्य प्रकार के याम्योत्तर भी थे। वास्तव में यूरोप से अनेक शताब्दियों पूर्व भारत की स्वयं की एक प्रमुख याम्योत्तर थी (चित्र 1.5), जिसे मध्य रेखा कहा जाता था और यह उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) के मध्य से गुजरती थी। उज्जैन अनेक शताब्दियों तक खगोल विद्या का एक प्रतिष्ठित केंद्र रहा है। लगभग 1500 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध खगोलविद वराहमिहिर भी यहाँ रहे और अपना कार्य किया।

भारतीय खगोलविद शून्य और प्रमुख याम्योत्तर सहित अक्षांश और देशांतर से परिचित थे। उज्जयिनी याम्योत्तर सभी भारतीय खगोलीय ग्रंथों में गणनाओं के लिए एक प्रमुख संदर्भ बन गया था।

इस मानचित्र में उज्जयिनी याम्योत्तर के निकट के कुछ प्राचीन शहरों को दर्शाया गया है। कुछ शहर इसके अत्यधिक निकट हैं, जबकि अन्य कुछ दूरी पर हैं। ऐसा इसलिए है कि देशांतर को मापने के लिए सही-सही समय रखना आवश्यक है और यह वर्तमान की तुलना में तब उतना सटीक नहीं था।

चित्र 1.5 — उज्जयिनी प्रमुख याम्योत्तर का प्राचीन खगोल विद्या में उपयोग किया जाता था। वृत्त से अंकित किए गए नगरों का खगोलीय ग्रंथों में उल्लेख किया गया है, जो इस याम्योत्तर पर हैं (नगरों के आधुनिक नाम उनके प्राचीन नामों के साथ दिए गए हैं)।

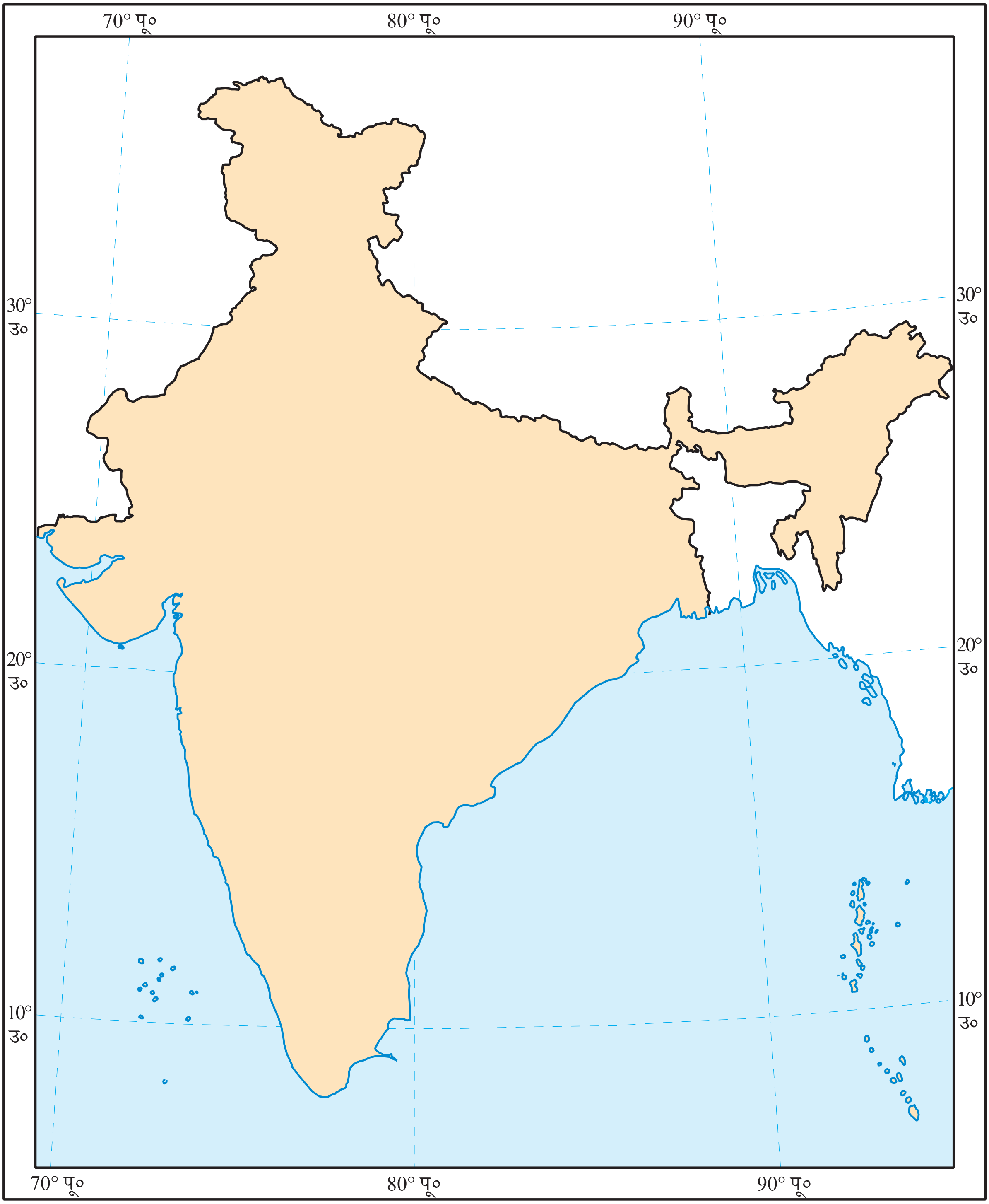

चित्र 1.6 — भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित यह मानचित्र अक्षांशों और देशांतर के याम्योत्तर के कुछ समानांतरों के साथ दर्शाया गया है। भारत का अक्षांश लगभग 8° उ० से 37° उ० तक फैला हुआ है और देशांतर लगभग 68° पू० से 97° पू० तक फैला हुआ है (दो रंगों में दर्शाया गया है)।

समय क्षेत्र (टाइम जोन) को समझना

ग्लोब को पुनः पश्चिम से पूर्व की ओर घुमाइए। इसी प्रकार से हमारा ग्रह अपनी धुरी पर चक्कर लगाता है और प्रत्येक 24 घंटे में एक चक्कर पूरा करता है। एक पूरा चक्कर 360° है, अतः इसका अर्थ है — प्रति घंटा 15^0(15×24 = 360)। अब प्रत्येक 15^0 पर देशांतर के याम्योत्तर को अंकित कीजिए। मुख्य याम्योत्तर से पूर्व की ओर जाते हुए हम 0°, 15° पू०, 30° पू०, 45° पू० प्राप्त करते हैं और इसी प्रकार 15° जोड़ते हुए 180° पू० तक पहुँचते हैं। यदि ग्रिनिच पर दोपहर के 12 बजे मध्याह्न है, तो प्रत्येक 15^0 याम्योत्तर पर स्थानीय समय का एक घंटा जुड़ता जाता है। यदि 15° पू० पर दोपहर 1:00 बजे का स्थानीय समय है, तो 30° पू० पर दोपहर 2 बजे होंगे तथा इसी क्रम में समय आगे बढ़ता है। लेकिन पश्चिम की ओर जाने पर इसके विपरीत होता है, उदाहरणतया यदि 15° प० पर स्थानीय समय प्रात: 11 बजे का है, तो 30° प० पर प्रात: 10 बजे होंगे और इसी क्रम में समय घटता जाएगा।

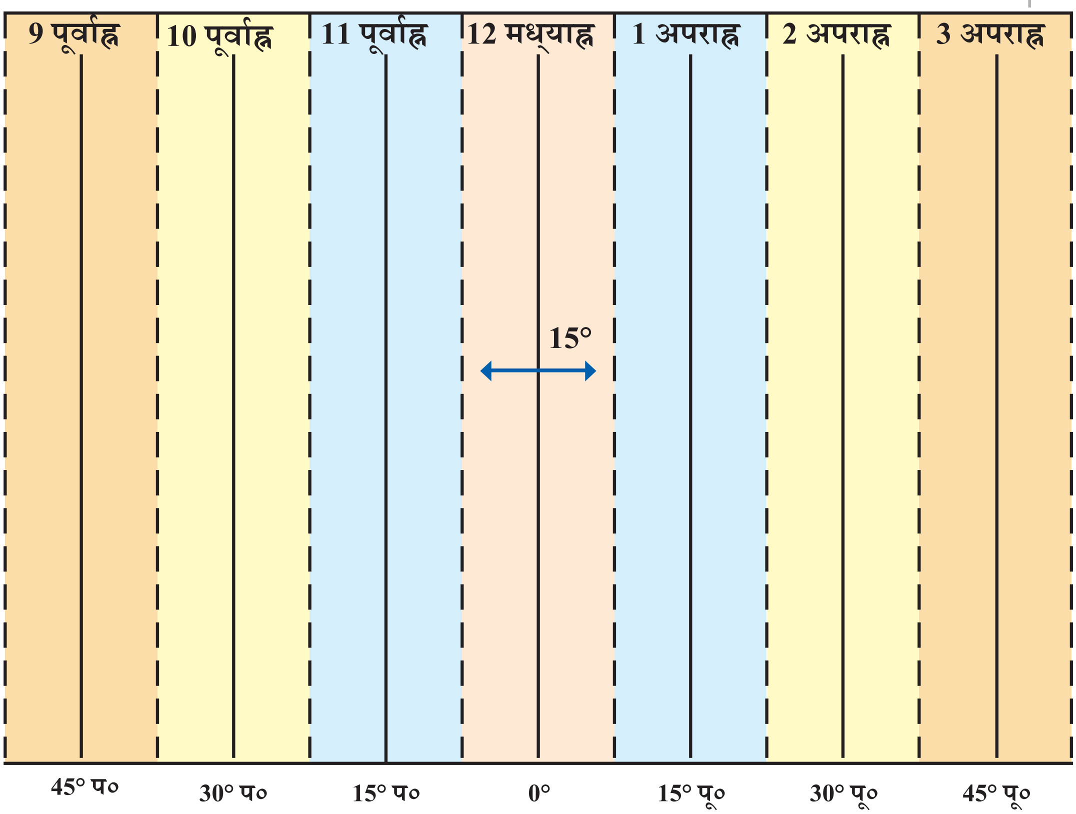

चित्र 1.7 — इस ग्राफ में प्रमुख याम्योत्तर के संदर्भ में नीचे अक्षांश और ऊपर स्थानीय समय को दर्शाया गया है। प्रत्येक रंग एक याम्योत्तर पर केंद्रित 15° का एक क्षेत्र है।

आइए पता लगाएँ

→ एक दिन ढलती दोपहर में दो मित्र, एक पोरबंदर (गुजरात) में और दूसरा तिनसुकिया (असम) में बैठे हुए फोन पर बातचीत कर रहे हैं। तिनसुकिया वाला मित्र कहता है कि असम में सूर्यास्त हो गया है और अब अंधेरा है, जबकि पोरबंदर वाला मित्र चकित होकर कहता है — "लेकिन यहाँ तो अभी भी दिन का प्रकाश है!" बताइए कि ऐसा क्यों है? और कक्षा की एक गतिविधि के रूप में इन दो शहरों के बीच स्थानीय समय के अंतर की गणना कीजिए *(संकेत – पोरबंदर और तिनसुकिया के बीच देशांतर में 30° के अंतर पर विचार कीजिए और इसके बाद आप उचित मान प्राप्त कर सकते हैं)*।

इस विधि का पृथ्वी पर किसी भी स्थान के स्थानीय समय की गणना करने में उपयोग किया जा सकता है। लेकिन यह विधि किसी देश के अंदर अनेक स्थानीय समयों के उपयोग के संदर्भ में उचित नहीं होगी। इसी कारण अधिकतर देश उनके मध्य से गुजरने वाले याम्योत्तर पर आधारित एक मानक समय को अपनाते हैं। भारतीय मानक समय (इंडियन स्टैंडर्ड टाइम या आई.एस.टी.) ग्रिनिच (जिसे ग्रिनिच मीन टाइम या जी.एम.टी. भी कहा जाता है) पर स्थानीय समय से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

आइए पता लगाएँ

गुजरात और असम में बैठे दो मित्र पुन: चर्चा करते हैं। इस उदाहरण का उपयोग स्थानीय समय और मानक समय के अंतर को स्पष्ट करने के लिए कीजिए।

यह सभी मानक समय, समय क्षेत्र में गठित किए गए हैं, जो ग्राफ में 15° के क्षेत्र (चित्र 1.7) का व्यापक रूप से पालन करते हैं। यदि पृष्ठ 21 पर दिए गए विश्व मानचित्र (चित्र 1.8) पर विचार करें तो हम देख सकते हैं कि समय क्षेत्र को विभाजित करने वाली रेखाएँ पूर्णतया सीधी नहीं होती हैं। ऐसा इसलिए है कि इन्हें अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं का पालन करते हुए प्रत्येक देश के मानक समय का ध्यान रखना पड़ता है। मानचित्र में कुछ देशों के भीतर लिखित संख्याओं को उनका मानक समय प्राप्त करने के लिए जी.एम.टी. में जोड़ें (यदि उनका एक धनात्मक चिह्न है) अथवा घटाएँ (यदि उनका ऋणात्मक चिह्न है)।

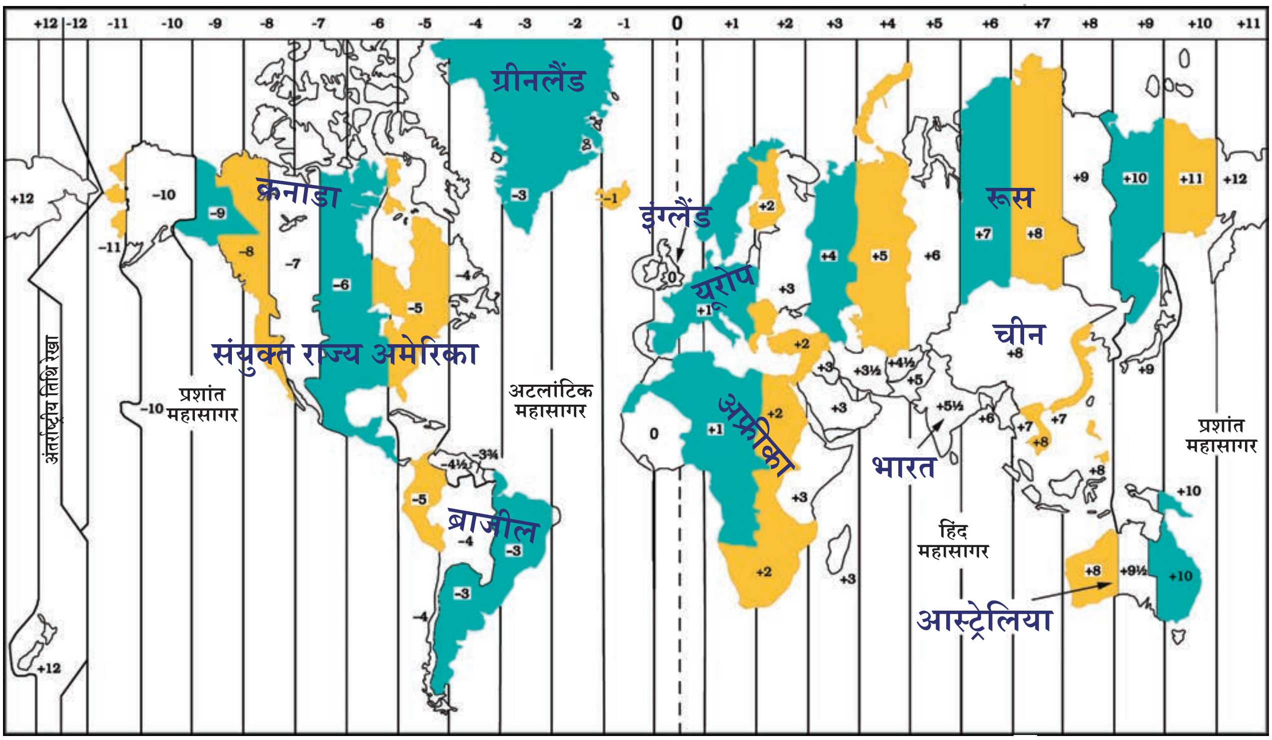

चित्र 1.8 — कुछ देशों के मानक समय (जी.एम.टी. के संदर्भ में) को दर्शाते हुए समय क्षेत्र का एक विश्व मानचित्र (ध्यान रहे कि दर्शायी गई अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ अनुमानित हैं, सटीक नहीं)।

ध्यान रखें

इस स्पष्टीकरण से यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक देश का एक मानक समय है। यह हर एक देश में एक जैसा नहीं होता। रूस, कनाडा या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश एकल समय क्षेत्र की दृष्टि से अत्यधिक विशाल हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में 6 समय क्षेत्र और रूस में 11 समय क्षेत्र हैं — जिसका अर्थ यह है कि पूर्व से पश्चिम की ओर रूस में यात्रा करने के लिए स्थानीय समय के साथ समन्वय के लिए आपको अपनी घड़ी को 10 बार पुनर्समायोजित करना पड़ेगा।

इसी प्रकार, चित्र 1.9 में भारत पर केंद्रित ग्लोब कुछ देशों के जी.एम.टी. के संबंध में मानक समय दर्शाता है।

ग्रिनिच पर स्थिर मुख्य याम्योत्तर, जिसके विपरीत की रेखा लगभग 180° देशांतर पर है, उसे **अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा** कहा जाता है।

जैसा कि आप मानचित्र में देख सकते हैं, +12 और –12 समय क्षेत्र इस रेखा पर एक-दूसरे को छूते हैं। यदि आप इसे समुद्री जहाज या विमान से पार करते हैं, तो आपके द्वारा अपनी घड़ी की तिथि में परिवर्तन करना आवश्यक है। यदि आप पूर्व की ओर से यात्रा करते हुए इसे पार करते हैं, तो आप एक दिन (मान लीजिए, सोमवार से रविवार)

घटाएँगे। यदि आप पश्चिम की ओर से इसे पार करते हैं, तो आप एक दिन (रविवार से सोमवार) जोड़ेंगे। हमने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा लगभग 180° के देशांतर पर है, लेकिन यह कुछ देशों में एक ही दिन का विभाजन होने से बचने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी होकर गुजरती है।

चित्र 1.9 — अफ्रीका और यूरेशिया के कुछ समय क्षेत्र (जी.एम.टी. के संदर्भ में)

आगे बढ़ने से पहले...

- मानचित्र पृथ्वी के क्षेत्र, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, को दर्शाने के लिए एक अत्यधिक उपयोगी साधन है। मानचित्रों के मुख्य घटक दूरी, दिशा और प्रतीक चिह्न हैं।
- पृथ्वी के प्रत्येक स्थान की एक स्थिति है जिसको अक्षांशों और देशांतरों के एक ग्रिड — पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली (भूमध्य रेखा के समानांतर) और उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली (एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक) काल्पनिक रेखाओं की सहायता से सही-सही परिभाषित किया जा सकता है।

- देशांतर से समय निर्धारित किया जाता है और समय क्षेत्र को भी परिभाषित किया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा मुख्य याम्योत्तर के विपरीत लगभग 180° के देशांतर पर अवस्थित है। अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा को पार करने पर तिथि में एक दिन का परिवर्तन होता है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. इस पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 10 और अध्याय 5 में चित्र 5.2 के संदर्भ में, 2.5 से.मी. = 500 कि.मी. का पैमाना लेते हुए, नर्मदा नदी के **मुहाने** से गंगा नदी के मुहाने तक की वास्तविक दूरी की गणना कीजिए *(संकेत – मानचित्र पर अपनी माप को एक सरल संख्या में पूर्णांकित कीजिए)*।
2. जब लंदन में दोपहर 12 बजे का समय होता है, तो उसी समय भारत में सायं के 5:30 बजते हैं, क्यों?
3. हमें मानचित्र में प्रतीक चिह्नों और रंगों की आवश्यकता क्यों होती है?
4. आपके घर या विद्यालय की आठ दिशाओं में क्या-क्या स्थित है? पता लगाइए।
5. स्थानीय समय और मानक समय के बीच क्या अंतर है? समूहों में चर्चा कीजिए और फिर प्रत्येक समूह 100–150 शब्दों तक का एक उत्तर लिखे। उत्तरों की तुलना कीजिए।
6. दिल्ली और बेंगलुरु के अक्षांश क्रमशः 29° उ० और 13° उ० हैं और उनका देशांतर लगभग 77° पू० एक ही है। दोनों नगरों के बीच स्थानीय समय में कितना अंतर होगा?
7. निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत का चिह्न लगाइए और इसे एक या दो वाक्यों में समझाइए।
   - अक्षांशों के सभी समानांतरों की लंबाई समान होती है।
   - देशांतर के एक याम्योत्तर की लंबाई भूमध्य रेखा की आधी होती है।
   - दक्षिण ध्रुव का अक्षांश 90° द० है।
   - असम में स्थानीय समय और आई.एस.टी. (भारतीय मानक समय) एक ही है।

मुहाना
वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में मिलती है।

- समय क्षेत्र को पृथक करने वाली रेखाएँ देशांतर के याम्योत्तर के समान होती हैं।
- भूमध्य रेखा एक अक्षांश वृत्त भी है।
- नीचे दी गई शब्द पहेली को हल कीजिए। *(ध्यान दें – इस पहेली को हल करने के लिए अंग्रेजी भाषा के शब्दों का उपयोग कीजिए)*।

पृथ्वी पर स्थानों का पता लगाना

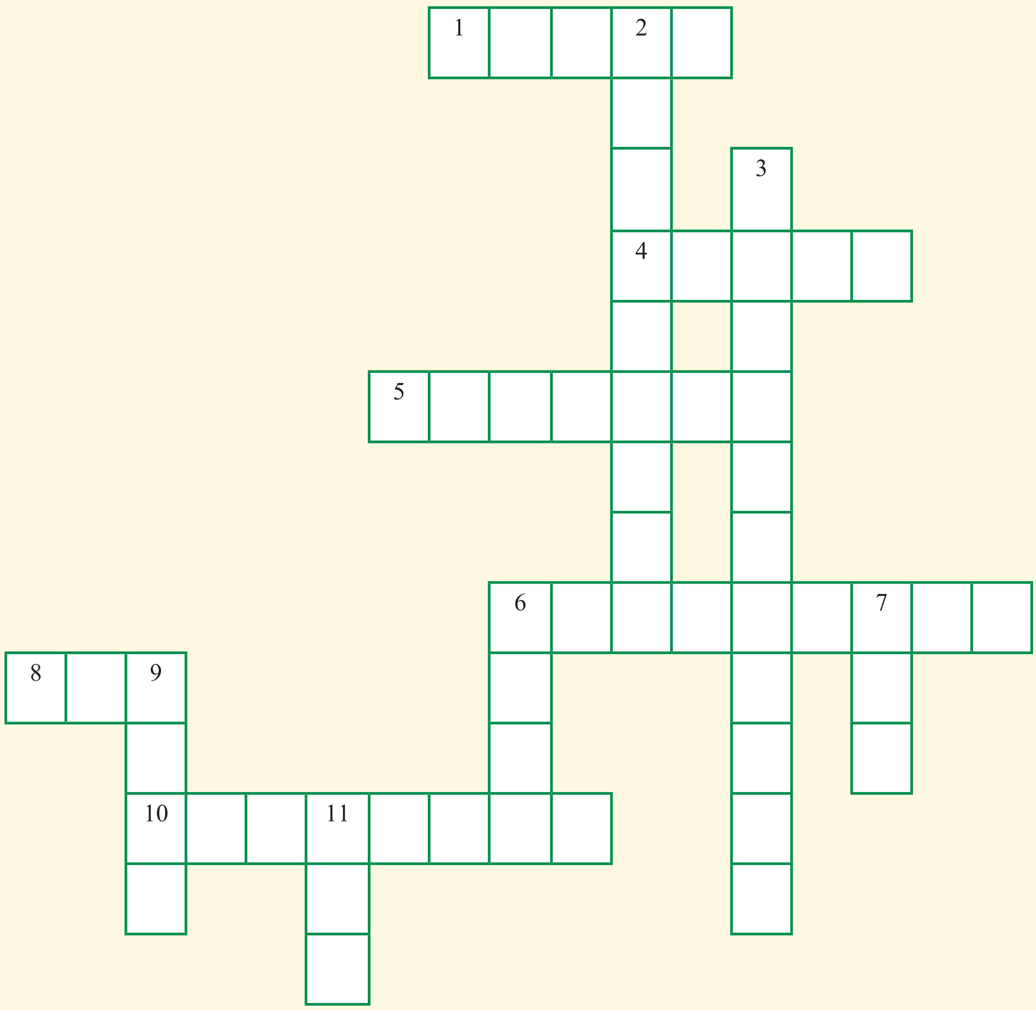

बाएँ से दाएँ

1. मानचित्र में एक वृहद क्षेत्र को लघु रूप में दिखाना **(WORLD)**
4. एक सुविधाजनक गोलाकार **(GLOBE)**
5. सबसे लंबी समानांतर अक्षांश रेखा **(EQUATOR)**
6. वह स्थान जहाँ से प्रमुख याम्योत्तर गुजरती है। **(GREENWICH)**
8. मार्ग को खोजने का सरल साधन **(MAP)**
10. भूमध्य रेखा से दूरी का एक माप **(LATITUDE)**

ऊपर से नीचे

2. प्रमुख याम्योत्तर से दूरी का एक माप **(LONGI TUDE)**
3. ये दोनों मिलकर एक स्थान का पता लगाने में सहायक होते हैं। **(COORDINATES)**
6. जो अक्षांश और देशांतर मिलकर बनाते हैं। **(GRID)**
7. वह समय, जिसका हम भारत में अनुसरण करते हैं। **(IST)**
9. विश्व के शीर्ष पर **(POLE)**
11. एक रेखा के लिए शब्द संक्षेप, जिसके आर-पार दिन और तिथि में परिवर्तन होता है। **(IDL)**

नूडल्स

*नोट्स (Notes) और डूडल्स (Doodles) को मिलाकर बना शब्द-संक्षेप।
इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

अध्याय 2

महासागर एवं महाद्वीप

महासागर ही सब कुछ है। यह पृथ्वी के 7/10 वें भाग पर व्याप्त है। इसकी श्वास शुद्ध एवं स्वस्थ है। यह विस्तृत निर्जन स्थल है, जहाँ मानव कभी अकेला नहीं हो सकता क्योंकि यहाँ वह जीवन का अपने आस-पास ही अनुभव करता है। महासागर प्रकृति का विस्तृत भंडार है। दूसरे शब्दों में कहें, तो संसार का आरंभ महासागरों से हुआ है और कौन जानता है कि इसका अंत इसी में न हो...

— जूल्स वर्ने (1870)

चित्र 2.1 — अंतरिक्ष से पृथ्वी का दृश्य (छायाचित्र लूनर रिकॉनिसेंस ऑर्बिटर द्वारा)। इस दृश्य के मध्य में प्रशांत महासागर, बाईं ओर अफ्रीका, ऊपर की ओर भारत एवं एशिया के भाग, दाईं ओर आस्ट्रेलिया एवं नीचे की ओर अंटार्कटिक को दर्शाया गया है।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. महासागर एवं महाद्वीप क्या हैं? उनके नाम क्या हैं एवं उनका वितरण कैसा है?
2. महासागर एवं महाद्वीप पृथ्वी पर जीवन को, जिसमें मानव जीवन भी सम्मिलित है, किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

0683CH02

आइए, अब हम अपने ग्लोब की ओर लौटते हैं और इसे धीरे-धीरे घुमाते हैं। आप चंद्रमा से लिए गए पृथ्वी के चित्र को भी देख सकते हैं। आपको सबसे अधिक कौन-सा रंग दिखाई देता है? निश्चित ही आपको नीला रंग दिख रहा होगा, परंतु यह क्या दर्शाता है? आपने उत्तर का अनुमान लगा लिया होगा— 'जल'। इसका अर्थ है कि पृथ्वी की अधिकांश सतह जल से घिरी हुई है। वास्तव में पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है। इसी कारण अंतरिक्ष से देखने पर पृथ्वी नीली दिखाई देती है। इसलिए आरंभिक अंतरिक्ष यात्रियों ने स्नेहपूर्वक पृथ्वी को 'नीला ग्रह' कहकर पुकारा।

ग्लोब पर हम जो सबसे बड़ी जलराशियाँ देखते हैं, उन्हें '**महासागर**' कहते हैं।

चित्र 2.1 में दर्शाए गए पृथ्वी के चित्र में आपको एक अन्य रंग 'भूरा' भी दिखाई देगा। यह भूमि का रंग है, जो ग्लोब के लगभग एक-चौथाई भाग पर फैला हुआ है। भूमि के एक बड़े भाग को '**भूखंड**' कहते हैं एवं भूमि के एक बड़े निरंतर विस्तार को '**महाद्वीप**' कहा जाता है।

पृथ्वी की जलवायु के निर्माण में महासागर एवं महाद्वीप दोनों महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं, जिनमें सभी जीव-जंतु, पौधे एवं मानव जीवन भी सम्मिलित हैं। हम उनके प्रभाव को अपने इतिहास, संस्कृति एवं अपने दैनिक जीवन पर भी देखते हैं।

ध्यान रखें

भारतीय नौसेना के प्रतीक चिह्न पर आदर्श वाक्य 'शं नो वरुण:' अंकित है, जिसका अर्थ है, "हे वरुण! हमारे लिए कल्याणकारी हों"। यह महासागर, आकाश तथा जल से संबंधित वैदिक देवता वरुण की स्तुति है।

पृथ्वी पर जल एवं भूमि का वितरण

जैसा कि हम देखते हैं, महासागर और महाद्वीप उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध में समान रूप से वितरित नहीं हैं।

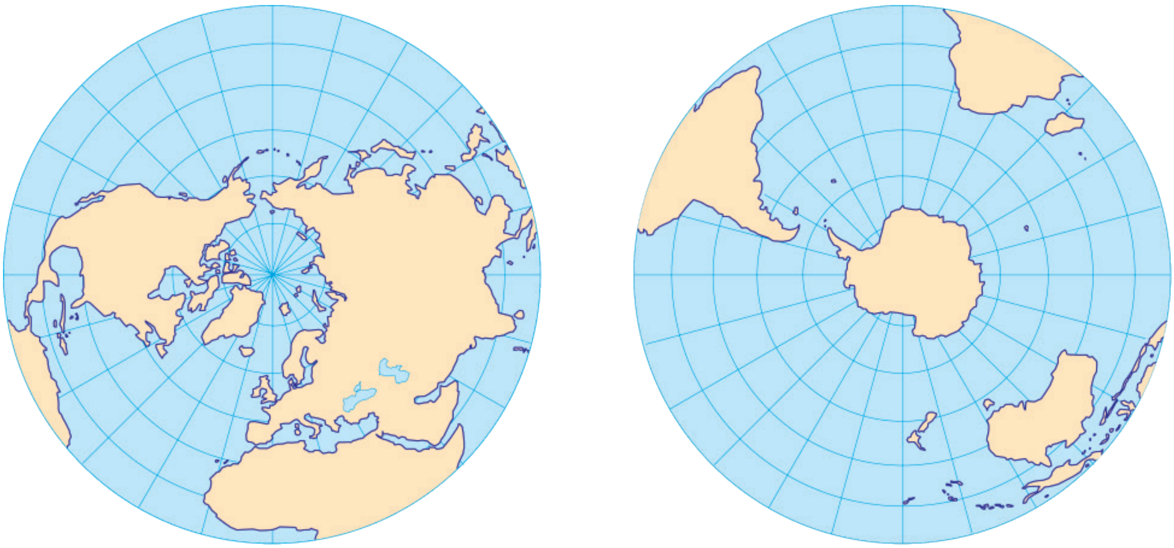

चित्र 2.2 — उत्तर ध्रुव (बाएँ) एवं दक्षिण ध्रुव (दाएँ) के ऊपर से दिखता पृथ्वी का मानचित्र

अब हम चित्र 2.2 में दर्शाए गए दो मानचित्रों का परीक्षण करते हैं। यहाँ भी नीले रंग से महासागरों एवं उनके छोटे-छोटे विस्तार जैसे – **सागर, खाड़ी (Bay & Gulf)** आदि को दर्शाया गया है।

इन शब्दों की परिभाषा पुस्तक के अंत में शब्दावली में दी गई है।

आइए पता लगाएँ

→ प्रत्येक मानचित्र में वृत्ताकार रेखाओं को क्या कहते हैं? क्या आप जानते हैं कि दोनों ध्रुवों पर मिलने वाली रेखाओं को क्या कहा जाता है? *(संकेत – आपने इनके विषय में पिछले अध्याय में पढ़ा है, परंतु यहाँ इन्हें अलग प्रकार से प्रस्तुत किया गया है)।*

→ किस गोलार्ध में अधिक जल है?

→ आपके अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी गोलार्ध में जल एवं भूमि का अनुपात कितना होगा? समूह में चर्चा कीजिए।

→ क्या सभी महासागर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं या उनके बीच कोई विभाजन है?

समुद्री जीवन

प्रवाल भित्ति

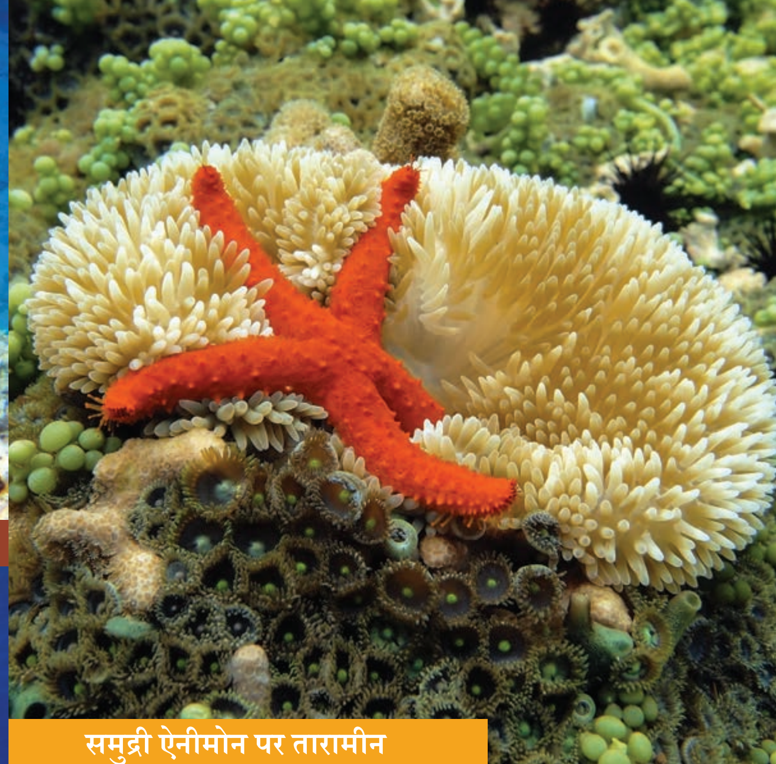
समुद्री ऐनीमोन पर तारामीन

शार्क

स्पर्म ह्वेल, माँ एवं शिशु

डॉल्फिन

उष्ण कटिबंधीय बहुरंगी मछलियों के साथ सतही प्रवाल भित्ति

शैवाल

एंपरर पेंग्विन
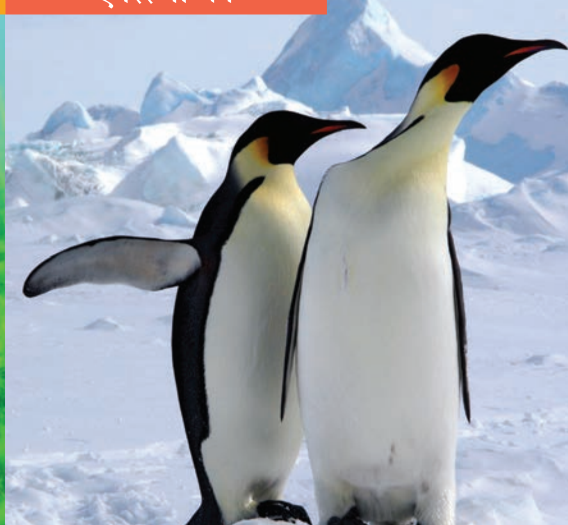

बोनेयर समुद्री टर्टल

पृथ्वी पर उपलब्ध जल का अधिकांश भाग महासागरों में है, परंतु यह जल लवणीय (खारा) है एवं मानव सहित बहुत से स्थलीय जीवों के उपभोग के लिए अनुपयोगी है। दूसरी ओर अलवणीय जल (पेय जल) का पृथ्वी के जल संसाधनों में अत्यल्प हिस्सा है। यह हिमनद (ग्लेशियर), नदियों, झीलों, वायुमंडल एवं भूमिगत जल के रूप में व्याप्त है।

आइए विचार करें

- जब पृथ्वी पर जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, फिर भी 'जल की कमी' अथवा 'जल संकट' की इतनी चर्चा क्यों सुनाई देती है?
- जल संरक्षण के कौन-कौन से उपायों से आप अवगत हैं? इनमें से किसका उपयोग आपने अपने घर, विद्यालय, गाँव, उपनगरों एवं नगरों में होते देखा है?

महासागर

पृष्ठ 32 पर दिए गए चित्र 2.3 में विश्व के मानचित्र में हम पाँच महासागरों— प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक महासागर एवं दक्षिणी (अथवा अंटार्कटिक) महासागर को देखते हैं।

हमने यहाँ पाँच महासागरों के नाम बताए हैं, जैसा कि मानचित्र से यह स्पष्ट है कि ये वास्तव में अलग-अलग नहीं हैं। महासागरों का यह सीमांकन प्रचलन से अधिक कुछ नहीं हैं, क्योंकि प्राकृतिक जगत ऐसी किन्हीं भी सीमाओं का पालन नहीं करता है। उदाहरणतया समुद्री जल विभिन्न महासागरों में बहता रहता है जो विविधतापूर्ण **समुद्री** जीवन को समृद्ध करने में सहायक है। अनेक प्रकार के पौधों एवं जीव-जंतुओं की विभिन्न प्रजातियाँ इन महासागरों में पाई जाती हैं।

समुद्री **वनस्पति जगत** में छोटे पौधे एवं सभी समुद्री शैवाल (Algae and Seaweeds) सम्मिलित हैं। समुद्री **प्राणि जगत** में हजारों प्रजातियों की रंगीन मछलियाँ, डॉल्फिन, ह्वेल और अनगिनत रहस्यमयी गहरे समुद्री जीव शामिल हैं। सूर्य की रोशनी वाली सतह से लेकर अंधेरी गहराइयों तक समुद्र के प्रत्येक क्षेत्र में जीवन के विविध रूप पाए जाते हैं।

समुद्री
महासागरों एवं सागरों में पाए जाने वाले अथवा उससे संबंधित

वनस्पति जगत
किसी विशेष क्षेत्र अथवा कालखंड में पाए जाने वाले पेड़-पौधे

प्राणि जगत
किसी विशेष क्षेत्र अथवा कालखंड में पाए जाने वाले जीव-जंतु

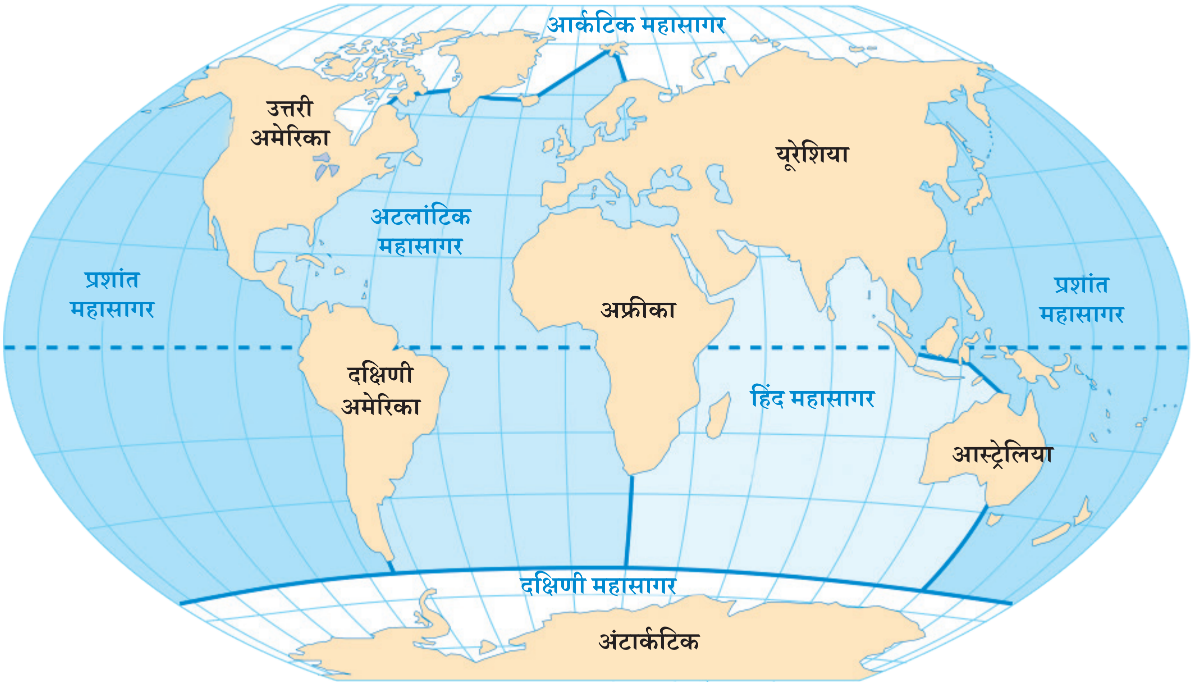

चित्र 2.3 — पाँच महासागरों, उनकी पारंपरिक सीमाओं और महाद्वीपों को प्रदर्शित करता हुआ विश्व का मानचित्र

आइए पता लगाएँ

नीचे दी गई तालिका में बताइए कि पाँच महासागर किस गोलार्ध अथवा गोलार्धों में अवस्थित हैं।

महासागरों के नाम	उत्तरी गोलार्ध	दक्षिणी गोलार्ध
प्रशांत महासागर		
अटलांटिक महासागर		
हिंद महासागर		
दक्षिणी महासागर		
आर्कटिक महासागर		

मानचित्र में देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रशांत महासागर सबसे बड़ा है। दूसरा सबसे बड़ा महासागर अटलांटिक है। हिंद महासागर तीसरे स्थान पर है, जबकि दक्षिणी महासागर चौथे स्थान पर है। सबसे छोटा महासागर आर्कटिक है।

ध्यान रखें

- जैसा कि महासागरों के मानचित्र से स्पष्ट है कि हिंद महासागर का विस्तार उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका, पूर्व में आस्ट्रेलिया एवं दक्षिण में दक्षिणी महासागर तक है।
- भारत के दोनों ओर हिंद महासागर के दो भाग दिखाई देते हैं — पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी।

चित्र 2.4 — भारत का यह मानचित्र चित्र 1.6 जैसा ही है, किंतु इसमें अरब सागर व बंगाल की खाड़ी को भी दर्शाया गया है। साथ ही इसमें भारत के दो प्रमुख द्वीप समूहों को भी दर्शाया गया है।
(द्वीप समूहों से संबंधित जानकारी पृष्ठ 36 पर दी गई है।)

महासागर और आपदाएँ

इस अध्याय के आरंभ में दिए गए पृथ्वी के चित्र को फिर से देखिए। आपने ध्यान दिया होगा कि पूरी पृथ्वी पर कुछ सफेद आकृतियाँ दिखाई देती हैं। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वे क्या हैं? वे बादलों के विशाल समूह हैं। ये बादल महाद्वीपों में वर्षा लाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में हर गर्मियों में होने वाली मानसूनी वर्षा महासागरों से उत्पन्न होती है। इस वर्षा के अभाव में हमारी कृषि और पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा। महासागर तूफानों को भी जन्म देते हैं — अत्यधिक वर्षा वाली विध्वंसक घटनाएँ अथवा अति प्रचंड हवाएँ जैसे कि चक्रवात, विश्व के तटीय क्षेत्रों में दूर-दूर तक क्षति पहुँचाते हैं।

एक अन्य प्राकृतिक आपदा सुनामी भी समुद्र में उत्पन्न होती है। यह विशाल और शक्तिशाली तरंगें होती हैं जो महासागर तल में तीव्र भूकंप अथवा ज्वालामुखी के फटने के कारण आती हैं। सुनामी हजारों किलोमीटर तक जाकर तटीय क्षेत्रों को डुबा सकती है जिससे व्यापक स्तर पर हानि होती है।

ध्यान रखें

- 26 दिसंबर 2004 के दिन, हिंद महासागर के आस-पास भारत और अन्य 13 देश प्रचंड सुनामी से प्रभावित हुए। यह सुनामी इंडोनेशिया में आए भूकंप के कारण आई थी। इस आपदा में दो लाख से अधिक लोगों की जान गई। भारत में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह (पृष्ठ 33 पर चित्र 2.4 देखिए और पृष्ठ 36 पर द्वीपों से संबंधित उपखंड को भी देखिए), तमिलनाडु और केरल के तटीय क्षेत्र इससे भीषण रूप से प्रभावित हुए और जान-माल की अत्यधिक क्षति हुई।
- इस प्रकार की सुनामी कभी-कभी आती है, किंतु यह अत्यंत विध्वंसकारी होती है। हालाँकि तट से टकराने से पहले इसका अनुमान लगाया जा सकता है। बहुत से देश इस प्रकार की 'पूर्व चेतावनी प्रणाली' हेतु मिल-जुलकर काम रहे हैं। विशेषकर भारत समेत बहुत से देश 'हिंद महासागर सुनामी चेतावनी प्रणाली' में सहयोग कर रहे हैं। इससे जान-माल की रक्षा करने के उपायों में सहायता मिलती है।
- जिन घटनाओं के कारण जान और माल की क्षति होती है, उन्हें **आपदा प्रबंधन** के अंतर्गत नियंत्रित किया जाता है। भारत में सभी प्रकार की आपदाओं का सामना करने के लिए 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' है (अगले अध्याय में हम कुछ अन्य उदाहरण देखेंगे)।

महाद्वीप

महासागरों के मानचित्र (चित्र 2.3) पर महाद्वीपों को भी दर्शाया गया है। आप कितने महाद्वीपों को गिन सकते हैं? इसका उत्तर इतना सरल नहीं है क्योंकि इनकी गिनती कई प्रकार से की जा सकती है। यह हमारी रुचि पर निर्भर करता है कि हम चार से सात के बीच किसी भी संख्या की सूची बना सकते हैं! इसके कारण निम्नलिखित हैं—

- उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका को सामान्यत: दो महाद्वीपों में गिना जाते है, परंतु यदि देखा जाए तो यह एक ही भूखंड है। इन्हें एक भी समझा जा सकता है।
- यूरोप और एशिया को सामान्यत: दो महाद्वीप माना जाता है, यद्यपि मानचित्र में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वह एक ही भूखंड है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारणों से यूरोप का विकास एशिया के विकास से बहुत भिन्न प्रकार से हुआ है, इसलिए

इन्हें दो महाद्वीपों के रूप में देखा जा सकता है। हालाँकि भूगर्भशास्त्री सामान्यत: इन्हें एक ही महाद्वीप मानते है जिसे 'यूरेशिया' कहा जाता है।

- अफ्रीका और यूरेशिया को सामान्यत: दो महाद्वीप समझा जाता है और कभी-कभी एक भी समझा जाता है।

तालिका में महाद्वीपों की अलग-अलग प्रकार की गिनती को सार रूप में लिखिए—

महाद्वीपों की गिनती	
चार महाद्वीप	अफ्रीका-यूरेशिया, अमेरिका, अंटार्कटिक, आस्ट्रेलिया
पाँच महाद्वीप	अफ्रीका, अमेरिका, अंटार्कटिक, आस्ट्रेलिया, यूरेशिया
छह महाद्वीप	अफ्रीका, अंटार्कटिक, आस्ट्रेलिया, यूरेशिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका (पृष्ठ 32 पर चित्र 2.3 में इसे दर्शाया गया है)
सात महाद्वीप	अफ्रीका, अंटार्कटिक, आस्ट्रेलिया, एशिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, यूरोप

व्यावहारिक रूप से सात महाद्वीपों की अंतिम सूची को ही व्यापक रूप से अपनाया और प्रयोग में लाया जाता है।

ध्यान रखें

आपने ओलंपिक खेलों के प्रतीकों में से एक प्रतीक, ओलंपिक के पाँच छल्लों को अवश्य देखा होगा। ये छल्ले विश्व-भर से खिलाड़ियों के एकत्र होने का प्रतीक हैं। इन छल्लों को पाँच बसे हुए महाद्वीपों— अफ्रीका, अमेरिका, एशिया, आस्ट्रेलिया और यूरोप का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था।

आइए, अब पृष्ठ 36 पर दिए आरेख को देखें जो सात महाद्वीपों की सूची पर आधारित है। यह उनके वास्तविक आकार को नहीं, अपितु सापेक्षिक आकार को दर्शाता है।

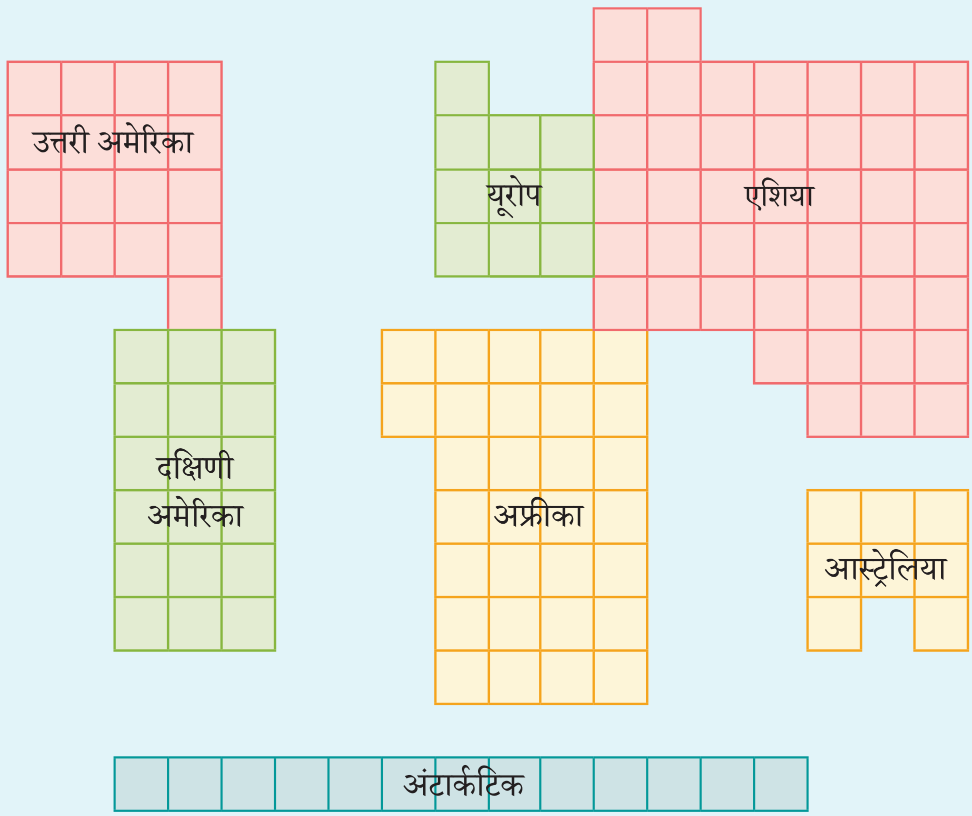

आइए पता लगाएँ

- → वर्गों की संख्या को गिनिए और सबसे बड़े एवं सबसे छोटे महाद्वीप का नाम बताइए।
- → कौन-सा महाद्वीप बड़ा है — उत्तरी अमेरिका अथवा दक्षिणी अमेरिका? अफ्रीका अथवा उत्तरी अमेरिका? अंटार्कटिक अथवा आस्ट्रेलिया?
- → आरेख में यूरोप और एशिया को एक ही रंग से भरिए और उसे यूरेशिया नाम दीजिए। उसके आकार की तुलना दक्षिणी अमेरिका से कीजिए।
- → छोटे महाद्वीप से लेकर बड़े महाद्वीप तक की सूची बनाइए।

द्वीप

यदि आपने इस अध्याय के आरंभ में दिए गए दो मानचित्रों (चित्र 2.2 और 2.3) को ध्यानपूर्वक देखा हो, तो आपने पाया होगा कि महाद्वीपों में संपूर्ण भूखंड सम्मिलित नहीं हैं। भूमि के कुछ छोटे-छोटे भाग छूट गए हैं। चारों ओर जल से घिरे हुए भूखंड को **द्वीप** कहा जाता है। महाद्वीप भी चारों ओर जल से घिरे होते हैं, किंतु आकार में बड़े होने के कारण उन्हें द्वीप नहीं कहा जाता है। इस ग्रह पर विभिन्न आकार के लाखों द्वीप हैं।

ध्यान रखें

- विश्व का सबसे बड़ा द्वीप ग्रीनलैंड है (ग्लोब अथवा मानचित्र पर उसे ढूँढ़िए)। उसके आकार को समझने के लिए आपको भारत के सबसे बड़े 10 राज्यों के क्षेत्रफल को जोड़ना होगा।
- भारत में 1,300 से अधिक द्वीप हैं। इनमें मुख्य रूप से दो द्वीप समूह हैं— बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एवं अरब सागर में लक्षद्वीप द्वीप समूह (चित्र 2.4 देखिए)।
- 1981 से भारतीय अंटार्कटिक कार्यक्रम के अंतर्गत अंटार्कटिक में अन्वेषण किया जा रहा है। अंटार्कटिक ऐसा महाद्वीप है, जहाँ की जलवायु बहुत अधिक ठंडी और कठोर है (चित्र 2.1 में नीचे सफेद रंग के फैलाव को देखिए जो कि अधिकांशत: हिम है)। 1983 में भारत ने अंटार्कटिक में 'दक्षिण गंगोत्री' नामक पहला वैज्ञानिक बेस स्टेशन स्थापित किया था। बाद में दो और बेस स्टेशन स्थापित किए गए। इस सुदूर प्रदेश में भारतीय वैज्ञानिकों के लगभग 40 दलों ने विशेष रूप से जलवायु और पर्यावरण के विकास पर शोध कार्य किए हैं। वैज्ञानिकों के रहने के लिए यहाँ बने आवास में एक पुस्तकालय और यहाँ तक कि डाकघर भी है।

महासागर और जीवन

महासागर और महाद्वीप पर्यावरण के अत्यावश्यक भाग हैं। भले ही हम ध्यान न दें, पर ये हमारे जीवन के अधिकांश पक्षों को प्रभावित करते हैं। हमने उल्लेख किया है कि महासागरों से महाद्वीपों पर वर्षा होती है; यह पृथ्वी के जलचक्र का भाग है जिसे आप आगे विज्ञान में पढ़ेंगे। उदाहरणार्थ, महासागरों के बिना वर्षा नहीं होगी तो पृथ्वी मरुस्थल बन जाएगी। यह भी ध्यातव्य है कि दुनिया-भर की आधी ऑक्सीजन महासागर का वनस्पति जगत उत्पन्न करता है। इसीलिए इन्हें 'पृथ्वी के फेफड़े' कहा जाता है। इस प्रकार महासागर जलवायु को नियंत्रित और पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

महासागर अनेक प्रकार से मानव जाति को प्रभावित करते हैं। आरंभिक काल से ही एक जगह से दूसरी जगह जाने, सभी प्रकार के सामानों के व्यापार, सैनिक अभियान संचालित करने और भोजन हेतु मछली पकड़ने के लिए लोगों ने महासागरों और सागरों की यात्रा की है। महासागरों ने पूरी दुनिया के तटीय क्षेत्रों पर रहने वाले लोगों की संस्कृति को भी पोषित किया है। उन सभी संस्कृतियों की किंवदंतियों और कहानियों में समुद्र, समुद्री देवताओं और देवियों, समुद्री दैत्यों और समुद्र के कोषों— महासागर के खतरों और उनके आशीर्वाद की बातें मिलती हैं।

ध्यान रखें

हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में महासागर की महत्वपूर्ण भूमिका को याद रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 8 जून को विश्व महासागर दिवस के रूप में घोषित किया है, क्योंकि महासागर भोजन और औषधि के प्रमुख स्रोत और जैवमंडल के महत्वपूर्ण भाग के रूप में हमारे ग्रह के फेफड़े के रूप में कार्य करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह पता चलता है कि मानव की बढ़ती सामुद्रिक गतिविधियों ने महासागरों को प्रदूषित किया है। हम प्रतिवर्ष लाखों टन प्लास्टिक कचरा समुद्र में फेंकते हैं, जो समुद्री जीव-जंतुओं का जीवन संकट में डालता है। प्रदूषण के और भी बहुत से प्रकार होते हैं। परिणामस्वरूप समुद्री पर्यावरण पर खतरा मँडरा रहा है। समुद्रों में आवश्यकता से अधिक मछली पकड़ना भी समुद्री जीवन के पतन का एक और कारण है। हम सभी का सामूहिक दायित्व है कि पृथ्वी और मानवता के भविष्य के लिए महासागरों को बचाने का प्रयास करें।

आगे बढ़ने से पहले...

- पृथ्वी की सतह पर विस्तृत जलाशयों को 'महासागर' और विशाल भूखंडों को 'महाद्वीप' कहा जाता है। महासागर आपस में जुड़े हुए हैं। महाद्वीपों को विभिन्न प्रकार से गिना जा सकता है, किंतु सामान्यत: इन्हें सात महाद्वीपों के रूप में गिना जाता है।
- दक्षिणी गोलार्ध की तुलना में उत्तरी गोलार्ध में स्थल भाग अधिक है।
- महासागर सभी प्रकार के समुद्री जीवन को पोषित करते हैं और विश्व की जलवायु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत्यधिक मानवीय गतिविधियों के कारण इन पर गंभीर प्रभाव पड़ा है और इन्हें सामूहिक रूप से संरक्षित करने की आवश्यकता है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए—

   (क) महाद्वीप

   (ख) महासागर

   (ग) द्वीप

2. मानचित्र बनाइए— इस अध्याय में दिए मानचित्रों को देखे बिना अपने हाथ से कागज पर महाद्वीपों का मानचित्र बनाइए और इसमें रंग भरिए। इसके बाद इस अध्याय में दिए गए महासागरों और महाद्वीपों के मानचित्र के साथ इसकी तुलना कीजिए।

3. आइए, करके देखें— नीचे दिए गए विश्व के मानचित्र में सभी महाद्वीपों और महासागरों के नाम लिखिए।

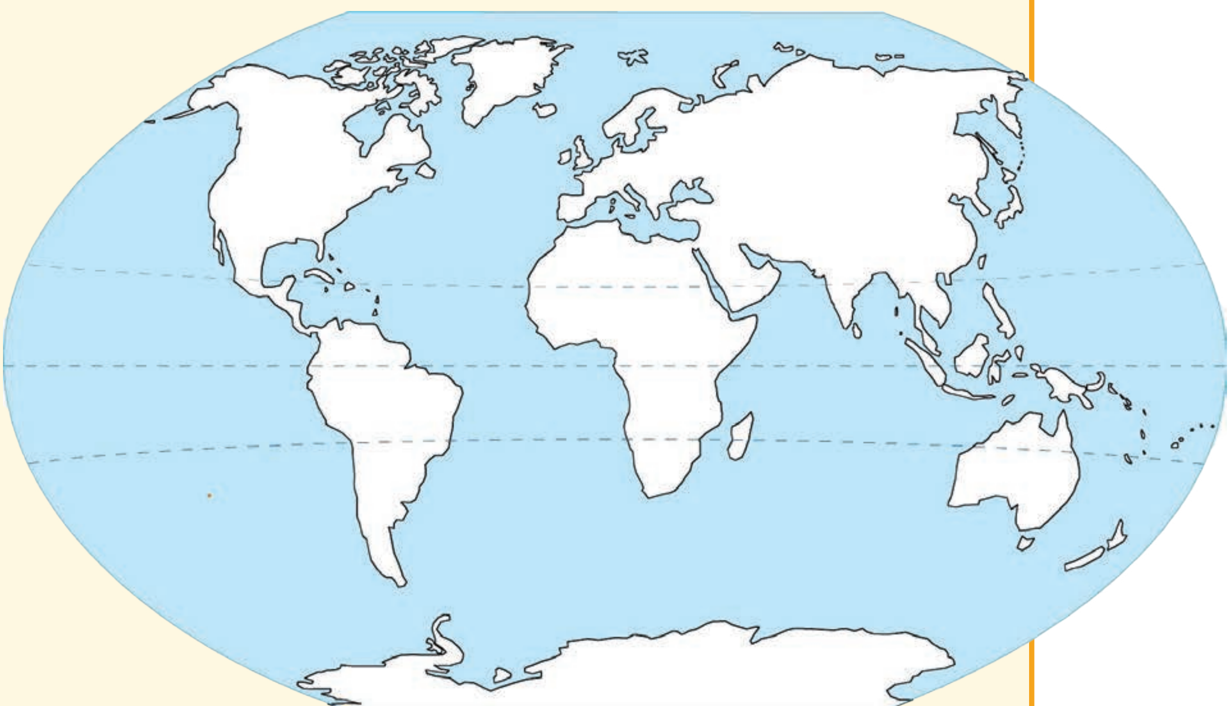

4. वर्ग पहेली को हल कीजिए (पहेली को हल करने के लिए अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग कीजिए।)

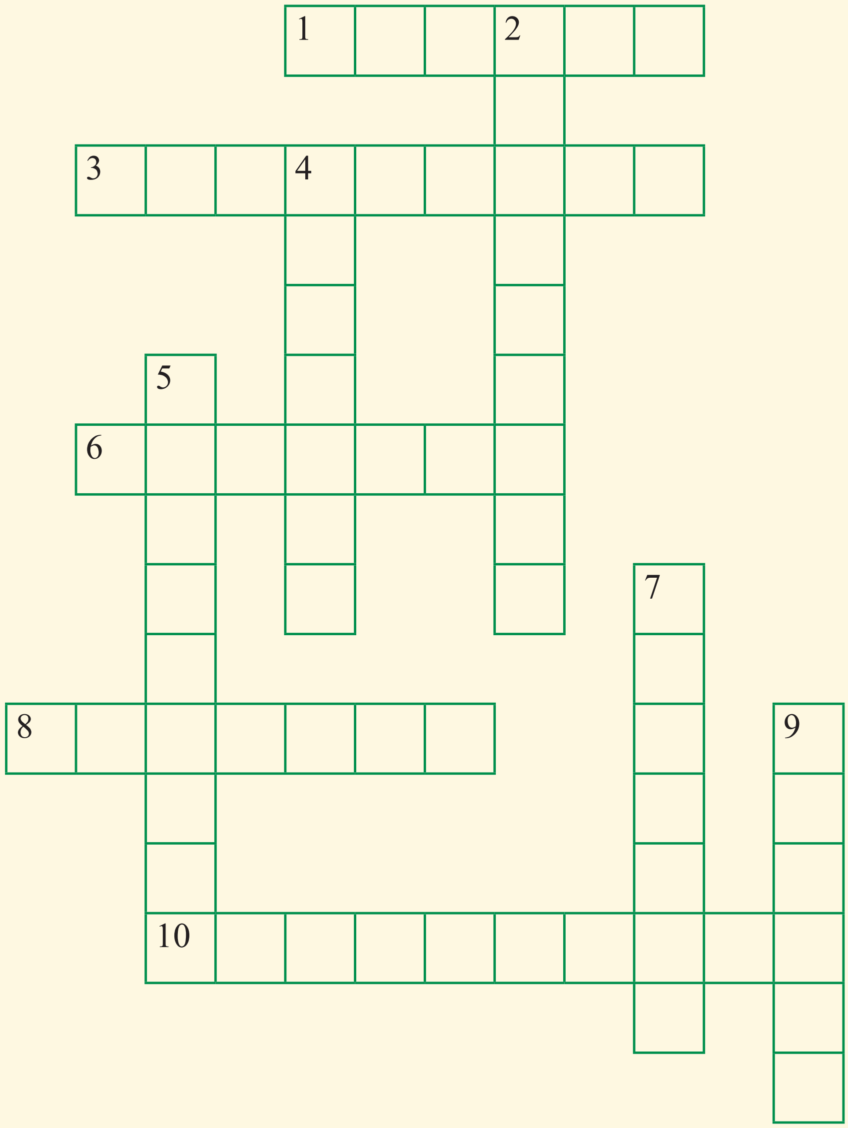

बाएँ से दाएँ

1. महासागरों द्वारा प्रचुर मात्रा में उत्पन्न **(OXYGEN)**
3. बहुत बड़ा भूखंड **(CONTINENT)**
6. एक बड़ा महाद्वीप, भारत जिसका भाग है। **(EVRASIA)**
8. महासागरों में प्रदूषण का मुख्य स्रोत **(PLASTIC)**
10. सबसे ठंडा महाद्वीप **(ANTARCTICA)**

ऊपर से नीचे

2. पृथ्वी पर सबसे बड़ा द्वीप **(GREEN LAND)**
4. महासागरों से उत्पन्न होने वाली बहुत बड़ी विध्वंसकारी लहर **(TSUNAMI)**
5. सबसे छोटा महाद्वीप **(AUSTRALIA)**
7. पृथ्वी पर सबसे बड़ी जलराशि **(ISLAND)**
9. वह भूखंड (महाद्वीप नहीं) जो चारों ओर सागर या महासागर से घिरा है। **(ISLAND)**

अध्याय 3

स्थलरूप एवं जीवन

मनुष्यों के भार से मुक्त; अनेक प्रकार की ऊँचाइयों, ढलानों तथा विशाल समतल भूमि से युक्त; अनेक प्रकार की शक्तियों से संपन्न पेड़-पौधों को आधार प्रदान करती हुई, हम सभी के लिए विस्तार को प्राप्त हो तथा अपनी संपन्नता को प्रदर्शित करे। पृथ्वी मेरी माता है तथा मैं उसकी संतान।

— अथर्ववेद, 'भूमि सूक्त' (पृथ्वी के लिए स्तोत्र)

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *स्थलरूपों के प्रमुख प्रकार कौन-से हैं और जीवन तथा संस्कृति के लिए इनका क्या महत्व है?*
2. *प्रत्येक स्थलरूप के साथ संबंधित जीवन की क्या चुनौतियाँ एवं अवसर हैं?*

0683CH03

परिचय

अन्य स्तनधारी जीवों के समान, मानव भी पृथ्वी पर निवास करता है। जैसा कि आपने देखा है, भूमि के अनेक रूप और विशेषताएँ हैं। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में इसका स्वरूप बहुत परिवर्तित हो जाता है। मान लीजिए कि आप झारखंड के छोटा नागपुर क्षेत्र से सड़क द्वारा यात्रा कर रहे हैं और उत्तर प्रदेश के प्रयागराज पहुँचते हैं और फिर उत्तराखंड में अल्मोड़ा तक जाते हैं। इस रास्ते में आप अलग-अलग दृश्यभूमि (लैंडस्केप) को देखेंगे। वास्तव में, आपको तीन प्रकार के स्थलरूप (लैंडफॉर्म्स) दिखाई देंगे, जिनके बारे में हम आगे चलकर अन्वेषण करेंगे।

आइए पता लगाएँ

→ कक्षा की गतिविधि के रूप में चार अथवा पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाइए और विद्यालय के आस-पास के क्षेत्रों का अवलोकन कीजिए। आपको किस प्रकार की दृश्यभूमि दिखाई देती है? क्या कुछ किलोमीटर की दूरी पर दृश्यभूमि में कोई परिवर्तन दिखाई देता है? क्या लगभग 50 किलोमीटर के भीतर परिदृश्य में बदलाव होगा? अन्य समूहों द्वारा दी गई जानकारी के साथ इनकी तुलना कीजिए।

→ इन्हीं समूहों के साथ भारत के किसी भी ऐसे क्षेत्र की यात्रा के बारे में चर्चा कीजिए, जहाँ वे जा चुके हैं। उन क्षेत्रों में दिखाई देने वाली विभिन्न प्रकार की दृश्यभूमियों की सूची बनाइए। अन्य समूहों द्वारा दी गई जानकारी के साथ इनकी तुलना कीजिए।

तुंगता (एल्टीट्यूड) समुद्र तल से किसी वस्तु/लक्ष्य की ऊँचाई। उदाहरणार्थ— पर्वत की ऊँचाई, एक उड़ती हुई चिड़िया अथवा उड़ते हुए वायुयान की ऊँचाई, एक उपग्रह की ऊँचाई।

स्थलरूप, पृथ्वी की सतह का एक भौतिक स्वरूप है। स्थलरूप लाखों वर्षों में आकार लेते हैं और पर्यावरण तथा जीवन के साथ इनका महत्वपूर्ण संबंध है। इन्हें व्यापक रूप से तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है— **पर्वत, पठार और मैदान** (चित्र 3.1)।

इन स्थलरूपों में विभिन्न प्रकार की जलवायु और अलग-अलग प्रकार के पेड़-पौधे तथा जीव-जंतु पाए जाते हैं। मानव ने सभी स्थलरूपों के अनुसार स्वयं को ढाला है, किंतु विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों पर रहने वाले लोगों की संख्या विश्व-भर में भिन्न-भिन्न होती है।

पर्वत

पर्वत वे स्थलरूप हैं जो आस-पास की भूमि से कुछ अधिक ऊँचे होते हैं। इन्हें चौड़े आधार, खड़ी ढलान (चढ़ाई) और सँकरे शिखर (चोटियों) के रूप में पहचाना जा सकता है। कुछ पर्वत अपनी अधिक ऊँचाई के कारण हिम से ढँके होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में कम **तुंगता (एल्टीट्यूड)** पर हिम पिघल जाती है और जल में बदलने के बाद नदियों में

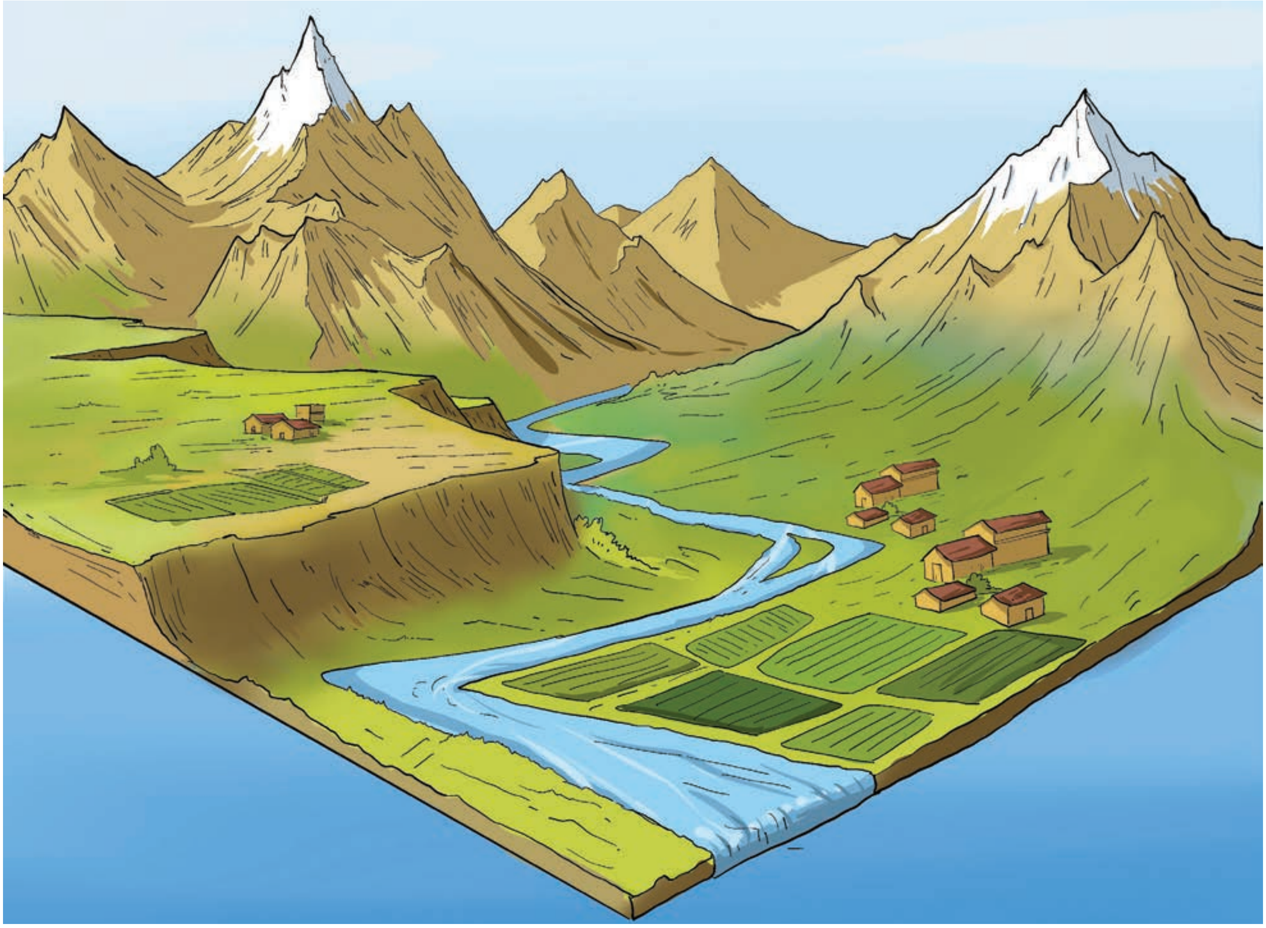

चित्र 3.1 — इस आरेख में तीन स्थलरूप दिए गए हैं — पृष्ठभूमि में पर्वत (इनमें से दो को हिमाच्छादित दिखाया गया है) बाईं ओर एक पठार है और आगे एक मैदान जहाँ पर्वतों से आती हुई नदी दिखाई गई है।

पहुँचती है। बहुत अधिक ऊँचाइयों (तुंगता) पर हिम कभी नहीं पिघलती है और ये पर्वत स्थायी रूप से हिम से ढँके होते हैं।

कम ऊँचाई वाले अन्य ऊँचे स्थान, जहाँ कम खड़ी चढ़ाइयाँ और गोल आकार के शीर्ष होते हैं, उन्हें **पहाड़ी** (छोटे पहाड़ या हिल) कहते हैं।

वर्षण
वायुमंडल से भूमि पर किसी भी रूप में जल का गिरना— वर्षा, हिमपात और ओले गिरना, वर्षण के सामान्य रूप हैं।

आइए विचार करें

हिम क्या है? यदि आप हिमालयी क्षेत्र (जैसे– कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश आदि) में नहीं रहते हैं, तो संभव है कि आपने हिम नहीं देखी होगी! शेष भारत में अधिकांश **वर्षण**, वर्षा और ओले के रूप में ही होता है। बहुत ऊँचे स्थानों पर यदि काफी ठंडक है, तो वहाँ हिम गिरेगी और वहाँ पर हिम का एक नर्म और सुंदर आवरण बन जाएगा। हिम और ओले का गिरना वास्तव में जल का ठोस रूप में गिरना है।

चित्र 3.2 — विश्व के छह पर्वतों के चित्र

विश्व के अधिकांश पर्वतों को **पर्वत शृंखलाओं** के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जैसे – एशिया में हिमालय, यूरोप में आल्प्स तथा दक्षिणी अमेरिका में एंडीज। इनमें से कुछ शृंखलाएँ हजारों किलोमीटर तक फैली हुई हैं।

चित्र 3.3 — विश्व के छह पर्वतों की सापेक्ष ऊँचाई दर्शाने वाला एक रेखाचित्र

चित्र 3.2 में विश्व के छह पर्वत दिखाए गए हैं। चित्र 3.3 इन्हें, ऊपर से नीचे तक उनकी सापेक्षिक ऊँचाइयों का दृश्य प्रभाव देने के लिए एक साथ प्रस्तुत करता है। माउंट एवरेस्ट (नेपाल तथा तिब्बत के बीच) और कंचनजंगा (भारत के सिक्किम राज्य और नेपाल के बीच) हिमालय पर्वत शृंखला की दो सबसे ऊँची चोटियाँ (शिखर) हैं। एंडीज पर्वत शृंखला (दक्षिणी अमेरिका) की सबसे ऊँची चोटी माउंट अकोंकागुआ है। पूर्वी अफ्रीका में माउंट किलिमंजारो एक पृथक पर्वत है, जो किसी शृंखला से संबंधित नहीं है। पश्चिमी यूरोप में मोंट ब्लांक आल्प्स का सबसे ऊँचा पर्वत है। अनाईमुडी (केरल में इसे 'अनाई शिखर' भी कहते हैं) दक्षिण भारत का सबसे ऊँचा पर्वत है।

पर्वतीय वन
पर्वतीय क्षेत्र में उगने वाले वनों का एक प्रकार।

मॉस
फूलों और वास्तविक जड़ों से रहित छोटा हरा पौधा या वनस्पति, जो बहुधा मखमली आवरण की तरह फैलता है।

लाइकेन
पौधे के समान जीव, जो सामान्यत: चट्टानों, दीवारों या पेड़ों से चिपके हुए होते हैं।

हिमालय जैसे ऊँचे और नुकीली चोटियों वाले पर्वत अपेक्षाकृत नवीन हैं, जिसका अर्थ है कि पृथ्वी के इतिहास में ये हाल ही में निर्मित (युवा) पर्वत हैं — किंतु फिर भी इन्हें बने हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं! कुछ छोटे और अधिक गोलाकार पर्वत और पहाड़ियाँ, जैसे अरावली श्रृंखला, काफी पुरानी है और अपरदन के कारण ये गोल आकार की हो गई हैं। जैसा कि हिमालय के साथ हुआ, उन्नयन और अपरदन आज भी चल रहा है (आप इन प्रक्रियाओं और उनके कारणों के बारे में विज्ञान में और अधिक पढ़ेंगे; यहाँ इतना ही कहा जा सकता है कि विश्व के कुछ पर्वतों, जैसे – हिमालय की ऊँचाई आज भी बढ़ रही है)।

पर्वतीय परिवेश

पर्वतों की ढलानों पर प्राय: एक प्रकार का वन होता है जिसे **पर्वतीय वन** कहते हैं और यहाँ शंकुधारी वृक्ष जैसे पाइन (चीड़), फर, स्प्रूस, देवदार आदि सामान्य रूप से पाए जाते हैं। इन पेड़ों की ऊँचाई अधिक होती है और ये शंकु के आकार के होते हैं तथा इनकी पत्तियाँ पतली, नोंकदार होती हैं। अधिक ऊँचाई पर पेड़ों की जगह घास, **मॉस** (काई) और **लाइकेन** उग जाते हैं।

कम से कम 1,500 वर्ष पूर्व, प्राचीन भारत के महान कवि कालिदास के काव्य से यहाँ दो श्लोक दिए गए हैं। उनका काव्यग्रंथ 'कुमारसंभव' हिमालय की स्तुति से आरंभ होता है (यहाँ उन संस्कृत श्लोकों का सरल हिंदी अनुवाद दिया गया है।)

भारत के उत्तरी भाग में देवता सदृश पूजनीय हिमालय नाम का पर्वतों का राजा है, जो पश्चिमी से लेकर पूर्वी समुद्र तक फैला हुआ है। देखकर ऐसा लगता है कि मानो वह पृथ्वी को नापने का मापदंड है।

गंगा के झरनों की फुहारों से युक्त, देवदार के वृक्षों को हिलाने और मोर पंखों को फरफराने वाली शीतल, मंद और सुगंधित वायु से पर्वतवासी जो मृगों की खोज में हिमालय में घूमते रहते हैं, अपनी थकान मिटाते हैं।

कक्षा में इन श्लोकों तथा निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा कीजिए—

- 'पश्चिमी से पूर्वी समुद्र तक' से क्या तात्पर्य है? चित्र 5.2 में क्या आप इनकी और 'पर्वतों के देवता' की स्थिति को दिखा सकते हैं?
- गंगा का उल्लेख क्यों किया गया है? *(संकेत – इसके अनेक कारण हो सकते हैं।)*

चित्र 3.4 — कुछ पहाड़ी जीव-जंतु

पर्वतों में घने वन, बहती नदियाँ, झीलें, घास के मैदान और कंदराएँ अनेक प्रकार के जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं, जैसे कि गोल्डन ईगल (सुनहरा गरुड़), पेरेग्रिन फाल्कन (घुमंतू बाज), कैनेडियन लिंक्स, हिम तेंदुआ, आइबेक्स (जंगली भेड), हिमालयन तहर, पर्वतीय खरगोश, याक, ग्रे फॉक्स, भालू और बहुत से अन्य प्राणी।

ध्यान रखें

हिमालय से निकलने वाली भारतीय नदियों में से गंगा विशालतम है। अंग्रेजी भाषा में इसे गैंजेज भी कहते हैं। लगभग 2,500 कि.मी. लंबी इस नदी की बहुत सी सहायक नदियाँ (उसमें आकर मिलने वाली अन्य नदियाँ) हैं। उनमें से कुछ, जैसे – यमुना और घाघरा भी हिमालय से निकलती हैं। अन्य नदियाँ जैसे – सोन, गंगा के मैदान के दक्षिण में पड़ने वाले विंध्यांचल की शृंखलाओं से निकलती हैं।

चित्र 3.5 — उत्तरी भारत में सीढ़ीदार (वेदिका) कृषि

पर्वतीय जीवन

पर्वतीय **भूभाग** सामान्य रूप से खड़े ढलानों के साथ ऊबड़-खाबड़ या ऊँचे-नीचे होते हैं, इसलिए कुछ ही **घाटियों** में नियमित रूप से कृषि की जा सकती है। ढलानों पर वेदिका कृषि अर्थात ढलान की भूमि को काटकर सीढ़ीनुमा स्थान पर कृषि करना एक प्रचलित प्रथा है। विश्व-भर के अनेक पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की जगह पशुपालन को अधिक महत्व दिया जाता है।

पर्यटन, पर्वतीय लोगों के लिए आय का महत्वपूर्ण साधन है। पर्वतों की स्वच्छ हवा और मनोरम प्राकृतिक दृश्य सभी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। कुछ पर्यटक पर्वतों पर साहसिक खेलों के लिए भी जाते हैं; जैसे– स्कीइंग, हाइकिंग, पर्वतारोहण और पैरा ग्लाइडिंग। अनेक शताब्दियों से लोग पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा पर जाने के लिए पर्वतों की यात्राएँ करते रहे हैं, परंतु बहुत सारे पर्यटकों के एक साथ आने से पर्वतों के पर्यावरण पर दबाव पड़ता है। प्राय: इनमें सही संतुलन बनाए रखना कठिन हो जाता है।

भूभाग
भौतिक आकृतियों की दृष्टि से भूमि का एक खंड।

घाटी
पहाड़ों के बीच का एक निचला क्षेत्र, जिसमें प्राय: नदी अथवा जलधारा बहती है।

ध्यान रखें

- **बछेंद्री पाल ने** बहुत कम आयु में ही पर्वतारोहण प्रारंभ कर दिया था और उन्होंने अनेक महिलाओं द्वारा किए जाने वाले पर्वतारोहण अभियानों का नेतृत्व किया। बछेंद्री पाल 1984 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। इसके लिए उन्हें पद्मश्री (1984) एवं पद्मभूषण (2019) से सम्मानित किया गया।
- **अरूणिमा सिन्हा** जब 31 वर्ष की थी, तब एक दुर्घटना में उन्होंने अपना एक पैर गवाँ दिया था। बछेंद्री पाल के प्रोत्साहन एवं प्रशिक्षण से 2013 में उन्होंने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने सभी महाद्वीपों की सबसे ऊँची चोटियों पर भी चढ़ाई की। अंटार्कटिक की माउंट विंसन सहित इन उपलब्धियों पर उन्हें 2015 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

आइए पता लगाएँ

चित्रों के माध्यम से (चित्र 3.6, पृष्ठ 50) पर्वतों पर रहने वाले लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों को दर्शाया गया है। कक्षा में समूह बनाकर चर्चा कीजिए और प्रत्येक पर एक अनुच्छेद लिखिए। यह भी विचार कीजिए कि जब पर्वतों पर इतनी सारी चुनौतियाँ हैं, फिर भी लोग वहाँ क्यों रहते हैं?

आकस्मिक बाढ़

स्थान विशेष में अकस्मात बाढ़ आना, बहुधा ऐसा बादल फटने से होता है।

भूस्खलन

पर्वतीय भूखंड के एक बड़े भाग या एक चट्टान का अकस्मात टूटकर गिरना।

हिमधाव (ऐवलांश)

पर्वत से अकस्मात हिम का गिरना, हिमपात अथवा चट्टानें टूटकर गिरना, ऐसा प्राय: तब होता है जब हिम का पिघलना आरंभ होता है।

बादल फटना

अचानक प्रचंड तूफान सहित वर्षा होना

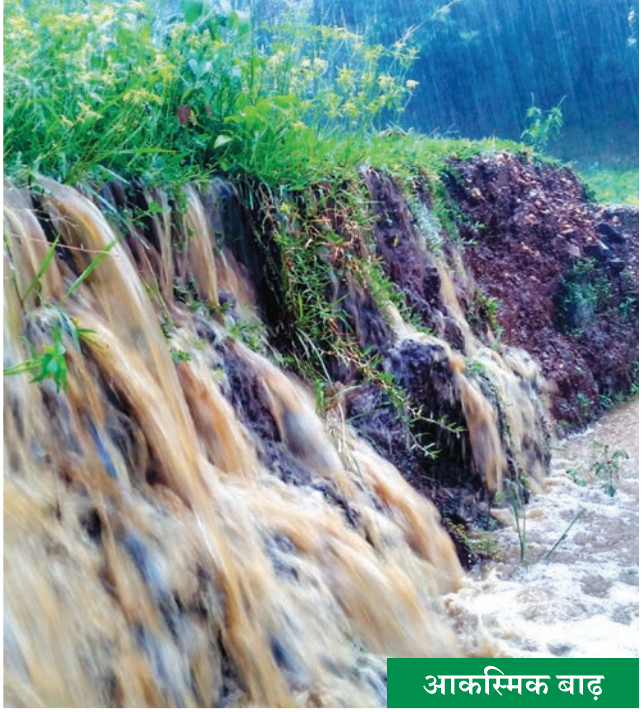

आकस्मिक बाढ़

भूस्खलन

पर्यटकों का अनियंत्रित रूप से आ जाना

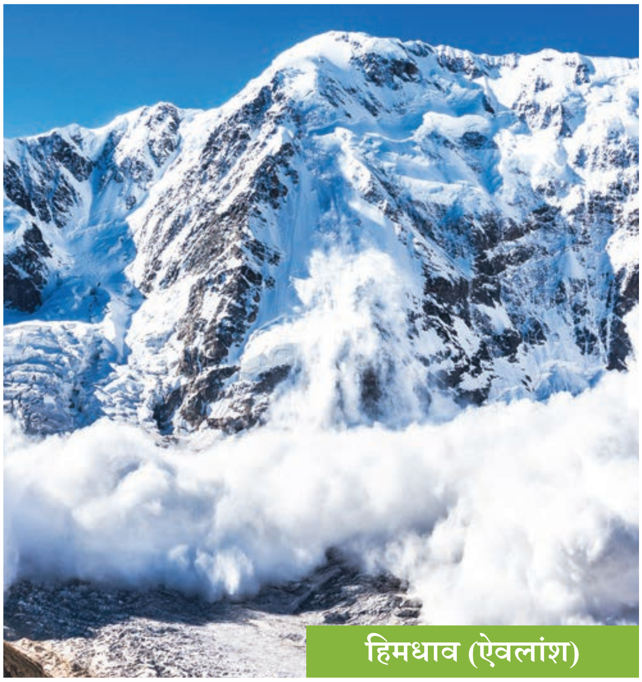

हिमधाव (ऐवलांश)

भारी हिमपात

बादल फटना

ठंडा मौसम

चित्र 3.6 — पर्वतीय जीवन के कई सकारात्मक पक्ष हैं, जैसे – शुद्ध वायु, मनोरम दृश्य आदि। इसमें प्राकृतिक और मानव-निर्मित दोनों तरह की कठिन चुनौतियाँ भी सम्मिलित हैं, जिनमें से कुछ को चित्रों में दर्शाया गया है।

ध्यान रखें

विश्व-भर के अनेक पारंपरिक समुदाय पर्वतों को पवित्र स्थल मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। माउंट एवरेस्ट विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत है, जिसकी ऊँचाई 8849 मीटर है और इसके अनेक नाम हैं। तिब्बती लोग इसे 'चोमोलुंगमा' कहते हैं, जिसका अर्थ है 'जगत जननी' और पर्वत की उसी रूप में पूजा करते हैं। नेपाल निवासी इसे 'सागरमाथा' कहते हैं, जिसका अर्थ है 'आकाश की देवी'। इसी प्रकार तिब्बत में कैलाश पर्वत है जिसे हिंदू दर्शन, बौद्ध मत, जैन मत और बॉन (तिब्बत का एक प्राचीन धर्म) के अनुयायी पवित्र मानते हैं। पर्वत शिखरों के लिए इतनी श्रद्धा-भावना भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य भागों में भी देखी जाती है।

पठार

पठार एक ऐसी स्थलाकृति है जो आस-पास की भूमि से उठी होती है और प्राय: इसकी सतह चपटी होती है। इसके कुछ पार्श्व सीधी ढलान वाले होते हैं। पर्वतों के समान कुछ पठार पृथ्वी के इतिहास के संदर्भ में नवीन और प्राचीन हो सकते हैं। पठारों के दो उदाहरण हैं— तिब्बत का पठार, जो विश्व का सबसे बड़ा और ऊँचा पठार है, और दूसरा दक्षिणी पठार। पठारों की ऊँचाई कुछ सौ मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है।

ध्यान रखें

- तिब्बत के पठार की औसत ऊँचाई 4,500 मीटर है, जिसके कारण इसे 'विश्व की छत' का नाम दिया गया है! पूर्व से पश्चिम दिशा तक यह लगभग 2,500 किलोमीटर लंबा है—अर्थात चंडीगढ़ से कन्याकुमारी तक की दूरी जितना।
- मध्य और दक्षिण भारत के दक्कन का पठार विश्व के सबसे पुराने पठारों में से एक है, जो कई लाख वर्ष पहले ज्वालामुखी की सक्रियता के कारण बना था।

पर्वतों की तरह, पठारों में खनिजों का प्रचुर मात्रा में जमाव देखने को मिलता है। इस कारण इन्हें खनिजों का भंडार-गृह भी कहा जाता है। परिणामस्वरूप पठारों में खनन मुख्य गतिविधि है, जहाँ विश्व की सबसे बड़ी खानें पाई जाती हैं। उदाहरणतया, पूर्वी अफ्रीका का पठार सोने और हीरे के खनन के लिए प्रसिद्ध है। भारत में छोटा नागपुर के पठार में लौह, कोयला और मैगनीज के प्रचुर भंडार हैं, छतीसगढ़ के बैलाडीला में लोहा और कोरबा में कोयला के प्रचुर भंडार हैं।

विश्व-भर में पठारों का पर्यावरण बहुत विविधतापूर्ण है। कई पठारों में चट्टानी मिट्टी पाई जाती है जो उन्हें मैदानी मिट्टी की तुलना में कम उपजाऊ बनाती है (अगला भाग देखिए)। इसलिए पठार कृषि के लिए कम अनुकूल होते हैं। लेकिन ज्वालामुखी क्रियाओं से निर्मित लावा पठार उपजाऊ होते हैं, क्योंकि उनमें समृद्ध काली मिट्टी पाई जाती है।

पठारों में अनेक आकर्षक जल प्रपात भी होते हैं। दक्षिण अफ़्रीका में स्थित जम्बेजी नदी पर विक्टोरिया जल प्रपात, छोटा नागपुर पठार में सुवर्ण रेखा नदी पर हुंडरू जल प्रपात और पश्चिमी घाट में शरावती नदी पर जोग जल प्रपात, ऐसे ही कुछ जल प्रपात हैं। चेरापूंजी (मेघालय) के पठार में नहकालीकाई जल प्रपात 340 मीटर की ऊँचाई से गिरता है। भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर ज़िले में स्थित चित्रकोट जलप्रपात जिसकी तुलना भारतीय नियाग्रा जलप्रपात से की जाती है। इस जल प्रपात की ऊँचाई लगभग 90 फुट और चौड़ाई लगभग 980 फुट है (चित्र 3.7)। जगदलपुर से 39 किमी दूर इन्द्रावती नदी पर यह जलप्रपात स्थित है।

चित्र 3.7 — छत्तीसगढ़ का चित्रकोट जलप्रपात

मैदान

मैदान ऐसी स्थलाकृति होती है जिसका विस्तृत सपाट अथवा हल्का तरंगित धरातल होता है। उसमें कोई ऊँची पहाड़ियाँ अथवा गहरी घाटियाँ नहीं पाई जाती हैं। सामान्यत: मैदान की ऊँचाई **समुद्र तल** से 300 मीटर से अधिक नहीं होती।

पर्वत शृंखलाओं से निकलने वाली नदियों की बाढ़ से निर्मित ये समतल भूमि है। यहाँ नदियाँ रेत, चट्टानों के कणों और गाद को एकत्र करती हैं जिन्हें तलछट कहा जाता है। नदियाँ इन तलछटों को अपने साथ बहाकर समतल भूमि में लाकर जमा कर देती हैं और मिट्टी को उपजाऊ बनाती हैं। फलस्वरूप ये मैदान सभी प्रकार की फसलों को उपजाने के लिए उपयुक्त होते हैं। इस प्रकार के भूभागों में लोगों का मुख्य आर्थिक व्यवसाय कृषि होता है। मैदान विविध प्रकार की वनस्पतियों और जीव-जंतुओं का भी भरण-पोषण करते हैं।

समुद्र तल
समुद्र की सतह का औसत स्तर, इसे 'माध्य समुद्र तल' भी कहते हैं।

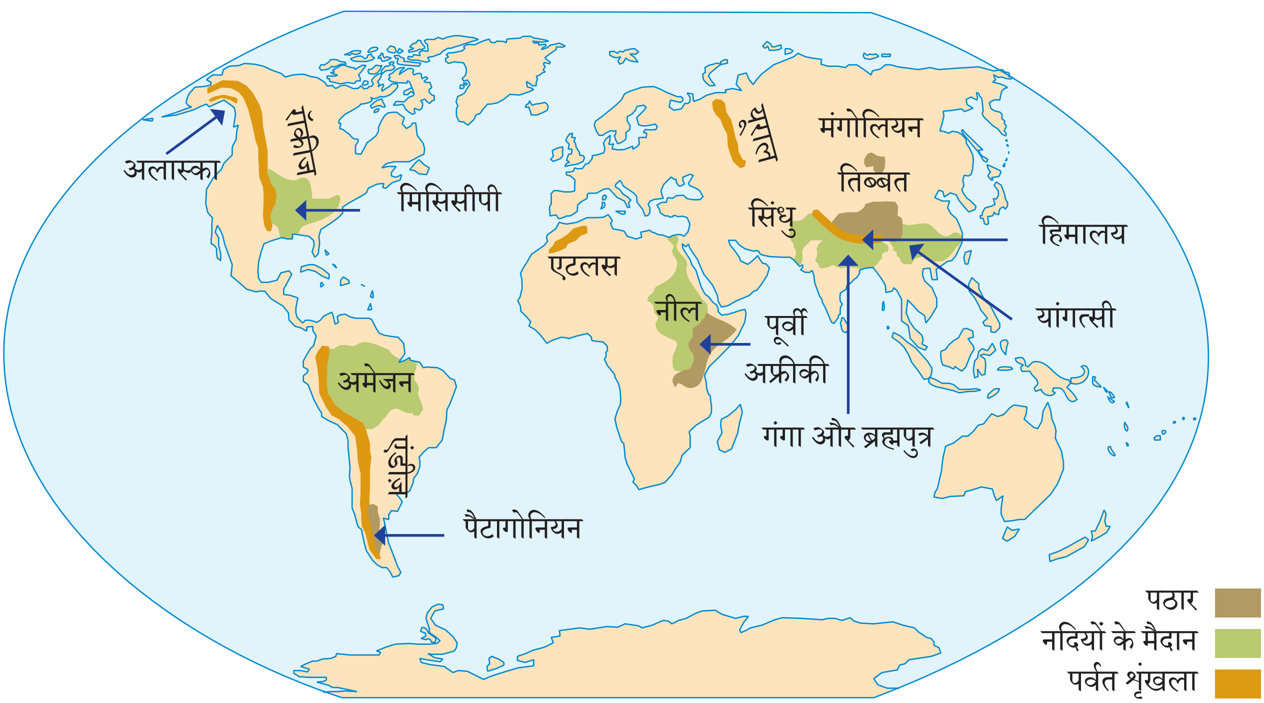

चित्र 3.8 — यह विश्व-मानचित्र कुछ प्रमुख पर्वत शृंखलाओं, पठारों और मैदानों को दर्शाता है।

आइए पता लगाएँ

चित्र 3.8 में दर्शाए गए स्थलरूपों में रंगों के कोड का प्रयोग कीजिए। उदाहरणार्थ – तिब्बत का पठार, रॉकी शृंखला, नील नदी का मैदान *(आपको मानचित्र में दिए नाम स्मरण करने की आवश्यकता नहीं है)*।

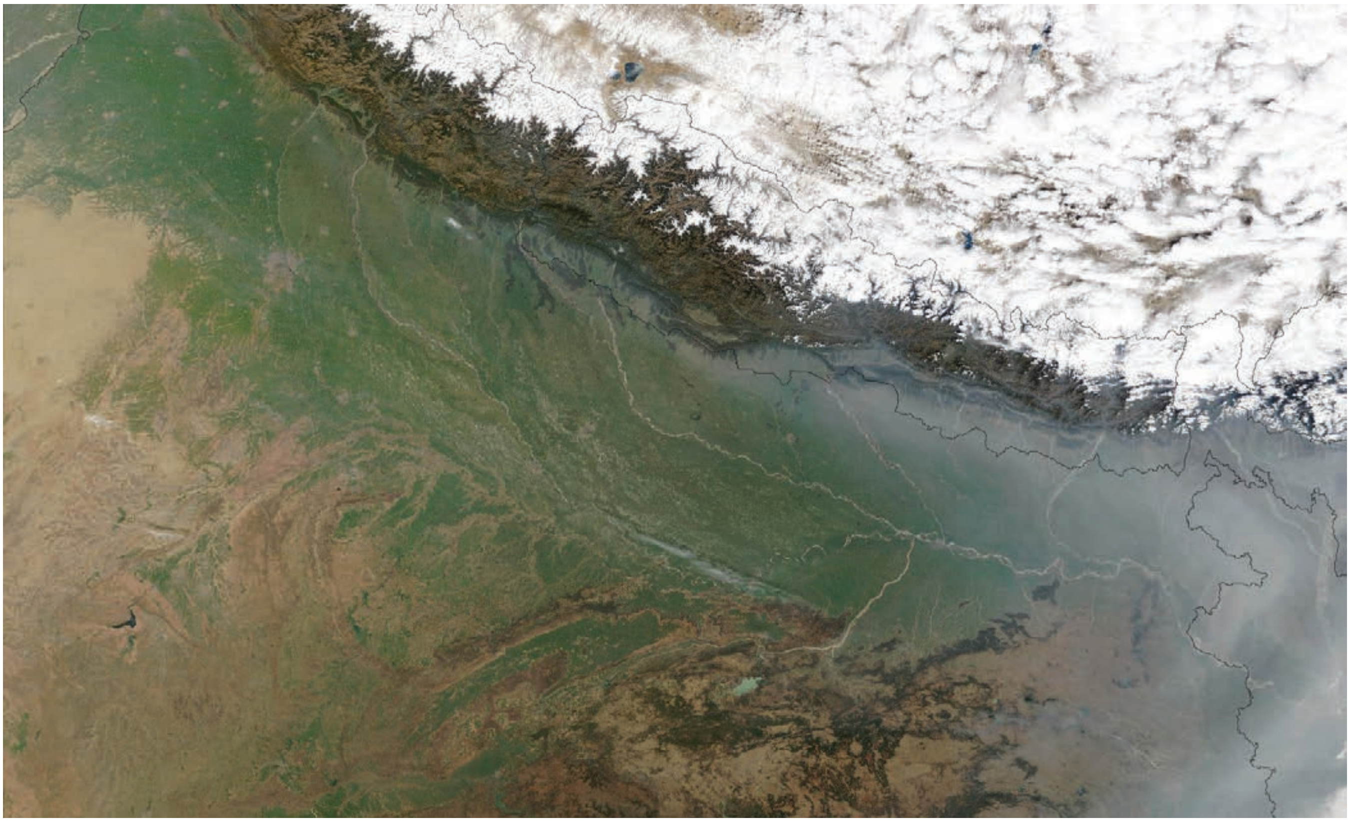

चित्र 3.9 — गंगा के मैदान का उपग्रह से लिया गया चित्र

आइए पता लगाएँ

कक्षा की गतिविधि के रूप में बहुत ऊँचाई से लिए गए उत्तर भारत के क्षेत्र के उपग्रह चित्र (चित्र 3.9) का अवलोकन कीजिए और उस पर चर्चा कीजिए—

→ गंगा के मैदान का रंग कौन-सा है?

→ सफेद रंग किस वस्तु को दर्शा रहा है?

→ उपग्रह चित्र के नीचे बांई ओर भूरे रंग का फैलाव क्या दर्शा रहा है?

मैदानी जीवन

हजारों वर्ष पहले, आरंभिक सभ्यताएँ नदियों के उपजाऊ मैदानों के आस-पास विकसित हुई थीं। हमारे समय में भी विश्व की अधिकांश जनसंख्या मैदानों में रहती है।

भारत की कुल जनसंख्या की एक-चौथाई से अधिक, अर्थात लगभग 40 करोड़ की जनसंख्या भारत के गंगा के मैदान में रहती है। विश्व के बहुत से अन्य मैदानों के समान इन क्षेत्रों में रहने वालों का मुख्य व्यवसाय मत्स्य पालन और कृषि है। यहाँ चावल, गेहूँ, मक्का, जौ और मोटे अनाज (ज्वार, बाजरा, रागी) जैसी खाद्य फसलें उगाई जाती हैं। साथ ही कपास, जूट और सन जैसी रेशेदार फसलें भी उगाई जाती हैं। परंपरागत कृषि मुख्यत: वर्षा पर निर्भर होती है (अर्थात, वर्षा जल से फसलों को जल मिलता है), किंतु हाल के दशकों में नहरों के जाल (नेटवर्क) द्वारा और भूमिगत जल को पंप से निकालकर खेतों की सिंचाई करने में वृद्धि हुई है।

यद्यपि सिंचाई से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, किंतु इससे भूमिगत जलस्तर में गिरावट आई है। इससे इस क्षेत्र में कृषि के भविष्य को लेकर चुनौतीपूर्ण स्थिति भी उत्पन्न हो गई है। गंगा के मैदानी भागों को प्रभावित करने वाली कुछ अन्य समस्याएँ भी हैं, जैसे – बढ़ती हुई जनसंख्या और प्रदूषण।

चाहे पर्वत हों या मैदान, विश्व में बहने वाली नदियाँ बहुत से सांस्कृतिक मूल्यों का वहन करती हैं। विशेष रूप से, बहुत से समुदाय नदी के स्रोत और एक दो नदियों के **संगम स्थल** को पवित्र स्थल मानते हैं। भारत में इन स्थानों पर बहुत से त्योहार, समारोह और धार्मिक कृत्य किए जाते हैं।

संगम स्थल दो या दो से अधिक नदियों के मिलने का स्थान।

मैदान में हल्की ढलान होती है, अत: वहाँ नदी में नौका-संचालन सुगम होता है और इससे बहुत-सी आर्थिक गतिविधियों को भी सहायता मिलती है। पहले लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए नदी मार्ग का ही व्यापक रूप से प्रयोग करते थे। आज भी गंगा के किनारे ऐसे स्थान हैं जहाँ लोग आने-जाने के लिए नौकाओं का ही प्रयोग करते हैं (चित्र 3.10, पृष्ठ 56)।

आइए पता लगाएँ

- → क्या आप अपने प्रदेश की नदी के स्रोतों अथवा संगम के कुछ उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें किसी समुदाय द्वारा पवित्र स्थल माना जाता है?
- → अपने पास की नदी पर जाइए और वहाँ होने वाली सभी अर्थिक या सांस्कृतिक गतिविधियों का अवलोकन कीजिए। उन्हें लिखकर अपने सहपाठियों के साथ उन पर चर्चा कीजिए।
- → भारत के कुछ लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के नाम बताइए। साथ ही पहचानिए कि वे पर्यटन स्थल किस प्रकार के स्थलरूप से संबंधित हैं।

चित्र 3.10 — गंगा नदी में नौका-परिवहन

लचीलापन (रेजिलियंस) चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करने अथवा उनके अनुसार ढलने की क्षमता।

इस अध्याय में हमने पूरी पृथ्वी के तीन प्रमुख स्थलरूपों के बारे में समझा। परंतु, इसका स्वरूप जटिल है और विशेषज्ञ प्राय: कुछ और स्थलरूपों के बारे में भी बताते हैं। इनमें से एक स्थलरूप मरुस्थल है। यदा-कदा वर्षा प्राप्त करने वाले मरुस्थल व्यापक व दूर-दूर तक शुष्कता का फैलाव लिए होते हैं। उनके वनस्पति जगत और प्राणि जगत विलक्षण ही होते हैं। कुछ मरुस्थल गर्म होते हैं, जैसे कि अफ्रीका का सहारा मरुस्थल अथवा भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में स्थित थार मरुस्थल। कुछ अन्य मरुस्थल ठंडे हैं, जैसे कि एशिया का गोबी मरुस्थल। कुछ विशेषज्ञ अंटार्कटिक महाद्वीप को भी मरुस्थल मानते हैं।

जीवन जीने की कठिन परिस्थितियों के उपरांत भी लोगों ने अधिकांश मरुस्थलों के पर्यावरण के अनुसार अपने आप को ढाल लिया है। भारत के थार मरुस्थल में रहने वाले समुदाय अथवा समय-समय पर वहाँ से जाने वाले लोग मरुस्थल में गाए और सुनाए जाने वाले लोक गीतों और किंवदंतियों या दंत कथाओं जैसी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को सँजोकर रखते हैं।

मानव ने जिस प्रकार सभी स्थलाकृतियों में विभिन्न प्रकार से अपने घर बनाए हैं, वह हमारे अनुकूलन अर्थात स्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेने और **लचीलेपन** का साक्षी है।

प्राचीन तमिल संगम कविता की पाँच टिनै पाँच दृश्यभूमि हैं, जो कुछ विशिष्ट देवताओं, जीवन-शैलियों, मनोदशाओं अथवा भावनाओं (जैसे – प्रेम, अनुराग, अलगाव, झगड़ा आदि) से जुड़ी हैं। यह तालिका केवल पाँच दृश्यभूमियों की विशेषताओं और प्रत्येक में मुख्य मानव व्यवसायों को सूचीबद्ध करती है।

टिनै	दृश्यभूमि	मुख्य व्यवसाय
कुरिंजी	पर्वतीय क्षेत्र	आखेट और संग्रह करना
मुल्लाई	घास के मैदान और वन	पशु पालन
मरूदम	उपजाऊ कृषि के मैदान	कृषि
नेयदल	तटीय क्षेत्र	मत्स्य पालन और समुद्री यात्रा
पालै	शुष्क, मरुस्थल जैसे प्रदेश	घुमंतू और युद्धरत

अभी तक हमने जिन स्थलरूपों को देखा है, उनकी अपेक्षा ये पाँच टिनै भिन्न प्रकार का वर्गीकरण है। परंतु ये विविधता वाले प्रदेशों और उनकी विशेषताओं के प्रति गहन जागरूकता को दिखाते हैं। ये हमारे और पर्यावरण के बीच गहन संबंध को भी दर्शाते हैं। *(आपको टिनै के विवरण को याद रखने की आवश्यकता नहीं है, परंतु उससे प्रतिबिंबित अवधारणाओं को समझने की आवश्यकता है)।*

आगे बढ़ने से पहले...

- स्थलरूप तीन प्रकार के होते हैं — पर्वत, पठार और मैदान। उनकी भौतिक विशेषताएँ और पर्यावरण बहुत अलग-अलग प्रकार के होते हैं।
- ऐतिहासिक समय से लोगों द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलाप उस स्थलरूप से संबधित होते हैं जिसमें वे निवास करते हैं। ये स्थलरूप विश्व की संस्कृति के अभिन्न भाग हैं; विशेष रूप से भारतीय संस्कृति विविध प्रकार से उन्हें मनाती रही है।
- प्रत्येक स्थलरूप, विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के साथ-साथ अवसरों को भी प्रस्तुत करता है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. आपका कस्बा या गाँव या नगर किस प्रकार के स्थलरूप पर स्थित है? इस अध्याय में बताई गई विशेषताओं में से कौन-सी विशेषताएँ आप अपने आस-पास देखते हैं?
2. आइए, छोटा नागपुर से प्रयागराज और अल्मोड़ा की हमारी आरंभिक यात्रा पर चलें। इस मार्ग में आने वाले तीन स्थलरूपों के बारे में बताइए।
3. भारत के कुछ प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों की सूची बनाइए। यह भी लिखिए कि वे कौन-से स्थलरूप के अंतर्गत आते हैं।
4. सही या गलत बताइए—
   - → हिमालय गोल शिखरों वाली नवीन पर्वत श्रृंखला है।
   - → पठार प्राय: एक ओर से उठे हुए होते हैं।
   - → पर्वत और पहाड़ियाँ एक ही प्रकार के स्थलरूप हैं।
   - → भारत में पर्वत, पठार और नदियों में एक ही प्रकार के वनस्पति और प्राणी जगत पाए जाते है।
   - → गंगा, यमुना की सहायक नदी है।
   - → मरुस्थल का वनस्पति जगत और प्राणी जगत विलक्षण होता है।
   - → हिम के पिघलने से नदियों में जल आता है।
   - → मैदानों में नदियों द्वारा एकत्र किए गए तलछट भूमि को उपजाऊ बनाते हैं।
   - → सभी मरुस्थल गर्म होते हैं।
5. शब्दों के जोड़े बनाइए—

माउंट एवरेस्ट	अफ्रीका
राफ्टिंग	विश्व की छत
ऊँट	धान के खेत
पठार	मरुस्थल
गंगा का मैदान	नदी
जलमार्ग	गंगा
माउंट किलिमंजारो	सहायक नदी
यमुना	पर्वतारोहण

अध्याय 4

इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्रोत

इतिहास "अतीत एवं वर्तमान के मध्य एक अनवरत संवाद है। यह संवाद है, आज के समाज एवं कल (बीते समय) के समाज के मध्य... हम अतीत के आलोक में ही वर्तमान समाज को पूर्णत: समझ सकते हैं।"

—ई.एच. कार

राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली। ऐसे संग्रहालयों में अतीत से संबंधित उन वस्तुओं (जैसे — मूर्ति, सिक्के और आभूषण आदि) को संरक्षित किया जाता है, जो हमें अपने इतिहास को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *हम ऐतिहासिक काल की गणना किस प्रकार करते हैं?*
2. *इतिहास को समझने के लिए विभिन्न स्रोत हमारी किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?*
3. *आदिमानव किस प्रकार रहते थे?*

0683CH04

हम अतीत का अध्ययन किस प्रकार करते हैं?

आइए विचार करें

- आपकी अपने अतीत की सबसे पुरानी स्मृति कौन-सी है? क्या आपको याद है कि उस समय आपकी आयु क्या थी? संभवत: पाँच या छह वर्ष पूर्व तक की यह सभी स्मृतियाँ आपके अतीत का हिस्सा हैं।
- आपको क्या लगता है, अतीत को समझने से हमें वर्तमान विश्व को समझने में कैसे सहायता मिलेगी?

इतिहास
मानव के अतीत का अध्ययन

आपको विज्ञान की कक्षा में पता चलेगा कि पृथ्वी का एक बहुत ही लंबा इतिहास है जिसमें से हम मानवों का **इतिहास** नवीनतम और एक छोटा-सा भाग है।

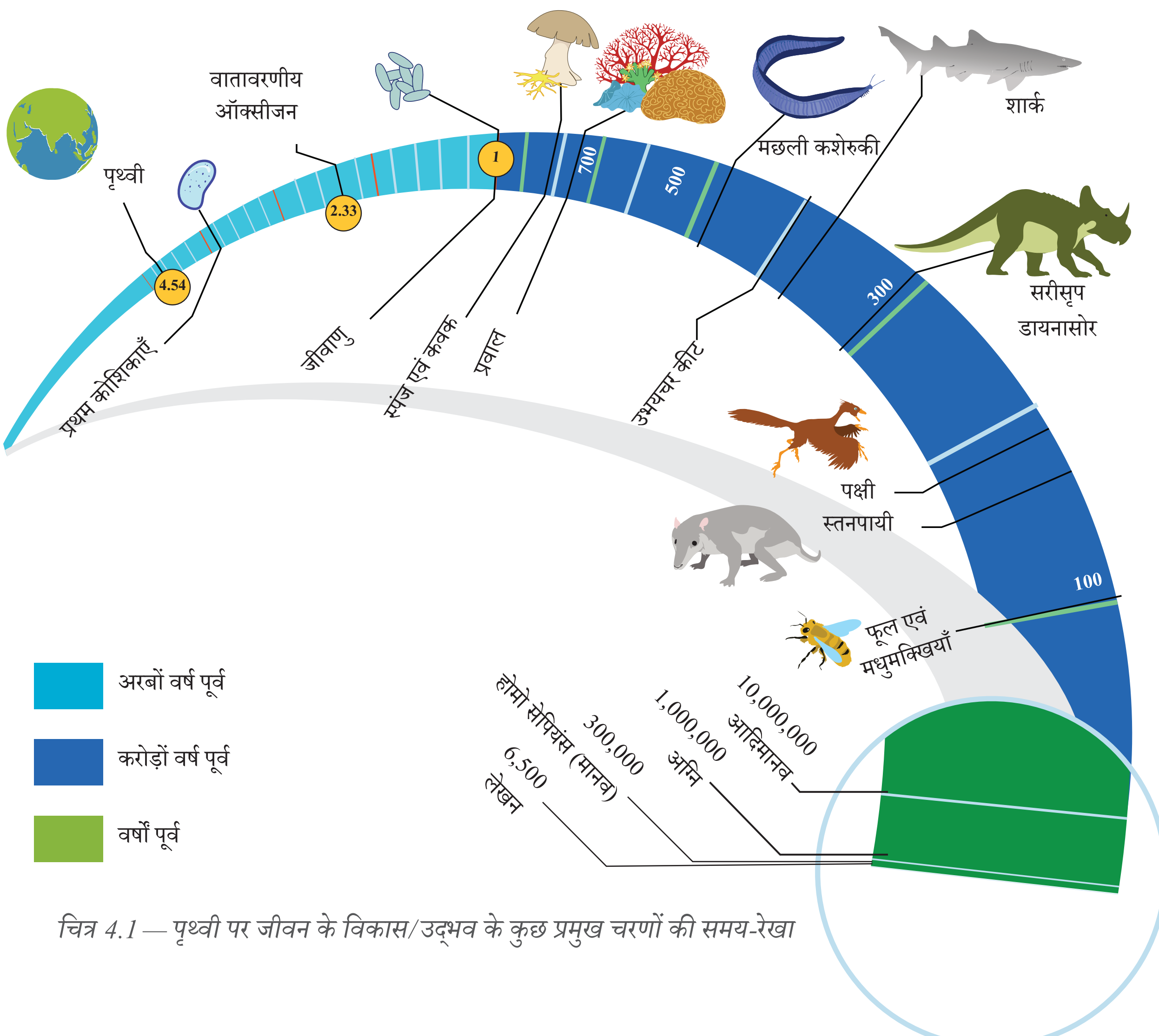

चित्र 4.1 — पृथ्वी पर जीवन के विकास/उद्भव के कुछ प्रमुख चरणों की समय-रेखा

अनेक लोग पृथ्वी के इतिहास का अध्ययन करते हैं। उनमें से कुछ लोग पृथ्वी की सतह के नीचे के रहस्यों को जानने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। इस तरह वे पृथ्वी के अतीत के साथ ही हमारे अतीत को भी समझने में सहायता करते हैं।

चित्र 4.2.1 — भू-विज्ञानी

चित्र 4.2.2 — जीवाश्म विज्ञानी

चित्र 4.2.3 — मानव विज्ञानी

चित्र 4.2.4 — पुरातत्व विज्ञानी

ऊपर दिए गए चार चित्रों में प्रदर्शित की जा रही गतिविधियों का अवलोकन कीजिए।

- **भू-विज्ञानी** (चित्र 4.2.1) पृथ्वी के भौतिक स्वरूपों जैसे– मृदा, पत्थरों, पहाड़ियों, पर्वतों, नदियों, महासागरों एवं पृथ्वी के अन्य हिस्सों का अध्ययन करते हैं।
- **जीवाश्म विज्ञानी** (चित्र 4.2.2) **जीवाश्म** के रूप में करोड़ों वर्ष पूर्व के पेड़ों, पशुओं एवं मानवों के अवशेषों का अध्ययन करते हैं।
- **मानव विज्ञानी** (चित्र 4.2.3) मानव समाजों एवं संस्कृतियों का अतीत से लेकर वर्तमान तक अध्ययन करते हैं।
- **पुरातत्व विज्ञानी** (चित्र 4.2.4) मानव, पौधों एवं पशुओं द्वारा अपने पीछे छोड़े गए अवशेषों जैसे– उपकरण, घड़े, पात्र, मनके, मूर्तियाँ, खिलौने, हड्डियाँ, पशुओं और मानवों के दाँत, जले हुए अनाज, घरों एवं ईंटों के हिस्से एवं अन्य वस्तुओं का उत्खनन करके अतीत का अध्ययन करते हैं।

जीवाश्म
जीव-जंतुओं के पदचिह्नों या पौधों के अवशेष चिह्न जो कि मृदा अथवा शिलाओं की परतों के बीच संरक्षित पाए जाते हैं।

इतिहास में समय की गणना किस प्रकार की जाती है?

प्रत्येक समाज एवं संस्कृति के पास समय की गणना करने की अपनी प्रणालियाँ रही हैं। प्रमुख घटनाएँ जैसे– किसी व्यक्ति विशेष का जन्म अथवा किसी शासक के शासन का आरंभ, एक नए **युग** का आरंभ माना जाता रहा है। आज के समय में विश्व-भर में सामान्यत: **ग्रेगोरियन कैलेंडर (तिथिपत्र)** का उपयोग होता है; साथ ही त्योहारों की तिथियों की गणना एवं अन्य **मांगलिक** कार्यों के लिए हिंदू, मुस्लिम, यहूदी, चीनी आदि अन्य तिथिपत्रों का भी उपयोग होता है।

युग
समय का एक निश्चित कालखंड।

पश्चिम में, सामान्यत: ईसा मसीह के जन्म वर्ष से कैलेंडर का आरंभ माना जाता है। इस बिंदु से आगे के वर्षों की गणना की जाती है एवं इसे अंग्रेजी में 'ए.डी.' से इंगित किया जाता रहा है (ए.डी. लैटिन भाषा का एक शब्द-संक्षेप है, जो ईसा के जन्म के बाद के वर्षों को इंगित करता है), परंतु अब विश्व-भर में इसे अंग्रेजी में **'कॉमन एरा'** अथवा सी.ई. कहा जाता है। उदाहरणार्थ भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ, इसे 1947 ई. (कभी-कभी ई. सन् 1947) अथवा 1947 सी.ई. (अंग्रेजी में) लिख सकते हैं।

इसी प्रकार ईसा मसीह के जन्म की पांरपरिक तिथि से पूर्व के वर्षों की गणना उल्टे (अवरोही) क्रम में की जाती है एवं इसे अंग्रेजी में बी.सी. से इंगित किया जाता था। इसे अब अंग्रेजी में **'बिफोर कॉमन एरा'** (बी.सी.ई.) से इंगित किया जाता है।

उदाहरण के लिए 560 सा.सं.पू. गौतम बुद्ध (जिनके बारे में हम अध्याय 7 में जानेंगे) के जन्म की अनुमानित तिथि है। क्या आप गणना कर सकते हैं कि उनका जन्म आज से कितने वर्ष पूर्व हुआ था?

इस पाठ्यपुस्तक में हमने बी.सी.ई. के लिए सामान्य संवत पूर्व (सा.सं.पू.) तथा सी.ई. के लिए सामान्य संवत (सा.सं.) शब्दों का प्रयोग किया है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर (तिथिपत्र)
इस कैलेंडर का उपयोग अब विश्व-भर में होता है, जिसमें 365 दिन मिलकर बारह माह का निर्माण करते हैं एवं प्रत्येक चार वर्ष में एक अधिवर्ष होता है। इस प्रकार शताब्दी वर्ष जैसे – 1800, 1900, 2000 आदि सभी अधिवर्ष (लीप वर्ष) होंगे यदि वह 400 से विभाजित हो सकते हों। इसीलिए दिए गए शताब्दी वर्षों में से केवल 2000 ही लीप वर्ष होगा।

मांगलिक
अनुकूल अथवा भाग्य लाने वाला शुभ समय, उदाहरणार्थ एक मांगलिक शुरुआत।

चित्र 4.3 — 3,00,000 सा.सं.पू. से कुछ मुख्य घटनाओं की समय-रेखा

प्रमुख हिन्दू संवत्

कैलेंडर का आरंभ किसी संवत् या शक से होता है जिसका आरंभिक बिन्दु किसी महत्वपूर्ण घटना की स्मृति से जुड़ा होता है। हिन्दूओं में अधिकतर कलि, विक्रम व शक संवतों का उपयोग किया जाता है।

विक्रम संवत्

विक्रम **संवत्** का आरंभ 57 ईस्वी पूर्व हुआ था इसलिए हिंदू विक्रम **संवत्** अंग्रेजी कैलेंडर के वर्ष से 57 वर्ष आगे चलता है। विक्रम संवत कैलेंडर चंद्र आधारित है। हिंदू कैलेंडर में कुल 12 माह होते हैं जो इस प्रकार है- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन।

शक संवत्

शक संवत् की शुरुवात 78 सा.सं. में हुई थी। 1957 सा.सं. में तात्कालिक भारत सरकार ने शक संवत् को भारत के राष्ट्रीय पंचांग के रूप में मान्यता प्रदान की है।

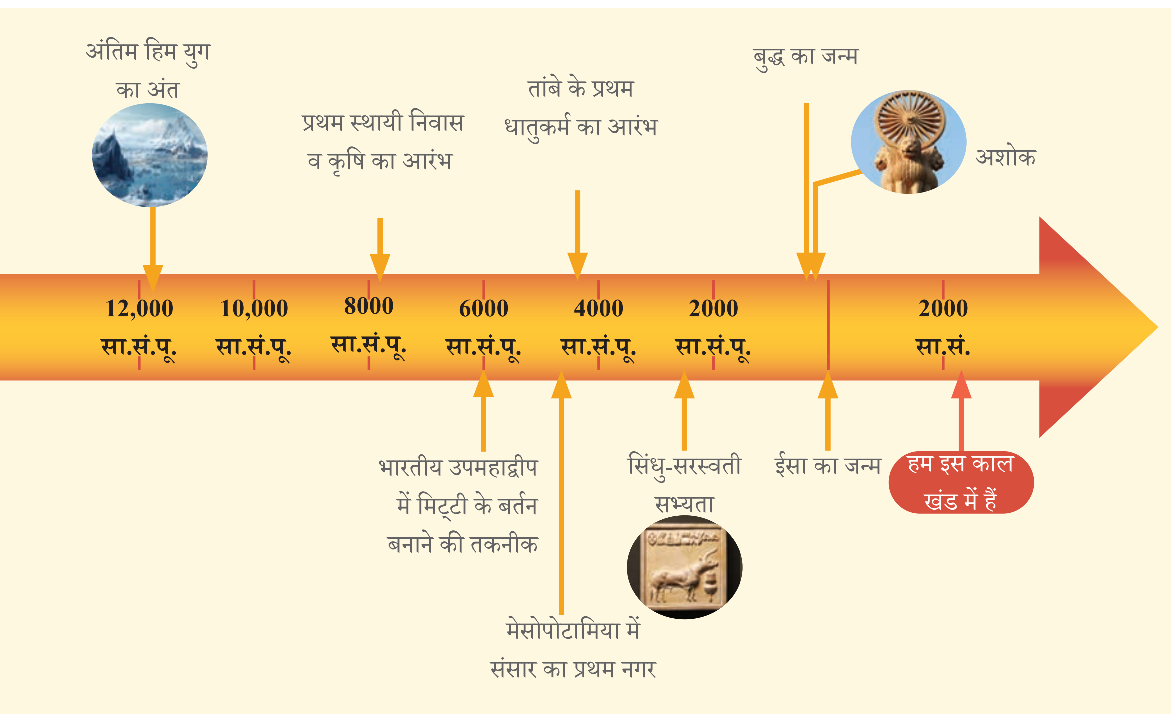

आइए पता लगाएँ

- → इस प्रकार की गणना सरल होती है परंतु इसमें एक समस्या रहती है। ग्रेगोरियन तिथिपत्र में कोई भी वर्ष 'शून्य' के रूप में चिह्नित नहीं किया गया है। वर्ष 1 सा.सं., 1 सा.सं.पू. के तुरंत बाद आता है। 2 सा.सं.पू. से लेकर 2 सा.सं. तक एक समय-रेखा बनाइए। आप देखेंगे कि 'शून्य वर्ष' की अनुपस्थिति के कारण इन दो तिथियों के मध्य केवल 3 वर्ष ही होंगे।
- → किसी भी सा.सं.पू. तथा सा.स. की तिथियों के बीच के वर्षों की गणना करते समय हमें सदैव दोनों को जोड़कर उनके योग में से 1 को घटा देना चाहिए। ऊपर दी गई स्थिति में 2+2–1=3
- → अपने सहपाठियों के साथ कुछ ऐसे उदाहरणों का अभ्यास कीजिए। उदाहरणार्थ, यदि हम महात्मा बुद्ध के प्रश्न पर पुन: लौटें, मान लीजिए हम आज 2024 सा.सं. में हैं, तो महात्मा बुद्ध का जन्म 560+2024–1=2583 वर्ष पूर्व हुआ था।

इस प्रकार की घटनाओं को चिह्नित करने के लिए **समय-रेखा** एक सुविधाजनक उपकरण है (पृष्ठ संख्या 62 व 63 पर चित्र 4.3 को देखिए), क्योंकि यह किसी विशेष अवधि में तिथियों और घटनाओं के अनुक्रम को दिखाता है। यहाँ दर्शाई गई सरलीकृत समय-रेखा पर मानव सभ्यता के आरंभ से वर्तमान तक की यात्रा को दर्शाया गया है।

समय-रेखा पर बिंदुओं के माध्यम से प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं को चिह्नित किया गया है। ध्यान रखिए कि समय-रेखा पर बिंदुकृत हिस्सा छोड़े गए कालखंड को दर्शाता है; अन्यथा यह समय-रेखा लगभग 3 मीटर लंबी हो जाती।

समय-रेखा ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम को समझने में भी सहायक होती है। उदाहरणार्थ, तिथियाँ देखे बिना भी अब आप देख सकते हैं कि बुद्ध का जन्म, ईसा मसीह के जन्म से पहले हुआ था।

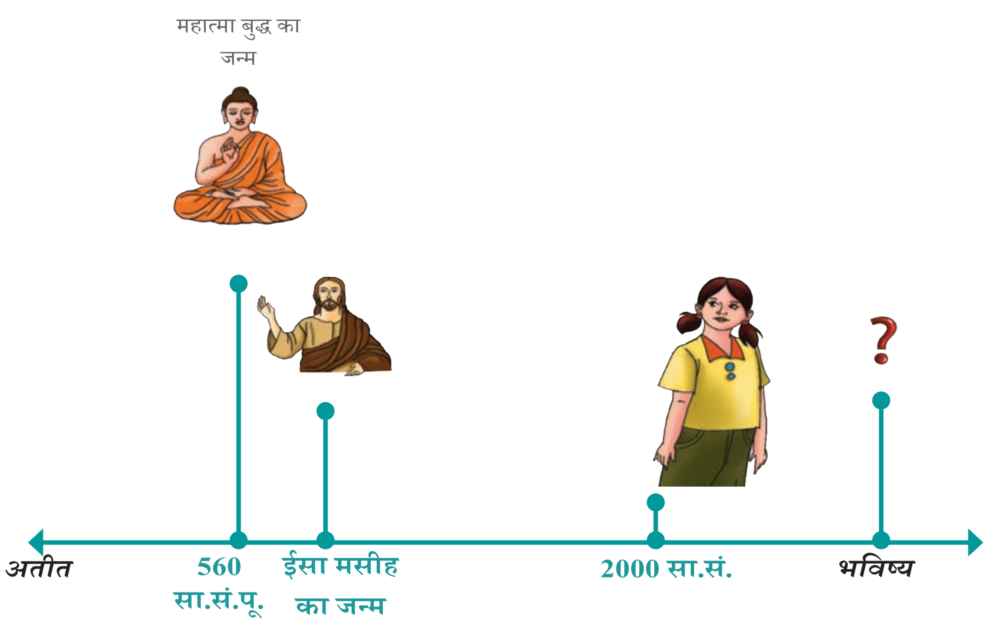

ध्यान रखें

वर्ष एवं दशक (दस वर्षों का कालखंड) के साथ ही इतिहास में लंबी अवधि का अध्ययन करते समय हम सामान्यत: दो अन्य विशेष शब्दों का भी उपयोग करते हैं।

1. **शताब्दी** – यह किसी भी 100 वर्षों का कालखंड है। इतिहास में, 1 सा.सं. से लेकर प्रत्येक सौ वर्षों के लिए शताब्दी की गणना की जाती है। उदाहरणार्थ, वर्तमान में हम 21वीं शताब्दी में हैं, जो 2001 से आरंभ होकर 2100 तक चलेगी।

   ईसा पूर्व की गणना करने के लिए हम 1 सा.सं.पू. से आरंभ करके समय में पीछे की ओर लौटते हैं। उदाहरणार्थ, तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. में 300 सा.सं.पू. से लेकर 201 सा.सं.पू. तक का समय सम्मिलित होगा।
2. **सहस्त्राब्दी** – यह किसी भी 1000 वर्षों का कालखंड है। इतिहास में, 1 सा.सं. से लेकर प्रत्येक सहस्त्र वर्षों के लिए सहस्त्राब्दी की गणना की जाती है। उदाहरणार्थ, हम तीसरी सहस्त्राब्दी में हैं, जो 2001 सा.सं. से आरंभ होकर 3000 सा.सं. तक चलेगी।

   शताब्दी की तरह ही सा.सं.पू. सहस्त्राब्दी की गणना के लिए 1 सा.सं.पू. से आरंभ करके समय में पीछे की ओर लौटते हैं। उदाहरणार्थ, 1 सहस्त्राब्दी सा.सं.पू. में 1 सा.सं.पू. से लेकर 1000 सा.सं.पू. तक का समय सम्मिलित होगा। पृष्ठ 62 एवं 63 (चित्र 4.3) में दी गई समय-रेखा में क्या आप आठवीं सहस्त्राब्दी सा.सं.पू. को चिह्नित कर सकते हैं?

आइए पता लगाएँ

1900 सा.सं. से लेकर आज तक की एक समय-रेखा बनाइए। इस पर अपने दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता, भाई-बहन एवं अपनी जन्मतिथियों को अंकित कीजिए। साथ ही 20 वीं शताब्दी सा.सं. के आरंभ वर्ष व अंतिम वर्ष को भी अंकित कीजिए।

ध्यान रखें

क्या आप जानते हैं कि भारत में पारंपरिक तिथिपत्रों का निर्माण किस प्रकार किया जाता रहा है? अनेक भारतीय तिथिपत्र महीनों एवं दिनों के निर्धारण के लिए सूर्य एवं चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करते हैं। 'पंचांग' तालिकाओं की एक पुस्तक है जिसमें प्रत्येक माह के दिनों के साथ-साथ संबंधित खगोलीय आँकड़ों को सूचीबद्ध किया जाता है। उदाहरणार्थ यह सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण, सूर्योदय एवं सूर्यास्त आदि जैसी घटनाओं का सटीक आकलन करता है। मौसम के पूर्वानुमान, त्योहारों की तिथियों और समय-निर्धारण आदि के लिए आज भी भारत में पंचांग का बड़े स्तर पर उपयोग होता है।

इतिहास के स्रोत कोई स्थान, व्यक्ति, लेख अथवा वस्तु जिसके माध्यम से हम अतीत की किसी घटना अथवा कालखंड से संबंधित जानकारी एकत्र करते हैं।

इतिहास के स्रोत क्या-क्या हैं?

आइए पता लगाएँ

क्या आप अपने माता एवं पिता के परिवार की तीन पीढ़ियों की जानकारी एकत्र कर सकते हैं? अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, परदादा-परदादी, परनाना-परनानी की एक वंशावली बनाइए। उनके नामों का पता लगाइए और यह भी कि वह जीवन-यापन के लिए क्या करते थे एवं उनका जन्म कहाँ हुआ था? साथ ही आप उन स्रोतों का भी उल्लेख कीजिए जहाँ से आपने ये सूचनाएँ प्राप्त की हैं।

संबंध	नाम	व्यवसाय	जन्म-स्थान	सूचना के स्रोत
दादा-दादी				
नाना-नानी				
परदादा-परदादी				
परनाना-परनानी				

आपने अपने परिवार के अतीत के संबंध में जानकारियाँ कैसे प्राप्त कीं? इन जानकारियों को प्राप्त करने के लिए क्या आपने छायाचित्रों, डायरियों, पहचान-पत्रों आदि का उपयोग किया या आप केवल अपने माता-पिता और संबंधियों की स्मृतियों पर निर्भर थे?

आइए विचार करें

क्या आपने कभी अपने घर अथवा आस-पास पुराने सिक्कों, पुस्तकों, वस्त्रों, आभूषणों अथवा बर्तनों को देखा है? इन वस्तुओं अथवा पुराने घरों एवं भवनों से हम किस प्रकार की सूचनाएँ एकत्र कर सकते हैं?

अभिलेख
किसी भी चिकनी सतह जैसे - धातु, पत्थर, काष्ठ, छाल, बर्तन, सिक्के आदि में लिखे गए लेख।

प्रत्येक वस्तु अथवा संरचना एक कहानी बताती है और वह चित्र-खंड पहेली (जिग्सॉ) के हिस्से की तरह होती है। जिन वस्तुओं को आप अपने घर में देखते हैं, वह आपको अपने परिवार के इतिहास के विषय में कुछ बताती हैं। इसी प्रकार हम ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्रित कर सकते हैं। एक बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इतिहास के मामले में पहेली के कुछ हिस्से गायब रह सकते हैं।

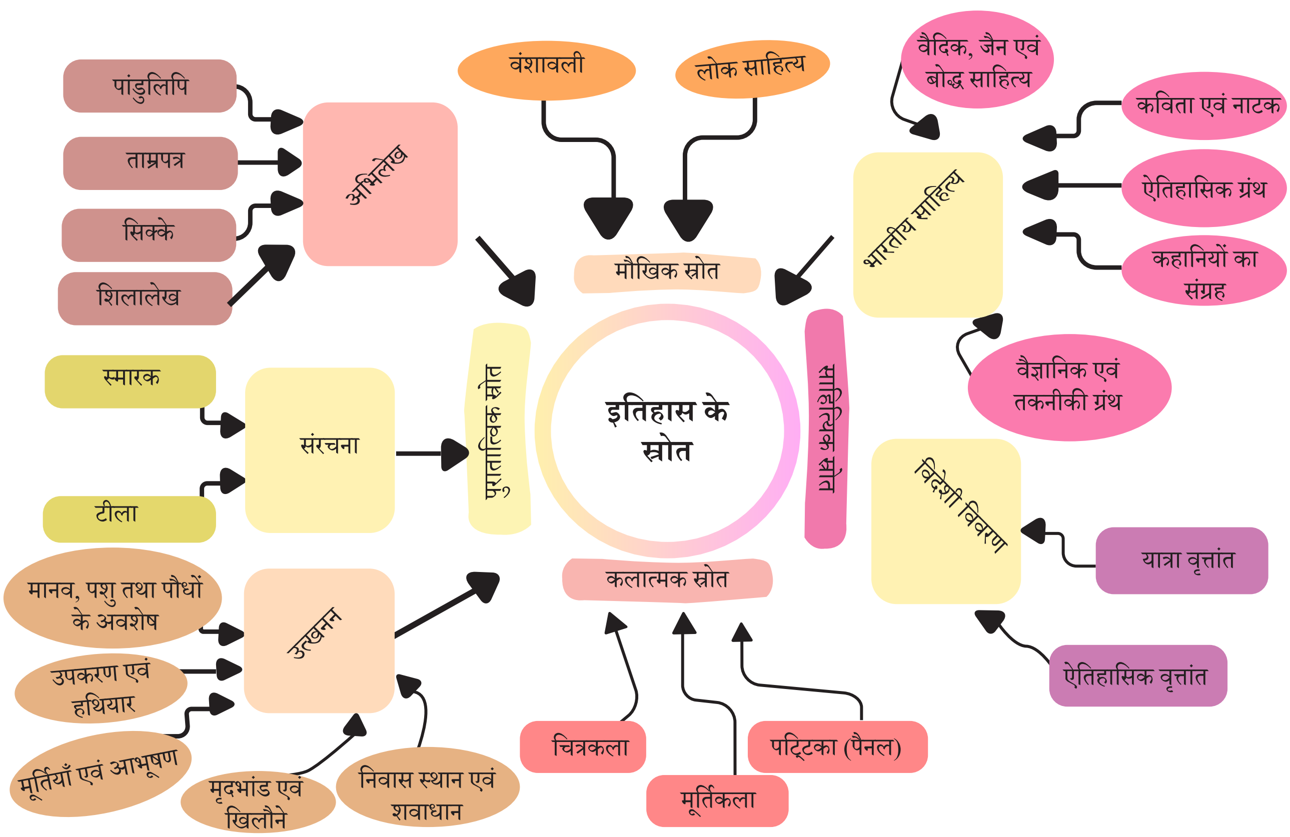

इतिहासकार ऐसा व्यक्ति जो अतीत का अध्ययन करता है एवं उसके विषय में लिखता है।

पृष्ठ 67 पर दिए गए इतिहास के स्रोत संबंधी चित्र को देखिए। यह इतिहास के प्रमुख स्रोतों को एक साथ प्रदर्शित करता है। आपको अभी इन सभी को याद रखने की आवश्यकता नहीं है; हम आगे चलकर इनमें से कुछ का उपयोग करेंगे। उदाहरणार्थ, जब **इतिहासकार** 1,500 वर्ष पूर्व के किसी राजा या रानी, प्राचीन स्मारक, युद्ध या व्यापार की कुछ वस्तुओं के बारे में जानकारी जुटाने का प्रयास करते हैं, तो वे बड़े ध्यान से अधिक से अधिक स्रोतों से जानकारी संकलित करने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी ये स्रोत एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं (जैसे चित्र-खंड पहेली (जिग्सॉ) के टुकड़े मेल खाते हैं), तो कभी यह एक-दूसरे के विपरीत सूचनाएँ प्रदान करते हैं (जैसे चित्र-खंड पहेली (जिग्सॉ) के टुकड़े मेल नहीं खाते)। ऐसी परिस्थितियों में यह निर्णय लेना पड़ता है कि किस स्रोत पर अधिक विश्वास किया जाए। इस प्रकार इतिहासकार जिस कालखंड का अध्ययन कर रहे होते हैं, वे उसके इतिहास का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं।

आनुवांशिकी जीव विज्ञान की वह शाखा जो यह अध्ययन करती है कि किस प्रकार पौधों, जानवरों या मनुष्यों की कुछ विशेषताएँ एवं गुण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं।

इतिहास के इन सभी स्रोतों में कौन योगदान देता है? इतिहासकारों के साथ ही पुरातत्व विज्ञानी, पुरालेखशास्त्री (जो प्राचीन अभिलेख पढ़ते हैं), मानव विज्ञानी (जो मानव समाज व संस्कृतियों का अध्ययन करते हैं), साहित्य व भाषा के विशेषज्ञ आदि इसमें अपना योगदान देते हैं। साथ ही पिछले 50 वर्षों में वैज्ञानिक अध्ययनों ने इतिहास के पुनर्निर्माण में अधिक से अधिक योगदान दिया है। उदाहरणार्थ प्राचीन जलवायु का अध्ययन, उत्खनन की गई सामग्री का रासायनिक अध्ययन और प्राचीन मानव की **आनुवांशिकी** के अध्ययन ने एक नया दृष्टिकोण दिया है जिससे और पूरक स्रोत प्राप्त हुए हैं। साथ ही जब इतिहासकार आधुनिक इतिहास (साधारणत: जिसका अर्थ है, पिछली दो अथवा तीन शताब्दियों का इतिहास) का अध्ययन करते हैं, तो समाचार-पत्र एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। पिछले कुछ दशकों के अध्ययन के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टी.वी., इंटरनेट आदि) का भी उपयोग किया जा सकता है।

आइए पता लगाएँ

अगले पृष्ठ पर इतिहास के स्रोतों से संबंधित कुछ चित्र दिए गए हैं। ये वस्तुएँ कौन-कौन सी हैं एवं आपके अनुसार क्या दर्शाती हैं? चित्र के सम्मुख दिए गए स्थान में वस्तु से संबंधित प्राप्त जानकारी को लिखिए।

मानव इतिहास का प्रारंभ

होमो सेपियंस (मानव) लगभग 3,00,000 (तीन लाख) वर्ष पूर्व से पृथ्वी पर रह रहे हैं। यह एक लंबा समय प्रतीत होता है, परंतु यह पृथ्वी के इतिहास का एक छोटा-सा अंश मात्र है। आइए, अपने आरंभिक इतिहास को संक्षेप में जानें।

आइए पता लगाएँ

ऊपर दिए गए चित्र में शैलाश्रय में आरंभिक मानव से संबंधित कुछ गतिविधियों को देखिए। आप इनमें से किस-किस गतिविधि को पहचान सकते हैं? प्रत्येक का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

आदिमानव को प्रकृति से अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक-दूसरे की सहायता करने के लिए वे टोलियों अथवा समूहों में रहते थे। वे मुख्यत: आखेटक एवं खाद्य संग्राहक थे तथा भोजन एवं आश्रय की निरंतर खोज करते रहते थे। इसका अर्थ है कि वे अपने जीवन के लिए खाने योग्य पौधों एवं फलों के संग्रह व आखेट पर

निर्भर थे। हमारे आदि-पूर्वजों के प्राकृतिक तत्वों को लेकर कुछ निश्चित विश्वास थे, संभवत: उनकी **मरणोपरांत जीवन** को लेकर भी कुछ धारणाएँ थीं।

मरणोपरांत जीवन
मृत्यु के बाद जीवन

यह समूह अस्थायी शिविरों, शैलाश्रयों अथवा गुफाओं में रहते थे एवं एक-दूसरे से जिन भाषाओं में संवाद करते थे, वे अब लुप्त हो चुकी हैं। उन्होंने अग्नि का उपयोग किया। पत्थर की उन्नत कुल्हाड़ियों एवं ब्लेड्स, नुकीले तीरों एवं अन्य उपकरणों आदि के निर्माण ने उनके जीवन को सरल बना दिया। संपूर्ण विश्व की सैकड़ों गुफाओं के शैल-चित्रों में उनके जीवन के विविध आयाम दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ चित्र साधारण आकृतियों एवं प्रतीकों के हैं, जबकि कुछ अन्य चित्र अधिक विस्तृत हैं एवं उनमें पशुओं एवं मानवों के दृश्य हैं। समय के साथ, इन आदिमानवों ने पत्थर एवं मनकों की माला, पशुओं के दाँतों के पेंडेंट आदि जैसे साधारण आभूषण बना लिए और कभी-कभी वे दूसरे समूहों के साथ इनका आदान-प्रदान करने लगे।

पहली उपज

एक लंबे समय में पृथ्वी की जलवायु में अनेक परिवर्तन आए हैं। एक समय पृथ्वी पर बहुत ठंड थी एवं इसका एक बड़ा भाग हिमाच्छादित (बर्फ से ढँका हुआ) था, इसलिए इसे 'हिम युग' कहा जाता था। इसके विषय में आप विज्ञान में विस्तार से अध्ययन करेंगे। बाद में जब जलवायु गरम होने लगी तो हिम का कुछ भाग पिघल गया, जिसके कारण तत्कालीन नदियों में जलभराव हो गया जो बाद में समुद्रों में समाहित हो गईं। हिम युग लगभग 1,00,000 (एक लाख) वर्ष पूर्व से लेकर 12,000 वर्ष पूर्व तक रहा।

इसके उपरांत मानव के लिए जीने योग्य परिस्थितियों में सुधार आया। विश्व के कई हिस्सों में उन्होंने एक स्थान पर बसना तथा अनाज उगाना आरंभ कर दिया। उन्होंने गाय, बकरी आदि जैसे जानवरों का घरेलूकरण भी आरंभ कर दिया। भोजन की अधिक उपलब्धता के कारण ये समूह अपने आकार व संख्या में बढ़ गए। ये प्राय: नदियों के किनारे बसने लगे थे, लेकिन इसका एकमात्र कारण जल की उपलब्धता नहीं थी अपितु यहाँ की मृदा का अधिक उपजाऊ होना भी था। इससे अन्न उगाने की प्रक्रिया अधिक सरल हो गई।

आइए पता लगाएँ

अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र का अवलोकन कीजिए। यह कुछ सहस्त्राब्दी पूर्व के कृषक समुदाय की गतिविधियों को प्रदर्शित करता है। उन गतिविधियों को सूचीबद्ध कीजिए जिनकी आप पहचान कर सकते हैं।

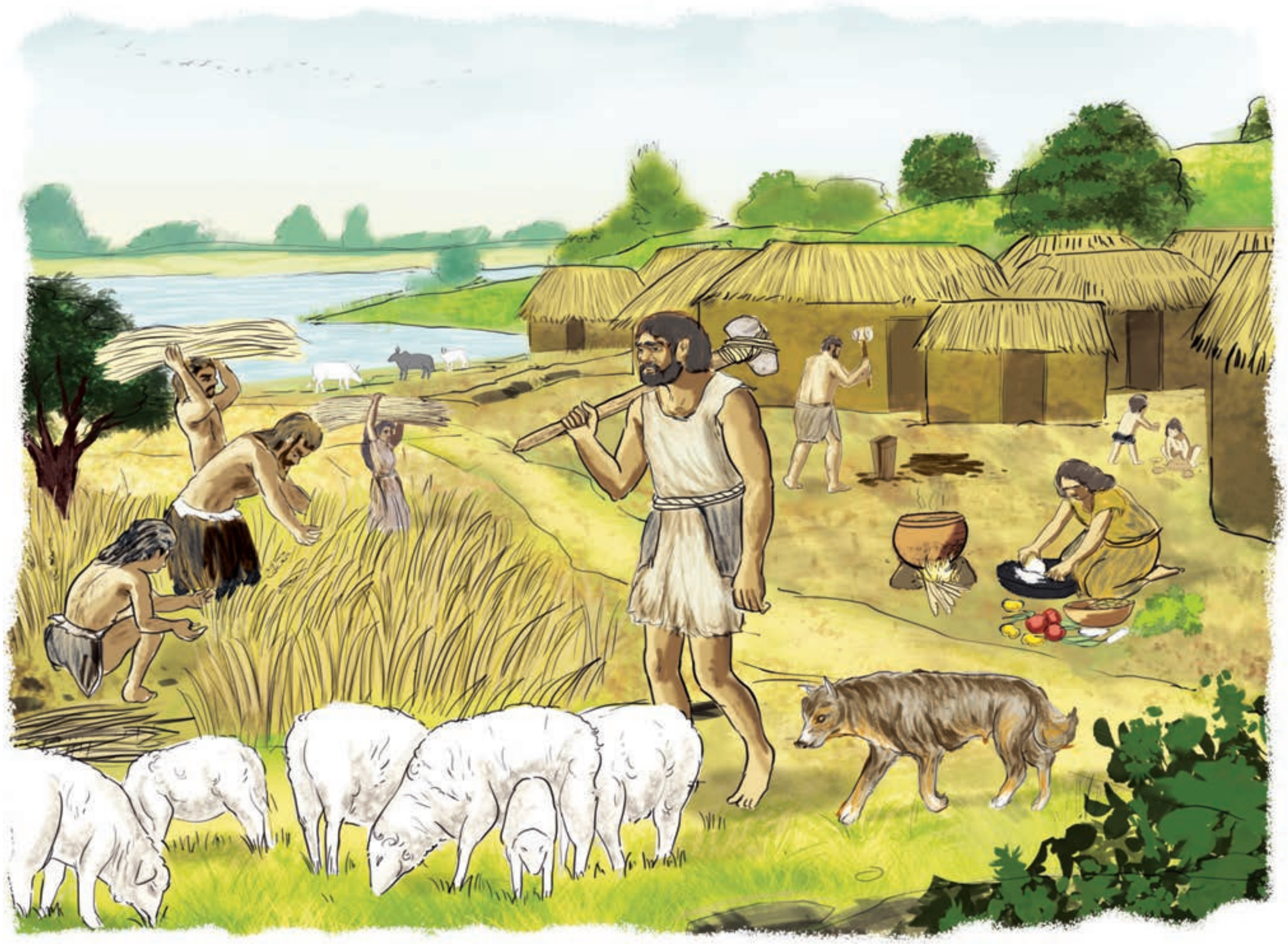

आइए विचार करें

- पहले प्रदर्शित शैल-चित्र एवं उपर्युक्त चित्र, दोनों में ही पुरुषों एवं महिलाओं को कुछ निश्चित भूमिकाओं में दर्शाया गया है। यद्यपि ये स्वाभाविक प्रतीत होते हैं, परंतु आवश्यक नहीं कि ये सही ही हों और ये सभी परिस्थितियों पर लागू नहीं होते। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि शैल-चित्र में महिलाओं ने गुफा में चित्रकारी करने के लिए रंगों को तैयार किया हो अथवा स्वयं चित्रकारी की हो। दोनों ही चित्रों में हो सकता है कि पुरुषों ने भोजन की कोई वस्तु बनाई हो अथवा शिशुओं की देखभाल में मदद की हो।
- ऐसी भूमिकाओं एवं परिस्थितियों पर विचार करते हुए कक्षा में चर्चा कीजिए। इस बात का ध्यान रखिए कि हमारे पास उस समय की केवल सीमित सूचनाएँ ही उपलब्ध हैं।

जैसे-जैसे समुदायों का विकास हुआ, समाज जटिल होता गया। सरदार अथवा मुखिया लोगों के **कल्याण** के लिए उत्तरदायी थे एवं सभी सामूहिक रूप से सामुदायिक कल्याण के लिए कार्य करते थे। उदाहरण के लिए, निजी स्वामित्व का भाव नहीं था और भूमि पर सामुदायिक रूप से कृषि की जाती थी।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, **पल्ली** (उप-ग्राम) बड़े गाँवों में परिवर्तित हो गए, जो मुख्यत: भोजन, वस्त्र एवं उपकरण आदि वस्तुओं का आदान-प्रदान करने लगे। धीरे-धीरे इन गाँवों में संप्रेषण एवं आवागमन का तंत्र विकसित हुआ एवं इनमें से कुछ छोटे कस्बों में परिवर्तित हो गए। उदाहरणार्थ, मृदभांड एवं मिट्टी की अन्य वस्तुओं को बनाने एवं धातुओं के उपयोग (पहले तांबा और फिर लोहा) की तकनीक का आगमन हुआ जिससे टिकाऊ उपकरण, दैनिक उपयोग की वस्तुओं एवं आभूषणों को बनाना सरल हो गया।

हम अध्याय 6 में देखेंगे कि इन चरणों ने किस प्रकार से 'सभ्यता' के उदय में योगदान दिया। अभी यह याद रखना आवश्यक है कि मानव सभ्यता को विकास के इन प्रारंभिक चरणों में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। इस दौरान कुछ कठिन क्षण भी आए, जब कुछ पूर्ववर्ती प्रजातियों की भाँति मानव सभ्यता भी लुप्त हो सकती थी। हम उन आदिमानवों के बारे में कभी नहीं जान पाएँगे जिनके साहस और दृढ़ता के कारण आज हमारा अस्तित्व संभव हो पाया है।

कल्याण
स्वास्थ्य, समृद्धि और भलाई

पल्ली
एक छोटी बस्ती अथवा छोटा गाँव

आगे बढ़ने से पहले...

- हमने अपने अतीत के बारे में और अधिक जानने के कुछ तरीकों का पता लगाया। समय-रेखा की अवधारणा हमें भिन्न-भिन्न समय पर ऐतिहासिक घटनाओं के अनुक्रम को समझने में सहायता करती है।
- समय की गणना की विभिन्न विधियाँ हैं— वर्ष, दशक, शताब्दी, सहस्त्राब्दी।
- इतिहास के विभिन्न स्रोत हैं। ये ऐतिहासिक घटनाओं को समझने व उनका पुनर्निर्माण करने में सहायक होते हैं।
- हमने आरंभिक मानव जीवन को संक्षेप में समझा और यह भी जाना कि मानव-समाज कैसे समय के साथ जटिल होता गया।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. एक परियोजना के रूप में अपने आस-पास उपलब्ध इतिहास के स्रोतों का उपयोग करते हुए अपने परिवार (यदि आप गाँव में रहते हैं, तो गाँव) का इतिहास लिखिए। परियोजना के लिए अपने शिक्षक से मार्गदर्शन हेतु निवेदन कीजिए।
2. क्या हम इतिहासकारों की तुलना जासूसों से कर सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।
3. तिथियों के साथ कुछ अभ्यास —
   - समय-रेखा पर निम्नलिखित तिथियों को कालक्रमानुसार लगाइए — 323 सा.सं., 323 सा.सं.पू., 100 सा.सं., 100 सा.सं.पू., 1900 सा.सं.पू., 1090 सा.सं., 2024 सा.सं.
   - यदि सम्राट चंद्रगुप्त का जन्म 320 सा.सं.पू. में हुआ तो बताइए उनका संबंध किस शताब्दी से था? उनका जन्म बुद्ध के जन्म से कितने वर्ष पश्चात हुआ?
   - झाँसी की रानी का जन्म 1828 सा.सं. में हुआ। उनका संबंध किस शताब्दी से है? उनका जन्म भारत की स्वतंत्रता से कितने वर्ष पूर्व हुआ?
   - '12,000 वर्ष पूर्व' को तिथि के रूप में बदलिए।
4. किसी निकटतम संग्रहालय के भ्रमण की योजना बनाइए। संग्रहालय की प्रदर्शनियों के विषय में पहले से कुछ जानकारी जुटा लीजिए। इस भ्रमण के दौरान टिप्पणियाँ तैयार कीजिए। भ्रमण के पश्चात एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखिए और उसमें भ्रमण से जुड़ी स्मृतियों एवं रोचक बातों या घटनाओं को रेखांकित कीजिए।
5. अपने विद्यालय में किसी पुरातत्व विज्ञानी अथवा इतिहासकार को आमंत्रित कीजिए और उनसे स्थानीय इतिहास एवं उसे जानना क्यों महत्वपूर्ण है, इस विषय में व्याख्यान देने का आग्रह कीजिए।

अध्याय 5

हमारा भारत

भारत में प्रारंभिक काल से ही आध्यात्मिक और सांस्कृतिक एकता स्थापित हो गई थी, जो हिमालय और दो समुद्रों के बीच इस महान मानवता की जीवनधारा का अभिन्न अंग बन गई।

— श्री अरविंद

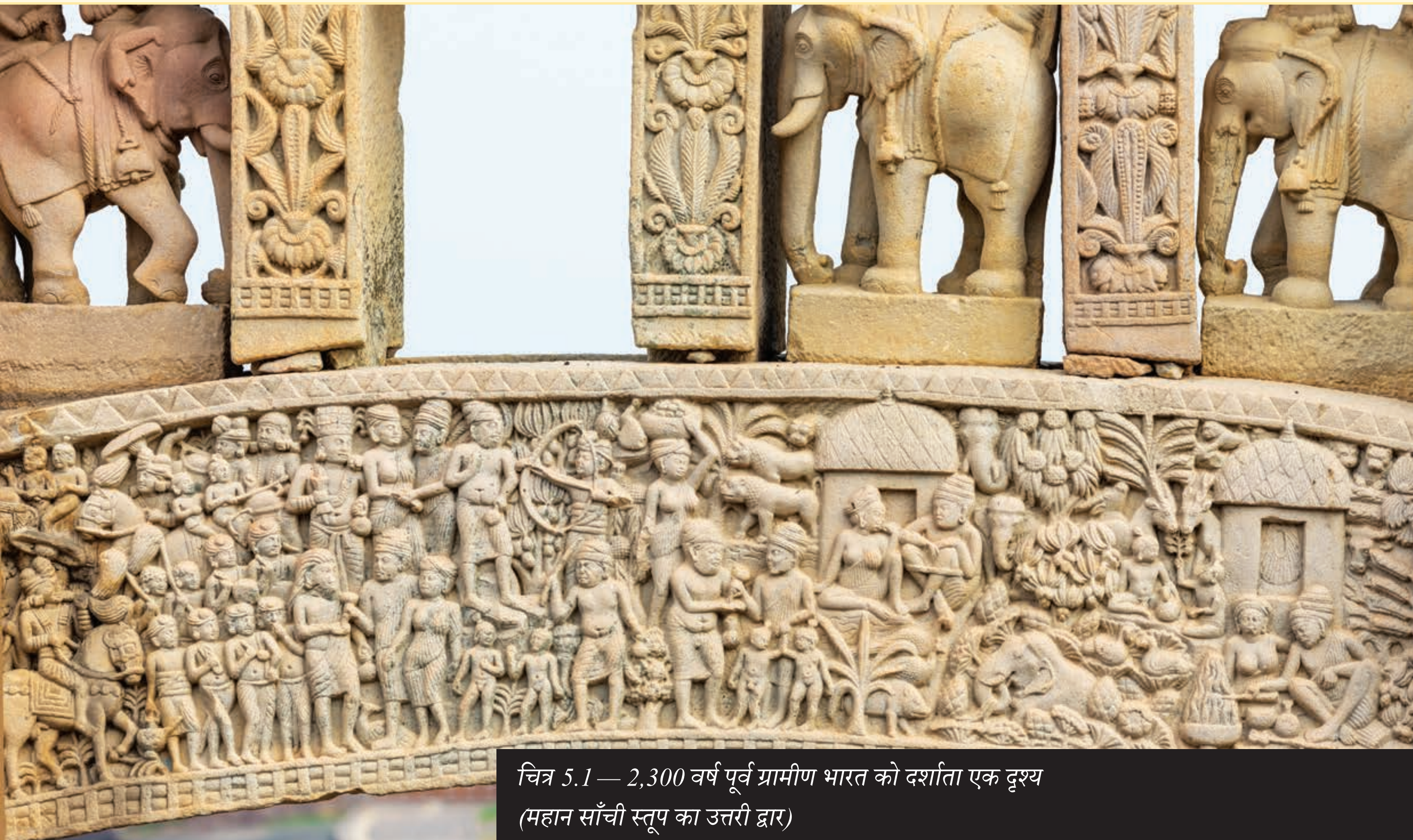

चित्र 5.1 — 2,300 वर्ष पूर्व ग्रामीण भारत को दर्शाता एक दृश्य (महान साँची स्तूप का उत्तरी द्वार)

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *भारत को हम कैसे परिभाषित कर सकते हैं?*
2. *भारत के कुछ प्राचीन नाम क्या थे?*

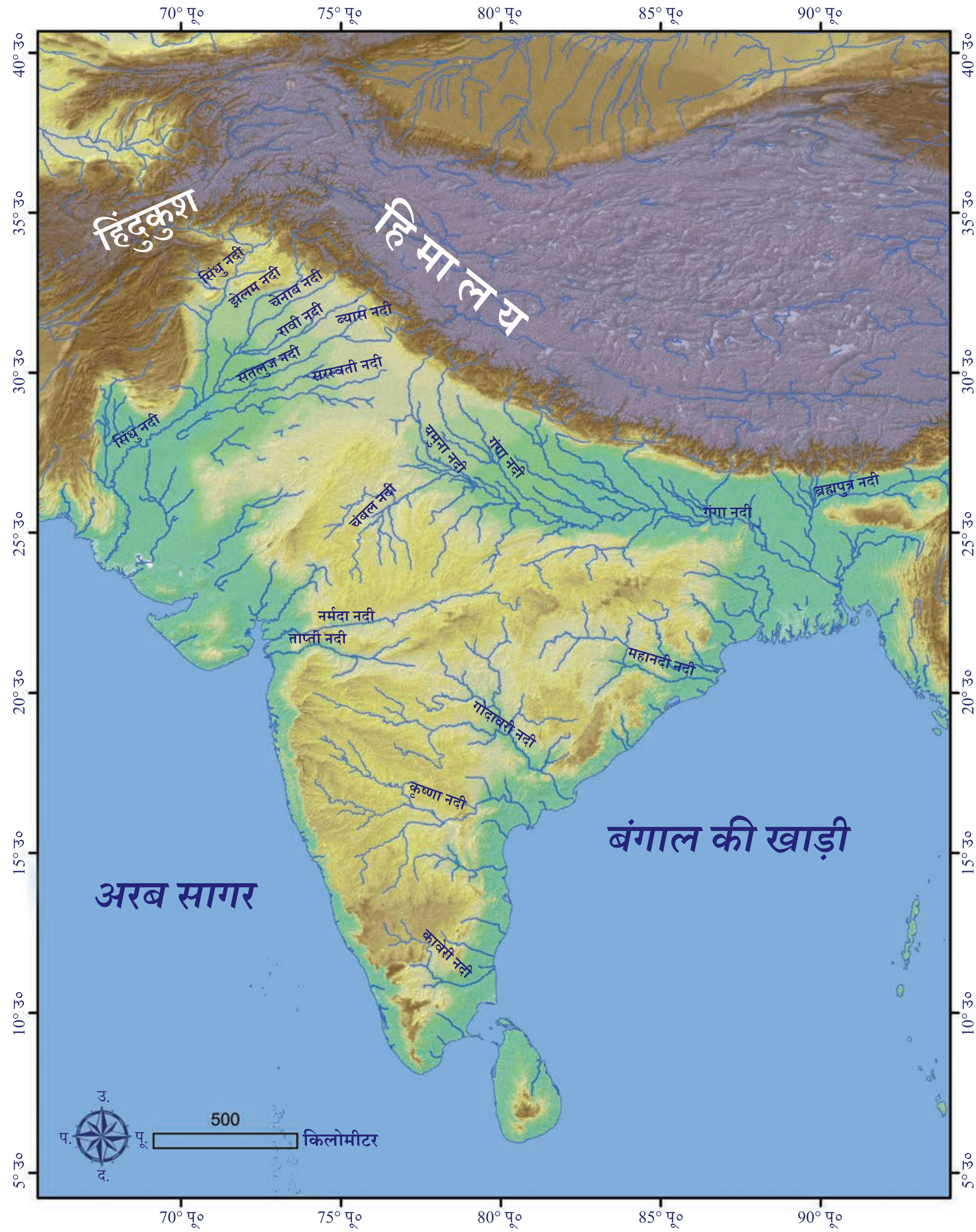

चित्र 5.2 — भारतीय उपमहाद्वीप का भौतिक मानचित्र जिसमें कुछ नदियाँ प्रदर्शित हैं।

आज का भारत एक आधुनिक राष्ट्र है, जिसकी परिभाषित सीमाएँ, राज्य और ज्ञात जनसंख्या है। हालाँकि यह 500, 2,000 या 5,000 वर्ष पूर्व बहुत अलग था। विश्व के इस भाग को हम प्राय: 'भारतीय उपमहाद्वीप' कहते हैं। इसके भिन्न-भिन्न नाम रहे हैं और इसकी सीमाएँ भी बदलती रही हैं। विभिन्न स्रोतों से हम भारत के अतीत और विकास के बारे में जान सकते हैं। आइए, पता करें।

आइए विचार करें

इस अध्याय के प्रारंभ में दिए गए भारतीय उपमहाद्वीप के भौतिक मानचित्र का अध्ययन कीजिए। वे कौन-कौन सी प्राकृतिक सीमाएँ हैं जिसे आप समझ सकते हैं?

इतिहास के इस क्रम में भारत को उसके **निवासियों** और विदेशों से आए आगंतुकों के द्वारा कई नामों से बुलाया जाता रहा है। ये नाम प्राचीन पुस्तकों, यात्रियों और तीर्थयात्रियों के वृत्तांतों और शिलालेखों में मिलते हैं।

निवासी
वे लोग जो एक स्थान विशेष में रहते हैं।

भारतीयों ने भारत नाम कैसे दिया?

ऋग्वेद भारत का सबसे प्राचीन ग्रंथ है। हम अध्याय 7 में देखेंगे कि यह हजारों वर्ष पुराना है। इस ग्रंथ में उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र का नाम 'सप्त सैंधव' अर्थात 'सात नदियों की भूमि' है। 'सैंधव' शब्द सिंधु से आया है जिसका आशय सिंधु नदी या सामान्यत: एक नदी से है।

समय बीतने के साथ ही हमें साहित्य में भारत के अन्य क्षेत्रों के नाम भी मिलने लगते हैं।

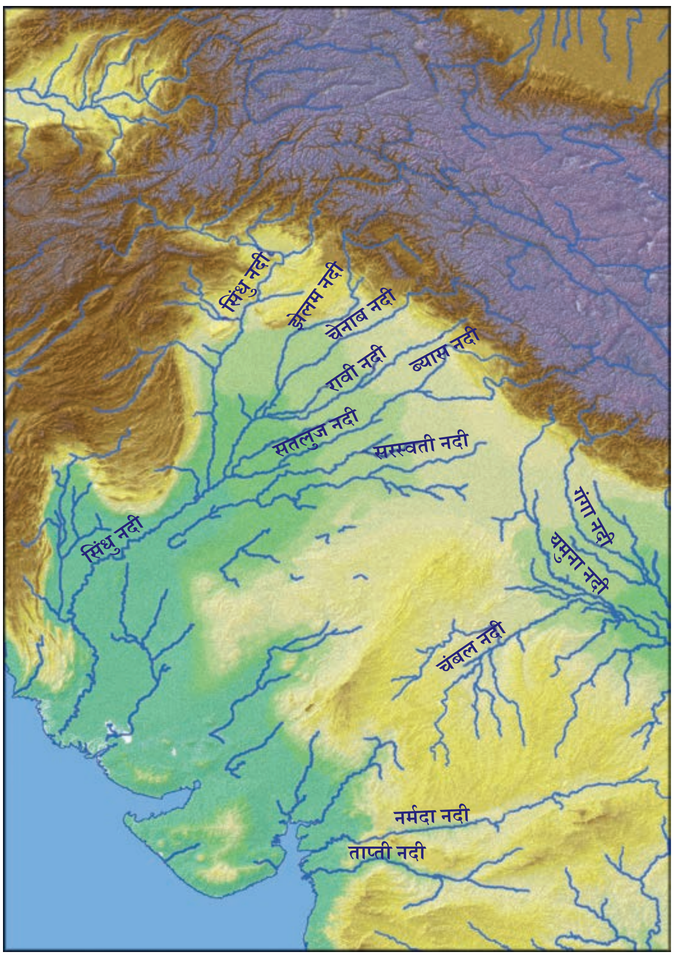

चित्र 5.3 — भारतीय उपमहाद्वीप का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र

महाभारत, भारत के सबसे प्रसिद्ध ग्रंथों में से एक है (इसके बारे में हम 'हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा ज्ञान परंपराएँ' अध्याय में पढ़ेंगे)। रोचक बात यह है कि इसमें अनेक क्षेत्रों को सूचीबद्ध किया गया है, जैसे – काश्मीर (लगभग आज का कश्मीर), कुरूक्षेत्र (आज हरियाणा का भाग), वंग (बंगाल का भाग), प्राग्ज्योतिष (कुछ-कुछ असम का भाग), कच्छ (आज का कच्छ) और केरल (लगभग आज का केरल) इत्यादि।

आइए पता लगाएँ

क्या आप पृष्ठ 79 पर मानचित्र (चित्र 5.4) में दिए गए कुछ क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं? आपने जिन क्षेत्रों के बारे में सुना हो, उनकी सूची बनाइए।

वास्तव में हमें कब समूचे भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एक नाम मिला? चूँकि प्राचीन भारतीय ग्रंथों की तिथि निर्धारित करना कठिन है, अतः इस प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है। महाभारत में 'भारतवर्ष' तथा 'जम्बूद्वीप' शब्द का प्रयोग किया गया है तथा विद्वान सामान्यत: इस बात से सहमत हैं कि सा.सं.पू. की कुछ शताब्दियों पूर्व से यह महाकाव्य लिखा जाने लगा था।

पहला शब्द 'भारतवर्ष' स्पष्ट रूप से समूचे उपमहाद्वीप के लिए प्रयुक्त हुआ है और इस ग्रंथ में अनगिनत नदियों और लोगों के नाम सम्मिलित हैं। भारतवर्ष से आशय 'भरत' के देश से है। 'भरत' वह नाम है जो सर्वप्रथम ऋग्वेद में उल्लिखित हुआ था। वहाँ इसका अभिप्राय लोगों के एक प्रमुख वैदिक समूह से है। बाद के साहित्य में विभिन्न महाराजाओं के लिए 'भरत' नाम उल्लिखित हुआ।

दूसरे शब्द 'जम्बूद्वीप' से आशय 'जामुन वृक्ष के फल के द्वीप' से है। यह वास्तव में भारत में पाया जाने वाला एक सामान्य पेड़ है जिसे 'जम्बुल वृक्ष', 'मालाबार प्लम या जामुन वृक्ष' आदि भी कहते हैं। आगे जम्बूद्वीप भारतीय उपमहाद्वीप का पर्याय बन गया।

वास्तव में इस संबंध में हमें एक भारतीय सम्राट से बहुत अच्छा संकेत मिलता है— उनका नाम अशोक है, जिनके विषय में हम बाद में जानेंगे। अभी के लिए हम उनकी तिथि को लगभग 250 सा.सं.पू. मान सकते हैं। जैसा कि हम देखेंगे, उन्होंने हमारे लिए बहुत से शिलालेख छोड़े हैं। उनमें से एक में उन्होंने उसी नाम 'जम्बूद्वीप' का संपूर्ण भारत का वर्णन करने के लिए उपयोग किया है। उस समय इसमें आज के बांग्लादेश, पाकिस्तान और साथ ही साथ अफगानिस्तान के भाग सम्मिलित थे।

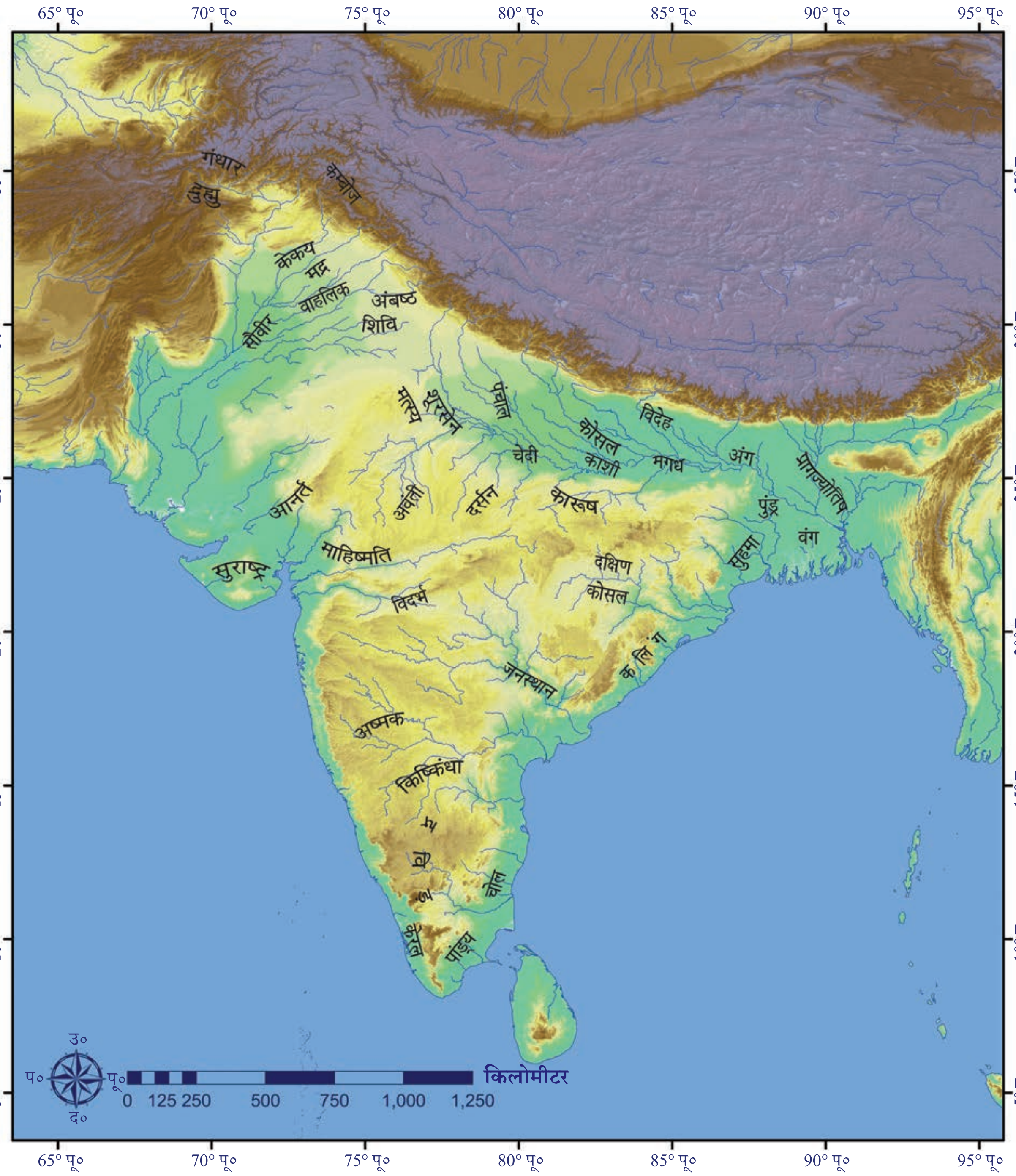

चित्र 5.4 — महाभारत में सूचीबद्ध कुछ क्षेत्रों को दर्शाता मानचित्र (अध्याय में कई क्षेत्रों का उल्लेख राज्यों के रूप में भी किया गया है)। आपको इन क्षेत्रों को याद रखने की आवश्यकता नहीं है, परंतु आप ध्यान दें कि इनका विस्तार उपमहाद्वीप के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में मिलता है।

कुछ शताब्दियों के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के लिए सामान्यतया 'भारत' नाम का प्रयोग किया जाने लगा। उदाहरण के लिए, एक प्राचीन ग्रंथ 'विष्णु पुराण' में हम पढ़ते हैं—

> *उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चै दक्षिणम्*
> *वर्षं तद् भारतं नाम...*
>
> *वह देश जो समुद्र के उत्तर में और*
> *हिमाच्छादित पर्वतों के दक्षिण में है, उसे भारत कहते हैं।*

यह नाम 'भारत' आज भी प्रयोग में है। उत्तर भारत में इसे सामान्यतया 'भारत' लिखते हैं, जबकि दक्षिण भारत में प्राय: 'भारतम्' लिखते हैं।

आइए विचार करें

क्या आप 'हिमाच्छादित पर्वतों' को पहचानते हैं? क्या आप समझते हैं कि भारत का यह संक्षिप्त विवरण सही है?

यह जानना रोचक है कि भारत के लिए देश के विभिन्न भागों ने एक समान परिभाषा को अपनाया है। उदाहरण के लिए, 2,000 वर्ष पूर्व प्राचीन तमिल साहित्य की एक कविता में एक ऐसे राजा की प्रशंसा की गई है जिसका नाम "दक्षिण में केप कुमारी से उत्तर में महान पर्वत तक, पूर्व के महासागर से पश्चिम के महासागर" तक जाना जाता है। 'उत्तर में महान पर्वत' को अब आप पहचान सकते हैं और 'केप कुमारी' की पहचान करने में भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए। इस तरह प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय अपने भूगोल को अच्छी तरह से जानते थे।

ध्यान रखें

भारतीय **संविधान**, जो सर्वप्रथम अंग्रेजी में लिखा गया था, की शुरुआत में ही 'इंडिया, दैट इज भारत' वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। संविधान के हिंदी अनुवाद में भी वही 'भारत अर्थात इंडिया' को उल्लिखित किया गया है।

आइए विचार करें

चित्र 5.5 (पृष्ठ 82) में भारत के मूल संविधान के प्रथम पृष्ठ में क्या आप 'इंडिया अर्थात भारत' को समझ सकते हैं?

विदेशियों ने इंडिया नाम कैसे रखा

विदेशियों में, सर्वप्रथम प्राचीन ईरान (फारस) के निवासियों ने 'भारत' का उल्लेख किया था। छठी शताब्दी सा.सं.पू., एक फारसी सम्राट ने सैन्य अभियान आरंभ किया और सिंधु नदी के क्षेत्र, जिसे 'सिंधु' कहा जाता था, पर नियंत्रण किया। अत: यह कोई आश्चर्य नहीं है कि अपने प्रारंभिक लेखों और शिलालेखों में फारसियों ने भारत को 'हिंद','हिंदु' या 'हिंदू' से निर्दिष्ट किया था, जो उनकी भाषा में 'सिंधु' का रूपांतरण था *(ध्यान रखिए कि प्राचीन फारसी में 'हिंदू' पूर्णतया एक भौगोलिक शब्द है। यहाँ इसे हिंदू धर्म से संदर्भित नहीं किया गया है)*।

इन्हीं फारसी स्रोतों के आधार पर प्राचीन यूनानियों ने इस भाग को 'इंडोई' अथवा 'इंडिके' नाम दिया था। इन्होंने हिंदू शब्द के पहले अक्षर 'ह' को हटा दिया क्योंकि यह अक्षर यूनानी भाषा में नहीं था।

सिंधु → हिंदु → इंडोई/इंडिके

प्राचीन चीनियों ने भी भारत से संपर्क स्थापित किया था। विभिन्न ग्रंथों में इन्होंने इंडिया का उल्लेख 'यिन्तू' या 'यिंदू' से किया था। यह शब्द भी मूलत: 'सिंधु' से आया है।

सिंधु → हिंदू → इंदू → यिंदू

संविधान
किसी देश के आधारभूत सिद्धांतों और कानूनों को बताने वाला प्रलेख। भारतीय संविधान 1950 में लागू हुआ। इसका अध्ययन आप कक्षा 7 में करेंगे।

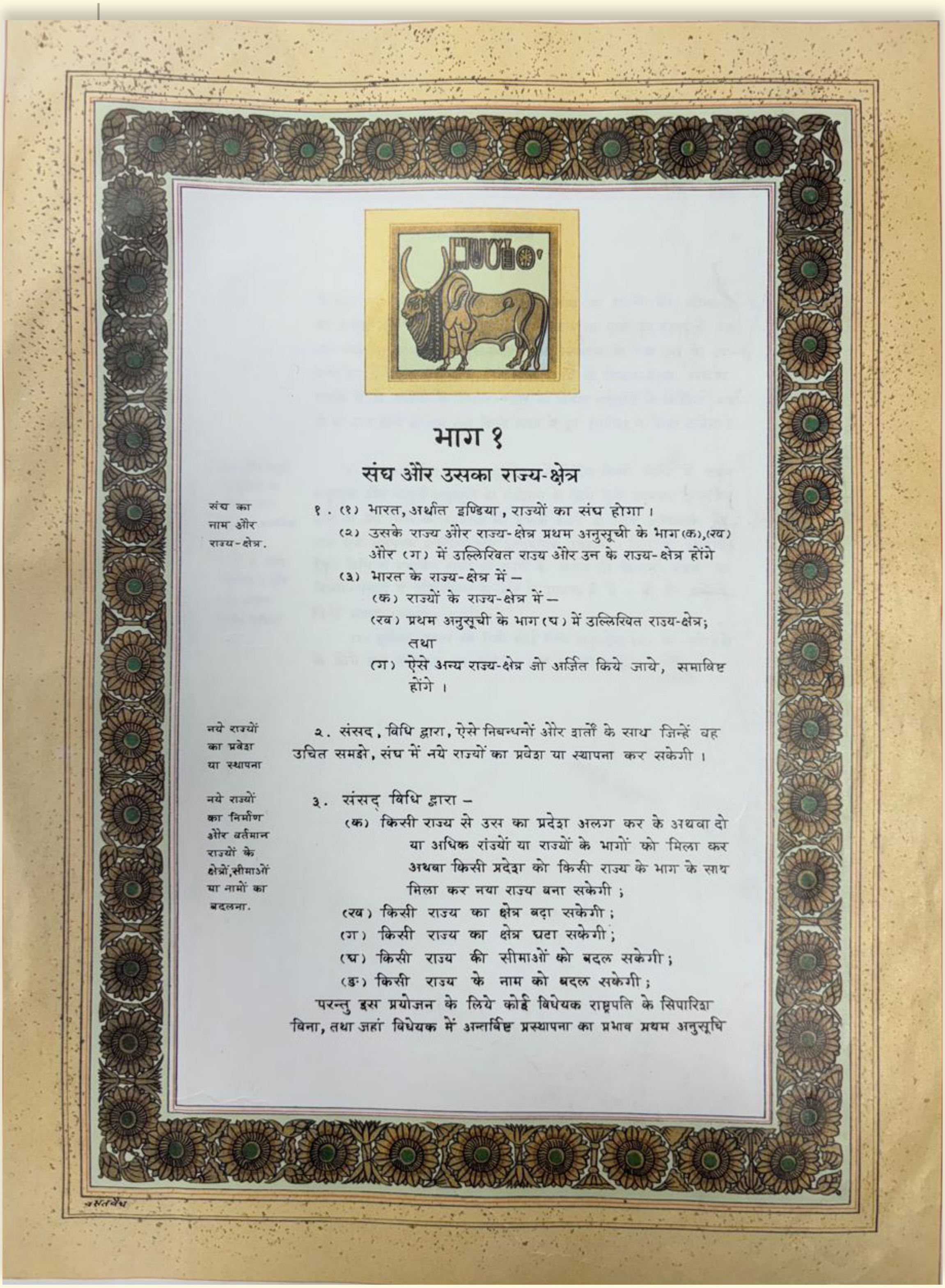

भाग १

संघ और उसका राज्य-क्षेत्र

संघ का नाम और राज्य-क्षेत्र.

१. (१) भारत, अर्थात इण्डिया, राज्यों का संघ होगा।

(२) उसके राज्य और राज्य-क्षेत्र प्रथम अनुसूची के भाग (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित राज्य और उन के राज्य-क्षेत्र होंगे

(३) भारत के राज्य-क्षेत्र में —

(क) राज्यों के राज्य-क्षेत्र में —

(ख) प्रथम अनुसूची के भाग (घ) में उल्लिखित राज्य-क्षेत्र; तथा

(ग) ऐसे अन्य राज्य-क्षेत्र जो अर्जित किये जाये, समाविष्ट होंगे।

नये राज्यों का प्रवेश या स्थापना

२. संसद, विधि द्वारा, ऐसे निबन्धनों और शर्तों के साथ जिन्हें वह उचित समझे, संघ में नये राज्यों का प्रवेश या स्थापना कर सकेगी।

नये राज्यों का निर्माण और वर्तमान राज्यों के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों का बदलना.

३. संसद् विधि द्वारा —

(क) किसी राज्य से उस का प्रदेश अलग कर के अथवा दो या अधिक राज्यों या राज्यों के भागों को मिला कर अथवा किसी प्रदेश को किसी राज्य के भाग के साथ मिला कर नया राज्य बना सकेगी;

(ख) किसी राज्य का क्षेत्र बढ़ा सकेगी;

(ग) किसी राज्य का क्षेत्र घटा सकेगी;

(घ) किसी राज्य की सीमाओं को बदल सकेगी;

(ङ) किसी राज्य के नाम को बदल सकेगी;

परन्तु इस प्रयोजन के लिये कोई विधेयक राष्ट्रपति के सिपारिश बिना, तथा जहां विधेयक में अन्तर्विष्ट प्रस्थापना का प्रभाव प्रथम अनुसूचि

चित्र 5.5 — भारत के संविधान का प्रथम पृष्ठ
(स्रोत – लोक सभा सचिवालय, नई दिल्ली, 1999
हिंदी प्रतिलिपि — प्रबंधक, भारत सरकार, फोटो लिथो मुद्रणालय, नई दिल्ली द्वारा निर्मित की गई।)

ध्यान रखें

ज़ुआनज़ैंग (Xuanzang; पूर्व में इसे ह्वेनसांग उच्चारित किया जाता था) ने 7वीं सा.सं. में चीन से भारत की यात्रा की। उन्होंने भारत के कई भागों का भ्रमण किया, विद्वानों से मिले, बौद्ध ग्रंथों को एकत्रित किया और 17 वर्ष बाद चीन वापस लौट गए। वहाँ उन्होंने संस्कृत से चीनी भाषा में उन पांडुलिपियों का अनुवाद किया जो वह अपने साथ ले गए थे। आगे आने वाली शताब्दियों में कई अन्य चीनी विद्वानों ने भी भारत का भ्रमण किया।

एक अन्य चीनी शब्द 'तियन्ज़ू' को 'सिंधु' से लिया गया था, परंतु इस शब्द को 'स्वर्गतुल्य स्वामी' के रूप में भी समझा जा सकता है। यह बताता है कि चीनियों का बुद्ध की भूमि के रूप में भारत के प्रति कितना सम्मान था।

आप संभवत: हाल के पारिभाषिक शब्द 'हिंदुस्तान' से भलीभाँति परिचित होंगे, परंतु आप यह नहीं जानते होंगे कि यह शब्द आज से 1,800 वर्ष पूर्व सर्वप्रथम एक फारसी शिलालेख में प्रयोग किया गया था। बाद में, भारत पर आक्रमण करने वालों ने भारतीय उपमहाद्वीप को वर्णित करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया।

आइए पता लगाएँ

क्या आप भारत के लिए प्रयुक्त भिन्न-भिन्न नामों से इस तालिका को पूर्ण कर सकते हैं?

फारसी	
यूनानी	
लैटिन	भारत
चीनी	
अरबी और फारसी	
अंग्रेजी	इंडिया
फ्रेंच	इन्डे

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत एक प्राचीन भूमि है, जिसे इसके इतिहास के क्रम में कई नाम दिए गए हैं।
- प्राचीन भारतीयों द्वारा दिए गए नामों में 'जम्बूद्वीप' तथा 'भारत' सम्मिलित हैं। बाद के समय में 'भारत' शब्द अधिक प्रचलित हुआ। अधिकांश भारतीय भाषाओं में यही नाम मिलता है।
- भारत आने वाले विदेशी आगंतुकों और आक्रमणकारियों ने भारत के लिए सिंधु या सिंधु नदी आधारित नामों को अपनाया। इसके परिणामस्वरूप 'हिंदू', 'इंडोई' तथा अंततः इंडिया जैसे नाम बने।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. अध्याय के आरंभ में दिए गए उद्धरण का क्या अर्थ है? चर्चा कीजिए।
2. सही अथवा गलत की पहचान कीजिए—
    - 'ऋग्वेद' में भारत के संपूर्ण भूगोल का वर्णन किया गया है।
    - 'विष्णु पुराण' में संपूर्ण उपमहाद्वीप का वर्णन किया गया है।
    - अशोक के समय 'जम्बूद्वीप' में आज का भारत, अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्र, बांग्लादेश और पाकिस्तान सम्मिलित थे।
    - महाभारत में कश्मीर, कच्छ और केरल समेत कई क्षेत्रों को सूचीबद्ध किया गया है।
    - 'हिंदुस्तान' शब्द का प्रयोग 2,000 वर्ष से भी पहले सर्वप्रथम एक यूनानी शिलालेख में किया गया था।
    - प्राचीन फारसी में 'हिंदू' शब्द का उपयोग हिंदू धर्म के लिए किया गया है।
    - विदेशी यात्रियों द्वारा इंडिया को 'भारत' नाम दिया गया।
3. यदि आपका जन्म 2,000 वर्ष पूर्व हुआ होता और आपको अपने देश का नामकरण करने का अवसर मिलता, तो आप किस नाम का चयन करते एवं क्यों? अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग कीजिए।
4. प्राचीन काल में विश्व के विभिन्न भागों से लोग भारत की यात्रा क्यों करते थे? इस प्रकार की लंबी यात्रा करने के पीछे उनका उद्देश्य क्या था? *(संकेत – कम से कम चार या पाँच उद्देश्य हो सकते हैं।)*

भारतीय सभ्यता का प्रारंभ

अध्याय 6

भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता, जो हड़प्पा, सिंधु अथवा सिंधु-सरस्वती सभ्यता के नाम से जानी जाती है, वास्तव में कई मायनों में एक अनूठी सभ्यता थी... (इसने दिखाया कि कैसे) एक सम्यक रूप से संतुलित समुदाय रहता है — जहाँ धनवान और निर्धन के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं है... संक्षेप में, हड़प्पा के सामाजिक परिदृश्य में शोषण नहीं, बल्कि आपसी सामंजस्य दिखाई देता है।

— बी.बी.लाल

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *सभ्यता क्या है?*
2. *भारतीय उपमहाद्वीप की आरंभिक सभ्यता कौन-सी थी?*
3. *उसकी मुख्य उपलब्धियाँ क्या थीं?*

0683CH06

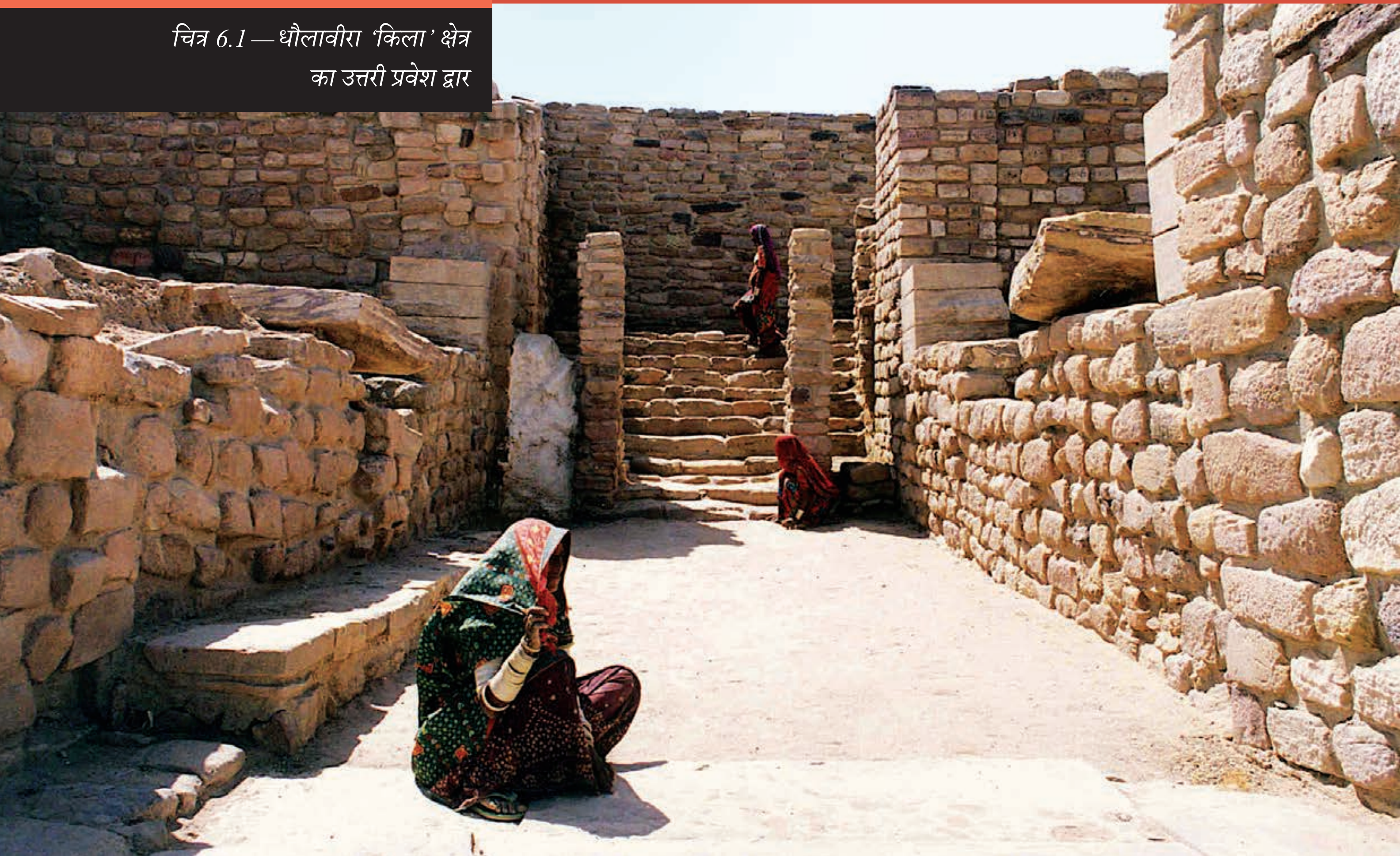

चित्र 6.1 — धौलावीरा 'किला' क्षेत्र का उत्तरी प्रवेश द्वार

सभ्यता क्या है?

धातु विज्ञान
धातु विज्ञान के अंतर्गत प्रकृति से धातु निष्कर्षण, उन्हें शुद्ध करने, आपस में मिलाने की तकनीकों और साथ-साथ धातु और उसके गुणों का वैज्ञानिक अध्ययन शामिल है।

अध्याय 4 के अंत में हमने देखा कि कैसे मनुष्य का पहला समूह एक स्थान पर रहने लगा, कृषि करने लगा, कैसे उसने कुछ तकनीकों (जैसे – भवन निर्माण, **धातु विज्ञान**, यातायात साधन) का विकास किया और सभ्यता की ओर उन्मुख हुआ।

आखिर सभ्यता है क्या? सामान्यत: इस शब्द का प्रयोग मानव समाज के उन्नत चरण के लिए किया जाता है। इसे और स्पष्ट करने के लिए, हम यहाँ इस बात पर विचार करेंगे कि एक 'सभ्यता' में कम से कम निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

- **शासन और प्रशासन का कोई रूप** – जटिल समाज और उसके अनेक कार्यकलापों के प्रबंधन हेतु।
- **नगरीकरण** – नगर योजना, नगरों का विकास और उनका प्रबंधन, जिसमें सामान्यत: जल प्रबंधन और जल निकास व्यवस्था आती है।
- **विभिन्न प्रकार के शिल्प** – कच्चे माल (जैसे – पत्थर और धातु) का प्रबंधन और तैयार माल (जैसे – आभूषण और उपकरण) का उत्पादन।
- **व्यापार** – सभी प्रकार की वस्तुओं के आदान-प्रदान के लिए आंतरिक (एक नगर अथवा एक क्षेत्र के अंदर) और बाहरी (दूरस्थ अथवा विश्व के अन्य भागों के साथ) व्यापार।
- **लेखन का कोई रूप** – अभिलेखों को रखने और संवाद बनाने के लिए आवश्यक।
- **जीवन और विश्व के बारे में सांस्कृतिक विचार** – कला, स्थापत्य, साहित्य, श्रुति परंपराओं और सामाजिक रीति-रिवाजों के माध्यम से जीवन और विश्व की अभिव्यक्ति।
- **कृषि उत्पादकता** – जो गाँव ही नहीं, बल्कि नगरों को भी भोजन उपलब्ध करा सके।

आइए विचार करें

ऊपर बताई गई विशेषताओं में से आप किसे मूलभूत विशेषता मानते हैं — अर्थात ऐसी विशेषता, जो अन्य सभी के विकास के लिए अनिवार्य है?

आइए पता लगाएँ

ऊपर दी गई सूची में प्रत्येक विशेषता के लिए क्या आप उस समय के समाज में विद्यमान व्यवसाय और रोजगार की सूची तैयार कर सकते हैं?

आज विश्व के अधिकांश समाजों में इन सभी विशेषताओं को आसानी से देखा जा सकता है। जिस तरह हमने सभ्यता को परिभाषित किया है, उस अर्थ में सभ्यता का आरंभ कब हुआ?

विश्व के विभिन्न भागों में अलग-अलग समय पर सभ्यताओं का आरंभ हुआ। जिस क्षेत्र को मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) के नाम से जाना जाता है, वहाँ लगभग 4,000 सा.सं.पू. पहले सभ्यता का आरंभ हुआ और इसके कुछ शताब्दियों के बाद प्राचीन मिस्र की सभ्यता का आरंभ हुआ। आप इन सभ्यताओं और अन्य सभ्यताओं के बारे में आगे की कक्षाओं में पढ़ेंगे। सही अर्थों में उन प्राचीन सभ्यताओं के बहुत बड़े योगदान और प्रगति के कारण ही मानवता आज वर्तमान स्थिति में पहुँच सकी है।

अभी, हम केवल भारतीय उपमहाद्वीप और उसके उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर दृष्टि डालेंगे, जहाँ से हमारी कहानी आरंभ होती है।

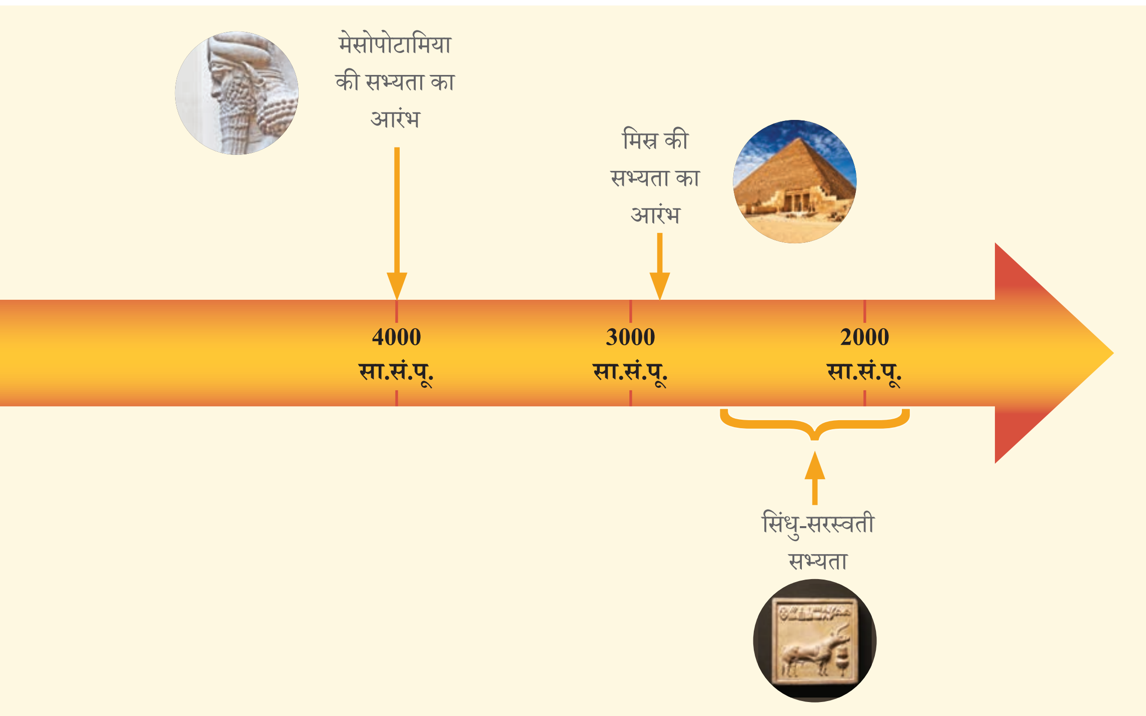

चित्र 6.2 — 2600 से 1900 सा.सं.पू. तक सिंधु-सरस्वती सभ्यता का समय दर्शाती समय-रेखा

गाँव से नगर

पंजाब (आज भारत और पाकिस्तान में विभाजित) और सिंध (अब पाकिस्तान में) के विशाल मैदानों को सिंधु नदी और उसकी **सहायक नदियाँ** सिंचित करती हैं। सिंधु नदी ने इन मैदानों को उपजाऊ और कृषि के अनुकूल बनाया। इन मैदानों की पूर्व दिशा में कुछ सहस्त्राब्दियों पहले एक अन्य नदी सरस्वती, हिमालय की तलहटी से हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात (चित्र 6.3 देखिए) के कुछ क्षेत्रों से होकर प्रवाहित होती थी। 3500 सा.सं.पू से इस पूरे क्षेत्र में गाँव, नगरों मे परिवर्तित हो गए और लगभग 2600 सा.सं.पू. में बढ़ते व्यापार और अन्य विनिमयों के कारण नगर, महानगरों में परिवर्तित हो गए।

सहायक नदी
वह नदी जो किसी बड़ी नदी (या झील) में मिलती है। उदाहरणार्थ, यमुना नदी गंगा नदी की सहायक नदी है।

इस सभ्यता को पुरातत्ववेत्ताओं ने सिंधु सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता अथवा सिंधु-सरस्वती सभ्यता जैसे नाम दिए। हम इन सभी नामों का प्रयोग करेंगे। इस सभ्यता के निवासियों को हड़प्पाई या हड़प्पावासी कहते थे। यह विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है।

इस विकास प्रक्रिया को 'भारत का पहला नगरीकरण' भी कहा जाता है।

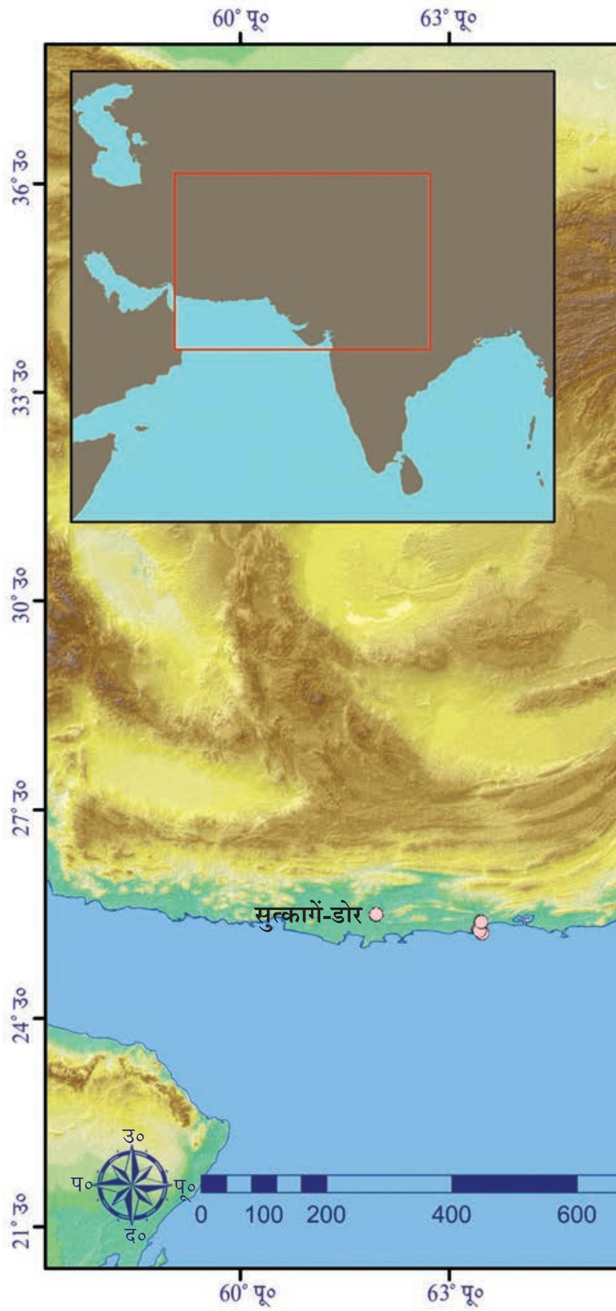

ध्यान रखें

वर्तमान में इस सभ्यता के निवासियों को 'हड़प्पाई या हड़प्पावासी' क्यों कहते हैं? इसका सीधा-सा उत्तर है कि लगभग एक शताब्दी पहले 1920–21 में हड़प्पा (आज के पाकिस्तान का पंजाब) इस सभ्यता से संबंधित पहला उत्खनित नगर था।

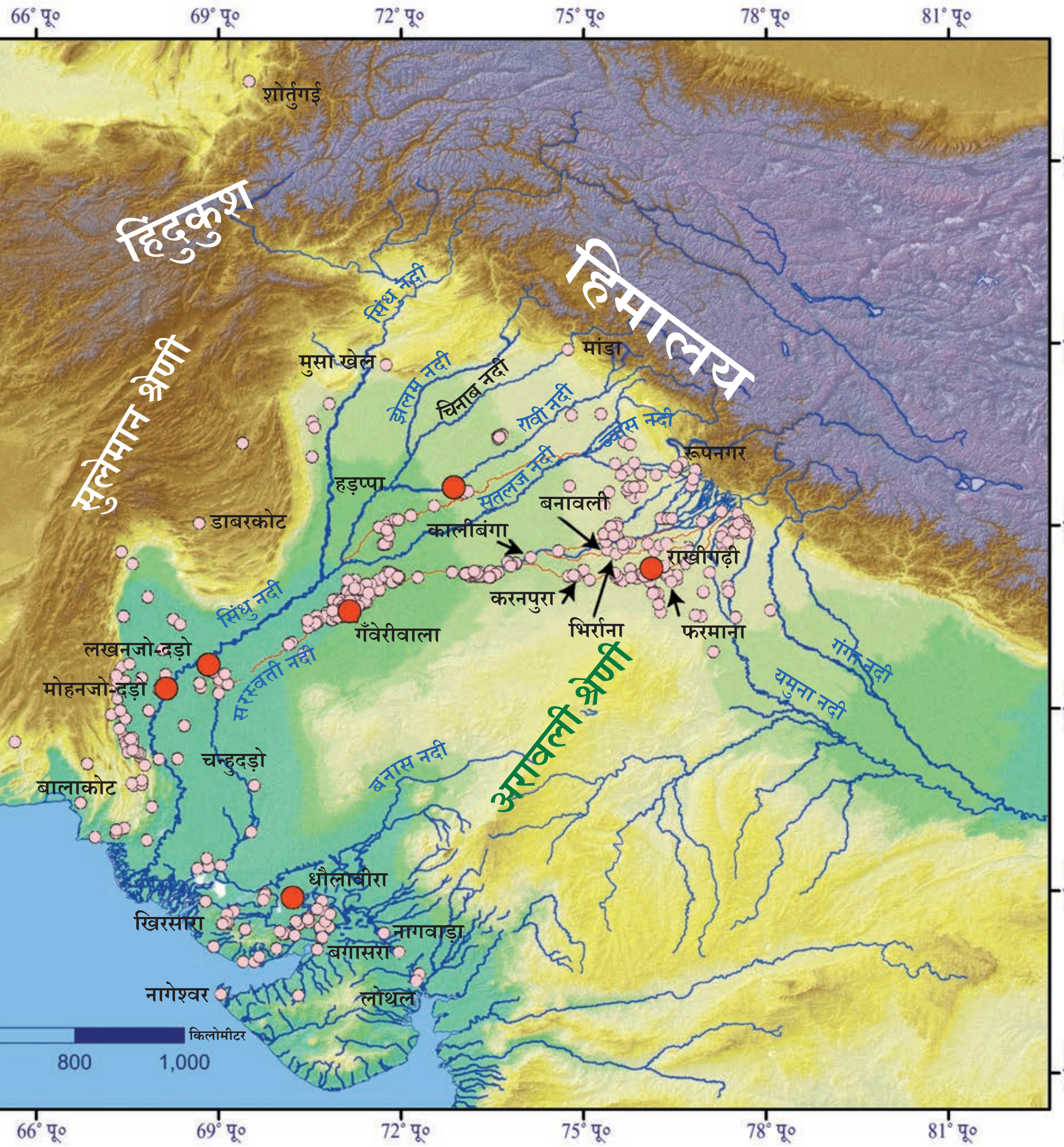

चित्र 6.3 — सिंधु-सरस्वती सभ्यता की कुछ प्रमुख बस्तियों का मानचित्र। पर्वत शृंखलाओं द्वारा बनी प्राकृतिक सीमाओं को देखिए (भूरे रंग में)।

आइए पता लगाएँ

इस सभ्यता के कुछ प्रमुख नगरों को मानचित्र (चित्र 6.3) में दर्शाया गया है। क्या आप (कक्षा में गतिविधि के माध्यम से) इन दर्शाए गए नगरों का अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में दिए गए आधुनिक राज्यों अथवा प्रदेशों के साथ मिलान कर सकते हैं?

हड़प्पाई नगर/हड़प्पा के नगर	आधुनिक राज्य या प्रदेश
धौलावीरा	पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान)
हड़प्पा	गुजरात
कालीबंगा	सिंध (वर्तमान पाकिस्तान)
मोहनजो-दड़ो	हरियाणा
राखीगढ़ी	राजस्थान

सरस्वती नदी

मानचित्र (पृष्ठ 89 पर चित्र 6.3) में सिंधु और उसकी पाँच सहायक नदियों को दर्शाया गया है। मोहनजो-दड़ो और हड़प्पा जैसे नगर इन नदियों के किनारे विकसित हुए। सरस्वती नदी, जिसे आज भारत में घग्गर और पाकिस्तान में हाकरा (अतः इसे घग्गर-हाकरा भी कहा जाता है) के नाम से जाना जाता है, के किनारे भी अनेक पुरास्थल मिले हैं। आज यह एक मौसमी नदी है जो मात्र वर्षा ऋतु के दौरान बहती है।

सरस्वती नदी का वर्णन सबसे पहले प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में मिलता है। इसके बारे में हम अध्याय 7 में पढ़ेंगे। ऋग्वेद में सरस्वती को एक देवी और पर्वत से निकलकर समुद्र तक बहने वाली एक नदी, दोनों रूपों में पूजा गया है। बाद के ग्रंथों में इस नदी के सूखने और अंततः लुप्त हो जाने का वर्णन मिलता है।

नगर-योजना

हड़प्पा और मोहनजो-दड़ो (जो अब पाकिस्तान में है) इस सभ्यता के सबसे पहले दो नगर हैं जिनकी खोज लगभग एक शताब्दी पूर्व 1924 में की गई। सिंधु नदी के मैदानों में बहुत से पुरास्थल मिले हैं जिसके कारण इस सभ्यता को आरंभ में सिंधु घाटी की सभ्यता कहा गया।

बाद में, अन्य प्रमुख नगर जैसे धौलावीरा (गुजरात में), राखीगढ़ी (हरियाणा में), गँवेरीवाला (पाकिस्तान के चोलिस्तान मरुस्थल में) और सैकड़ों छोटे स्थलों (जैसे – गुजरात में लोथल) की खोज की गई एवं कुछ की खुदाई भी की गई। इस प्रकार की खोजें आज भी जारी हैं। यह रोचक है कि सरस्वती नदी की द्रोणी (बेसिन) में न

आइए विचार करें

आपने सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में सुना होगा और आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि हमने इसका प्रयोग नहीं किया है। मानचित्र पर दृष्टि डालें (पृष्ठ 89 पर चित्र 6.3) तो हम पाएँगे कि घाटी शब्द का अब इस्तेमाल नहीं करते हैं क्योंकि अब हम जानते हैं कि यह सभ्यता सिंधु क्षेत्र से बहुत आगे तक फैली हुई थी।

केवल दो महानगर — राखीगढ़ी और गँवेरीवाला आते हैं, बल्कि छोटे-छोटे अनेक नगर (हरियाणा में फरमाना, राजस्थान में कालीबंगा) और कुछ अन्य नगर (हरियाणा के दो नगर भिर्राना और बनावली) भी आते हैं। निस्संदेह मानचित्र में (पृष्ठ 89 पर चित्र 6.3) दिए गए क्षेत्र में पुरास्थलों की सघनता स्पष्ट दिखती है।

अधिकांश हड़प्पा सभ्यता के नगर सुनियोजित योजना के अंतर्गत निर्मित किए गए थे। उन नगरों में चौड़ी सड़कें थी (पृष्ठ 92 पर चित्र 6.4 और 6.5) जो सामान्यत: चारों दिशाओं की ओर उन्मुख होती थीं। अधिकांश नगरों के चारों ओर **किलेबंदी** की गई मिलती है और नगर के दो विशिष्ट भाग मिलते हैं— 'ऊपरी नगर', जहाँ संभवत: **अभिजात वर्ग** के लोग रहते थे और 'निचला नगर', जहाँ साधारण लोग रहते थे।

कुछ बड़े भवनों का उपयोग सामूहिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था — उदाहरणार्थ गोदाम, जहाँ परिवहन किए जाने वाली वस्तुओं को रखा जाता था। सड़कों और गलियों में विभिन्न आकारों के निजी घर मिलते हैं। रोचक बात यह है कि बड़े और छोटे घरों के निर्माण की गुणवत्ता एक समान मिलती है। सामान्यत: उन भवनों के निर्माण में ईंटों का प्रयोग किया गया है।

कुछ संरचनाओं के निर्माण का उद्देश्य आज भी चर्चा का विषय हो सकता है। मोहनजो-दड़ो (पृष्ठ 93 पर चित्र 6.6) का प्रसिद्ध 'महास्नानागार' एक छोटा और विस्तृत स्नानागार है जिसका आकार 12×7 मीटर है। सबसे ऊपर जमायी गईं ईंटों पर जल रोधक सामग्री (जैसे – डामर के रूप में प्राकृतिक बिटुमन) की परत चढ़ाई गई है। स्नानागार के चारों ओर छोटे-छोटे कमरे मिलते हैं, उनमें से एक कमरे के अंदर कुआँ मिला है। समय-समय पर स्नानागार के पानी को खाली करने के लिए कोने में एक नाली भी है। इस स्नानागार को स्वच्छ पानी से समय-समय पर भरा जाता था।

किलेबंदी
आम तौर पर सुरक्षात्मक उद्देश्यों से किसी बस्ती या नगर के चारों ओर बनाई गई एक विशाल दीवार।

अभिजात वर्ग
यहाँ यह शब्द समाज के उच्च स्तर, जैसे – शासक, अधिकारी, प्रशासक और प्राय: पुरोहित या पुजारी को संदर्भित करता है।

(ऊपर) चित्र 6.4 —

कालीबंगा (राजस्थान) के निचले नगर में एक चौड़ी सड़क

(दाएँ) चित्र 6.5 —

धौलावीरा के मध्य नगर के आवासीय क्षेत्र की लंबवत गलियाँ या सड़कें (धौलावीरा में तीन अलग-अलग क्षेत्र थे, न कि अन्य नगरों की तरह दो क्षेत्र)। इस नगर में अधिकांश भवनों की नींव पत्थरों से बनाई गई थी।

चित्र 6.6 — मोहनजो-दड़ो का महास्नानागार

इसके निर्माण का उद्देश्य क्या रहा होगा? पुरातत्ववेत्ताओं ने अनेक संभावित व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं — सार्वजनिक स्नान के लिए स्नानागार, केवल राजसी परिवार के लिए स्नानागार, धार्मिक कार्यों के लिए प्रयोग होने वाला स्नानागार। हालाँकि पहली व्याख्या अब स्वीकार्य नहीं है क्योंकि यह पाया गया है कि इस नगर के अधिकांश घरों में स्नानागार बने हुए थे।

आइए पता लगाएँ

अंतिम दो व्याख्याओं के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए। क्या आप कोई अन्य व्याख्या सोच सकते हैं? ध्यान दीजिए कि इस विषय में हमारे पास इतिहास के अन्य स्रोत नहीं हैं, जैसे न कोई शिलालेख, न कोई ग्रंथ और न ही किसी यात्री का विवरण।

जल प्रबंधन

हड़प्पावासी जल प्रबंधन और स्वच्छता को बहुत महत्व देते थे। उनके घरों में स्नान के लिए अलग स्नानागार हुआ करते थे। ये नगर जल-निकास प्रणाली (चित्र 6.7) से जुड़े हुए थे, जो साधारणत: सड़कों के नीचे होती थीं जिनमें अपशिष्ट जल बहता था।

चित्र 6.7 — लोथल (गुजरात) में जल-निकास प्रणाली

मोहनजो-दड़ो में लोग ईंटों से बनाए कुंओं से पानी निकाला करते थे। किंतु अन्य क्षेत्रों में तालाब, पास के झरनों अथवा मानव निर्मित **जलाशयों** से पानी लेते होंगे। धौलावीरा में (गुजरात में कच्छ के रन में) 73 मीटर लंबा सबसे बड़ा जलाशय मिला है।

जलाशय
विशाल प्राकृतिक या कृत्रिम स्थान, जहाँ जल का भंडारण किया जाता है।

आइए पता लगाएँ

कक्षा की एक गतिविधि के रूप में किसी फीते (इंच टेप) से अपनी कक्षा, विद्यालय के गलियारे या खेल के मैदान की लंबाई मापें। इस लंबाई की तुलना धौलावीरा के सबसे विशाल जलाशय की लंबाई से कीजिए।

धौलावीरा में पत्थरों और यहाँ तक कि चट्टान को काटकर (चित्र 6.8) कम से कम छह विशाल जलाशयों का निर्माण किया गया था। इनमें से अधिकांश को कुशल जल संचयन और वितरण के लिए भूमिगत नालियों से जोड़ा गया था।

चित्र 6.8 — धौलावीरा में चट्टान को काटकर बनाया गया 33 मीटर लंबा विशाल जलाशय

आइए विचार करें

जलाशयों के इस प्रकार के निर्माण के लिए आवश्यक श्रमिकों की बड़ी संख्या के बारे में सोचिए। आपके विचार से उनके कार्य को सुनियोजित करने के लिए निश्चित निर्देश किसने दिए होंगे? आपके विचार में उन्हें उनकी मजदूरी के लिए भुगतान कैसे किया गया होगा? (*संकेत – उस समय आज की तरह मुद्रा का प्रचलन नहीं था*)। चूँकि समय-समय पर जलाशयों की सफाई करना आवश्यक था, इसलिए क्या उनके रख-रखाव के लिए कोई स्थानीय प्राधिकारी थे? इस नगर के शासक और नगर प्रशासन के बारे में इससे हमें क्या संकेत मिलते हैं?

कल्पना कीजिए और अपने शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए। पुरातत्ववेत्ता भी इन प्रश्नों के बारे में चर्चा करते हैं और उनके उत्तर सदैव निर्णायक नहीं होते।

हड़प्पावासियों का भोजन

दलहन फसलों की श्रेणी, जिसमें सेम, मटर के दाने और दालें सम्मिलित हैं।

हड़प्पावासियों ने अपनी अनेक बस्तियाँ बड़ी और छोटी नदियों के किनारे बसाई थीं। यह सिर्फ जल स्रोतों तक आसानी से पहुँचने के लिए ही नहीं, बल्कि कृषि की दृष्टि से भी एक औचित्यपूर्ण विकल्प रहा होगा क्योंकि नदियाँ अपने आस-पास की भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। पुरातात्विक खोजें यह दर्शाती हैं कि हड़प्पावासी **दलहन** और अनेक किस्म की सब्जियों के अतिरिक्त जौ, गेहूँ, कुछ मोटे अनाज, बाजरा और कभी-कभी धान जैसे अनाज की खेती करते थे। यूरेशिया में कपास उगाने में भी वे सर्वप्रथम थे, जिसका उपयोग वे कपड़ा बुनने में किया करते थे। उन्होंने हल सहित खेती के कई उपकरण बनाए (चित्र 6.9), जिनमें से कुछ का उपयोग आधुनिक समय में भी किसानों द्वारा किया जाता है।

चित्र 6.9 — मिट्टी से निर्मित हल का लघु प्रतिरूप (हरियाणा में बनावली से प्राप्त)

यह गहन कृषि गतिविधि सैकड़ों छोटे ग्रामीण स्थलों अथवा गाँवों द्वारा संचालित की जाती थी। अभी की तरह तब भी ग्रामीण क्षेत्रों से पर्याप्त कृषि उपज प्रतिदिन उपलब्ध होने पर ही नगर जीवित रह सकते थे।

हड़प्पावासियों ने मांस के सेवन के लिए अनेक पशुओं को पाला और मछलियों के लिए वे नदियों एवं समुद्रों पर निर्भर रहते थे। खुदाई में बड़ी संख्या में पाई गई पशुओं की हड्डियों और मत्स्य जीवाश्म से इसका पता चलता है।

हड़प्पावासियों के खाना पकाने के पात्रों में क्या होता था? मिट्टी के पात्रों की वैज्ञानिक जाँच से कुछ प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं, जिसमें प्रत्याशित (दुग्ध उत्पाद) और अप्रत्याशित (जैसे – हल्दी, अदरक और केले) दोनों प्रकार के अवशेष हैं। स्पष्ट है कि उनके भोजन में बहुत विविधता थी।

आइए पता लगाएँ

मान लीजिए कि आप हड़प्पा के एक घर में खाना पकाते हैं। आप ऊपर दी गई जानकारी के आधार पर कौन-से व्यंजन बनाएँगे?

सक्रिय व्यापार

हड़प्पावासी न केवल अपनी सभ्यता (आस-पास या बहुत दूर के अन्य नगरों) में, बल्कि भारत के भीतर और बाहर की अन्य सभ्यताओं और संस्कृतियों के साथ भी सक्रिय रूप से व्यापार किया करते थे। उन्होंने आभूषणों, लकड़ी, दैनिक उपयोग की कुछ वस्तुओं (पृष्ठ 98 पर चित्र 6.11), संभवतः सोने एवं कपास और कुछ खाद्य वस्तुओं का निर्यात किया। उनके सर्वाधिक प्रिय आभूषण कार्नेलियन के मोती (पृष्ठ 98 पर चित्र 6.10) थे, जो अधिकतर गुजरात में पाए जाने वाले लाल रंग के अल्प मूल्यवान पत्थर होते थे। हड़प्पा के कारीगरों ने उनमें छेद करने की तकनीक भी विकसित की थी ताकि धागे को डालकर उन्हें तरह-तरह से सजाया जा सके। उन्होंने शंखों से बहुत सुंदर चूड़ियाँ भी बनाईं। चूँकि शंख का खोल सख्त होता है, अत: उन चूड़ियों को बनाने के लिए परिष्कृत तकनीक की आवश्यकता भी होती होगी।

यह स्पष्ट नहीं है कि हड़प्पावासियों ने निर्यातित वस्तुओं के बदले में किस वस्तु का आयात किया। संभवत: यह तांबा हो सकता है क्योंकि यह धातु सामान्यत: उनके पास बहुतायत में उपलब्ध नहीं थी।

आइए पता लगाएँ

हड़प्पावासी मुलायम धातु तांबे की कलाकारी में कुशल थे। तांबे में टिन मिलाने पर कांस्य धातु बन जाती है, जो तांबे की तुलना में कठोर होती है। हड़प्पावासियों ने उपकरण तथा बर्तन बनाने में कांसे का उपयोग किया। बाद में हम इसकी बनी कुछ छोटी प्रतिमाएँ देखेंगे।

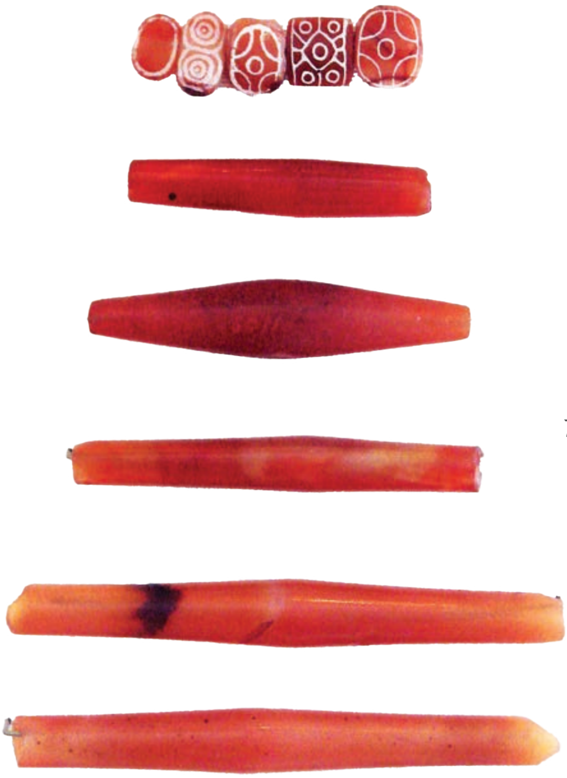

चित्र 6.10 — सूसा (वर्तमान ईरान) में खुदाई में प्राप्त कार्नेलियन मनके।

चित्र 6.11 — हड़प्पा का हाथी दाँत का कंघा जो ओमान के तट पर पाया गया (लगभग 7 सेमी. लंबा)

उन्होंने इस तरह के व्यापार को संचालित करने के लिए स्थल मार्ग एवं नदियों तथा अधिक दूरवर्ती गंतव्यों के लिए समुद्री रास्तों का उपयोग किया। यह भारत की प्रथम गहन समुद्री गतिविधि थी। वास्तव में गुजरात और सिंध के तटवर्ती क्षेत्रों में कई हड़प्पाई बस्तियाँ स्थित हैं। गुजरात में स्थित एक लघु बस्ती लोथल में आश्चर्यजनक रूप से 217 मीटर लंबाई और 36 मीटर चौड़ाई का एक विशाल बेसिन पाया गया है — इसकी लंबाई फुटबॉल के दो मैदानों से थोड़ी अधिक है। इस बेसिन में बंदरगाह जैसी संरचना अवश्य रही होगी, जिसका इस्तेमाल नावों के माध्यम से वस्तुओं के आयात और निर्यात के लिए किया जाता होगा।

इस प्रकार के व्यापक स्तर के व्यापार में यह आवश्यक था कि व्यापारी अपने सामान को और एक-दूसरे को पहचानें! अनेक बस्तियों की खुदाई में मिलीं हजारों की संख्या में छोटी मुहरों का मुख्य उपयोग यही रहा होगा। ये मोहरें एक मुलायम पत्थर स्टीटाइट की बनी थीं जिन्हें गरम कर कठोर बनाया जाता था। इनका माप केवल कुछ

चित्र 6.12 — लोथल में विशाल बंदरगाह

सेंटीमीटर है। सामान्यतः इनके ऊपर जानवरों के चित्र बनाए गए हैं, किंतु इन पर लेखन प्रणाली के कुछ संकेत भी मिलते हैं। इस लेखन प्रणाली और पशुओं के चित्रों के प्रतीकों के अर्थ को अभी समझा जाना बाकी है, पर यह निश्चित है कि ये किसी प्रकार के व्यापार की गतिविधियों से संबंधित हैं।

चित्र 6.13.1, 6.13.2, 6.13.3 — (बाएँ से दाएँ) एकश्रृंगी पशु, बैल, सींग वाले बाघ को दर्शाती हड़प्पा की कुछ मुहरें

आइए पता लगाएँ

कुछ लेखन संकेतों के साथ हड़प्पा की इन तीन मुहरों को देखते हुए आपके मन में क्या विचार आता है? क्या आप इनकी कोई व्याख्या देना चाहेंगे? अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग कीजिए।

प्राचीन जीवन

पुरातत्ववेत्ता हड़प्पावासियों द्वारा निर्मित और उपयोग की गई अनेक वस्तुओं को सामने लेकर आए हैं।

दैनिक उपयोग की वस्तुएँ

चित्र 6.14.1 (ऊपर), 6.14.2 (दाएँ) — एक कांस्य दर्पण, एक पकी मिट्टी (टेराकोटा) का पात्र (दोनों धौलावीरा से प्राप्त)

चित्र 6.14.3 (ऊपर), 6.14.4 (दाएँ) — भार तौलने के कुछ पत्थर, एक कांस्य छैनी (दोनों धौलावीरा से प्राप्त)

चित्र 6.14.5, 6.14.6 — 25 से.मी. की लंबाई वाले एक पत्थर पर उकेरा गया खेल-बोर्ड (धौलावीरा से प्राप्त)। लगभग 4 से.मी. लंबी मिट्टी की सीटी (करनपुरा, राजस्थान से प्राप्त)। हड़प्पावासियों ने वयस्कों और बच्चों, दोनों के मनोरंजन के लिए अनेक खेल तैयार किए!

सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक वस्तुएँ

चित्र 6.15.1, 6.15.2, 6.15.3 — एक छोटी मूर्ति जिसे प्राय: 'पुरोहित राजा' कहा जाता है (यद्यपि यह मालूम नहीं है कि यह प्रतिमा किसकी है), स्वास्तिक दर्शाती हुई मुहर, शक्तिशाली पशुओं से घिरे ऊँचे स्थान पर बैठे त्रिमुखी देवता को दर्शाती मुहर

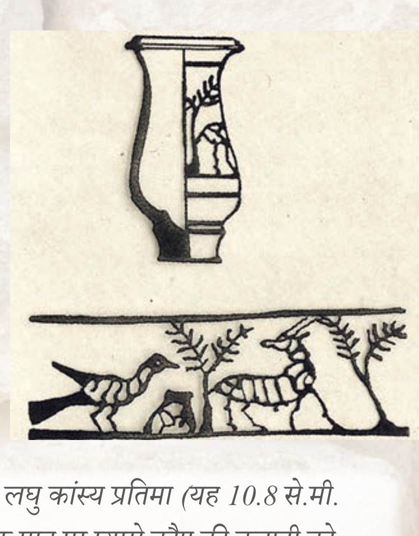

चित्र 6.15.4, 6.15.5, 6.15.6 — मोहनजो-दड़ो से प्राप्त 'नर्तकी' की एक लघु कांस्य प्रतिमा (यह 10.8 से.मी. ऊँची है); नमस्ते की मुद्रा में बैठी एक पकी मिट्टी (टेराकोटा) की मूर्ति; एक पात्र पर प्यासे कौए की कहानी को दर्शाता चित्रण, जिसमें वह पात्र के निचले हिस्से से जल को पीने के लिए एक चतुर तरीका निकालता है (लोथल से प्राप्त)।

आइए विचार करें

- पृष्ठ 100 और 101 पर दर्शाई गई वस्तुओं या इस अध्याय में चित्रित अन्य वस्तुओं को देखते हुए क्या आप उन गतिविधियों और जीवन के पक्षों का पता लगा सकते हैं, जो हड़प्पावासियों के लिए महत्वपूर्ण थे?

आइए पता लगाएँ

→ लोथल के पात्र पर दर्शाई गई कहानी को पूरा कीजिए। आपके विचार से इस कहानी को 4,000 से अधिक वर्षों से क्यों याद किया जाता रहा?

→ 'नर्तकी' की लघु प्रतिमा पर विचार कीजिए। इस लघु प्रतिमा की भाव-भंगिमा से आप क्या समझते हैं? पूरी बाँह को ढँकने वाली उसकी उन चूड़ियों को ध्यान से देखिए, जो गुजरात और राजस्थान के क्षेत्रों में अभी भी महिलाएँ पहनती हैं। इस अध्याय में आपने और कहाँ पर इस तरह से चूड़ियाँ पहनने को चिह्नित किया है। इससे हमें क्या निष्कर्ष निकालना चाहिए?

अंत अथवा नई शुरुआत?

1900 सा.सं.पू. के आस-पास इस सिंधु-सरस्वती सभ्यता की सभी उपलब्धियों के बावजूद उसका ह्रास हो गया। इसके नगर एक के बाद एक खाली होते गए। यदि कोई निवासी वहाँ रहे भी, तो उन्होंने परिवर्तित वातावरण में ग्रामीण जीवन-शैली को अपनाया। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्ववर्ती सरकार या प्रशासन अब विद्यमान नहीं रहा। धीरे-धीरे हड़प्पावासी हजारों नहीं तो सैकड़ों की संख्या में छोटी-छोटी बस्तियों के रूप में बिखर गए।

आइए विचार करें

हड़प्पावासी ग्रामीण बस्तियों में लौट गए क्योंकि किसी नगरीय जीवन-शैली की तुलना में ग्रामीण जीवन-शैली भोजन और जल तक सहज पहुँच प्रदान करती है। तब से लेकर अब तक नगर भोजन और कभी-कभी जल आपूर्ति के लिए गाँवों पर निर्भर रहते हैं।

इस सभ्यता के पतन के क्या कारण थे? पुरातत्ववेत्ताओं ने इसके अनेक कारण बताए हैं। बहुत समय पहले यह सोचा गया कि युद्ध या आक्रमण ने इन नगरों का विध्वंस किया होगा, लेकिन युद्ध या आक्रमण के कोई निशान नहीं मिलते। जहाँ तक प्रमाणों की बात है, हड़प्पावासियों ने वास्तव में कभी भी कोई सेना या युद्ध के हथियार नहीं रखे। यह अपेक्षाकृत एक शांतिपूर्ण सभ्यता प्रतीत होती है।

वर्तमान में दो कारणों पर सहमति है। पहला, 2200 सा.सं.पू. से विश्व को अत्यधिक प्रभावित करने वाले जलवायु संबंधी परिवर्तनों से वर्षा में कमी और शुष्कता की स्थिति उत्पन्न हुई। इसने कृषि कार्य को अधिक कठिन बनाया होगा और नगरों की ओर खाद्य आपूर्ति में कमी आई होगी। दूसरा, सरस्वती नदी का मध्य बेसिन सूख गया; वहाँ कालीबंगा और बनावली जैसे नगर अचानक छोड़ दिए गए। इसमें अन्य कारण भी रहे होंगे, लेकिन ये दो कारण हमें याद दिलाते हैं कि हम अपने कल्याण के लिए अपनी जलवायु और पर्यावरण पर कितने निर्भर हैं।

यद्यपि नगर लुप्त हो गए, लेकिन हड़प्पा की संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी अधिकांशत: बची रही और यह भारतीय सभ्यता के अगले चरण में पहुँच गई, जिसके बारे में हम अगले अध्याय में पता करेंगे।

आगे बढ़ने से पहले ...

- → सिंधु, हड़प्पा या सिंधु-सरस्वती सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। हड़प्पावासियों ने कुशल जल प्रबंधन, विविध शिल्पों और सक्रिय व्यापार के साथ सुनियोजित नगरों का निर्माण किया।
- → उपजाऊ कृषि से नगरों को विभिन्न प्रकार की फसलें प्राप्त हुई।
- → इस सभ्यता का जलवायु संबंधी और पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण अंतत: ह्रास हो गया; लोग ग्रामीण जीवन-शैली की ओर लौट गए।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. इस अध्याय में अध्ययन की गई सभ्यता के अनेक नाम क्यों हैं? इनके महत्व पर चर्चा कीजिए।
2. सिंधु-सरस्वती सभ्यता की उपलब्धियों का सार देते हुए संक्षिप्त रिपोर्ट (150 से 200 शब्द) लिखिए।
3. कल्पना कीजिए कि आपको हड़प्पा से कालीबंगा तक यात्रा करनी है। आपके पास विभिन्न विकल्प क्या हैं? क्या आप प्रत्येक विकल्प में लगने वाले समय का अनुमान लगा सकते हैं?
4. कल्पना कीजिए कि यदि हड़प्पा के किसी पुरुष या महिला को हम आज के भारत के सामान्य रसोईघर में ले आते हैं, तो उन्हें सबसे बड़े चार या पाँच आश्चर्य क्या लगेंगे?

5. इस अध्याय के सभी चित्रों पर दृष्टि डालते हुए उन आभूषणों/हाव-भावों/वस्तुओं की सूची बनाइए, जो अभी भी 21वीं शताब्दी में परिचित प्रतीत होती हैं।
6. धौलावीरा के जलाशयों की प्रणाली क्या सोच प्रतिबिंबित करती है?
7. मोहनजो-दड़ो में ईंटों से निर्मित 700 कुओं की गणना की गई है। ऐसा लगता है कि उनका नियमित रूप से रख-रखाव किया जाता रहा और अनेक शताब्दियों तक उनका उपयोग किया जाता रहा। निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।
8. सामान्यत: यह कहा जाता है कि हड़प्पावासियों में नागरिकता का उच्च भाव था। इस कथन के महत्व पर चर्चा कीजिए। क्या आप इससे सहमत हैं? वर्तमान भारत के महानगरों के नागरिकों के साथ इसकी तुलना कीजिए।

अध्याय 7

भारत की सांस्कृतिक जड़ें

वह जिसे चुराया नहीं जा सकता; जिसे कोई शासक छीन नहीं सकता; ...जो बोझ नहीं है क्योंकि इसका अपना कोई भार नहीं है; जिसका उपयोग करने से हर दिन इसमें वृद्धि ही होती है — यह सबसे बड़ी संपत्ति है, सच्चे ज्ञान की संपत्ति।

— सुभाषित (नीतिशतक)

एक ऋषि (हम्पी, कर्नाटक) | बुद्ध (भूटान) | महावीर (बिहार)

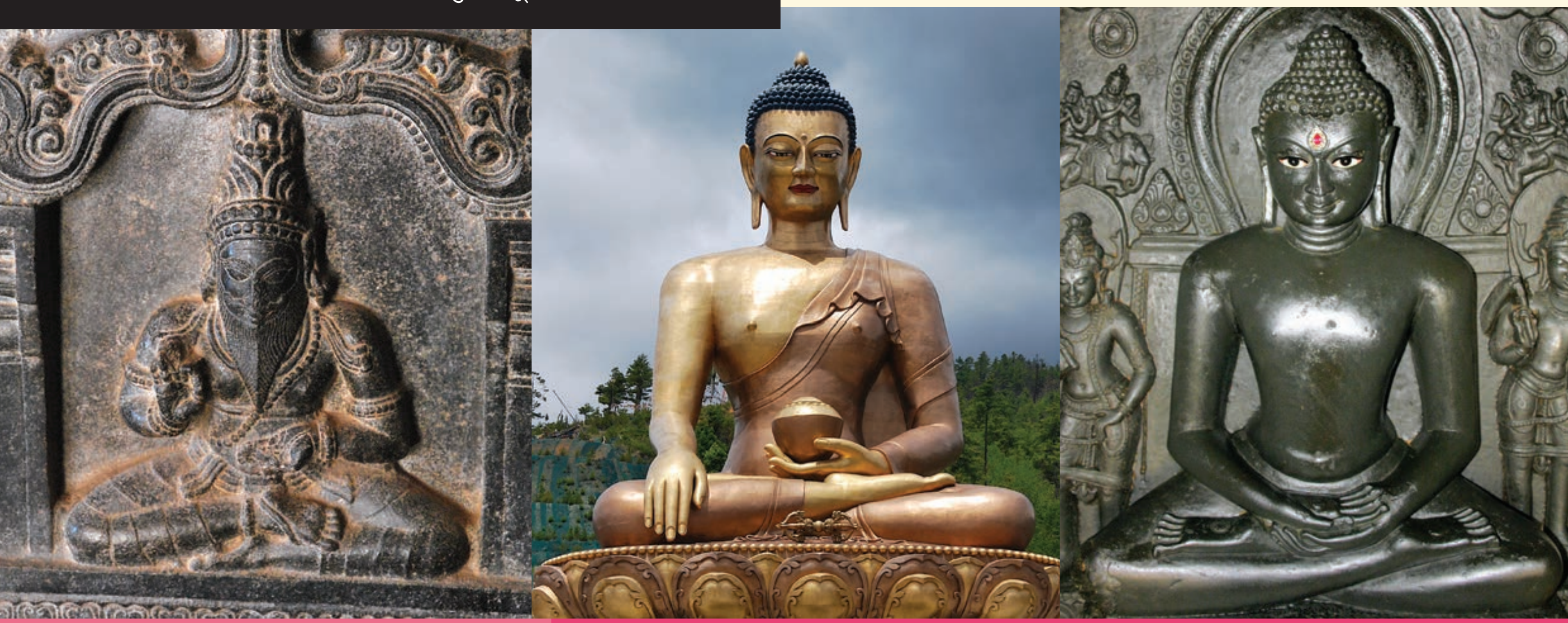

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *वेद क्या हैं? इनका संदेश क्या है?*
2. *प्रथम सहस्त्राब्दी सा.सं.पू. में भारत में कौन-कौन से नए दर्शन/मत उभरे? इनके मूल सिद्धांत क्या हैं?*
3. *लोक और जनजातीय परंपराओं का भारतीय संस्कृति में क्या योगदान रहा है?*

0683CH07

आध्यात्मिक
आत्मा से संबंधित (संस्कृत तथा अनेक भारतीय भाषाओं में)। आध्यात्मिकता हमारे वर्तमान व्यक्तित्व से परे एक गहरे या ऊँचे आयाम की खोज है।

साधक
ऐसा व्यक्ति जो इस दुनिया के सत्य को जानना चाहता है। यह एक ऋषि, संत, योगी, दार्शनिक आदि हो सकता है।

भारतीय संस्कृति, किसी भी अनुमान के अनुसार अनेक सहस्त्राब्दियों वर्ष पुरानी है। किसी प्राचीन वृक्ष के समान इसमें अनेक जड़ें और अनेक शाखाएँ हैं। जड़ें एक सामान्य तने को पोषण देती हैं। इस तने से अनेक शाखाएँ निकलती हैं, जो भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं, हालाँकि ये एक सामान्य तने से जुड़ी हुई हैं।

इसमें से कुछ शाखाएँ कला, साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा, धर्म, शासन पद्धति, मार्शल आर्ट्स (युद्ध कलाएँ) आदि हैं। कुछ ऐसे दर्शन भी हैं जिनसे हमारा तात्पर्य उन विचारकों के समूह या **आध्यात्मिक साधकों** से है जो मानव जीवन, विश्व आदि के बारे में समान विचार रखते हैं।

अनेक पुरातत्व विज्ञानियों तथा विद्वानों ने बताया है कि भारतीय संस्कृति की कुछ जड़ें सिंधु या हड़प्पा अथवा सिंधु-सरस्वती सभ्यता की ओर जाती हैं (जिन्हें हम अध्याय 6 में पढ़ चुके हैं)। आगे चलकर समय बीतने के साथ भारत में अनेक प्रकार के जीवन दर्शन का उदय हुआ। हम यहाँ ऐसे कुछ प्रारंभिक दर्शनों के बारे में बात करेंगे जिन्होंने भारत को एक विशिष्ट व्यक्तित्व वाले देश के रूप में आकार दिया है। इन्हें तथा इनकी जड़ों को समझकर ही हम 'इंडिया अर्थात भारत' को भलीभाँति समझ सकेंगे।

वेद और वैदिक संस्कृति

(क) वेद क्या हैं ?

वेद शब्द *विद्* से आया है जिसका अर्थ है 'ज्ञान' (उदाहरण के लिए, विद्या)। हमने पिछले अध्यायों में ऋग्वेद का उल्लेख किया है। वेदों की संख्या चार हैं— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं और वस्तुत: विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक हैं।

वेदों में हजारों ऋचाएँ (कविताओं और गीतों के रूप में प्रार्थनाएँ) हैं। ये लिखित रूप में नहीं थीं, अपितु इनका मौखिक पाठ किया जाता था। ये ऋचाएँ सप्तसिंधु क्षेत्र में रची गईं (जिनके बारे में हम अध्याय 5 में पढ़ चुके हैं)। यह कहना कठिन है कि इन चारों ग्रंथों में से प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद की रचना कब हुई। विशेषज्ञों ने इनकी रचना पाँचवीं से दूसरी सहस्त्राब्दी सा.सं.पू. के बीच किए जाने का प्रस्ताव किया है। इस प्रकार यह ग्रंथ 100 से 200 पीढ़ियों तक गहन प्रशिक्षण के माध्यम से स्मृतिबद्ध किए गए एवं मौखिक रूप से बिना किसी विशेष परिवर्तन के आगे संप्रेषित किए गए।

ध्यान रखें

हजारों वर्षों से किए गए वैदिक पाठशैली के इस सुव्यवस्थित संप्रेषण को 2008 में **यूनेस्को** ने 'मानवीयता के मौखिक और अमूर्त विरासत की अनुपम कोटि' के रूप में मान्यता दी।

वैदिक ऋचाओं की रचना ऋषियों (कवि) और ऋषिकाओं (कवियित्रियाँ) द्वारा संस्कृत भाषा के एक प्रारंभिक रूप में की गई थी। यह ऋचाएँ अनेक देवों (देवताओं और देवियों) जैसे— इंद्र, अग्नि, वरुण, मित्र, सरस्वती, उषा और अन्य को काव्यात्मक रूप से संबोधित करती थीं। इन दृष्टाओं के साथ मिलकर देवों ने मानव जीवन और **ब्रह्मांड** में ऋत या सत्य और क्रम को बनाए रखा।

आद्य ऋषियों और ऋषिकाओं ने देवताओं और देवियों को अलग नहीं, बल्कि एक ही माना। जैसा कि एक प्रसिद्ध ऋचा में कहा गया है—

एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति...

अर्थात, परम सत्य एक ही है,

किंतु मनीषी इसे अनेक नाम देते हैं।

इस **वैश्विक दर्शन** में कुछ मान्यताएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण थीं जो 'सत्य' से आरंभ हुईं, जो ईश्वर का दूसरा नाम था। ऋग्वेद के अंतिम मंत्रों में लोगों के बीच एकता का भी आह्वान किया गया।

यूनेस्को
यूनेस्को का पूरा नाम संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन है। यह संगठन शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के माध्यम से लोगों और राष्ट्रों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है।

ब्रह्मांड
विश्व या ब्रह्मांड की सुव्यवस्थित और संतुलित संरचना।

वैश्विक दर्शन
विश्व का एक निश्चित दर्शन या समझ, इसका उद्भव या इसकी कार्य प्रणाली।

साथ मिलकर चलें, साथ मिलकर बोलें,

एक हो हमारा मन, हमारे विचार मिलें...

एक हो हमारा उद्देश्य, एक हो हमारा हृदय...

हमारे विचार एक हों, अत: सभी सहमत हों।

(ख) वैदिक समाज

प्रारंभिक वैदिक समाज विभिन्न जनों (अर्थात, लोगों का बड़ा समूह) में संगठित था। ऋग्वेद में ही ऐसे 30 से अधिक जनों की सूची दी गई है, उदाहरणार्थ– भरत, पुरु, कुरु, यदु, तुर्वश आदि। प्रत्येक जन उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग के एक विशेष क्षेत्र के साथ जुड़ा था।

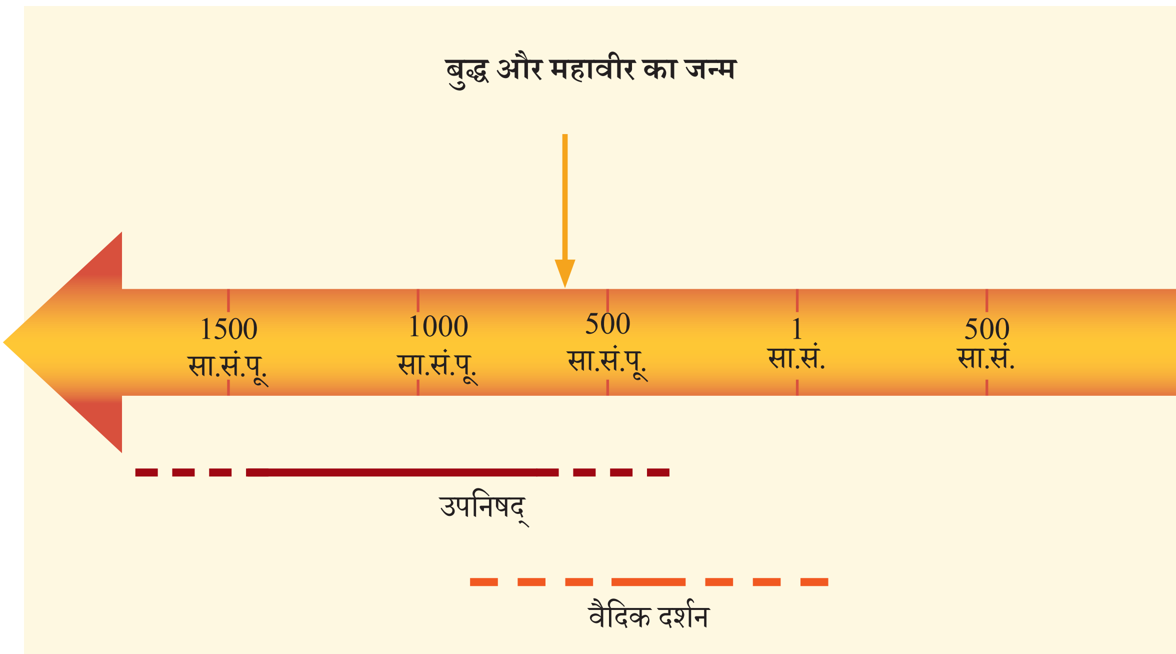

इसके बारे में बहुत अधिक ज्ञात नहीं है कि ये जन अपने समाज का शासन कैसे चलाते थे। वेदों में राजा (राजा या शासक), सभा और समिति जैसे कुछ शब्दों के माध्यम से कुछ ही संकेत मिलते हैं। सभा और समिति दोनों शब्द सामूहिकता को इंगित करते हैं।

वैदिक ग्रंथों में अनेक व्यवसायों का उल्लेख है, जैसे– किसान, बुनकर, कुम्हार, शिल्पकार, बढ़ई, **आरोग्यकर्ता**, नर्तक-नर्तकी, नाई, पुजारी आदि।

आइए पता लगाएँ

क्या आप जानते हैं कि उस समाज को क्या कहते हैं, जहाँ लोग अपने नेता का चयन करते हैं? आपके विचार से लोगों को ऐसी स्थिति से कैसे लाभ होता है? यदि वे अपने द्वारा नहीं चुने गए नेता के अधीन रहते हैं तो क्या हो सकता है? (*संकेत – 'शासन और लोकतंत्र' विषय में आपने जो पहले पढ़ा है, उस पर विचार कीजिए*) अपने विचार 100–150 शब्दों में लिखिए।

आरोग्यकर्ता
राहत देने या रोग ठीक करने के लिए पारंपरिक प्रथाओं का उपयोग करने वाला व्यक्ति।

(ग) वैदिक दर्शन

वैदिक संस्कृति में अनेक अनुष्ठान (यज्ञ आदि) विकसित हुए जो विभिन्न देवों (देवी-देवताओं) के प्रति व्यक्तिगत अथवा सामूहिक हितों तथा मंगल के लिए समर्पित या निर्देशित थे। दैनिक अनुष्ठान सामान्य रूप से प्रार्थनाओं तथा अग्नि देव (अग्नि से संबंधित देव) को आहुति और प्रार्थना के रूप में होते थे, किंतु ये अनुष्ठान समय के साथ और अधिक जटिल होते चले गए।

'उपनिषद्' वैदिक संकल्पनाओं के आधार पर रचित हैं तथा इनमें कुछ नई संकल्पनाएँ प्राप्त होती हैं, जैसे कि पुनर्जन्म (बार-बार जन्म लेना) और कर्म (हमारे कर्म और कर्म-फल)। एक दर्शन, जिसे सामान्यत: 'वेदांत' के नाम से जाना जाता है, के अनुसार सब कुछ— मानव जीवन, प्रकृति और ब्रह्मांड— एक दैवी तत्व है, जिसे 'ब्रह्म' (यह ब्रह्मा देव से भिन्न है) अथवा कभी-कभी केवल 'तत्' कहा जाता है। दो प्रसिद्ध मंत्रों में इसे सरलता, किंतु गहराई से व्यक्त किया गया है—

अहम् ब्रह्मास्मि

"मैं ब्रह्म हूँ" (अर्थात, मैं दिव्य हूँ)

तत् त्वम् असि...

"वह ब्रह्म आप ही हैं"'

उपनिषदों में भी *आत्मन्* या स्व की संकल्पना की गई है जो कि प्रत्येक जीव में निवास करता है, परंतु ब्रह्म का ही स्वरुप होता है। इसके अनुसार इस दुनिया में सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और परस्पर निर्भर है। इसमें एक महत्वपूर्ण प्रार्थना समझाई गई है जो "सर्वे भवन्तु सुखिन:" या "सभी जीव सुखी रहें" के साथ आरंभ होती है और सबके लिए रोग तथा दुख से मुक्ति की कामना करती है।

आइए विचार करें

क्या आपने इस महत्वपूर्ण संदेश को प्रदान करने वाली कोई अन्य कहानी सुनी या पढ़ी है? उनसे आपको किन मूल्यों की शिक्षा मिली?

चेतना
जागृत होने का गुण या अवस्था, उदाहरण के लिए व्यक्ति को स्वयं की चेतना होना।

प्रथम सहस्त्राब्दी सा.सं.पू. के आरंभ में वेदों से कुछ अन्य दर्शनों का विकास हुआ। इनमें से एक था — योग, जिसने किसी व्यक्ति की **चेतना** में *ब्रह्म* का आत्म-बोध प्राप्त करने के उद्देश्य से अनेक विधियाँ विकसित की। इन सभी दर्शनों से मिलकर कुछ आधारभूत विचार बने, जिन्हें हम आज 'हिंदू दर्शन' कहते हैं।

बौद्ध मत

संन्यासी
वह व्यक्ति जो चेतना का उच्चतर स्तर प्राप्त करने के लिए कठोर अनुशासन में रहता है।

लगभग ढाई सहस्त्राब्दी पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ गौतम ने लुंबिनी (वर्तमान नेपाल में) में जन्म लिया। उनके जन्म के समय के विषय में विद्वानों में सर्वसम्मति नहीं है। अध्याय 4 में हमने 560 सा.सं.पू. को उनका अनुमानित जन्म वर्ष माना है। इससे हमारी यह कहानी आगे किसी भी प्रकार प्रभावित नहीं होगी।

कथा के अनुसार, सिद्धार्थ गौतम राजमहल में एक सुरक्षित वातावरण में बड़े हुए। एक दिन, 29 वर्ष की आयु में उन्होंने रथ पर बैठकर नगर में घूमने की इच्छा प्रकट की और उस समय उन्होंने अपने जीवन में पहली बार एक वृद्ध, एक रोगी, और एक शव को देखा। उन्होंने एक **संन्यासी** को भी देखा, जो प्रसन्न और शांत लग रहा था। इन सब का अनुभव करने के बाद सिद्धार्थ ने अपने राजसी जीवन, अपनी पत्नी और बेटे को त्यागने का विचार किया। एक संन्यासी की तरह पैदल चलते हुए और अन्य संन्यासियों तथा विद्वानों से मिलते हुए उन्होंने मानव जीवन में दुखों के मूल कारण को खोजा। बोधगया (वर्तमान बिहार) में एक पीपल के वृक्ष के नीचे कई दिनों तक ध्यानरत रहने के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

उपनिषदों की कई कथाओं से हमें प्रश्न पूछने के महत्व का पता चलता है। फिर चाहे ये प्रश्न किसी महिला, पुरुष या बच्चे ने पूछे हों।

श्वेतकेतु और यथार्थबोध का बीज

(छांदोग्य उपनिषद्)

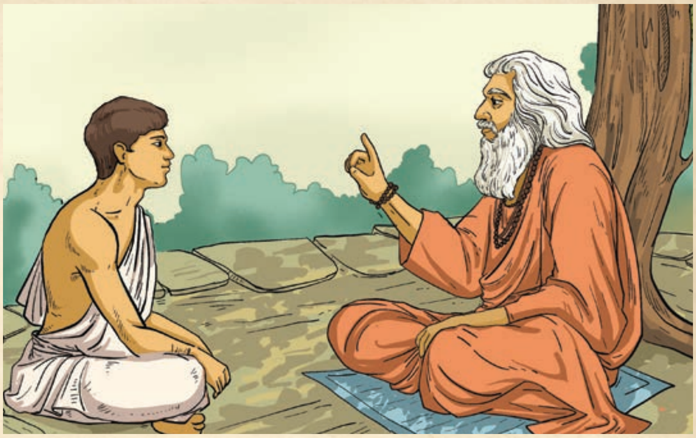

ऋषि उद्दालक आरुणि ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को वेदों के अध्ययन के लिए गुरुकुल भेजा। जब 12 वर्ष बाद श्वेतकेतु वापस आया, तो उसके पिता ने यह अनुभव किया कि वह अपने ज्ञान के कारण बहुत अहंकारी हो गया है। इसलिए उद्दालक ने *ब्रह्म* के स्वरूप पर उसके ज्ञान का परीक्षण करने के लिए प्रश्न पूछे जिनका उत्तर श्वेतकेतु नहीं दे सका।

उद्दालक ने उसे समझाया कि किस प्रकार *ब्रह्म* अदृश्य रहते हुए भी सर्वव्यापी है, जैसे बरगद के फल का बीज खोलने पर रिक्त (खाली) दिखाई देता है, किंतु इसमें बरगद के वृक्ष का भावी रूप निहित होता है अथवा जैसे एक ही प्रकार की मिट्टी से अलग-अलग प्रकार के बर्तन बनाए जा सकते हैं, उसी प्रकार हमारे चारों ओर जो कुछ भी है, एक ही तत्व— *ब्रह्म* से उसका उद्भव हुआ है। उन्होंने अपनी सीख यह कहकर समाप्त की, "सभी में यही सूक्ष्म तत्व व्याप्त है... तुम वही हो, श्वेतकेतु।"

नचिकेता और उसकी ज्ञान पिपासा

(कठोपनिषद्)

एक बार, एक व्यक्ति यज्ञ के समय अपनी समस्त संपत्ति का दान दे रहे थे। उनके पुत्र नचिकेता ने उनसे पूछा कि वे उसे किस देवता को अर्पित करेंगे? नचिकेता द्वारा बार-बार यही प्रश्न पूछने पर पिता क्रोध में आ गए और उत्तर दिया, "मैं तुम्हें यम अर्थात मृत्यु के देवता को अर्पित करता हूँ।"

इसके बाद, नचिकेता यमलोक की ओर निकल पड़े। लंबी प्रतीक्षा के बाद वे अति शक्तिमान देव से मिले। उनके मन में एक प्रश्न था, "शरीर की मृत्यु के बाद क्या होता है।" यम ने पहले तो बालक के प्रश्न का उत्तर टालने का प्रयास किया, किंतु नचिकेता के निरंतर आग्रह करते रहने पर अंततः यम देव ने प्रसन्न होकर उन्हें आत्मा के बारे में समझाया जो सभी जीवों में निहित है। इसका न तो जन्म होता है और न ही मृत्यु होती है; यह अमर है।

इस गहन ज्ञान की प्राप्ति के बाद नचिकेता अपने पिता के पास वापस आए जिन्होंने उल्लासपूर्वक उसका स्वागत किया।

गार्गी और याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ

(बृहदारण्यक उपनिषद्)

एक बार विद्वान राजा जनक ने एक दार्शनिक शास्त्रार्थ के विजेता को पुरस्कार देने की घोषणा की। याज्ञवल्क्य नामक सुप्रसिद्ध ऋषि राजदरबार में आए और गार्गी (एक ऋषिका) के प्रश्न पूछने से पहले तक अनेक विद्वानों को पराजित किया। इसके बाद गार्गी ने विश्व के स्वरूप पर याज्ञवल्क्य से अनेक प्रश्न पूछे और अंत में *ब्रह्म* के स्वरूप पर भी प्रश्न पूछे। तब याज्ञवल्क्य ने उन्हें आगे प्रश्न पूछने से मना किया। हालाँकि कुछ समय बाद गार्गी ने पुनः प्रश्न पूछा, तब याज्ञवल्क्य ने समझाया कि कैसे ब्रह्म ही संसार, ऋतुओं, नदियों तथा अन्य सभी चीजों का निर्माण करता है।

उन्होंने अनुभव किया कि 'अविद्या' और **'मोह'** मानवीय कष्ट के स्रोत हैं और इन दोनों कारणों को दूर करने की विधि संकल्पित की। इसके बाद सिद्धार्थ बुद्ध के नाम से जाने गए जिसका अर्थ है— 'ज्ञानी' या 'जागृत' व्यक्ति।

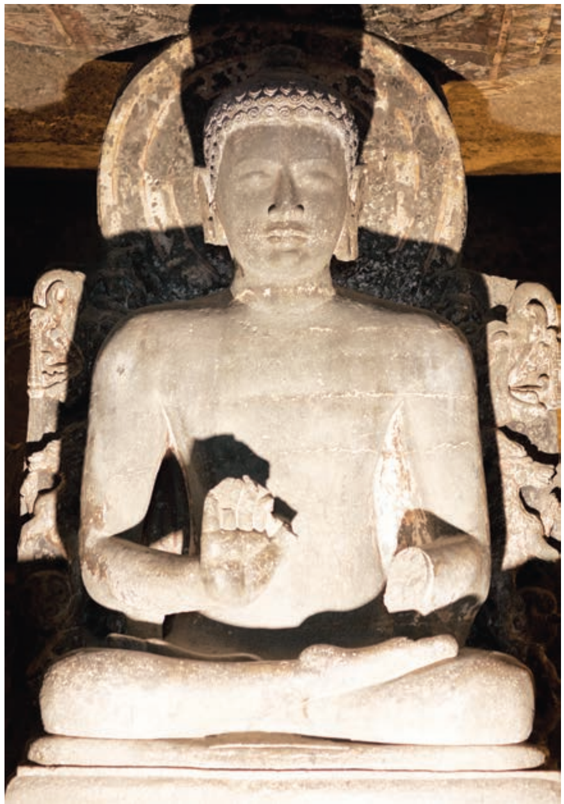

बुद्ध ने जो ज्ञान प्राप्त किया, उसका उपदेश देना आरंभ किया। उनके उपदेशों में 'अहिंसा' का विचार निहित है, जिसका मूल अर्थ है— चोट नहीं पहुँचाना या नुकसान नहीं पहुँचाना। उन्होंने निष्ठापूर्वक आंतरिक अनुशासन पर भी बल दिया। उनकी कही गई निम्न बातों में इसे सरल तरीके से समझाया गया है।

बुद्ध ने संघ की स्थापना की, जो **भिक्षुओं** (आगे चलकर **भिक्षुणियों**) का एक समुदाय है जिन्होंने स्वयं को बुद्ध के उपदेशों के पालन और प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है। भारत और पूरे एशिया पर उनका गहरा प्रभाव था जिसे हम आगे पढ़ेंगे। यह प्रभाव आज भी अनुभव किया जा सकता है।

"जल से व्यक्ति शुद्ध नहीं हो सकता, जबकि कई लोग यहाँ (पवित्र नदी में) स्नान करते हैं। परंतु वह व्यक्ति शुद्ध है जिसमें सत्य और धर्म निवास करते हैं।"

"युद्ध के मैदान में हजारों व्यक्तियों पर हजारों बार विजय पाने की तुलना में स्वयं पर विजय पाना अधिक बड़ी उपलब्धि है।"

मोह

किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ संबंध की स्थिति, सामान्य रूप से भावना या आदत के माध्यम से।

भिक्षु

एक ऐसा व्यक्ति जो दुनिया के सामान्य जीवन को त्याग, स्वयं को किसी धार्मिक या आध्यात्मिक लक्ष्य के लिए समर्पित कर देता है। भिक्षु सामान्य तौर पर व्रत लेता है, अर्थात वचनबद्ध रहता है कि वह अनुशासित जीवन के लिए कठोर नियमों का पालन करेगा।

भिक्षुणी

महिला भिक्षु

लगभग 1,800 वर्ष पुरानी पत्थर की कृति जिसमें बुद्ध उपदेश देते हुए दर्शाए गए हैं।

आइए पता लगाएँ

- → उपरोक्त कृति में बुद्ध को कैसे दर्शाया गया है, इस पर चर्चा कीजिए।
- → क्या आप भारत के कुछ राज्यों या कुछ अन्य देशों के नाम बता सकते हैं जहाँ आज भी बौद्ध मत एक प्रमुख मत है। इन स्थानों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करने का प्रयास कीजिए।

जैन मत

जैन मत एक अन्य महत्वपूर्ण दर्शन है जो उसी समय काफी लोकप्रिय हुआ, यद्यपि इस मत को अधिक प्राचीन माना जाता है। सिद्धार्थ गौतम के समान ही राजकुमार वर्धमान का जन्म छठी शताब्दी सा.सं.पू. के आरंभ में वैशाली (वर्तमान बिहार में) नगर के समीप हुआ था। उन्होंने 30 वर्ष की आयु में अपना घर त्यागने और आध्यात्मिक ज्ञान की

खोज का निर्णय लिया। उन्होंने संन्यासी जीवन के अनुशासन का पालन किया और 12 वर्ष बाद उन्हें 'अनंत' ज्ञान या सर्वोपरि विवेक प्राप्त हुआ। उन्हें 'महावीर' या 'महानायक' के नाम से जाना जाने लगा और उन्होंने अपने अर्जित ज्ञान का उपदेश देना आरंभ किया।

महावीर वर्धमान का एक पारंपरिक चित्र

ध्यान रखें

'जैन' शब्द *'जिन'* से आया है जिसका अर्थ है 'विजेता'। इसका अर्थ किसी क्षेत्र या शत्रुओं पर विजय पाने से नहीं है, बल्कि अविद्या और मोह पर विजय पाने से है, ताकि ज्ञान प्राप्त किया जा सके"।

जैन मत के उपदेशों में अहिंसा, 'अनेकांतवाद' और 'अपरिग्रह' शामिल हैं। ये विचार काफी हद तक बौद्ध तथा वेदांत दर्शन के विचारों को साझा करते हैं जो कि भारतीय संस्कृति के केंद्र में हैं। इनमें से प्रथम विचार को महावीर के इस कथन द्वारा समझाया जा सकता है—

"सभी सांस लेने वाले, उपस्थित, जीवित, संवेदनशील जीवों को मारा न जाए, न ही उनके साथ हिंसा की जाए, न दुर्व्यवहार किया जाए, न ही सताया जाए तथा न ही दूर हटाया जाए।"

अंतिम दो बातों को सरल शब्दों में समझते हैं—

- *अनेकांतवाद* का अर्थ है, 'केवल एक' पक्ष या दृष्टिकोण नहीं। अर्थात, सत्य के अनेक पक्ष हैं और इसे केवल एक कथन द्वारा पूरी तरह समझाया नहीं जा सकता है।
- *अपरिग्रह* का अर्थ है, 'असंग्रह'। इसके अंतर्गत पार्थिव वस्तुओं से दूर और स्वयं को जीवन में केवल अनिवार्य वस्तुओं तक सीमित रहने की सलाह दी जाती है।

जैन मत में सभी जीवों, मानवों से लेकर अदृश्य जीवों तक आपसी संबद्धता और आपसी निर्भरता पर भी बल दिया गया है, क्योंकि ये सभी एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। प्रकृति, जीवों और वनस्पतियों का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने इस गहन सत्य की बार-बार पुष्टि की है।

जातक कथाएँ पीढ़ियों से भारतीय बच्चों और वयस्कों को समान रूप में आह्लादित करती रही हैं। ये बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ हैं और बड़े ही सरल तरीके से बौद्ध आदर्शों को व्यक्त करती हैं।

एक प्रसिद्ध कथा में बुद्ध, वानरों के एक बड़े समूह के राजा थे। वे एक विशालकाय वृक्ष के समीप रहते थे जिस पर मीठी सुगंध वाले और स्वादिष्ट फल लगे हुए थे। वानर-राज के आदेश के बावजूद कि उस वृक्ष का कोई भी फल किसी और के हाथ न लगे, एक दिन एक पका हुआ फल नीचे नदी में जा गिरा। पानी की धारा के साथ बहकर वह फल जाल में फँसा और उसे राजमहल ले जाया गया। राजा उस फल के स्वाद से इतना सम्मोहित हुए कि उन्होंने अपने सैनिकों से उस फल के वृक्ष को ढूँढ़ निकालने के लिए कहा।

वानर-राज की कथा दर्शाने वाली पत्थर की कृति (चित्र – मध्यप्रदेश)

लंबे समय तक खोजने के बाद उन्हें वह वृक्ष मिल गया और उन्होंने देखा कि वानर उन फलों का आनंद उठा रहे थे। सैनिकों ने वानरों पर हमला किया। वानर-राज के पास अपने वानरों को बचाने का केवल एक ही रास्ता था कि नदी पार कराने में उनकी सहायता की जाए। किंतु वे अपने आप ऐसा नहीं कर पा रहे थे। उनसे आकार में बहुत बड़े होने के नाते वानर-राज ने नदी के दूसरे किनारे पर एक पेड़ को पकड़ा और उन्हें नदी पार कराने के लिए अपने शरीर को मानो एक पुल बना दिया। इस प्रक्रिया के दौरान उनका शरीर घायल हो गया और अंत में उनकी मृत्यु हो गई।

राजा ने कुछ दूरी से यह दृश्य देखा और वह वानर-राज के इस नि:स्वार्थ बलिदान से बहुत अधिक प्रभावित हुआ। वह भी प्रजा के साथ अपनी भूमिका पर सोच-विचार करने लगा।

एक जैन कथा

रोहिनेय एक बहुत कुशल चोर था, जो पकड़े जाने के सभी प्रयासों को विफल कर देता था। एक बार नगर की ओर जाते हुए रास्ते में उसने अकस्मात ही अज्ञान के साधारण जीवन से मुक्ति पाने के बारे में महावीर द्वारा दिए जा रहे उपदेश के कुछ वाक्य सुन लिए। रोहिनेय के नगर पहुँचने के बाद उसे पहचान लिया गया और गिरफ्तार कर लिया गया। उसने स्वयं को एक साधारण कृषक बताया। एक मंत्री ने उसे अपनी पहचान प्रकट करने का दबाव डालने के लिए चतुराई से एक योजना बनाई, किंतु महावीर के शब्दों को याद रखते हुए रोहिनेय मंत्री की योजना समझ गया और उसके जाल से बच निकला।

बाद में रोहिनेय को बहुत पछतावा हुआ। वह महावीर के पास गया और अपने अपराधों को स्वीकार किया। उसने चुराया हुआ धन वापस किया एवं अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगी। वह भिक्षु बन गया और उसे अपने अब तक के भ्रमपूर्ण जीवन का एहसास हुआ। तत्पश्चात उसने आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

यह कहानी सम्यक कर्म और सम्यक विचारों के महत्व को दर्शाती है और यह भी बताती है कि हर व्यक्ति को जीवन में दूसरा अवसर मिलना चाहिए।

आइए पता लगाएँ

उपरोक्त भित्तिचित्र (नई दिल्ली के एक जैन मंदिर से) का अवलोकन कीजिए। इसमें क्या विशेष दिखाई दे रहा है? इसमें क्या संदेश निहित है?

आइए विचार करें

बौद्ध मत और जैन मत दोनों में ही अहिंसा का अर्थ व्यक्ति या जीव के प्रति शारीरिक हिंसा न करने से भी कहीं अधिक है। इसमें विचारों की हिंसा से भी संयम रखने के लिए कहा गया है, जैसे कि किसी के बारे में बुरी भावना नहीं रखना। यदि हम अपने आप को ध्यान से देखें तो हमें ऐसे नकारात्मक विचार स्वयं में अनुभव होते हैं और हमें इन्हें सकारात्मक विचारों में बदलना सीखना चाहिए। कभी-कभार ये नकारात्मक विचार स्वयं हमारी ओर भी निर्देशित होते हैं।

बौद्ध एलोरा (महाराष्ट्र) में छठवीं और दसवीं शताब्दी सा.सं.के बीच पहाड़ों में काटकर गुफाएँ बनाई गईं। इनमें से कुछ गुफाएँ हिंदू दर्शन से हैं, जबकि अन्य बौद्ध और जैन मतों से संबंधित हैं।

बौद्ध मत और जैन मत, दोनों में ही भिक्षुओं तथा कभी-कभी भिक्षुणियों ने भी देश के सुदूर स्थानों कीं यात्राएँ की तथा अपने-अपने उपदेशों का प्रचार-प्रसार किया। इनमें से कुछ लोगों ने विभिन्न स्थानों पर जाकर नए विहार बनाए, जबकि कुछ ने पत्थरों की गुफाओं में संन्यासी का जीवन बिताया। पुरातात्विक खोजों में इन विहारों के कुछ अवशेष मिले हैं। कई स्थानों पर पत्थर की गुफाओं में उन भिक्षुओं के नाम भी मिले हैं जो यहाँ रहे थे और पत्थरों के बिस्तर पर सोए थे।

आइए विचार करें

अंग्रेजी भाषा में हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख मतों को 'धर्म' का नाम दिया जाता है। हमने इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया है, यहाँ इन्हें 'दर्शन' या 'मत' और (इस अध्याय में आगे) 'विश्वास' कहा गया है। इसका कारण यह है कि इन मतों और दर्शनों के अनेक आयाम हैं, जिनका हम आगे अध्ययन करेंगे, जैसे कि उनका दार्शनिक पक्ष, आध्यात्मिक पक्ष, नैतिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, धार्मिक पक्ष इत्यादि। अनेक विद्वान मानते हैं कि अंग्रेजी का शब्द 'रिलिजन' भारतीय सभ्यता के संदर्भ में बहुत सीमित है।

उस समय अन्य अनेक मत भी प्रचलित थे। उदाहरण के लिए, इनमें से एक 'चार्वाक' दर्शन है जिसे कभी-कभी 'लोकायत' भी कहा जाता है। इसके अनुसार यह भौतिक जगत ही एकमात्र सत्य है और इसलिए मृत्यु के पश्चात जीवन का होना असंभव है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस दर्शन को अधिक लोकप्रियता नहीं मिली और समय के साथ यह

विलुप्त हो गया। हमने इसका उल्लेख यहाँ इसलिए किया ताकि यह दर्शाया जा सके कि यहाँ बौद्धिक या आध्यात्मिक विश्वास प्रथाओं में व्यापक विविधता थी और लोग अपने अनुसार इन्हें चुनने के लिए स्वतंत्र थे।

यद्यपि वैदिक, बौद्ध और जैन दर्शनों में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ थी तथापि उनमें कुछ समान संकल्पनाएँ भी थीं, जैसे – धर्म, कर्म, पुनर्जन्म, दुखों और अज्ञानता के अंत की खोज एवं अनेक अन्य महत्वपूर्ण मूल्य आदि। वास्तव में यह उस वृक्ष का तना या मूल भाग है जिसके उदाहरण के साथ हमने इस अध्याय की शुरुआत की थी।

लोक और जनजातीय जड़ें

हमने अब तक जिन सांस्कृतिक जड़ों को देखा है, उन्हें कई शास्त्रों में वर्णित किया गया है। भारत में समृद्ध मौखिक परंपराएँ भी रही हैं। इसका अर्थ है, उन उपदेशों और प्रथाओं के बारे में ज्ञान जो कि नित्य अभ्यास के द्वारा आगे संचारित हुआ, न कि लिखित शास्त्रों के द्वारा। वेदों के संदर्भ में यह लागू होता है। इनमें अनेक लोक प्रथाएँ हैं, जो आम लोगों द्वारा प्रसारित होती हैं और जनजातीय परंपराएँ जनजातियों द्वारा प्रसारित होती हैं।

जनजाति क्या है?

इस सामाजिक इकाई की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं। आज के समय में मानव वैज्ञानिक (मानव विज्ञान का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक) जनजाति को उन परिवारों या वंशों का समूह मानते हैं, जो एक सामान्य उत्पत्ति, संस्कृति और भाषा साझा करते हैं; आपस में निकट संबंध बनाए रखते हुए समुदाय में रहते हैं; जिसके एक मुखिया होते हैं और उनके पास अपनी कोई निजी संपत्ति नहीं होती है।

यह जानना रुचिकर है कि प्राचीन भारत में *'जनजाति'* के लिए कोई शब्द नहीं था — जनजातियाँ केवल अलग-अलग *जन* थीं जो एक विशेष परिवेश में रहती थीं, जैसे कि वन या पहाड़। भारत के संविधान में अंग्रेजी में इनके लिए 'ट्राइब' और 'ट्राइबल कम्युनिटी' और हिंदी में *'जनजाति'* शब्द का उपयोग किया गया है।

आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2011 में भारत के अधिकांश राज्यों में 705 जनजातियाँ निवास करती थीं, जिनकी संख्या लगभग 104 मिलियन थी — यह आस्ट्रेलिया और युनाइटेड किंगडम की कुल जनसंख्या से अधिक है।

19वीं शताब्दी में जनजातियों का अध्ययन करने वाले मानव वैज्ञानिकों ने उन्हें प्राय: सभ्य मानवों की तुलना में 'आदिम' या 'हीन' बताया है। जनजातीय समुदायों तथा उनकी समृद्ध एवं जटिल संस्कृतियों के गहन अध्ययन के बाद इस प्रकार के पक्षपातपूर्ण विचारों को अधिकांशत: नकार दिया गया है।

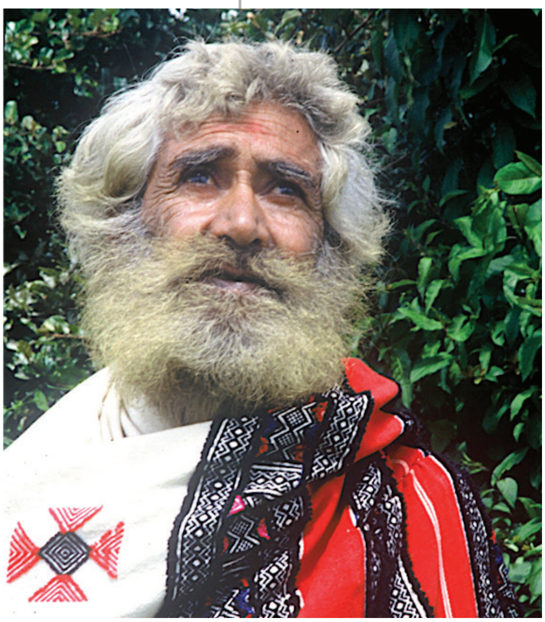

जैसा कि हमने इस अध्याय में उल्लेख किया है, लोक और जनजातीय परंपराओं तथा प्रमुख विचारधाराओं के बीच निरंतर संपर्क होता रहा है। दोनों ही दिशाओं में देवताओं, संकल्पनाओं, दंतकथाओं और रीतियों का आपस में आदान-प्रदान होता रहा है। उदाहरण के लिए, पंरपरा के अनुसार पुरी (ओडिशा) के भगवान जगन्नाथ मूल रूप से जनजाति देवता थे इसी तरह बस्तर का दशहरा छत्तीसगढ़ की अनूठी सांस्कृतिक विशेषता है। राज्य के स्थानीय लोगों द्वारा उत्साह के साथ मनाया जाने वाला त्योहार छत्तीसगढ़ जनजातियों की पूज्यनीय देवी दंतेश्वरी की सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है। देवी माताओं के जिन विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है, उनके लिए भी यही बात कही जा सकती है। दूसरी ओर, कुछ जनजातियों में हिंदू देवों को काफी समय पहले ही अपना लिया गया था और महाभारत तथा रामायण के उनके अपने रूप हैं— यह भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों से लेकर तमिलनाडु तक बहुत अच्छी तरह लिखा गया है।

इस प्रकार के परस्पर संपर्क इतने लंबे समय से तथा इतनी सहजता से कैसे होते रहे हैं? ऐसा इसलिए हो सका क्योंकि लोक, जनजातियों और हिंदू विश्वास में अनेक समान प्रकार की संकल्पनाएँ थीं। उदाहरण के लिए, तीनों में प्राकृतिक तत्वों जैसे कि पर्वतों, नदियों, पेड़ों, पौधों और जंतुओं तथा कुछ पत्थरों को भी पवित्र माना गया, क्योंकि इन सबमें चेतना है। निस्संदेह, जनजातियों द्वारा उन प्राकृतिक तत्वों से संबंधित कई देवताओं की पूजा की जाती है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु के नीलगिरि पर्वत में निवास करने वाली टोडा जनजाति (इनमें से एक की तस्वीर बाईं ओर दी गई है) के अनुसार इस पर्वत के 30 से अधिक शिखर देवी-देवताओं के निवास स्थान हैं; ये शिखर इतने पवित्र माने गए हैं कि टोडा जनजाति के लोग अपनी अंगुली से इनकी ओर संकेत भी नहीं करते हैं।

देवताओं में इतनी बहुलता के पश्चात, हिंदू धर्म के समान अनेक जनजातियों में भी उच्चतर देवत्व या परमात्मा की संकल्पना है। उदाहरण के लिए, अरुणाचल प्रदेश की अनेक जनजातियाँ डोनीपोलो की पूजा करती हैं, जो सूर्य और चंद्रमा के मिले-जुले रूप

माने गए हैं और इन्हें आगे चलकर परमात्मा माना गया। मध्य भारत के क्षेत्र में खंडोबा भगवान के संबंध में भी ऐसा ही है। पूर्वी भारत में, मुंडा और संथाल जनजातियाँ अन्य दैविक शक्तियों के साथ सिंगबोंगा की पूजा करती हैं, जिन्हें वे परमेश्वर कहते हैं और जिन्होंने यह संपूर्ण विश्व बनाया हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

भारतीय समाजशास्त्री आंद्रे बेते ने इस स्थिति के बारे में कुछ इस तरह बताया है—

"भारतीय उपमहाद्वीप में रहने वाली हजारों जातियाँ और जनजातियाँ इतिहास के आरंभिक समय तथा उससे भी पहले से आपस में एक-दूसरे की धार्मिक आस्थाओं और प्रथाओं को प्रभावित करती रही हैं। जनजातीय धर्मों पर हुए हिंदू दर्शन के प्रभाव को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, किंतु यह भी सत्य है कि न केवल इसके निर्माण के चरण में, बल्कि इसके पूरे विकास-क्रम में हिंदू दर्शन जनजातीय आस्थाओं से प्रभावित हुआ है।"

स्पष्ट रूप से, इस लंबे समय के परस्पर संपर्क का परिणाम आपसी समृद्धि रही है। इस प्रकार लोक और जनजातीय मान्यताएँ और प्रथाएँ भारत की सांस्कृतिक जड़ों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। हम अगले अध्याय में इस विषय को और भी विस्तार से बताएँगे।

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत के प्राचीनतम ग्रंथ, वेदों ने अनेक दर्शनों को जन्म दिया। वेदांत और योग इनमें प्रमुख हैं।
- बौद्ध और जैन मतों, वेदों के प्राधिकार क्षेत्र से परे गए और उन्होंने कुछ विशिष्ट मूल्यों एवं प्रथाओं पर बल दिया।
- यद्यपि इन मतों के सिद्धांत और विधियाँ भिन्न थे, फिर भी इनमें कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाएँ समान थीं। ये दुख के कारण और अज्ञान के निवारण के साधनों का पता लगाने का सतत् प्रयास करते रहे।
- हजारों वर्षों से जनजातीय विश्वास, प्रथाओं तथा कलाओं का हिंदू दर्शन के साथ मेल-जोल होता रहा है। इनके बीच दोनों ओर से अबाधित आदान-प्रदान चलता रहा है। जनजातीय विश्वास प्रथाएँ आम तौर पर भूमि और उसकी विशेषताओं को पवित्र मानती हैं, उनमें प्राय: देवत्व की एक उच्च संकल्पना भी होती है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. यदि आप नचिकेता होते तो आप यम से कौन-से प्रश्न पूछते? इन्हें 100–150 शब्दों में लिखिए।
2. बौद्ध मत के कुछ केंद्रीय विचारों को समझाइए। इन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. बुद्ध के उस उद्धरण पर कक्षा में चर्चा कीजिए जो इस प्रकार है— "जल से व्यक्ति शुद्ध नहीं हो सकता, जबकि कई लोग यहाँ (पवित्र नदी में) स्नान करते हैं" ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सबको इसका अर्थ समझ में आ गया है।
4. जैन मत के कुछ मुख्य विचारों को समझाइए। इन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. कक्षा में आंद्रे बेते के कथन पर विचार-विमर्श कीजिए।
6. अपने स्थानीय क्षेत्र में लोकप्रिय देवी-देवताओं तथा उनसे जुड़े त्योहारों की एक सूची बनाइए।
7. कक्षा की गतिविधि के रूप में अपने क्षेत्र या राज्य के दो या तीन जनजातीय समूहों की सूची बनाइए। इनमें से कुछ की परंपरा और विश्वास प्रणालियों के बारे में लिखिए।

सही या गलत

1. वैदिक ऋचाओं को ताड़-पत्र की पांडुलिपियों पर लिखा गया है।
2. वेद भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं।
3. वैदिक कथन *"एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति"* में ब्रह्मांड की शक्तियों की एकता की मान्यता प्रकट होती है।
4. बौद्ध मत वेदों से अधिक पुराना है।
5. जैन मत का उद्भव बौद्ध मत की एक शाखा के रूप में हुआ।
6. बौद्ध और जैन मत दोनों ही शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा सभी जीवों को नुकसान न पहुँचाने का समर्थन करते हैं।
7. जनजातीय विश्वास परंपराएँ आत्मा और छोटे देवों तक सीमित हैं।

कक्षा गतिविधि

1. एक नाटक का मंचन कीजिए, जिसमें मृत्यु के देवता यम से अनेक बच्चे नचिकेता के रूप में जीवन के बारे में प्रश्न पूछ रहे हैं।

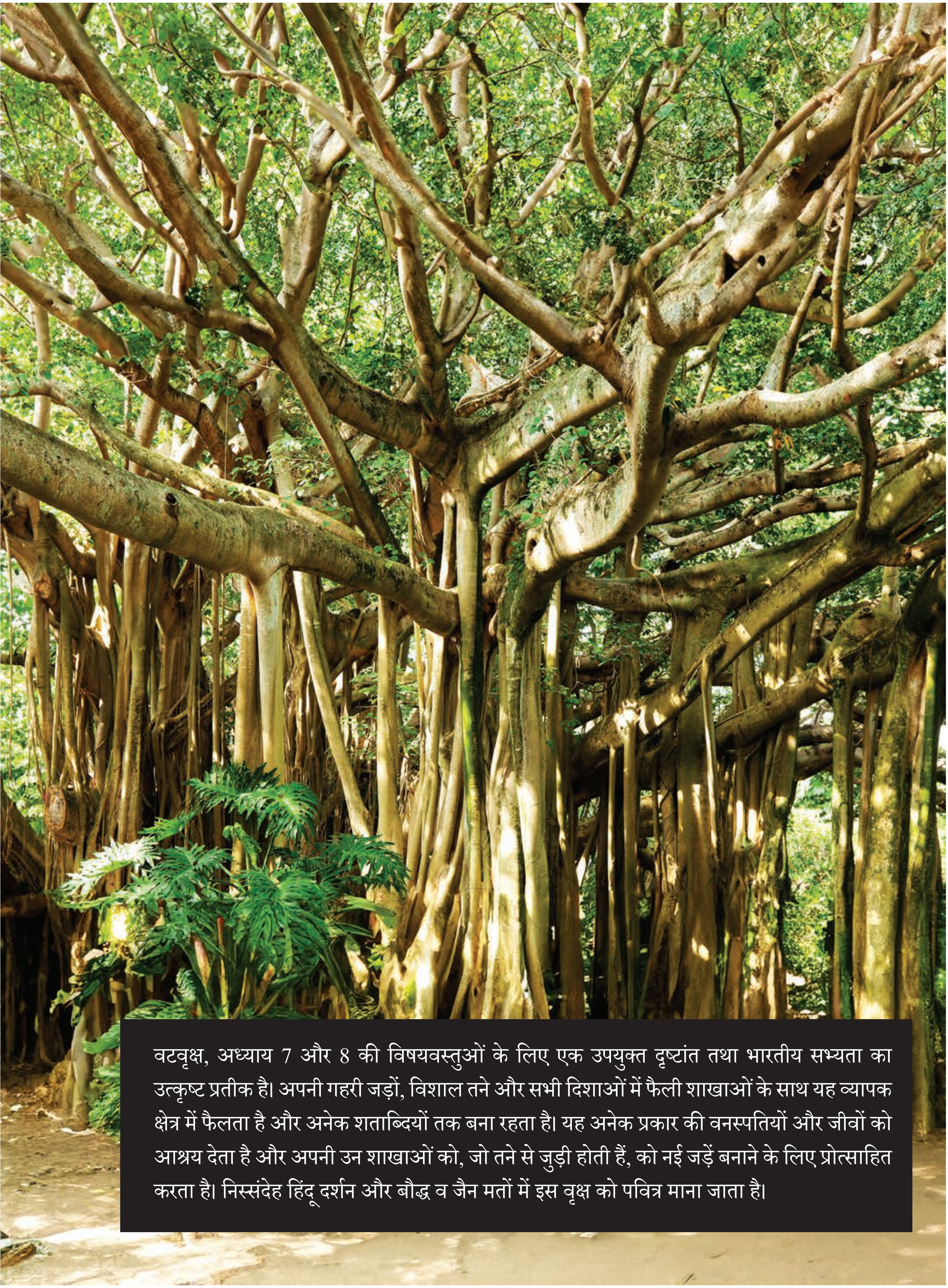

वटवृक्ष, अध्याय 7 और 8 की विषयवस्तुओं के लिए एक उपयुक्त दृष्टांत तथा भारतीय सभ्यता का उत्कृष्ट प्रतीक है। अपनी गहरी जड़ों, विशाल तने और सभी दिशाओं में फैली शाखाओं के साथ यह व्यापक क्षेत्र में फैलता है और अनेक शताब्दियों तक बना रहता है। यह अनेक प्रकार की वनस्पतियों और जीवों को आश्रय देता है और अपनी उन शाखाओं को, जो तने से जुड़ी होती हैं, को नई जड़ें बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। निस्संदेह हिंदू दर्शन और बौद्ध व जैन मतों में इस वृक्ष को पवित्र माना जाता है।

नूडल्स

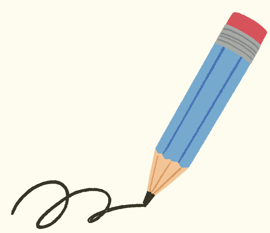

*नोट्स (Notes) और डूडल्स (Doodles) को मिलाकर बना शब्द-संक्षेप।
इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

अध्याय 8

अनेकता में एकता

हे ईश्वर! मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें कि मैं अनेकता में एकता के स्पर्श का आनंद कभी न गवाँ सकूँ।

—*रवींद्रनाथ टैगोर*

...विविधता में एकता का सिद्धांत सदैव से भारत के लिए स्वाभाविक रहा है और यह उसकी प्रकृति एवं अस्तित्व के लिए आवश्यक है। एक में अनेक का यह भाव भारत को उसके स्वभाव व स्वधर्म की सुनिश्चित नींव पर स्थापित करेगा।

—*श्री अरविंद*

महत्वपूर्ण प्रश्न?

1. *भारतीय परिदृश्य में 'विविधता में एकता' का क्या अर्थ है?*
2. *भारत की विविधता के कौन-से पक्ष सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं?*
3. *हम विविधता में निहित एकता का कैसे पता लगाते हैं?*

0683CH08

समृद्ध विविधता

यदि आप रेल द्वारा भारत की यात्रा करते हैं, तो आप न केवल बदलते भूदृश्यों को देखेंगे, बल्कि विभिन्न प्रकार के परिधान और भोजन का भी अनुभव करेंगे। इसके अतिरिक्त, आप परिचित एवं अपरिचित भाषाएँ सुनेंगे और विभिन्न लिपियों को देखेंगे। यहाँ तक कि आप अपने क्षेत्र में भी भारत के विभिन्न भागों से आए अलग-अलग रीति-रिवाजों और परंपराओं वाले लोगों से मिलेंगे। यही भारत की समृद्ध विविधता है और सामान्यत: यही वह पहला पक्ष है जो हमारे देश में आने वाले पर्यटकों को प्रभावित करता है।

1.4 अरब से भी अधिक निवासियों वाले इस देश (विश्व की जनसंख्या का लगभग 18 प्रतिशत भाग) में इस प्रकार की विविधता आश्चर्यजनक नहीं है। 20वीं शताब्दी के अंत में भारत के एक राष्ट्रीय संगठन, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने 'भारत के लोग परियोजना' के अंतर्गत देश के सभी राज्यों में 4,635 समुदायों का एक व्यापक सर्वेक्षण किया। इसमें 25 लिपियों का उपयोग करने वाली 325 भाषाओं की गणना की गई। इस सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि अपने जन्म स्थान के निकट या अपने मूल समुदाय के साथ न रहने के कारण अनेक भारतीयों को प्रवासी भी कहा जा सकता है।

आइए पता लगाएँ

कक्षा की एक गतिविधि के रूप में (1) कम से कम 5 सहपाठियों और उनके माता-पिता के जन्म स्थानों तथा (2) उनकी मातृभाषाओं और उन्हें ज्ञात अन्य भाषाओं की सूचियाँ बनाइए। विविधता के परिप्रेक्ष्य में इस गतिविधि के परिणामों पर चर्चा कीजिए।

विविधता वास्तव में सुंदर है, परंतु इसका अर्थ निकालना इतना सरल नहीं है। एक शताब्दी से भी अधिक पहले ब्रिटिश इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने विस्मयपूर्वक कहा था—

> "इस अचंभित करने वाली विविधता में भारत का इतिहास किस प्रकार लिखा जा सकता है? ...इस प्रश्न का उत्तर इस तथ्य में निहित है कि भारत **'विविधता में एकता'** प्रदर्शित करता है।"

'विविधता में एकता' का अर्थ क्या है? हम इस एकता या 'एक में अनेक' को कैसे समझें और व्यक्त करें? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हम भारतीय जीवन के कुछ आयामों को समझने का प्रयास करेंगे।

सभी के लिए भोजन

आपमें से कुछ विद्यार्थियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के पकवानों का सेवन अवश्य किया होगा। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे देश भारत में आप, लाखों न सही, किंतु हजारों प्रकार के व्यंजनों और पकवानों का स्वाद चख सकते हैं। फिर भी कुछ निश्चित अनाज जैसे – चावल, जौ और गेहूँ, बाजरा, ज्वार और रागी तथा विभिन्न प्रकार की दालों का लगभग पूरे भारत में उपयोग होता है। ये सभी अधिकांश भारतीयों का प्रमुख

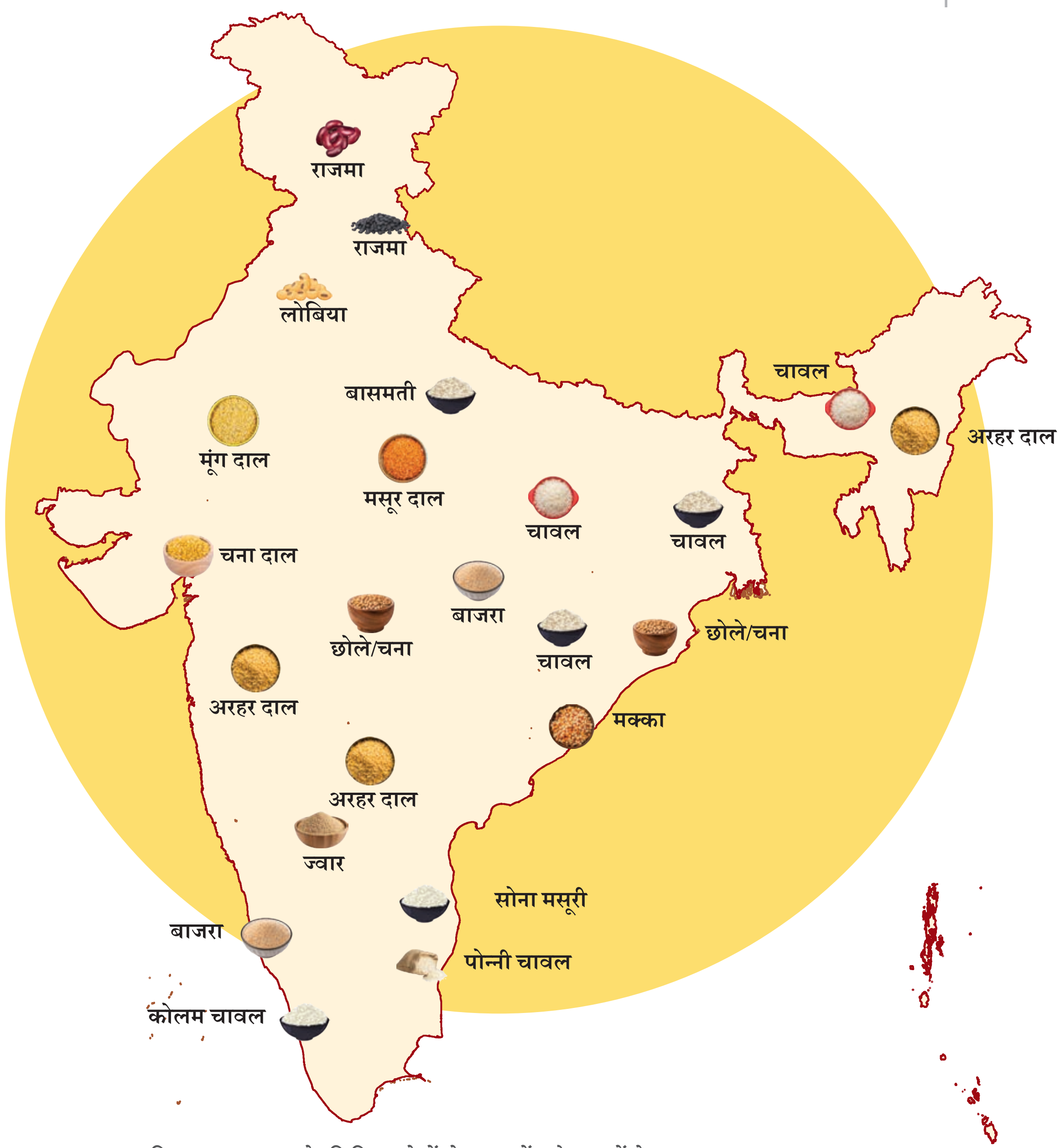

चित्र 8.1 – भारत के विभिन्न क्षेत्रों से अनाजों और दालों के कुछ उदाहरण

भोजन है, इसलिए इन्हें 'मुख्य अनाज' भी कहा जाता है (चित्र 8.1, पृष्ठ 131)। इसी प्रकार हल्दी, जीरा, इलायची और अदरक जैसे कुछ सामान्य मसालों का भी उपयोग पूरे देश में होता है। हम इस सूची को कुछ सामान्य साग-सब्जियों और तेलों इत्यादि के साथ आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि कैसे एक ही प्रकार की सामग्री (एकता) से विभिन्न प्रकार के (विविधता) अनगिनत व्यंजन और पकवान बनाए जा सकते हैं।

आइए पता लगाएँ

→ कक्षा की एक गतिविधि के रूप में अपने घर में उपयोग की जाने वाली भोजन सामग्रियों (अनाज, मसालों आदि) की सूची बनाइए।

→ किसी भी एक हरी सब्जी को लीजिए एवं विचार कीजिए कि उससे आप कितने प्रकार के व्यंजन बना सकते हैं?

वस्त्र एवं परिधान

भारत के प्रत्येक क्षेत्र के लोगों ने वस्त्रों और परिधानों की अपनी स्वयं की शैली विकसित की है। फिर भी, हम कुछ पारंपरिक भारतीय परिधानों में एक समानता पाते हैं, भले ही उनमें किसी भी प्रकार की सामग्री का उपयोग किया गया हो। इसका एक स्पष्ट उदाहरण भारत के अधिकांश भागों में पहने जाने वाला और विभिन्न प्रकार के सूत या धागे से बना एक लंबा परिधान 'साड़ी' है। ये मुख्यत: कपास अथवा रेशम के धागे से बनती हैं, परंतु आजकल कृत्रिम (सिंथेटिक) कपड़ों से भी बनाई जाती हैं।

बनारसी, कांजीवरम, पैठनी, पाटन पटोला, मूगा या मैसूर — रेशमी साड़ियों के कुछ प्रसिद्ध प्रकार हैं। सूती साड़ियों के और भी प्रकार होते हैं। कुल मिलाकर इस बिना सिले वस्त्र (साड़ी) के सैकड़ों प्रकार के रूप होते हैं।

चित्र 8.2 – वैशाली (वर्तमान बिहार में) से प्राप्त साड़ी पहने हुए एक स्त्री की पत्थर पर उकेरी गई आकृति

इन्हें बुनाई एवं डिजाइन की विभिन्न विधियों से तैयार किया जाता है (चित्र 8.3)। कुछ डिजाइन कपड़े का ही हिस्सा होते हैं, जबकि कुछ को कपड़े की बुनाई के उपरांत उस पर छापा जाता है। अंततः रंगों में अनेक विविधताएँ होती है जो कई प्रकार के रंगों से उत्पन्न की जाती हैं।

इस तरह साड़ी का एक लंबा इतिहास रहा है। कुछ शताब्दी सा.सं.पू. वैशाली (आज के बिहार) में पत्थर पर **उकेरी गई आकृति** में साड़ी पहनी हुई स्त्री को दर्शाया गया है। (चित्र 8.2, पृष्ठ 132)

छत्तीसगढ़ का कोसा, रेशम के जंगलों में पाए जाने वाले जंगली रेशम के कीड़ों के कोकून से बनाया जाता है। कोसा रेशम जिसे टसर रेशम के नाम से भी जाना जाता है, अपनी प्राकृतिक बनावट समद्धि चमक और गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। कोसा सिल्क साड़ियाँ अपनी टिकाऊपन और प्राकृतिक चमक के लिए विख्यात हैं उन्हें अक्सर बुनकरों व स्थानीय कारीगरों द्वारा तैयार किया जाता है, जिन्होंने पीढ़ियों से अपने कौशल को निखारा और तरह-तरह के डिजाइनों से सजाया है, जो छ.ग. की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

चित्र 8.3 – रंगीन पारंपरिक भारतीय कपड़ों के कुछ उदाहरण

आइए पता लगाएँ

साड़ी का उदाहरण एकता और विविधता को कैसे प्रतिबिंबित करता है, व्याख्या कीजिए (100–150 शब्दों में)।

ध्यान रखें

बहुत लंबे समय तक भारत, विश्व में सर्वाधिक महीन सूत का उत्पादन करता रहा और उन कपड़ों का यूरोप जैसे सुदूर स्थानों तक निर्यात करता रहा। 17वीं शताब्दी में एक सूती कपड़े पर छपा हुआ डिजाइन 'छींट', यूरोप में इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि इसके कारण यूरोपीय परिधानों की कीमतों में बहुत बड़ी गिरावट आई। अंततः अपने स्वयं के उत्पादों के संरक्षण के लिए इंग्लैंड और फ्रांस को भारत से 'छींट' के आयात पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लेना पड़ा।

साड़ी को पहनने के अनेक तरीके हैं। ये एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र और एक समुदाय से दूसरे समुदाय में भिन्न होते हैं। वास्तव में, इसे बाँधने व पहनने के नए-नए तरीके अभी भी खोजे जा रहे हैं, लेकिन अंततोगत्वा यह एक ही प्रकार का परिधान — 'साड़ी' है।

उकेरी गई आकृति

एक डिजाइन जो समतल सतह के ऊपर उकेरी गई हो। यह पत्थर, लकड़ी, मृत्तिका (सेरेमिक) या अन्य सामग्री की बनी हो सकती है।

चित्र 8.4 – महिलाएँ साड़ी का प्राय: एक परिधान के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी उपयोग करती हैं (चित्र – दक्षिण भारत से)।

विगत शताब्दियों में भारत आने वाले विभिन्न विदेशी यात्री इसकी सादगी, सुलभता और पहनने के विविध तरीकों को देखकर अभिभूत हुए। इसके अतिरिक्त, महिलाएँ साड़ी का एक परिधान के रूप में उपयोग करने के अलावा अन्य कार्यों में भी उपयोग करती रही हैं। चित्र 8.4 में छह चित्रों के माध्यम से इसके रचनात्मक उपयोगों को दर्शाया गया है।

आइए पता लगाएँ

- → क्या आप ऊपर दिए गए चित्रों से यह पहचान सकते हैं कि साड़ी का उपयोग कितने प्रकार से किया गया है?
- → क्या आप साड़ी के अन्य उपयोगों से परिचित हैं अथवा क्या आप उसके अन्य उपयोगों की कल्पना कर सकते हैं?

→ जिस प्रकार आपने साड़ी के विभिन्न रूपों और उपयोगों को देखा, उसी प्रकार एक अन्य परिधान धोती के कपड़े (फैब्रिक) तथा उपयोगों को ध्यान में रखते हुए उसके विभिन्न रूपों की एक सूची तैयार कीजिए। इस गतिविधि से आपको क्या समझ में आया?

त्योहारों की विविधता

भारत में त्योहारों की अपार विविधता है। आपने देखा होगा कि कुछ त्योहार एक ही समय पर पूरे भारत में मनाए जाते हैं, हालाकि उनके नाम अलग-अलग होते हैं। हम एक उदाहरण के माध्यम से इसे देखेंगे, जैसे कि 14 जनवरी के आस-पास मनाया जाने वाला मकर संक्राति का पर्व। यह पर्व भारत के विभिन्न भागों में फसलों की कटाई का सूचक है।

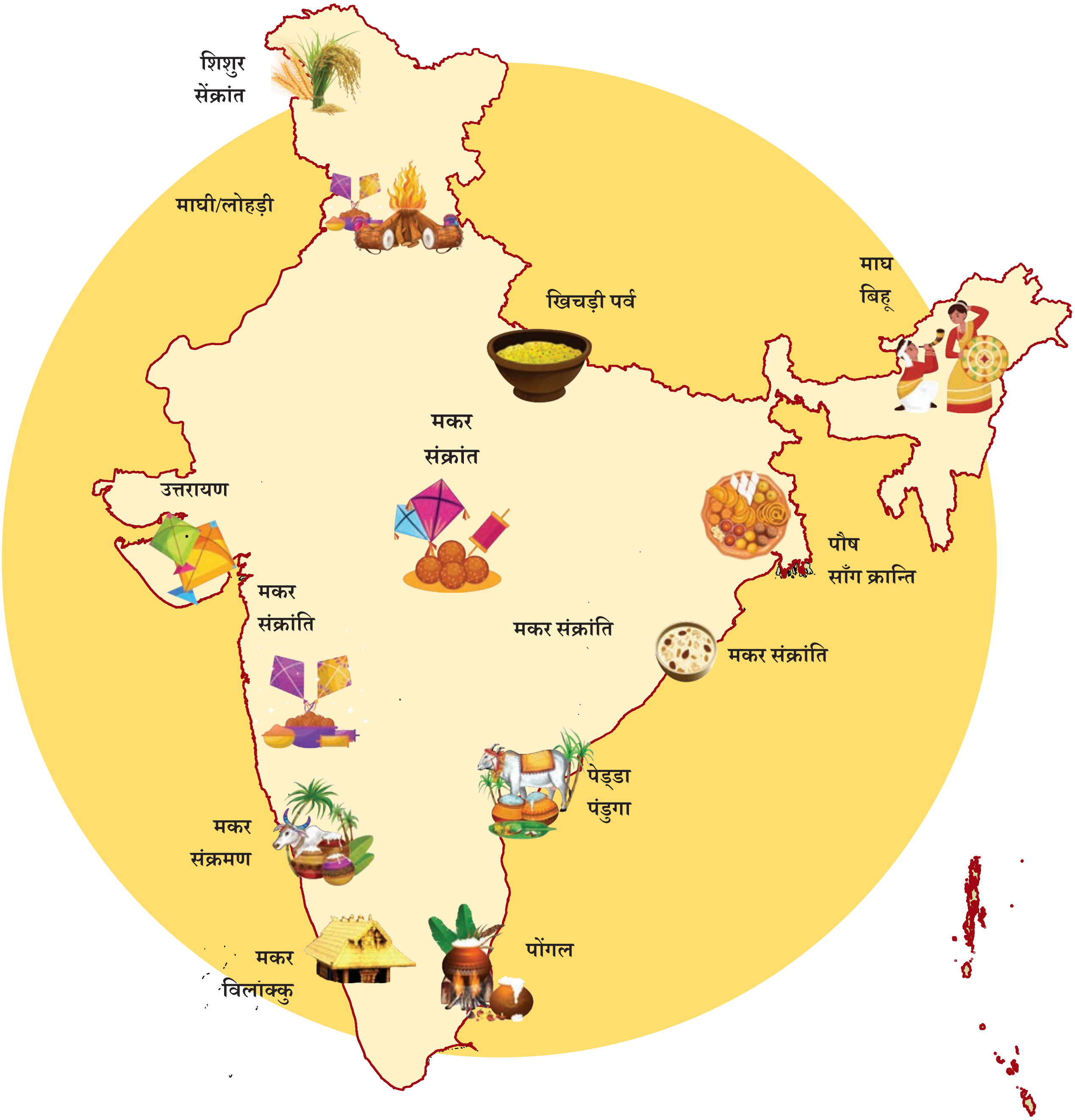

चित्र 8.5 – मानचित्र लगभग एक ही तिथि पर एक ही त्योहार के विभिन्न नामों को प्रदर्शित करता है।

आइए पता लगाएँ

→ आपका सबसे प्रिय त्योहार कौन-सा है एवं यह आपके क्षेत्र में किस प्रकार मनाया जाता है? क्या आप जानते हैं कि यह भारत के किसी अन्य भाग में भी वस्तुत: किसी अन्य नाम से मनाया जाता है?

→ अक्टूबर-नवंबर माह में भारत में कई प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख त्योहारों एवं देश के विभिन्न भागों में उन्हें जिन नामों से पुकारा जाता है, उनकी सूची बनाइए।

महाकाव्य का विस्तार

साहित्य, विविधता में एकता का एक अन्य उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय साहित्य बहुत विविध है एवं विश्व के सबसे धनी साहित्यों में से एक है। भाषा, लेखन शैली की तकनीक आदि में अंतर होने के बावजूद सदियों से भारतीय साहित्य ने विश्व के महत्वपूर्ण विषयों एवं चिंताओं को साझा किया है। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र के बारे में किसने नहीं सुना है? मुख्य पात्रों के रूप में पशुओं के माध्यम से मनोरंजक कथाओं का यह संग्रह हमें महत्वपूर्ण जीवन-कौशल सिखाता है। इसका मूल संस्कृत पाठ लगभग 2,200 वर्ष पुराना है, परंतु इसका रूपातंरण लगभग हर भारतीय भाषा में किया जा चुका है। वास्तव में, यह भारत से बाहर दक्षिण-पूर्वी एशिया, अरब देशों तथा यूरोप में भी पढ़ा जाता है। ऐसा अनुमान है कि पंचतंत्र के 50 से अधिक भाषाओं में 200 से अधिक रूपातंरण उपलब्ध हैं। इस क्रम में इसने कथाओं के नए संग्रह को प्रेरित किया है। यह प्रदर्शित करता है कि 'एक' कहानियों का संग्रह किस प्रकार 'अनेक' में परिवर्तित हो गया। यद्यपि भारत के सबसे प्रभावशाली दो **महाकाव्य** रामायण एवं महाभारत हैं।

महाकाव्य
सामान्यत: एक लंबी कविता जो अतीत के महान नायकों एवं योद्धाओं की कथाओं का व्याख्यान करती है।

अपने मूल संस्करण में लगभग 7,000 पृष्ठों में समाहित ये दोनों संस्कृत के महाकाव्य हैं, जिसमें नायक धर्म की पुनर्स्थापना के लिए युद्ध करते हैं। महाभारत में पांडव, श्री कृष्ण की सहायता से अपने चचेरे भाइयों 'कौरवों' से अपने राज्य की प्राप्ति के लिए युद्ध करते हैं। रामायण में भी श्री राम अपने भाई लक्ष्मण एवं हनुमान की सहायता से उस राक्षस रावण को पराजित करते हैं, जिसने उनकी पत्नी सीता का अपहरण किया था। इन कथाओं में कई और छोटी कथाएँ/उपकथाएँ भी हैं, जो नैतिक मूल्यों पर केंद्रित हैं और लगातार प्रश्न पूछती हैं कि क्या सत्य और क्या असत्य है।

चित्र 8.6 – रामायण के प्रमुख प्रसंगों को प्रदर्शित करता हुआ चित्र

आइए पता लगाएँ

पृष्ठ 134 पर चित्र 8.6 में दर्शाए गए प्रसंग की पहचान कीजिए एवं उससे संबंधित घटनाओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

दो सहस्त्राब्दियों से अधिक समय से इन दो महाकाव्यों का भारत एवं भारत से बाहर अनुवाद व रूपांतरण किया जाता रहा है। इसके साथ ही इनके अनगिनत लोक संस्करण भी हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक विद्वान ने केवल तमिलनाडु में किए गए अपने सर्वेक्षण में लोक कथाओं के रूप में महाभारत के 100 से अधिक स्वरूपों को पाया। अब आप अनुमान लगाइए कि पूरे भारत में इन लोक कथाओं की कितनी संख्या होगी!

वास्तव में बहुत से समुदायों में रामायण एवं महाभारत के अपने संस्करण भी हैं। उन्होंने इन महाकाव्यों के साथ अपने इतिहास को जोड़ने वाली किंवदंतियों को भी संरक्षित रखा है। भील, गोंड, मुंडा जैसे भारत के कई अन्य जनजाति समुदायों के संदर्भ में ये विशेष रूप

से सत्य है। भारत के पूर्वोत्तर तथा हिमालय क्षेत्र (जिसमें कश्मीर भी सम्मिलित है) की अधिकांश जनजातियों के पास इन दोनों अथवा किसी एक की अपनी लोककथा भी उपलब्ध है। ये जनजातीय रूपांतरण मौखिक रूप से प्रसारित हुए। इनके साथ ही ये किंवदंतियाँ भी प्रसारित हुईं कि किस प्रकार रामायण अथवा महाभारत से जुड़े हुए पात्र (सभी या कोई एक सामान्यत: पांडव, उनकी पत्नी द्रौपदी, कभी-कभी उनके शत्रु दुर्योधन एवं चचेरे भाई) उनकी जनजातियों से संबंधित क्षेत्रों में आए।

चित्र 8.7 – पंच पांडव, तमिलनाडु के नीलगिरि के जंगलों में पाँच पांडवों को दर्शाता नक्काशीदार पत्थर। इरूला जनजाति द्वारा मंदिर में इस पत्थर को सुरक्षित रखा गया है, जो इस बात का स्मरण कराता है कि पांडव इस क्षेत्र से गुजरे थे।

मानवविज्ञानी के.एस.सिंह द्वारा निर्देशित 'भारत के लोग' परियोजना, जिसका हमने पृष्ठ 130 पर उल्लेख किया था, में वे महाभारत के विषय में विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, "लोककथाओं के अनुसार इस देश में शायद ही ऐसा कोई स्थान हो जहाँ महानायक पांडव न गए हों।" और यही बात रामायण के संदर्भ में भी कही जा सकती है। सदियों से, किसी अन्य साहित्य की अपेक्षा इन दो महाकाव्यों ने भारत एवं एशिया के विभिन्न भागों के मध्य एक सांस्कृतिक सूत्र के गहन तंत्र को विकसित किया। यह विविधता में एकता का एक अन्य उदाहरण है।

इस अध्याय की विषयवस्तु को और अधिक समझने के लिए हम अपनी यात्रा को जारी रख सकते हैं और भारतीय संस्कृति के और अधिक पहलुओं की ओर ध्यान दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय शास्त्रीय कलाओं (जिसमें शास्त्रीय वास्तुकला सम्मिलित है) में विविधता एवं एकता को सरलता से देखा जा सकता है (आप इन क्षेत्रों का अध्ययन कला पाठ्यचर्या के दौरान करेंगे)।

अंत में हमें यह याद रखना चाहिए कि भारतीय संस्कृति विविधता को संपन्नता के रूप में प्रचारित करती है, किंतु साथ ही विविधता को पोषित करने वाली अंतर्निहित एकता को भी दृष्टि से ओझल नहीं होने देती है।

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत में विभिन्न परिदृश्यों, व्यक्तियों, भाषाओं, परिधानों, भोजन, त्योहारों एवं परंपराओं की विविधता है।
- विभिन्न क्षेत्रों में विविधता दृष्टिगोचर होती है, परंतु इसमें अंतर्निहित एकता भी है।
- भारतीय एकता, विविधता का उत्सव मनाती है क्योंकि विविधता विभाजित नहीं, अपितु समृद्ध करती है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. पाठ के आरंभ में दिए गए दो उद्धरणों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. राष्ट्रगान को पढ़िए। इसमें आप विविधता एवं एकता को कहाँ-कहाँ देखते हैं? इस पर दो अथवा तीन अनुच्छेद लिखिए।
3. पंचतंत्र की कुछ कहानियाँ चुनिए और चर्चा कीजिए कि उनके संदेश किस प्रकार आज भी प्रासंगिक हैं। क्या आप अपने क्षेत्र से संबंधित कोई अन्य कहानियाँ भी जानते हैं?
4. अपने क्षेत्र से कुछ लोककथाएँ एकत्रित कीजिए एवं उनके संदेशों पर चर्चा कीजिए।
5. क्या आपने किसी प्राचीन कहानी को कला के माध्यम से दर्शाते या चित्रित होते हुए देखा है? यह एक मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य प्रस्तुति या कोई चलचित्र भी हो सकता है। अपने सहपाठियों के साथ कक्षा में चर्चा कीजिए।
6. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा स्वतंत्रता से पहले भारत के कई भागों की यात्रा के उपरांत कही गई निम्न पंक्तियों पर कक्षा में चर्चा कीजिए—

> हर जगह मुझे एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मिली, जिसने उनके जीवन पर प्रभावशाली असर डाला। ...भारत के महाकाव्य, रामायण एवं महाभारत और अन्य प्राचीन पुस्तकें, लोकप्रिय अनुवादों और व्याख्याओं में जनता के बीच व्यापक रूप से जानी जाती थीं। उनमें उपस्थित प्रत्येक लोकप्रिय घटना, कहानी और नैतिकता की बातें जनमानस के अंतर्मन पर अंकित थीं जो कि उसे सार्थक एवं समृद्ध बनाती थीं। निरक्षर ग्रामीणों को भी सैकड़ों श्लोक कंठस्थ थे एवं उनकी आपसी बातचीत में इन महाकाव्यों अथवा कुछ पुरानी कालजयी कहानियों के संदर्भों की प्रचुरता होती थी जो नैतिकता को प्रतिस्थापित करती थीं।

अध्याय 9

परिवार और समुदाय

प्रेम और धर्म पारिवारिक जीवन के पुष्प और फल हैं।

— तिरुवल्लुवर

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *परिवार की इकाई क्यों महत्वपूर्ण हैं?*
2. *समुदाय क्या है और इसकी क्या भूमिका है?*

0683CH09

परिवार

हम सभी अधिकांशत: एक परिवार में रहते हैं। परिवार किसी भी समाज की मूलभूत और सबसे प्राचीन इकाई है। आज भारतीय समाज में कई प्रकार के परिवार हैं — संयुक्त परिवार से लेकर एकल परिवार तक। संयुक्त परिवार में अनेक पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं — दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-बहन तथा चचेरे भाई और बहन।

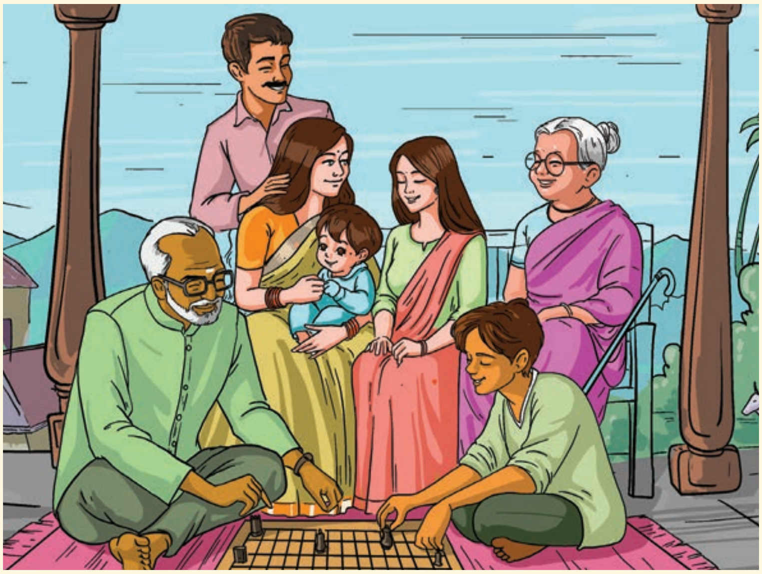

संयुक्त परिवारों के उदाहरण

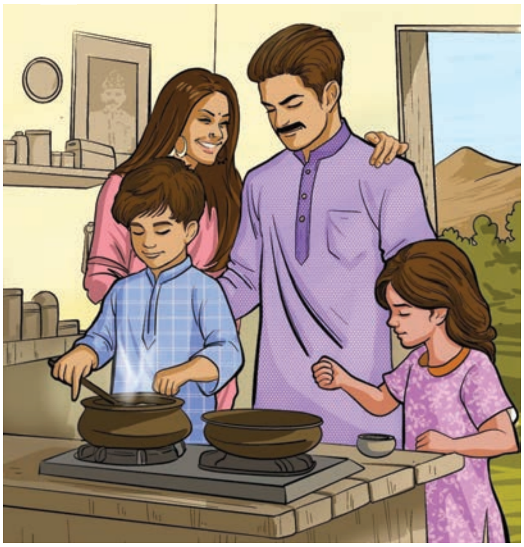

एकल परिवारों के उदाहरण

दूसरी ओर, एकल परिवार में एक दंपत्ति और उनकी संतान होती है तथा कई बार यह अकेली माता या पिता और उनके बच्चों तक सीमित होता है।

आइए पता लगाएँ

→ आपको अपने आस-पास किस प्रकार के परिवार दिखाई देते हैं? प्रत्येक प्रकार के परिवारों की उनकी संख्या के साथ सूची बनाइए।

→ किस प्रकार के परिवारों की संख्या अधिक है? आपके विचार से ऐसा क्यों है?

→ कक्षा की गतिविधि के रूप में आपको प्राप्त हुई जानकारी की अपने सहपाठियों की जानकारियों के साथ तुलना कर चर्चा कीजिए।

अंग्रेजी भाषा में पारिवारिक संबंधों का वर्णन करने के लिए बहुत अधिक शब्द नहीं हैं। इनमें से कुछ शब्द हमने प्रथम अनुच्छेद में देखे। भारतीय भाषाओं में इनके अनेक नाम हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी में बुआ, ताऊ, ताई, चाचा, मौसी, नाना, नानी और अन्य बहुत सारे संबोधन होते हैं। कुछ भाषाओं जैसे तमिल में बड़े भाई-बहन अथवा छोटे भाई-बहन के लिए भी अलग-अलग शब्द हैं। क्या आप बता सकते हैं कि भारतीय भाषा में 'कजिन' के लिए कौन-सा शब्द है? अधिकांश भारतीय भाषाओं में आपको ऐसा कोई एक शब्द नहीं मिलेगा! ऐसा इसलिए क्योंकि कजिन का अर्थ केवल 'भाई' और 'बहन' होता है। इससे परिवार में सभी बच्चों के बीच गहरे संबंध का पता चलता है।

आइए पता लगाएँ

→ अपने परिवार के सभी सदस्यों की सूची बनाइए जिनके बारे में आप सोच पाते हैं। इनमें कुछ दूर के संबंधी भी हो सकते हैं। अपनी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में इनके लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द लिखिए और अंग्रेजी में इनके समकक्ष शब्द खोजने का प्रयास कीजिए। नीचे ऐसे दो उदाहरण दिए गए हैं—

नाम	हिंदी में शब्द	अंग्रेजी में विवरण/शब्द
रानी	बहन	माँ के भाई की बेटी (कजिन) (अन्य संभावित अर्थों में से एक)
समीर	चाचा	पिता के छोटे भाई (अंकल)

→ आप देखेंगे कि किस प्रकार अधिकांशत: आपकी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में एक शब्द को अंग्रेजी भाषा में स्पष्टतापूर्वक समझने के लिए कई शब्दों की आवश्यकता होती है।

भूमिकाएँ एवं दायित्व

परिवार के सदस्यों के बीच संबंध आपसी प्रेम, देखभाल, सहयोग और अंतर्निर्भरता पर आधारित होते हैं। 'सहयोग' का अर्थ है— 'एक साथ काम करना'। परिवार के प्रत्येक सदस्य की अन्य सदस्यों के प्रति एक भूमिका और दायित्व होता है। उदाहरण के लिए, माता-पिता अपने बच्चों को खुशहाल व्यक्ति और समाज के जिम्मेदार सदस्य बनाने के लिए उत्तरदायी होते हैं। किंतु जब बच्चे बड़े होते हैं तो वह परिवार के अन्य सदस्यों, चाहे माता-पिता हों या भाई-बहन आदि, की सहायता के लिए और अधिक दायित्वों का निर्वहन करते हैं। दैनिक अभ्यास से बच्चे पारिवारिक जीवन में भागीदारी करना सीखते हैं। अनेक घरों में बच्चे, परिवार द्वारा कई पीढ़ियों से अपनाई गई परंपराओं तथा प्रथाओं को भी सीखते हैं।

आइए पता लगाएँ

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने सहपाठियों के उत्तरों के साथ इनकी तुलना कीजिए—

→ आपके परिवार में इसका निर्णय कौन लेता है कि बाजार से क्या लाना है?

→ आपके घर में भोजन कौन पकाता है?

→ आपके परिवार में सबसे अधिक आयु किसकी है?

→ आपके घर में फर्श की सफाई कौन करता है?

→ आपके घर में बर्तन कौन साफ करता है?

→ आपके गृहकार्य में आपकी सहायता कौन करता है?

अपने धर्म या कर्तव्यों का पालन करना भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत रहा है। परिवार एक 'विद्यालय' भी है, जहाँ बच्चे अहिंसा, दान, सेवा और त्याग जैसे महत्वपूर्ण मूल्य सीखते हैं। परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसके सदस्य प्राय: अपनी जरूरतों को त्याग देते हैं।

आइए, ऐसी ही एक कहानी पढ़ें।

शालिनी केरल के एक नगर में अपने परिवार के साथ रहती है। उसके पिता एक छोटा-सा व्यापार करते हैं और उसकी माँ, पास में स्थित एक विद्यालय में अध्यापिका हैं। शालिनी

का एक छोटा भाई है। उसकी दादी, अच्चम्मा (पिता की माँ), चित्तप्पा (पिता के भाई या चाचा) और चित्ती (चाची या चाचा की पत्नी) साथ में रहते हैं। चिन्नी उनकी एक बेटी है, जो शालिनी की चचेरी बहन है। शालिनी के चाचा की नौकरी कुछ दिन पहले छूट गई है और उसकी चाची एक गृहिणी हैं। पूरा परिवार ओणम के त्योहार की तैयारी में जुटा हुआ था। अच्चम्मा ने शालिनी के पिता से कहा कि तुम्हारा भाई आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहा है, इसलिए वह त्योहार पर नए कपड़े नहीं खरीद पाएगा। जब शालिनी के माता-पिता उसे और उसके भाई को खरीददारी के लिए लेकर गए तो वे न केवल अपने लिए, बल्कि चित्तप्पा, चित्ती और चिन्नी के लिए भी कपड़े लाए। इसका परिणाम यह हुआ कि शालिनी को अपनी उम्मीद के अनुसार रेशमी कपड़े नहीं, बल्कि सादे सूती कपड़े मिले। अच्चम्मा ने शालिनी को समझाया कि परिवार में सभी एक-दूसरे की सहायता करते हैं और उनके पास जो कुछ भी है, उसे आपस में साझा करते हैं। यह जानकर शालिनी को अब अपने मनपसंद कपड़े न मिलने के लिए बुरा नही लगा। उसे इस बात की खुशी थी कि सभी सदस्यों को नए कपड़े मिले।

आइए पता लगाएँ

- → सात सदस्यों के इस परिवार की वंशावली का एक सरल चित्र बनाइए।
- → आपके विचार से शालिनी के माता-पिता सभी के लिए कपड़े क्यों लाए?
- → यदि आप शालिनी की जगह होते, तो क्या करते?

यह कहानी तो केरल की है। आइए, अब सुदूर पूर्वोत्तर में मेघालय के एक गाँव की ओर चलें।

मेरा नाम तेनजिंग है। मुझे उन पहाड़ों से प्यार है जहाँ मैं रहता हूँ, यद्यपि कभी-कभी वहाँ जीवन कठिन हो जाता है। मेरे पिता एक छोटी-सी किराने की दुकान चलाते हैं। मेरी माँ एक स्थानीय हस्तशिल्प सहकारी संगठन (जहाँ पर्यटकों के लिए बिक्री हेतु सुंदर पारंपरिक कपड़े, लकड़ी की नक्काशी और अन्य सामान तैयार किए जाते हैं) में

कार्यरत हैं, जिसके कारण मेरे पिताजी ने घर की सफाई, सब्जियों के बगीचे की देखभाल और घर के अन्य कामों में हाथ बँटाना शुरू किया। कभी-कभी वह हम सबके लिए भोजन पकाने में भी मेरी दादी की सहायता करते हैं।

दादी के पास हमेशा मुझे सुनाने के लिए रोचक कहानियाँ होती हैं, जिनमें हँसी-मजाक और समझदारी की बातें होती है। लोगों को उनसे बेहतर तरीके से समझने वाला शायद कोई और नहीं हो सकता। मेरे दादा पढ़ाई में मेरी सहायता करते हैं और मुझे स्कूल बस स्टॉप पर ले जाते हैं। वे हमारी कॉलोनी के सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रूप से सम्मिलित होते हैं और अन्य लोगों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिए, एक बार जब हमारे क्षेत्र में बिजली चली गई थी, तब वह पास में स्थित कार्यालय में गए और वहाँ शिकायत दर्ज कराई। तूफान आने पर हमारे पास के घर को नुकसान हुआ तो उन्होंने आस-पास के सब परिवारों से धनराशि एकत्रित की और मरम्मत कराने के लिए उन्हें दी।

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे माता-पिता भोजन और कपड़े जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का प्रबंध करते हैं। जब किसी विशेष खर्च की बात आती है, तो मैंने अधिकांशत: देखा है कि वे आपस में चर्चा करते हैं। माँ कहती हैं कि हमें भविष्य में अचानक आने वाले खर्चों के लिए कुछ पैसों की बचत अवश्य करनी चाहिए।

आइए विचार करें

- तेनजिंग के पिता विशेष खर्चों के बारे में अपनी पत्नी से सलाह क्यों लेते हैं?
- घरेलू कार्यों में तेनजिंग के पिता की भागीदारी के बारे में आपका क्या विचार है?
- तेनजिंग के दादी-दादा कौन-सी भूमिकाएँ निभाते हैं?

आइए पता लगाएँ

- → भारत के किसी क्षेत्र के ऐसे परिवार की कहानी की रचना कीजिए, जहाँ पारिवारिक मूल्यों का पालन किया जा रहा हो। इसे लिखकर अथवा चित्र बनाकर कक्षा में साझा कीजिए।
- → अपनी कक्षा के सहपाठियों को साथ लेकर दो या तीन परिवारों के आस-पास एक लघु नाटिका का मंचन कीजिए। आपके द्वारा लिखे गए नाटक में ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को अवश्य सम्मिलित कीजिए, जिनका सामना परिवार करते हैं एवं उन्हें हल करते हैं।
- → शालिनी और तेनजिंग की कहानियों में हम संयुक्त परिवारों को देखते हैं। आपके विचार से आधुनिक जीवन-शैली के वह कौन-से आयाम हैं जिनके कारण कुछ दंपत्ति एकल परिवार को अपनाते हैं (अर्थात, बुजुर्ग पीढ़ी या अन्य परिजनों से अलग जीवन जीना)। दोनों प्रकार के परिवारों के कुछ लाभ और कुछ हानियाँ क्या हैं?

समुदाय

परिवार न केवल अपने अंदर बल्कि अन्य परिवारों से और आस-पास के लोगों से भी जुड़े होते हैं। आपस में जुड़े लोगों के इस समूह को 'समुदाय' कहते हैं (विभिन्न संदर्भों में 'समुदाय' के अन्य अर्थ भी होते हैं)। समुदाय के सदस्य विभिन्न कारणों से एक साथ आते हैं, जैसे कि त्योहार मनाने और मेले, विवाह तथा अन्य अवसरों के आयोजन पर। कुछ गाँवों में लोग फसल कटाई और बुआई के लिए भूमि तैयार करने जैसे कृषि कार्यों में एक-दूसरे को सहायता देने के लिए भी एक साथ आते हैं। समय बीतने के साथ समुदाय प्राकृतिक संपदा और पानी, चरागाहों तथा वन-उत्पाद जैसे संसाधनों के साझा उपयोग पर सहमत हुए। यह अनेक जनजातीय समुदायों तथा कुछ ग्राम समुदायों में देखा गया है। आज के ग्रामीण भारत के ग्राम समुदायों में भी कुछ सीमा तक इसे देखा जा सकता है। इस तरह के अभ्यास — जिन्हें अलिखित 'नियम' कह सकते हैं — से समुदायों को संसाधनों तक सुरक्षित पहुँच प्रदान होती है। परंतु इसका यह अर्थ भी है कि समुदाय के अंदर सभी परिवारों तथा व्यक्तियों के विशिष्ट कर्तव्य हैं, अन्यथा समुदाय सुचारु रूप से कार्य नहीं कर पाएँगे।

ध्यान रखें

- विगत वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश के झाबुआ कस्बे के आस-पास के क्षेत्र विकट जल संकट का सामना कर रहे हैं। संकट के समय किसी व्यक्ति या परिवार को समर्थन देने के लिए साथ मिलकर काम करने की प्रथा 'हलमा' का पालन करते हुए (पृष्ठ 149 देखें) भील समुदाय ने सैकड़ों गाँवों में हजारों पेड़ लगाने का निर्णय लिया। भीलों ने बारिश के पानी को संरक्षित करने के लिए अनेक तालाब भी खोदे और वर्षा जल संचय की अनेक संरचनाएँ बनाईं। उन्हें इस काम के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं मिला, बल्कि समुदाय और पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य के रूप में उन्होंने यह कार्य किया। इस 'हलमा' परंपरा का उद्देश्य धरती माँ की सेवा करना है। 2019 में शिवगंगा आंदोलन के महेश शर्मा को भील समुदाय के लिए किए गए परिवर्तनकारी कार्यों हेतु पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया।
- चेन्नई में 2015 के दौरान आई बाढ़ के समय सड़कें मानों नदियाँ बन गई और लोग आने-जाने में असमर्थ हो गए। लगभग सभी दुकानें बंद हो गईं और सेवाएँ बाधित हुईं। अनेक निजी समूहों, विशेष रूप से आध्यात्मिक और धार्मिक संगठनों ने बड़ी मात्रा में भोजन तैयार किया तथा अभावग्रस्त लोगों के बीच बाँटा।
- इस प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण हैं, जब लोग बिना किसी लाभ की उम्मीद के समुदाय के हित के लिए एक साथ मिलकर आगे आए। क्या आपने ऐसी किसी घटना के विषय में सुना है?

वास्तविक जीवन की उपरोक्त कहानियों में से एक ग्रामीण संदर्भ का दृष्टांत दिया गया है। शहरी क्षेत्रों में भी समुदाय होते हैं, यद्यपि यह कुछ अलग तरीके से कार्य करते हैं। आइए, वास्तविक जीवन की एक और कहानी का उदाहरण देखें।

बीस साल से अधिक समय पहले अहमदाबाद (गुजरात) के एक क्षेत्र में एक छोटी-सी ऑटो फेब्रिकेशन वर्कशॉप के मालिक, कमल परमार ने देखा कि सड़क पर वंचित बच्चों का एक समूह है। इनमें से कुछ बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी थी, जबकि अन्य तो कभी विद्यालय गए ही नहीं थे। कमल ने अपने नियमित काम के बाद उन्हें हर दिन शाम 5.30 बजे से रात 9.30 बजे तक पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने बच्चों को रात में मुफ्त भोजन भी कराया। जल्दी ही उनकी कक्षा में 150 बच्चे नियमित रूप से आने लगे और पढ़ाई में उनकी बहुत रूचि भी थी।

एक स्थानीय विद्यालय के कुछ अध्यापकों ने इन कक्षाओं के बारे में सुना और उन्होंने भी वहाँ पढ़ाना शुरू किया। उनमें से एक ने बताया, "इन बच्चों के पास बैठने के लिए

halma

समुचित बेंच नहीं हैं, कक्षाओं में पूरी तरह शांति नहीं है और गुजरते हुए वाहन काफी शोर करते हैं। फिर भी वे अध्यापकों की बातों पर अपना पूरा ध्यान लगाते हैं। इसने मेरा मन छू लिया। मुझे उनसे जो स्नेह और लगाव मिला, वह अविश्वसनीय है।" नियमित रूप से विद्यालय जाने वाले कुछ बड़े बच्चों ने भी कमल की कक्षाओं में स्वेच्छा से पढ़ाना शुरू कर दिया। इनमें से एक ने बताया, "हम वहाँ पढ़ाने गए थे, किंतु हमने उनसे बहुत कुछ सीखा।"

- अपनी कक्षा में इस कहानी पर चर्चा कीजिए। यह कहानी समुदाय के प्रति किस तरह की मनोवृत्ति को दर्शाती है?
- कमल परमार के प्रयास में कौन-कौन से मूल्य प्रदर्शित होते है?
- उन वंचित बच्चों के बारे में सोचिए। क्या आप ऐसा मानते हैं कि समाज ने उनके प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है?
- समाज को सभी बच्चों की शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए क्या करना चाहिए?

पिछले 30 या 40 वर्षों में नए प्रकार के समुदाय उभरे हैं। अनेक नगरीय क्षेत्रों में आवासीय कल्याण समितियाँ ऐसे समुदायों के उदाहरण हैं जो अपने नियम और व्यवस्था बनाते हैं। यह नियम अपशिष्ट प्रबंधन, सामान्य क्षेत्रों की सफाई, पालतू पशुओं की देखभाल और अन्य चीजों को लेकर हो सकते हैं। इन समुदायों में रहने वाले लोग इन नियमों और कानूनों के निर्माण में भागीदार होते हैं।

अंततः समुदाय आपस में एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। उदाहरण के लिए, आवासीय कल्याण समितियाँ किराने की आपूर्ति के लिए व्यापारी समुदाय और कूड़े के निपटान के लिए नगर निगम के कामगारों पर निर्भर होते है। हमारे जटिल समाजों में प्रत्येक व्यक्ति कई अन्य व्यक्तियों और समुदायों पर निर्भर होता है।

आइए पता लगाएँ

अपने परिवार के बाहर उन सभी लोगों की सूची बनाइए, जो अपने कार्यों के माध्यम से किसी न किसी रूप में आपको सहायता प्रदान करते हैं।

अब हम समझ सकते हैं कि 'समुदाय' एक लचीली संकल्पना है। इसके कुछ अन्य उदाहरण हैं—

- एक जाति या इसके उपविभाजन को भी बहुधा एक समुदाय कहा जाता है।
- एक विशेष धर्म, क्षेत्र, सामान्य कार्य या रुचि के लोगों का समूह, विशेष रूप से एक छोटा समूह, भी समुदाय कहलाता है। उदाहरण के लिए, 'मुंबई का पारसी समुदाय', 'चेन्नई का सिख समुदाय', 'अमेरिका का भारतीय समुदाय', 'केरल का वैज्ञानिक समुदाय', 'गाँव का किसान समुदाय' इत्यादि। यह सूची अंतहीन है।
- अपने विद्यालय में आप विभिन्न समुदायों का हिस्सा हो सकते हैं— निस्संदेह आप कक्षा के साथ-साथ खेल समुदाय, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, विज्ञान या नाट्य समूह आदि का भी हिस्सा हो सकते हैं।

आइए पता लगाएँ

→ आप किन प्रकार के समुदायों का हिस्सा हैं?

→ क्या आपके विद्यालय में कोई क्लब है, जिसमें आप सम्मिलित हैं? यह कैसे काम करता है?

आगे बढ़ने से पहले...

- परिवार मानव समाज का आधार है। आदर्श रूप में परिवार के सदस्य अपने अनेक कर्तव्यों और कार्यों में एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करते हैं।
- समुदाय अपेक्षाकृत बड़ी इकाई है। इसका अर्थ यह भी है कि लोग एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करते हैं। 'समुदाय' को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है और समुदाय अनेक प्रकार के होते हैं।
- अंतत: समुदाय एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. आप अपने परिवार और पास-पड़ोस में किन नियमों का पालन करते हैं? ये क्यों महत्वपूर्ण हैं?
2. क्या आपको लगता है कि परिवार या समुदाय में कुछ लोगों के प्रति कुछ नियम अनुचित होते हैं? क्यों?
3. कुछ ऐसी परिस्थितियों का वर्णन कीजिए जहाँ आपने देखा है कि समुदाय के सहयोग से लाभ होता है। आप इसके बारे में लिखिए अथवा चित्र बनाइए।

अध्याय 10

आधारभूत लोकतंत्र — भाग 1: शासन

"राजानाम् धर्मगोप्तारम् धर्मो रक्षति रक्षित:"

शासक धर्म की रक्षा करता है और जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म उनकी रक्षा करता है।

— महाभारत

न्याय के बिना शांति नहीं;
समानता के बिना न्याय नहीं;
विकास के बिना समानता नहीं;
संस्कृति और लोगों की पहचान और सम्मान
के बिना लोकतंत्र नहीं।

— रिगोबर्टा मेन्चु तुम

महत्वपूर्ण प्रश्न?

1. *'शासन' का अर्थ क्या है?*
2. *हमें सरकार की आवश्यकता क्यों होती है?*
3. *'लोकतंत्र' का अर्थ क्या है? यह क्यों महत्वपूर्ण है?*

0683CH10

परिचय

दीर्घकाल से मनुष्य समाज में रहता आ रहा है। जब बहुत से लोग एक साथ रहते हैं, तब असहमति और अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। ऐसे में, समाज में व्यवस्था और सद्भाव बनाए रखने के लिए नियम अनिवार्य हो जाते हैं।

संभवत: आपके घर में भी कुछ सामान्य नियम होते होंगे, जिनके पालन की अपेक्षा आप से होती है। आप जिस स्कूल में पढ़ते हैं, वहाँ भी नियम होते होंगे— कुछ विद्यार्थियों के लिए, तो कुछ शिक्षकों के लिए। बड़ी कक्षाओं में परीक्षा दे रहे विद्यार्थियों को भी कुछ अनिवार्य नियमों का पालन अवश्य करना पड़ता है। सड़क पर वाहन-चालकों से भी यातायात के नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। सभी प्रकार की नौकरियों में कार्यरत लोगों को भी नियोक्ता द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना पड़ता है, जबकि नियोक्ता को भी उन सभी नियमों का पालन करना पड़ता है जो उन्होंने अपने अधीन काम करने वाले लोगों के लिए बनाए हैं।

यदि कोई व्यक्ति नियम का पालन नहीं करता है, तो क्या होगा? इसका सीधा-सा उत्तर है कि समाज अपनी व्यवस्था बनाए रखने में सक्षम नहीं हो पाएगा।

आइए पता लगाएँ

→ पृष्ठ 151 पर चित्र 10.1 में दिए गए दो चित्रों के बारे में बताइए। आप उनमें क्या अंतर पाते हैं?

→ नियमों पर हमारी चर्चा से आप इसे कैसे जोड़कर देखते हैं?

→ आपके विद्यालय में कौन-कौन से नियम है? उन्हें किसने बनाया?

नियमों को किसने बनाया और क्यों बनाया? उन्हें किस प्रकार से बनाया गया? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके बारे में हम इस अध्याय में पढ़ेंगे। निर्णयों को लेने की प्रक्रिया, नियमों के विभिन्न समूहों से सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करना और उनका पालन सुनिश्चित करना ही **शासन** कहलाता है। **सरकार** उन व्यक्तियों के समूह या तंत्र को कहते हैं जो नियम बनाते और इन नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हैं। अधिक महत्वपूर्ण नियमों को **कानून** कहा जाता है।

इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि जो नियम और कानून एक बार बन गए, वे सदा के लिए बन गए। जिस प्रकार घर पर आप अपने माता-पिता के साथ किसी विशेष नियम के बारे में चर्चा कर सकते हैं अथवा विद्यार्थी संघ, स्कूल या विश्वविद्यालय प्रबंधन से नियमों में बदलाव के लिए कह सकते हैं, उसी प्रकार समाज को संचालित करने वाले

कानूनों और नियमों में नागरिक भी अपनी बात रख सकते हैं। हम जानेंगे कि ऐसा किस प्रकार होता है।

चित्र 10.1

चित्र 10.2

आइए पता लगाएँ

- → क्या आप पृष्ठ 152 पर चित्र 10.2 में दिए गए दस चित्रों में दर्शाए लोक सेवाओं के प्रकार अथवा अन्य कार्यकलापों की पहचान कर सकते हैं?
- → आपके विचार से इन कार्यकलापों में सरकार की क्या भूमिका होती है?
- → क्या आप अपने दैनिक जीवन के ऐसे अन्य पहलुओं पर भी विचार कर सकते हैं जहाँ सरकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है?

सरकार के तीन अंग

विश्व भर में समाज जिस प्रकार से कार्य करता है, उसे डिजिटल तकनीक परिवर्तित कर रही है। भारत में 30 वर्ष पहले तक जिन लोगों को अपने से दूर बैठे संबंधियों को पैसे भेजने होते थे, वे डाकघर की पंक्ति में लगकर फॉर्म भरकर मनी आर्डर भिजवाते थे; अथवा यदि उन्हें किसी व्यवसाय के लिए भुगतान करना होता, तो वे पहले बैंक की पंक्ति में लगकर डिमांड ड्राफ्ट बनवाते और फिर उसे डाक द्वारा भिजवाते थे। आपने शायद इन शब्दों ('मनी ऑर्डर' या 'डिमांड ड्राफ्ट') को कभी न भी सुना हो क्योंकि आज हमारे पास तुरंत पैसे भेजने के लिए डिजिटल संसाधन भी उपलब्ध हैं।

डिजिटल तकनीक ने विशेष प्रकार के अपराधियों को भी जन्म दिया है जो अपने स्थान पर बैठे-बैठे डिजिटल माध्यमों से लोगों की धनराशि चुराने के तरीके ढूँढ़ते हैं। ऐसी आपराधिक गतिविधियों (जिसे साइबर क्राइम कहते हैं) को रोकने के लिए अनेक सरकारों ने नए कानून बनाए हैं। ऐसे कुछ साइबर अपराधियों — जिन्होंने अपनी तकनीकी दक्षता का उपयोग समाज की भलाई के बजाय भोली-भाली जनता के श्रम से कमाए हुए धन को लूटने के लिए किया — को गिरफ्तार भी किया गया है एवं न्यायालय द्वारा उन्हें दोषी ठहराया गया है। सामान्यत: उन्हें आर्थिक दंड के साथ-साथ जेल की सजा भी दी जाती है।

इस उदाहरण से हम देख सकते हैं कि किस प्रकार सरकार के तीनों अंग अथवा शाखाएँ एक साथ कार्य करते हैं —

- **विधायिका** वह अंग है जो नए कानून बनाती है और कभी-कभी पुराने कानूनों में संशोधन तथा वर्तमान कानून को निरस्त भी करती है। यह कार्य जनता के प्रतिनिधियों की सभा द्वारा किया जाता है। भारतीय शासन प्रणाली का हम आगे अवलोकन करेंगे।
- **कार्यपालिका** वह अंग है जो कानूनों को लागू करती है। इसके अंतर्गत राष्ट्र-राज्य के प्रमुख (राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री), मंत्रीगण और ऐसे

अभिकरण (एजेंसी) आते हैं जिनका दायित्व कानून को लागू करवाना होता है। (यहाँ दिए गए उदाहरण में साइबर पुलिस ऐसी ही एजेंसी है।)

- **न्यायपालिका** न्यायालयों की प्रणाली है जो इस बात का निर्णय करती है कि क्या किसी ने कानून तोड़ा है और यदि तोड़ा है, तो उस पर क्या कार्रवाई की जाए? या फिर, यदि आवश्यक हो, तो उसे क्या दंड दिया जाए? कभी-कभी यह इस बात की भी जाँच करती है कि क्या कार्यपालिका द्वारा लिया गया कोई निर्णय ठीक है या नहीं; अथवा विधायिका द्वारा पारित किया गया कोई कानून भली-भाँति परखा गया है और सभी के हित में है या नहीं।

आइए पता लगाएँ

ऊपर दिए गए साइबर अपराधियों के मामले में सरकार के तीनों अंग किस प्रकार कार्य करते हैं, वर्णन कीजिए। वे हस्तक्षेप कैसे करते हैं?

शासन के किसी भी अच्छे तंत्र में इन तीनों अंगों को निश्चित रूप से पृथक रखा जाता है, जबकि ये तीनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और कार्य भी एक साथ करते हैं। यह विभाजन **'शक्तियों का पृथक्करण'** कहलाता है (चित्र 10.3)। इसका उद्देश्य पूरी प्रणाली को नियंत्रित करना एवं संतुलन बनाए रखना है, अर्थात सरकार का प्रत्येक अंग दूसरे अंग के कार्यों की निगरानी कर सकता है तथा यदि कोई अंग अपनी अपेक्षित भूमिका से परे जाकर कार्य कर रहा है, तो उसे नियंत्रित कर पुन: संतुलन स्थापित कर सकता है।

चित्र 10.3

आइए पता लगाएँ

कक्षा की एक गतिविधि के रूप में क्या आप किसी ऐसी स्थिति की कल्पना कर सकते हैं जहाँ शासन के तीनों अंगों की शक्तियाँ किसी एक ही समूह के नियंत्रण में आ जाएँ, ऐसे में किस प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न होगी? क्या आप वास्तविक जीवन में सुनी हुई किसी ऐसी परिस्थिति का वर्णन कर सकते हैं?

सरकार के तीन स्तर

कोई भी सरकार कम से कम दो स्तरों पर कार्य करती है— स्थानीय स्तर और राष्ट्रीय स्तर। भारत सहित अनेक देशों में यह तीन स्तरों पर कार्य करती है— स्थानीय स्तर, राज्य या प्रादेशिक स्तर और राष्ट्रीय स्तर। प्रत्येक स्तर भिन्न विषयों पर कार्य करता है। इसे तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से देखें, तो यदि आपके घर का बल्ब नहीं जल रहा है, ऐसे में आप पहले बल्ब, स्विच, फ्यूज आदि जाँचेंगे। यदि वे काम नहीं कर रहे, तो आप बिजली मिस्त्री को बुलाएँगे और यदि यह पता चले कि समस्या घर पर नहीं है, तो आप बिजली विभाग जाकर शिकायत दर्ज कराएँगे। यहाँ भी समस्या के समाधान के तीन स्तर हैं।

भारत में स्थानीय सरकारें, राज्य सरकारें और केंद्र सरकार या संघ सरकार (चित्र 10.4) है। मान लीजिए कुछ दिनों तक भारी वर्षा के कारण एक जिले के किसी क्षेत्र में बाढ़

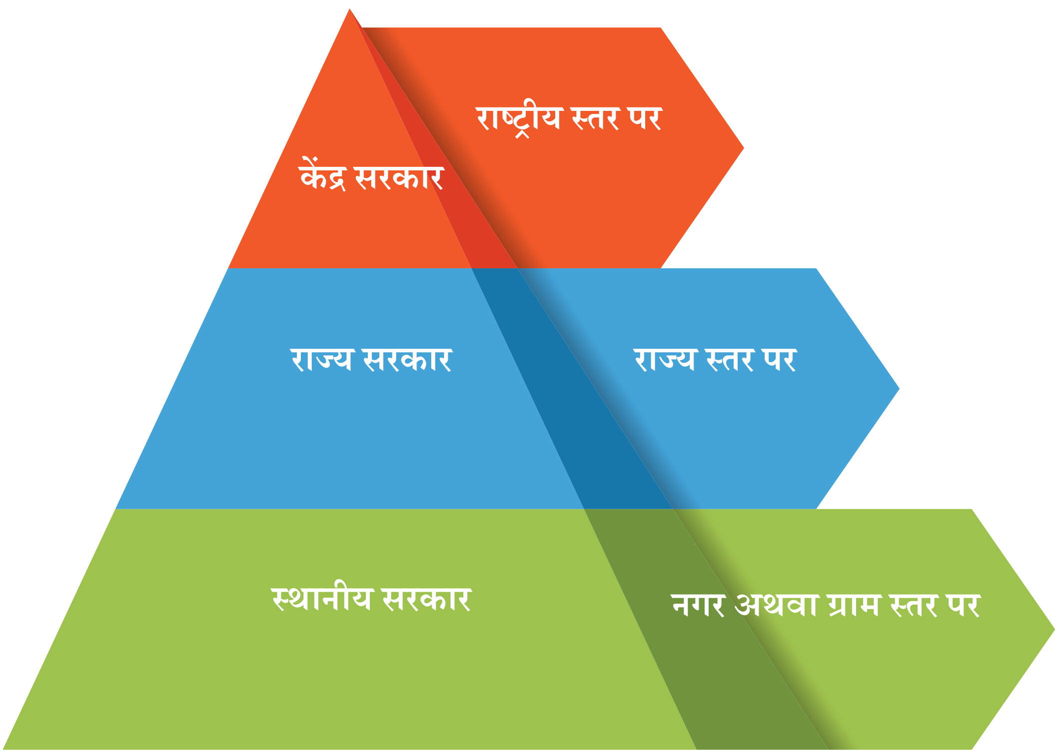

चित्र 10.4

आ गई। यदि वह ज्यादा भीषण नहीं है, तो स्थानीय प्राधिकारी उस स्थिति को संभाल सकते हैं। यदि बाढ़ अनेक नगरों और बहुत से गाँवों को प्रभावित करती है, तो राज्य सरकार आगे आती है और इसकी जिम्मेदारी उठाते हुए प्रभावित लोगों को बचाने के लिए बचाव दल भेजती है। किंतु यदि बाढ़ भयानक रूप ले लेती है और विशाल क्षेत्र को प्रभावित करती है, तो केंद्र सरकार मदद के लिए आगे आती है और राहत सामग्री और सेना इत्यादि भेजती है। इस उदाहरण में आप सरकार के तीनों स्तर के काम देख सकते हैं।

ध्यान रखें

हमारे अनेक संस्थानों के आदर्श वाक्य हमारे प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान से प्रेरित हैं। उदाहरण के लिए, भारत सरकार का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' है, अर्थात "सत्य की ही विजय होती है"। सर्वोच्च न्यायालय का आदर्श वाक्य 'यतो धर्मोस्ततो जय:' है, जिसका अर्थ है "जहाँ धर्म है, वहाँ विजय है"।

सामने के पृष्ठ पर दी गई तालिका में सरकार के तीनों अंगों के राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर किए जाने वाले मुख्य कार्यों की रूपरेखा दी गई है। इनके बारे में विस्तार से (विधान सभाओं की निश्चित भूमिका) कक्षा 7 में पढ़ाया जाएगा। (स्थानीय सरकारों का यहाँ उल्लेख नहीं किया गया है क्योंकि हम आगे के दो अध्यायों में इसे विस्तार से समझेंगे।)

आइए पता लगाएँ

→ चित्र 10.5 में दी गई सारणी को देखिए। उन कार्यों और दायित्वों पर प्रकाश डालिए जो आपके जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं।

→ दो अथवा तीन वयस्क लोगों से सरकार के साथ उनके कार्य संबंधित संपर्कों अथवा अनुभवों के बारे में पूछिए— यह संपर्क किन स्तरों पर और किन उद्देश्यों से हुए?

	अखिल भारत	राज्य स्तर
न्यायपालिका	भारत का सर्वोच्च न्यायालय	उच्च न्यायालय

	राष्ट्रीय स्तर	राज्य स्तर
विधायिका	दो **सदन** — लोकसभा और राज्य सभा जो राष्ट्रीय स्तर पर कानूनों का निर्माण करते हैं।	राज्य का एक विधानमंडल अथवा विधान सभा (ध्यान रहे कि अधिकांशत: राज्यों में विधान सभा होती, जबकि कुछ राज्यों में विधान सभा के साथ-साथ एक विधान परिषद भी होती है।)

	संघ सरकार	राज्य सरकार
कार्यपालिका	भारत के राष्ट्रपति (**औपचारिक** प्रमुख और तीनों सशस्त्र सेनाओं के सर्वोच्च कमांडर) द्वारा संचालित प्रधानमंत्री — कार्यपालिका के प्रमुख	राज्यपाल (औपचारिक प्रधान) द्वारा संचालित मुख्यमंत्री — कार्यपालिका के प्रमुख
कार्यपालिका के कार्य और दायित्व (यह विस्तृत सूची नहीं है)	• रक्षा • विदेशी मामले • परमाणु ऊर्जा • संचार • मुद्रा • अंतर्राज्यीय वाणिज्य • शिक्षा • राष्ट्रीय नीतियों का प्रतिपादन	• पुलिस, कानून व्यवस्था • राज्य स्तर पर केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों को अपनाना और उनका कार्यान्वयन करना। • जन-स्वास्थ्य • शिक्षा • कृषि • सिंचाई • स्थानीय सरकार

चित्र 10.5

सदन

ऐसी सभा जहाँ कानूनों पर चर्चा की जाती है अथवा उन्हें पारित किया जाता है।

औपचारिक

हमारे यहाँ राष्ट्रपति और राज्यपाल वास्तविक कार्यपालिका प्रमुख नहीं होते हैं। विशेष परिस्थितियों में उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, पर वे सामान्यत: केंद्र या राज्य सरकार के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

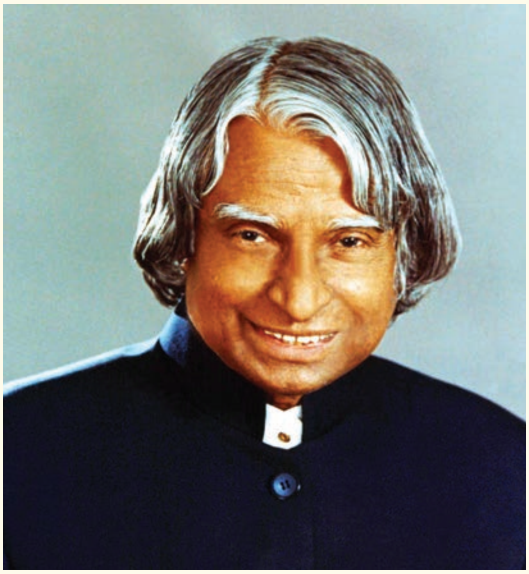

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

तमिलनाडु के रामेश्वरम के एक सामान्य परिवार में 1931 में ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म हुआ। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. कलाम को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम, मिसाइल कार्यक्रम और परमाणु क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका के कारण 'मिसाइल मैन' के नाम से भी जाना जाता है।

डॉ. अब्दुल कलाम 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत रहे। सर्वोच्च प्रतिष्ठित पद पर रहते हुए भी वे अच्छी शिक्षा और नई खोज के प्रति अपनी गहरी रुचि के कारण जनमानस, विशेषकर युवाओं से बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। सामाजिक कार्यों के प्रति लगाव, समर्पण और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता जैसे उनके गुणों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया है। उन्होंने भारत के युवाओं को अपने सपनों को साकार करने के लिए बड़े स्वप्न देखने और कठोर परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

डॉ. कलाम ने यह दिखाया कि भले ही राष्ट्रपति के रूप मे उनकी स्थिति सांकेतिक है, फिर भी वे असंख्य लोगों के जीवन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आइए, उनके कुछ प्रेरणादायक विचारों पर ध्यान दें—

"आकाश की ओर देखिए। हम अकेले नहीं हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड हमारा मित्र है और जो लोग (ऊँचे) सपने देखते और उसके लिए काम करते हैं, वह उन्हें सर्वोत्तम सहायता देने के लिए तत्पर है।"

"अपने लक्ष्य में सफल होने के लिए अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त निष्ठा रखिए।"

"यदि आप असफल होते हैं, तो भी हार नहीं मानिए। एफ.ए.आई.एल. का अर्थ है— 'फर्स्ट एटेम्पट इन लर्निंग', यानी सीखने की दिशा में पहला प्रयास। अंत, अंत (द एंड) नहीं है। वास्तव में ई.एन.डी. का अर्थ है— 'एफर्ट नेवर डाइज' अर्थात प्रयास कभी निरर्थक नहीं होते हैं। यदि आपको उत्तर में 'ना' (एन.ओ.) मिलता है, तो इसका अर्थ है— 'नेक्स्ट अपॉरचुनिटी', अर्थात अगले अवसर के लिए तैयार रहें। अत: सकारात्मक रहें।"

"स्वप्न का अर्थ सोते समय स्वप्न देखना नहीं है, बल्कि स्वप्न वे हैं जो आपको सोने न दें।"

"यदि चार बातों का ध्यान रखें— बड़ा लक्ष्य रखना, ज्ञान हासिल करना, कठिन परिश्रम करना और सतत प्रयास करना, तो कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।"

लोकतंत्र

आपने देखा होगा कि हमने इससे पहले 'जन-प्रतिनिधियों' की बात की थी। विश्व के अधिकांश देशों ने शासन प्रणाली की नींव के रूप में **लोकतंत्र** को अपनाया है। इसका अंग्रेजी शब्द 'डेमोक्रेसी' है जो ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'डेमोस' अर्थात 'लोग' और 'क्रेटोस' अर्थात 'शासन प्रणाली या तंत्र या शक्ति' से बना है, अत: डेमोक्रेसी का शाब्दिक अर्थ हुआ लोक-शासन या गणतंत्र (लोगों का शासन)।

परंतु क्या सभी लोग एक साथ शासन कर सकते हैं? स्पष्ट है कि यह संभव नहीं है। मान लीजिए कि आपकी कक्षा की किसी समस्या को विद्यालय के प्रधानाचार्य के ध्यान में लाना है, जैसे कि आपकी कक्षा में कोई समस्या है अथवा विद्यालय के बुनियादी ढाँचे में कोई समस्या है अथवा संभवत: आप अपने क्षेत्र भ्रमण (फील्ड ट्रिप) की किसी तिथि को प्रस्तावित करना चाहते हैं। इस स्थिति में क्या पूरी कक्षा प्रधानाचार्य के पास जाएगी? स्पष्ट है कि यह व्यावहारिक नहीं होगा। बहुत से विद्यालयों में पूरी कक्षा मिलकर कक्षा के मॉनीटर या कक्षा के प्रतिनिधि का चयन करती है; यदि कोई मॉनीटर नहीं भी है, तो भी किसी विशेष कार्य के लिए किसी एक प्रतिनिधि का चयन किया जा सकता है और उस प्रतिनिधि को प्रधानाचार्य के पास भेजा जा सकता है।

यही सिद्धांत राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी लागू होता है। चुनावों के माध्यम से जनता अपने **प्रतिनिधियों** का वोट देकर चयन करती है जो संबंधित सभा के चयनित सदस्य होते हैं। उन्हें प्राय: राज्य के स्तर पर **विधायक** तथा राष्ट्र के स्तर पर **सांसद** कहा जाता है। ये सभी चयनित सदस्य विधान सभा/लोक सभा में कानूनों पर चर्चा करते हैं। समस्याओं और समाधानों पर विचार-विमर्श करते हैं। मतभेद की स्थिति में एक-दूसरे से संवाद और तर्क-वितर्क द्वारा समस्या का हल करने का प्रयास करते हैं।

किसी भी आधुनिक लोकतंत्र की तरह भारत में '**जन प्रतिनिधि**' आधारित लोकतंत्र है। 2024 के परिप्रेक्ष्य में देखें, तो लगभग 97 करोड़ मतदाताओं के साथ भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी है। भारत में कानून के अनुसार 18 वर्ष से ऊपर की आयु के सभी भारतीय नागरिकों को चुनावों में मतदान करने का अधिकार है।

मान लीजिए कि आपकी कक्षा पिकनिक पर जाने की योजना बना रही है। पिकनिक पर जाने के दो संभावित स्थान हैं— 'क' और 'ख'। इन दोनों स्थानों पर जाने के लाभ-हानि, जैसे – उनकी दूरी, पहुँचने में लगने वाला समय, खर्च, मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता आदि पर कक्षा विचार-विमर्श करती है। इन स्थितियों में सभी के लिए किसी एक निर्णय पर आना कठिन हो जाता है। ऐसे में शिक्षक निर्णय लेते हैं कि मतदान से समस्या का समाधान निकल सकता है। 'क' स्थान पर जाने वाले विद्यार्थी अपने हाथ उठाएँ और उसके बाद जो विद्यार्थी 'ख' स्थान पर जाना चाहते हैं, वे भी अपना हाथ उठाएँ। जिस विकल्प के लिए सबसे ज्यादा विद्यार्थियों ने हाथ उठाए, उस विकल्प या स्थान को पिकनिक पर जाने के लिए चुन लिया जाता है। यह प्रक्रिया मतदान (वोटिंग) कहलाती है। यह **प्रत्यक्ष लोकतंत्र** का उदाहरण है, जहाँ स्थान निश्चित करने में प्रत्येक विद्यार्थी की राय ली गई।

आधारभूत/धरातलीय लोकतंत्र उस तंत्र की ओर इशारा करता है, जिसमें सामान्य नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित और सुनिश्चित किया जाता है, जैसे कि पृष्ठ 159 पर चित्र 10.4 में दिखाए गए पिरामिड का आधार है। इस प्रकार के तंत्र में नागरिक स्वयं को प्रभावित करने वाले निर्णयों पर अपनी बात रख सकते हैं।

भारतीय लोकतंत्र की अन्य विशेषताओं का अध्ययन हम आगे के दो अध्यायों और अगली कक्षाओं में भी करेंगे।

आगे बढ़ने से पहले...

- → सरकार और शासन के बिना कोई भी देश नहीं चल सकता।
- → आधुनिक सरकार के तीन अंग है— विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका— जिन्हें एक साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है।
- → भारत सरकार तीन स्तरों पर कार्य करती है— संघीय अथवा राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर और स्थानीय स्तर।
- → लोकतंत्र इस प्रणाली की पूरी रूपरेखा है। यह राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तर पर चयनित प्रतिनिधियों के माध्यम से कार्य करती है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. स्वयं परखिए — लोकतंत्र का क्या अर्थ है? प्रत्यक्ष लोकतंत्र और प्रतिनिधि लोकतंत्र के बीच क्या अंतर है?
2. सरकार के तीन अंग कौन-से हैं? उनकी क्या अलग-अलग भूमिकाएँ हैं?
3. भारत के परिप्रेक्ष्य में हमें त्रिस्तरीय सरकार की आवश्यकता क्यों है?
4. परियोजना — 2019 की कोविड महामारी के दौरान लगा लॉकडाउन आपको याद होगा। उस समय उठाए गए सभी कदमों की सूची बनाइए। उस स्थिति को संभालने में सरकार के कौन-कौन से स्तर सम्मिलित थे? उसमें सरकार के प्रत्येक अंग की क्या भूमिका थी?

नूडल्स

*नोट्स (Notes) और डूडल्स (Doodles) को मिलाकर बना शब्द-संक्षेप।
इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

आधारभूत लोकतंत्र — भाग 2: पंचायती राज , नगर पालिका और नगर निगम

अध्याय 11

> *असली भारत, गाँवों में बसता है।*
>
> *— मोहनदास करमचंद गाँधी*

महत्वपूर्ण प्रश्न?

1. *आपके गाँव या शहर में सड़क, पानी, स्कूल, अस्पताल, आदि की व्यवस्था कैसी है? क्या उनसे संबंधित आपकी कुछ समस्याएँ हैं?*
2. *आपके ग्राम पंचायत या नगर पालिका ने उन समस्याओं के समाधान के लिए क्या उपाय किए हैं?*

ISID26

आइए, इस पाठ में हम ग्राम पंचायत एवं नगर पालिका के गठन और उसके कार्यों के बारे में चर्चा करेंगे।

ग्राम पंचायत

कमालपुर गाँव के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक ने कक्षा 6 के छात्र-छात्राओं से पंचायत के बारे में पता करने को कहा है।

एक सप्ताह के भीतर उन्हें अपने ग्राम पंचायत के पंच, सरपंच, उपसरपंच, सचिव और ग्रामसभा के बारे में जानकारी लाने को कहा।

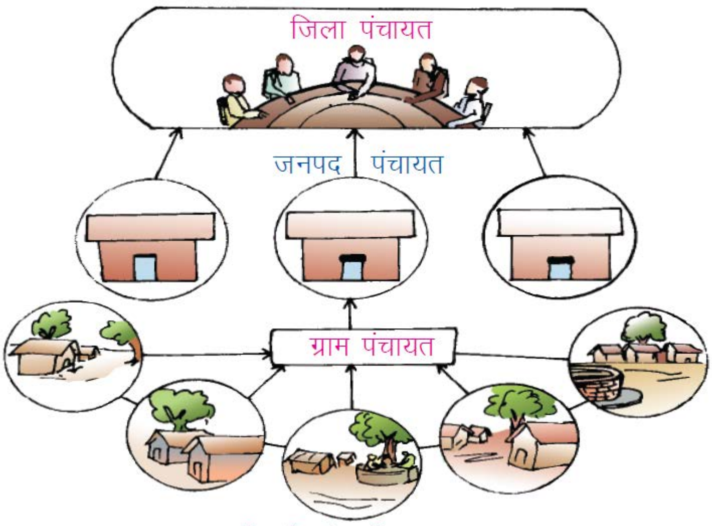

त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था

काम इस प्रकार बँटा था-नेहा पंच से संबंधित जानकारी देगी। संध्या सरपंच के विषय में कक्षा को बताएगी। जगमोहन और सुभाष ग्रामसभा के काम और अधिकारों का पता लगाएँगे। शिक्षक ने अभय से कहा कि वह ग्राम पंचायत के गठन के नियमों एवं उसके कामों के बारे में पता करें।

नेहा का काम बहुत सरल था, उसकी भाभी उमा मदनपुर की पंच थी। पंचों के बारे में जानने के लिए नेहा शाम का खाना खाकर उमा भाभी के पास पहुँच गई।

वार्ड और पंचों का चुनाव

नेहा - भाभी, ये तो हम जानते हैं कि आप पंच हैं, मगर आप पंच कैसे बनी? क्या पंचायत में आपकी तरह और भी पंच हैं?

उमा - किसी भी पंचायत में 10 से 20 तक पंच होते हैं। सभी वार्डों के वयस्क लोग मिलकर उन पंचों को चुनते हैं।

नेहा - ये वार्ड क्या होता है, भाभी?

उमा - प्रत्येक ग्राम पंचायत के इलाके को जनसंख्या के आधार पर कई भागों में बाँटा जाता है। इन्हें वार्ड कहते हैं। प्रत्येक वार्ड के वयस्क लोग मिलकर एक व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि या पंच चुनते है। इस तरह प्रत्येक पंचायत में 10 से 20 वार्ड होते हैं। मैं मातापुरा वार्ड से पंच बनी हूँ।

उमा भाभी ये तो ठीक है, मगर आप इस वार्ड की पंच कैसे बनीं?

उमा - पंच के चुनाव में 21 साल या उससे अधिक उम्र वाला कोई भी व्यक्ति खड़ा हो सकता है। चुनाव में खड़े होनेवालों को 'उम्मीदवार' कहते हैं। मैं मातापुरा वार्ड से

खड़ी हुई थी। जब एक से अधिक 'उम्मीदवार' होते हैं तो उनमें से एक को चुनने के लिए मतदान होता है। वार्ड के लोग वोट देते हैं और जिसको सबसे ज्यादा वोट मिले वह पंच बन जाता है।

लेकिन मातापुरा वार्ड से मैं अकेली ही चुनाव में खड़ी हुई थी इसलिए मतदान की जरूरत ही नहीं पड़ी इसलिए मैं तो ''निर्विरोध'' चुनी गई।

पंचायत को वार्डों में बाँटने के क्या-क्या फायदे होंगे? कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए।

मतदाता

नेहा - भाभी क्या हम भी चुनाव में मत दे सकते हैं?

उमा - नहीं! अभी तुम और संध्या केवल 12 वर्ष के हुए हो। मतदाता की उम्र कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। हर गाँव की एक मतदाता सूची होती है। गाँव का B.L.O (बी.एल.ओ.) या वहाँ के शिक्षक घर-घर जाकर चुनाव के पहले मतदाता सूची को सही बना लेते हैं। यह सभी जानकारी नेहा ने अपनी कक्षा को दी।

आइए पता लगाएँ

1. पता कीजिए कि आपके ग्राम पंचायत में कितने वार्ड और पंच हैं।
2. आप अपने वार्ड के पंच का नाम पता कीजिए।
3. उमा भाभी निर्विरोध क्यों चुनी गई ? सही कारण पर सही का निशान लगाइए-
   (अ) क्योंकि वह एक महिला थी।
   (ब) क्योंकि उसको सबसे ज्यादा लोग पसंद करते थे।
   (स) क्योंकि उसके वार्ड से और कोई चुनाव में खड़ा नहीं हुआ था।

इनमें से कौन-कौन मातापुरा वार्ड के मतदाता होंगे?

क्र.	नाम	पिता का नाम	उम्र	लिंग	वार्ड का नाम
1.	सोनल	रामसिंह	16	महिला	मातापुरा
2.	सपना	रामसिंह	19	महिला	मातापुरा
3.	शंकर	कमलभान	18	पुरूष	मातापुरा
4.	कल्लू	कोमलसिंह	25	पुरूष	मातापुरा
5.	मीना	सुरेश	15	महिला	मातापुरा

पाँच साल में चुनाव

नेहा के मन में एक सवाल उठा - क्या एक बार चुनाव जीत लिया तो भाभी हमेशा पंच बनी रहेंगी? उसने यह बात उमा भाभी से पूछा।

उमा - नहीं, पंचायत का चुनाव हर पाँच साल में होता है। कोई भी केवल पाँच साल के लिए ही पंच चुना जा सकता है। पिछला पंचायत चुनाव दो साल पहले हुआ था। मैं बस तीन साल और पंच रहूँगी। उसके बाद फिर से चुनाव होंगे।

1. पंच केवल पाँच साल के लिए चुने जाते हैं। क्यों ? कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. किसी को हमेशा के लिए पंच क्यों नहीं चुना जाता है - कक्षा में चर्चा कीजिए।

सरपंच और उपसरपंच

संध्या को सरपंच के बारे में पता करना था। वह एक दिन पंचायत भवन में गई और सीधे सरपंच कलावती से ही पूछताछ करने लगी।

संध्या - आप सरपंच कैसे बनीं ?

कलावती - पंचो की तरह सरपंच को भी सभी लोग वोट डालकर चुनते हैं। फर्क यह है कि पंच को सिर्फ एक ही वार्ड के लोग चुनते हैं जबकि सरपंच को पूरे ग्राम पंचायत के मतदाता चुनते हैं।

संध्या - मगर सरपंच बनकर आपको काम क्या करना पड़ता है?

कलावती - सरपंच ही पंचायत का मुखिया होता है। मुझे हर महीने सभी पंचों को बुलाकर बैठक करानी होती है। इस बैठक की अध्यक्षता मैं ही करती हूँ यानी बैठक को मैं ही संचालित करती हूँ। पुरे ग्रामपंचायत के मतदाताओं को बुलाकर ग्राम सभा भी करानी पड़ती है। इन बैठकों में जो विकास के काम कराने का निर्णय होता है उसके बारे में जनपद या जिला पंचायत या सरकारी अधिकारियों से मिलकर पैसे का इंतजाम करती हूँ। ये काम ठीक से चल रहे हैं या नहीं ये भी मुझे देखना पड़ता है। पैसे, जो पंचायत को मिल रहे हैं और खर्च हो रहे हैं उनका हिसाब-किताब भी देखना पड़ता है।

संध्या - अरे, आपको तो काफी काम करना पड़ता है। लेकिन अगर आप बीमार पड़ें या कहीं शादी ब्याह में जाएँ तो क्या होगा? क्या पंचायत तब तक के लिए बंद हो जाएगी?

कलावती - नहीं-नहीं, मैं नहीं रहती हूँ तो मेरी जगह उपसरपंच पंचायत का काम देखते हैं। मेरे न रहने पर तो वे बैठक की अध्यक्षता भी करते हैं।

संध्या - क्या उपसरपंच को भी सारे गाँव के लोग मिलकर चुनते हैं?

कलावती - नहीं। सारे पंच मिल कर अपने में से एक को उपसरपंच चुन लेते हैं।

संध्या ने अपनी कापी में लिख लिया कि कक्षा में सरपंच के बारे में क्या-क्या कहना है। लेकिन कुछ शब्द छूट गए। इन्हें आप भरिए।

1. एक___के मतदाता मिलकर पंच को चुनते है, जबकि सरपंच को पूरे___के मतदाता चुनते हैं।
2. सभी पंच मिलकर अपने में से एक को___चुनते हैं।
3. सरपंच की अनुपस्थिति में___बैठकों की अध्यक्षता करते हैं।
4. पंचायत के बैठकों की अध्यक्षता करना___का काम है।

ग्राम पंचायत की बैठक

अभय की जिम्मेदारी थी - ग्राम पंचायत के कामों के बारे में पता करना। उसने सोचा, क्यों न पंचायत की किसी बैठक में जाकर देखूँ वहाँ क्या होता है? अभय जब पंचायत भवन पहुँचा तो बैठक शुरू नहीं हुई थी। 12 पंचो में से सिर्फ 5 पंच ही आए थे। सब इंतजार कर रहे थे कि दो और पंच आ जाएं तो बैठक शुरू करने के लिए कम-से-कम आधे से अधिक सदस्य उपस्थित हो जाएँगे। यानी कमालपुर पंचायत के 12 पंचों में से कम-से-कम 7 पंचों को बैठक में होना जरुरी था।

1. आधे से अधिक पंचों की उपस्थिति पंचायत की बैठक में क्यों आवश्यक है ?

2. रूपपुर पंचायत में कुल 18 सदस्य हैं। वहाँ की बैठकों में कम-से-कम कितने पंचों को रहना चाहिए?

कुछ ही देर बाद दो-तीन सदस्य और आ गए, एवं बैठक शुरू हो गई। सरपंच कलावती बाई बैठक की अध्यक्षता कर रही थी।

सबसे पहले सचिव ने पिछली बैठक के निर्णयों को पढ़कर सुनाया और उन पर जो काम हुआ था उसकी जानकारी दी। उसके बाद परसवारा गाँव के पंच बोले, ''हमारे गाँव के कुंओं में जलस्तर लगातार कम हो रहा है। ऐसे में कुछ ही महीनों में गाँव में पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा। गाँववाले चाहते हैं कि यहाँ जलग्रहण योजना चलाई जाए ताकि बारिश के पानी को संजोकर रख सकें। पंचायत में इसके बारे में योजना बननी चाहिए।''

पंच, सरपंच और उपसरपंच के अतिरिक्त प्रत्येक पंचायत में एक पंचायत सचिव होता है। सचिव का चुनाव नहीं होता बल्कि यह सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। इसका काम पंचायत की बैठकों में हुई चर्चाओं एवं निर्णयों का रिकार्ड रखना तथा पंचायत की आमदनी और खर्च का लेखा-जोखा रखना होता है। सचिव को सरकार द्वारा वेतन दिया जाता है जबकि पंच, सरपंच और उप सरपंच को कोई वेतन नहीं मिलता है।

चंगोरा के पंच ने कहा, ''चंगोरा और मुख्य सड़क को जोड़ने वाली पुलिया का निर्माण होना था। यहाँ से प्रस्ताव पास होकर जनपद पंचायत के पास अनुदान राशि के लिए गया था। उसका क्या हुआ?''

सरपंच कलावती बाई ने कहा, ''पुलिया के लिए स्वीकृत राशि आ गई है। शीघ्र ही आपको काम चालू करवाना होगा।''

गांधी वार्ड के पंच ने कहा, ''हमारे वार्ड की प्राथमिक शाला में पिछले एक महीने से एक ही शिक्षक पढ़ा रहे हैं जबकि यहाँ चार शिक्षकों को होना चाहिए। एक शिक्षक छुट्टी पर हैं, और दो किसी सर्वेक्षण में लगे हैं। ऐसे में शाला में पढाई कैसे होगी? ''सरपंच ने वादा किया कि वे विकासखंड शिक्षा अधिकारी से इसके बारे में चर्चा करेंगी।

मातापुरा की पंच उमा बाई ने बताया कि आजकल गाँव में मलेरिया और पीलिया बहुत फैला हुआ है। गाँव के डबरों व कुँओं की सफाई करवानी है। कुँओं में दवाई भी छिड़कवानी है। मैं अपने मोहल्ले की जिम्मेदारी लेती हूँ पर कुछ पैसे चाहिए। उप सरपंच ने सभी उपस्थित पंचों से अपने-अपने मोहल्लों की जिम्मेदारी लेने के लिए कहा। उसके बाद मुंगेली-पंडरिया रोड से कमालपुर पहुँच मार्ग को जोड़ने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से बनाया गया। सभी ने उस पर हस्ताक्षर किए और दोपहर 2 बजे बैठक समाप्त हो गई।

ग्राम पंचायत के कार्य

बैठक के बाद अभय सरपंच के पास गया उसने कलावती बाई से कहा, ''मौसी मुझे नहीं पता था कि पंचायत में इतनी सारी बातें होती हैं। मै तो सोचता था कि इसका काम सड़क बनवाना है।'' जरा आप ही मुझे बताएँ कि पंचायत के और क्या-क्या काम हैं?

कलावती ने कहा, बेटा हमारे कामों की सूची तो बहुत लंबी है, मगर मुख्य काम -

गाँव की साफ-सफाई करवाना, गाँव में पीने व निस्तार के पानी की व्यवस्था करवाना, सड़क, पुलिया, शाला का निर्माण और मरम्मत, विवाह, जन्म-मृत्यु को दर्ज करना। गाँव में पाठशाला और स्वास्थ्य सेवा की निगरानी करना, आदि है। इसके अलावा गाँव के विकास के लिए योजना बनाना तथा शासन द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं के क्रियान्वयन में मदद करना भी पंचायत का कार्य है।

ग्राम पंचायत की आमदनी

अभय ने यह सब सुनकर पूछा, ''मौसी , मगर ये सब काम करने के लिए तो बहुत पैसे लगेंगे। पंचायत को पैसे कहाँ से मिलते है' ?''

कलावती बोली, ''अच्छा हुआ जो तुमने यह पूछ लिया। ये सब काम करने के लिए पंचायत को केन्द्र और राज्य सरकार से पैसे मिलते हैं। इन सरकारों को गाँव में जो भी विकास कार्य कराना होता है वे उसे पंचायत के माध्यम से ही कराते हैं। वे इसके लिए निर्धारित राशि पंचायत को दे देते हैं और पंचायत उन कामों को करवाती हैं। इसके अलावा पंचायत गाँव के लोगों पर छोटे-मोटे कर लगाकर भी पैसे इकट्ठा कर सकती है।

अभय को आश्चर्य हुआ, ''पंचायत भी कर लगा सकती है? पंचायत कौन-से कर लगाती है?''

कलावती ने बताया, ''सफाई कर, गाँव में लगनेवाले दुकानों पर कर, मेले में लगने वाले दुकानों पर कर, आदि। इसके अलावा अगर गाँव में रेत-मुरम, पत्थर आदि के खदान हों तो उन पर ''रायल्टी'' भी वसूली जा सकती है। इन सबसे जो आय होती है उसी से पंचायत का काम चलता है।

अगले हफ्ते सामाजिक विज्ञान की कक्षा में ग्राम पंचायत पर चर्चा हुई। छात्रों की टोलियों ने सबको बताया कि उन्होंने क्या-क्या पता किया।

नेहा ने पंचों के चुनाव के बारे में बताया। कक्षा में इस बात को लेकर बहस हुई कि बच्चों को वोट देने का अधिकार क्यों नहीं दिया गया है।

पंचायत में आरक्षण

संध्या ने सबको सरपंच और उपसरपंच के बारे में जानकारी दी। उसको बहुत गर्व महसूस हो रहा था कि उसके गाँव की सरपंच एक महिला है। उसने सबको समझाया कि यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि पंचायतों में महिलाओं तथा अनुसूचित जाति व जनजातियों तथा पिछड़े वर्गो के लिए विशेष आरक्षण है। यानी हर पंचायत के कुछ वार्डों से केवल महिलाएँ, अनुसूचित जाति या जनजाति या पिछड़े वर्ग के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं। दूसरी जाति के लोग वहाँ से चुनाव नहीं लड़ सकते। इसी तरह हर विकासखंड के कुछ पंचायतों में केवल महिलाएँ या फिर आरक्षित वर्ग के लोग ही सरपंच के लिए चुनाव लड़ सकते हैं।

दीपक के मन में एक सवाल उठा -''क्या दूसरे वार्डों से केवल पुरूष या सामान्य जाति के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं?''

इस पर संध्या बोली - ''नहीं, उन अनारक्षित पदों के लिए कोई भी - चाहे वह महिला हो या अनुसूचित जाति या जनजाति या पिछड़ा वर्ग का हो- चुनाव लड़ सकता है।''

चंपा ने गुरु जी से पूछा - ''गुरु जी यह आरक्षण होता ही क्यों है? अगर सब समान हैं तो कोई किसी भी पद के लिए चुनाव क्यों नहीं लड़ सकता?''

गुरु जी ने जवाब दिया , ''जिन वर्गों के लिए आरक्षण किया गया है, वे आमतौर से गरीब और सुविधाओं से वंचित होते हैं। वे सामान्य तौर पर चुनाव जीतकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग नहीं ले पाते। इसलिए उनका निर्णय प्रक्रिया में शामिल होना बहुत ज़रूरी है।''

''यदि उन्हें इस प्रकार के अवसर न दिए जाए तो समाज के ये वर्ग उपेक्षित रहेगें और समाज में समानता नहीं आ सकेगी। इस कारण अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और महिलाओं को उचित आरक्षण दिया गया है। इसी आरक्षण के कारण ही आज हर पंचायत में कम-से-कम हर वर्ग के लोग भी पंच और सरपंच बन पाए हैं।''

''यदि किसी ग्राम पंचायत में 12 पंच हैं तो उनमें से कोई भी 4 पद महिलाओं के लिए आरक्षित होंगें। आरक्षण का मतलब है कि उस पंच के पद पर पुरुष प्रत्याशी चुनाव नहीं लड़ सकते। पर इसका मतलब यह नहीं कि महिलाएँ सामान्य पदों से चुनाव नहीं लड़ सकतीं। महिलाएँ अपने लिए आरक्षित क्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों से भी चुनाव लड़ सकती हैं। इसी तरह अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों के सदस्यों के लिए भी पद आरक्षित किए जाते हैं। आरक्षण का मतलब यह होता है कि सामान्य जाति के लोग इन पदों पर चुनाव नहीं लड़ सकते, पर अनुसूचित जाति या जनजाति या अन्य पिछड़े वर्ग के लोग समान्य क्षेत्रों से चुनाव लड़ सकते हैं।''

1. आप कक्षा में चर्चा कीजिए कि आरक्षण के उद्देश्य आपके इलाके में पूरे हुए हैं या नहीं।
2. पता कीजिए कि आपके यहाँ ग्रामपंचायत के सरंपच का पद आरक्षित है या नहीं। यदि है तो किस वर्ग के लिए?

आइए विचार करें

राज्य व केन्द्र सरकार के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा करें।

ग्रामसभा

अब सुभाष की बारी थी। उसे ग्रामसभा के बारे में पता करना था। सुभाष ने कहा, ''आप सब जानते हैं कि पिछले ही हफ्ते अपने गाँव की ग्रामसभा हुई थी। मैं पूरे समय सभा में रहा और जानकारी हासिल की।''

तभी रंजन पूछ बैठा- ''क्या ग्रामसभा में हम बच्चे भी भाग ले सकते हैं ?''

सुभाष ने स्पष्ट किया- ''ग्रामसभा में कोई भी बैठ सकता है मगर इसमें सिर्फ गाँव के मतदाताओं को ही वोट देने का अधिकार है।''

फिर वह ग्रामसभा के बारे में बताने लगा। ''जब मैं ग्राम सभा में पहुँचा तो बैठक शुरू हो गई थी, पहला मुद्दा था गरीबी रेखा के नीचे आनेवाले परिवारों का अनुमोदन। दरअसल राज्य सरकार की तरफ से एक योजना आई थी जिसके अंतर्गत गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों को गैस का चूल्हा और टंकी बाँटनी थी। इसलिए गाँव के ऐसे परिवारों का चयन किया जा रहा था।''

''गाँव का पंच होने के नाते भोला काका ने गाँव के उन परिवारों के नाम पढ़ना शुरू किया जो 'गरीबी रेखा' के नीचे पाए गए थे। उन्होंने करीब पंद्रह नाम पढ़े। इनमें से पाँच नामों पर कुछ लोगों ने आपत्ति उठाई। लखन तो गरीब नहीं है- उसके पास मोटरसाइकिल है, पक्का मकान है- किसी ने कहा। भोला काका ने बताया कि उसने यह सब कर्ज़ लेकर किया है। फिर भी सभी लोगों को लगा कि उसकी आमदनी इतनी है कि वह कर्ज़ की राशि पटा सके। तो उसका नाम सूची से काट दिया गया। ऐसे ही चार और लोगों के नाम काटे गए।''

''फिर गाँव में पंचायत द्वारा किए जा रहे कामों पर चर्चा की गई। स्कूल के अतिरिक्त कमरों पर चर्चा की गई। स्कूल का अतिरिक्त कमरा अधूरा पड़ा था, कई दिनों से काम भी बंद था। भोला काका ने बताया कि जिस ठेकेदार को ठेका दिया गया था, वह बीमार हो गया है। लोगों ने कहा कि अगर वह ठीक नहीं हुआ है तो दूसरा ठेकेदार लाया जाए। बरसात से पहले कमरा पूरा हो जाना चाहिए। भोला काका ने काम पूरा करवाने का आश्वासन दिया।''

''अगले दो- तीन घंटे ऐसे ही बैठक चलती रही। कई मुद्दों पर बातें हुईं। ग्राम पंचायत की आमदनी खर्च को भी प्रस्तुत किया गया और उस पर चर्चा हुई।''

सुभाष ने आगे बताया कि ''पंचायत को जो भी काम करने होते हैं, उसके संबंध में उसे ग्राम सभा में प्रस्ताव पेश करना होता है। ग्रामसभा प्रस्ताव पर चर्चा करती है और उसे स्वीकृत करती है। ग्राम सभा की स्वीकृति के बगैर पंचायत कोई भी काम नहीं कर सकती। पंचायत सदस्यों को समय समय पर उन कामों की प्रगति के बारे में भी ग्रामसभा को बताना पड़ता है।''

ये सब सुनकर कक्षा की एक छात्रा केतकी खुश होकर बोलने लगी कि ग्रामसभा के माध्यम से गाँव का हर एक व्यक्ति अपने गाँव के विकास कार्य के निर्णय में भाग ले सकता है और इस बात पर निगरानी भी रख सकता है कि कहीं कोई गड़बड़ी न हो रही हो।

गरीबी रेखा के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा करें।

जनपद पंचायत

हमारी पंचायती राज व्यवस्था त्रिस्तरीय है। ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत, ये तीनों संस्थाएँ एक-दूसरे से कड़ी की भाँति जुड़ी हुई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के कार्य ये तीनों संस्थाएँ आपस में मिलकर करती हैं।

जनपद पंचायत गठन

ग्राम पंचायत की भांति जनपद पंचायत का भी गठन चुनाव द्वारा होता है। जनपद पंचायत के सदस्यों का चुनाव उस क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा होता है। 5 वर्ष के लिए चुने हुए सदस्यों के अलावा उस खण्ड के निर्वाचित विधायक, लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य भी जनपद पंचायत के पदेन सदस्य होते हैं तथा सहकारी बैंक के प्रतिनिधि भी सहयोजित सदस्य होते हैं।

जनपद पंचायत के कामों की देखरेख के लिए जनपद पंचायत के सदस्य अपना अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष चुनते हैं। पंचायत की भाँति यहाँ पर भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग एवं महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान है। दोनों में से एक पद पर आरक्षित वर्ग का प्रतिनिधि होता है।

1. आपकी पंचायत किस जनपद पंचायत के अंतर्गत आती है ?
2. आपके क्षेत्र का जनपद सदस्य कौन है?
3. मतदाता, निर्वाचित और सहयोजित (पदेन) शब्दों का अर्थ अपने गुरू जी से समझो।

जनपद पंचायत के कार्य

जनपद पंचायत का सबसे महत्वपूर्ण कार्य ग्राम पंचायतों को राज्य सरकार से धन दिलवाना है। जनपद पंचायत ही ग्राम पंचायत के कार्यों की देख-रेख भी करती है।

ग्रामों के समग्र विकास के लिए पंचायतों को विशेषज्ञों की सेवा उपलब्ध कराना है, जैसे-कृषि विशेषज्ञ, शिक्षा विशेषज्ञ, पशु चिकित्सक आदि जनपद पंचायत महिला,

युवा तथा बाल - कल्याण व निःशक्त, निराश्रितों के कल्याण हेतु कार्य, परिवार नियोजन, खेलकूद और ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम आदि की व्यवस्था, सहायता तथा संचालन करती है। प्राकृतिक आपदाओं में आपात् सहायता की व्यवस्था करना, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रचार-प्रसार करना भी इसका कार्य है। आजकल जनपद पंचायत शिक्षा कर्मी, पंचायत कर्मी और स्वास्थ्य कर्मी के कुछ पदों पर नियुक्ति भी करती है।

जनपद पंचायत की आय के साधन

जनपद पंचायत को अपने क्षेत्र के विकास के कार्यां के लिए विभिन्न साधनों से आय प्राप्त होती है। वह जनपद पंचायत क्षेत्र में मकान, जमीन, मेलों और बाजारों पर कर लगाकर धन एकत्र करती है। दूसरा जनपद पंचायत राज्य सरकार से वित्तीय सहायता तथा अनुदान प्राप्त करती है।

जिला पंचायत

जिला पंचायत पंचायती राज व्यवस्था की तीसरी और सर्वोच्च कड़ी है। इसका गठन जिला स्तर पर होता है। इसके अंतर्गत जिले की सभी जनपद पंचायतें आती हैं।

जिला पंचायत का गठन

जनपद पंचायत की भाँति जिला पंचायत के सदस्य जिले के मतदाताओं द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं। प्रत्येक 50,000 की जनसंख्या पर जिला पंचायत के लिए एक सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से वयस्क मताधिकार द्वारा चुना जाता है। जिला पंचायत के सदस्यां की संख्या न्यूनतम 10 और अधिकतम 35 हो सकती है। जिले की विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य भी जिला पंचायत के पदेन सदस्य होते हैं। जिला सहकारी बैंक का अध्यक्ष भी इसका पदेन सदस्य होता है। जिलापंचायत में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग तथा महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी है।

आपके क्षेत्र के जिला पंचायत सदस्य का नाम क्या है ?

जिला पंचायत के सदस्य अपने अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का चुनाव मिलकर करते हैं। इनमें से एक पद पर आरक्षित वर्ग का प्रतिनिधि होता है। अगर कोई अध्यक्ष या उपाध्यक्ष अपना काम ठीक तरह से नहीं करते, तो उनके विरूद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर उन्हें पद से हटाया जा सकता है।

जिला पंचायत के कार्य

जिला पंचायत का मुख्य कार्य ग्राम पंचायतों और जनपद पंचायतों के कार्यों की देखरेख करना है। यह ग्राम पंचायत और जनपद पंचायतों को उनके कार्यों के लिए धन

उपलब्ध करवाती है। सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं को जिले में चलाने के लिए जिले के सभी सरकारी विभागों से तालमेल रखती है। जिला पंचायत कुछ पदों पर नियुक्ति भी करती है।

जिला पंचायत की आय के साधन

जिला पंचायत की आय का प्रमुख साधन राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान होता है। इसके अलावा जिला पंचायत मकानों, दुकानों, मेलों, आदि पर कर लगाकर आय प्राप्त करती है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी

जिला पंचायत के निर्णयों को जिलों में लागू करवाने के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी होता है जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. पंचायत के चुनाव में खड़े होनेवाले उम्मीदवार को --------- वर्ष का होना ज़रूरी है।
2. --------- वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति चुनाव में वोट नहीं डाल सकता है।
3. पंचायत सचिव पंचायत के कामों का ---------- रखता है।
4. पंचायत के सदस्यों को पंचायत के कामों का लेखाजोखा समय-समय पर ----- में पेश करना होता है।
5. जनपद पंचायत के सदस्य --------- साल के लिए चुने जाते है।
6. पंचायती राज व्यवस्था की सर्वोच्च कड़ी -------- है।
7. सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं को जिले में चलाना -------- का काम है।
8. जिले में मुख्य कार्यपालन अधिकारी की नियुक्ति --------- द्वारा की जाती है।

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. ग्राम पंचायत का गठन कैसे होता है ?
2. सरपंच का चुनाव किस प्रकार होता है ?
3. उप सरपंच का चुनाव कैसे होता है।

4. आरक्षण के क्या फायदे हैं? क्या आपके विचार से विशेष वर्गों के लिए आरक्षण होना चाहिए ?

5. अगर आपके वार्ड का पंच एक पुलिया बनवाना चाहता है तो उसे क्या-क्या करना पड़ेगा ?

6. आपके विचार में ग्राम पंचायत से संबंधित चार सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या-क्या हैं? लिखो।

7. पंचायत की आमदनी के क्या-क्या साधन हैं ?

8. ग्रामसभा के तीन अधिकार लिखिए।

9. जनपद पंचायत में चुने हुए सदस्यों के अलावा और कौन-कौन सदस्य होते है ?

10. जनपद पंचायत का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है ?

11. जिला पंचायत के अध्यक्ष का चुनाव कैसे होता है ?

12. जिला पंचायत को आय कैसे प्राप्त होती है ?

(स) अपने शिक्षक या घर के लोगों से पता कीजिए -

अगर आपकी बड़ी बहन की शादी दूर के किसी गाँव में हो जाए तो क्या वह आपके गाँव के पंचायत के चुनाव में वोट डाल सकती है ?

नगर पालिका और नगर निगम

सीतापुर एक छोटा-सा शहर है। यहाँ के एक मोहल्ले में माध्यमिक शाला है जिसमें रमेश, राधिका और मीना पढ़ते हैं।

पिछले दो-तीन दिनों से बच्चों को काफी परेशानी हो रही थी। स्कूल के नल में पानी नहीं आ रहा था। स्कूल में पीने के लिए या हाथ धोने के लिए पानी नहीं था। आज सुबह जब बच्चे स्कूल में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि कई लोग शाला के नल के पाईप को खोदकर निकाल रहे हैं और उसकी जगह नया पाईप बिछा रहे हैं। बच्चे बहुत खुश हुए कि अब उन्हें स्कूल में ही पीने का पानी मिलने लगेगा।

कक्षा में जब बड़ी बहन जी आई तो रमेश ने उनसे पूछा- ''बहन जी, ये पानी का पाईप कौन सुधरवा रहा है? क्या हमें इसके लिए पैसे देने पड़ेंगे?"

बहन जी बोलीं, ''नहीं, नहीं? यह तो अपने नगर पालिका का काम है। मैंने अपने मोहल्ले के पार्षद से कहा था कि स्कूल में पानी नहीं आ रहा है पानी के लिए सब बच्चे परेशान हो रहे हैं। पार्षद द्वारा ही नगर पालिका के कर्मचारियों से बोलकर ये मरम्मत का कार्य करवाया जा रहा है।''

सब बच्चे नगर पालिका के बारे में जानना चाहते थे। सबके मोहल्ले में कोई-न-कोई समस्या थी। वे जानना चाहते थे कि नगर पालिका इस संबध में क्या-क्या कर सकती हैं।

बहन जी ने भी सबसे कहा कि वे अपने-अपने मोहल्ले की समस्याओं के बारे में बताएँ। राधिका बोली, ''बहन जी, हमारे मोहल्ले की गलियों में रात को लाईट नहीं जलती, बहुत अंधेरा रहता है और शाम के बाद चलने में हमें डर लगता है। वहाँ कई बार चोरियाँ भी हो चुकी हैं।''

रमेश बोला - '' बहन जी, हम तो झोंपड़ी में रहते हैं। हमारे मोहल्ले में लाईट तो जलती है, मगर सड़कें व नालियाँ नहीं बनी हैं। रास्ते में कीचड़ भरा रहता है। आने-जाने में दिक्कत होती है।''

कल्लू बोला - अरे, हमारे मोहल्ले में तो सीमेंट की सड़कें बनी हैं, नल में पानी बहुत कम आता है। दिन में वह केवल एक ही घंटा चलता है। पानी की बड़ी परेशानी है।''

''हमारे मोहल्ले में बाकी सब ठीक है, लेकिन सड़कों की सफाई नहीं होती, गंदगी इकट्ठी होती रहती है और बदबू आती है।'' सरला बोली। इस तरह सब बच्चों ने अपने-अपने मोहल्ले की समस्याएँ सुनाई।

बहन जी ने बताया कि, हम अपने-अपने मोहल्ले से नगर पालिका के सदस्य चुनते हैं। उनका काम है कि अपने वार्ड की समस्याओं को नगरपालिका तक पहुँचाएँ और उसका हल करवाएँ। अगर हमारे यहाँ ऐसी कोई समस्या हो तो हमें अपने पार्षद से बात करनी चाहिए। उनसे कहना चाहिए कि वे हमारी समस्याओं को जल्दी ही हल करें।''

बच्चो, आप ने पिछले पाठ में ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा है। याद कीजिए, उसमें पंच और सरपंच कैसे चुने जाते है? नगर पंचायत, नगर पालिका या नगर निगम वैसे ही बनती है जैसे कि ग्राम पंचायत। ये तीनों ही स्थानीय संस्थाएँ जनसंख्या के आधार पर बनाई जाती हैं।

शहर गाँवों की तुलना में बहुत बड़े होते हैं और उसमें हजारों लोग रहते हैं। बड़े शहरों में तो लाखों लोग रहते हैं। वहाँ की साफ-सफाई, प्रकाश, पानी, सड़कें, नालियों आदि की व्यवस्था के लिए नगर पालिका या नगर निगम कार्य करता है।

नगर पालिका या नगर निगम के सदस्य बनने के लिये कम-से-कम 21 वर्ष की आयु आवश्यक है। नगर पालिका के सदस्यों की संख्या 15 से 60 होती है। इसी प्रकार नगर निगम के सदस्यों की संख्या 50से 150 होती है।

पूरे शहर को जनसख्या के आधार पर वार्डों में बाँटा जाता है। शहर के वे सभी लोग जो 18 वर्ष या अधिक उम्र के हों, अपना मत दे सकते हैं। ये लोग अपने-अपने वार्डों

में एक-एक पार्षद को पाँच वर्ष के लिए चुनते हैं। लोगों की समस्याओं को नगर निगम या नगर पालिका परिषद् में रखना, तथा उसका हल करवाना पार्षद का काम होता है, ये शहर के लिए विकास की योजनाएँ बनाने में और उन्हें लागू करवाने में मदद करते हैं।

सारे चुने गए पार्षद नगर पालिका या निगम की बैठकों में शामिल होते हैं। इन बैठकों की अध्यक्षता-नगर पालिका या नगर निगम के अध्यक्ष करते हैं। इन्हें भी सारे वार्ड के लोग अपना मत देकर चुनते हैं। नगर निगम के अध्यक्ष को महापौर कहते हैं।

नगर पालिका या नगर निगम की बैठक में शहर की समस्या, किए जानेवाले काम और आगे की योजना के बारे में चर्चा करते है। यहाँ अलग-अलग काम के लिए अलग-अलग समितियाँ होती हैं प्रत्येक समिति का एक अध्यक्ष होता है और 5 से 12 सदस्य होते हैं।

राज्य सरकार प्रत्येक नगर पालिका में एक मुख्य नगर पालिका अधिकारी नियुक्त करती है। ठीक उसी प्रकार नगर निगम में नगर निगम आयुक्त की नियुक्ति की जाती है। इन अधिकारियों का काम नगर पलिका, नगर निगम के निर्णयों को नियमानुसार लागू करवाना और नगर पालिका के कर्मचारियों के काम की देखरेख करना है।

क्र.	जनसंख्या	संस्था का नाम	अधिकारी	प्रमुख
1.	5 हजार से 20 हजार	नगर पंचायत	मुख्य नगर पंचायत अधिकारी	अध्यक्ष
2.	20 हजार से 1लाख	नगर पालिका	मुख्य नगर पालिका अधिकारी	अध्यक्ष
3	1 लाख से अधिक	नगर निगम	आयुक्त	महापौर

नगर पालिका के कार्य

1. पानी की व्यवस्था, सफाई की व्यवस्था, चिकित्सा की व्यवस्था करना।
2. सड़कों की व्यवस्था और सड़कों पर प्रकाश की व्यवस्था करना।
3. कांजी हाउस का प्रबंध करना।
4. जन्म और मृत्यु का लेखा रखना।
5. बाजार और मंडी की व्यवस्था।
6. बीमारी फैलने पर रोकथाम के लिए टीकाकरण करवाना।
7. समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करना।
8. वाचनालय, पाठशाला, बाग-बगीचे, मनोरंजन की व्यवस्था करना।
9. सांस्कृतिक व शिक्षा संबंधी गतिविधियों का विस्तार करना।

आइए पता करें

1. आपके मोहल्ले के पार्षद (नगर पालिका के सदस्य) कौन हैं?
2. आपके शहर की समस्याओं का समाधान कौन-सी संस्था करती है?
3. आपकी नगर पालिका के अध्यक्ष का क्या नाम है?

आय के साधन

1. निजी मकान, जमीन आदि पर सम्पति-कर लगाना।
2. पानी, बिजली, सड़कों और शहर की सफाई के लिए कर वसूलना।
3. दुकानों से कर लेना।
4. मनोरंजन कर लेना (फिल्म, सर्कस आदि पर)
5. सरकार से अनुदान प्राप्त करना।
6. विज्ञापनों पर कर लेना।
7. अचल संपत्ति पर राज्य सरकार द्वारा लिए गए कर का अंशदान।

किसी शहर की जनसंख्या के आधार पर तय किया जाता है कि वहाँ नगर पंचायत, नगर पालिका या नगर निगम बनेगी। हरेक के अध्यक्ष व मुख्य कार्यपालन अधिकारी अलग होते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) सही जोड़ी बनाइए-

क		ख
1. नगर पंचायत	-	15 से 60 तक
2. नगर पालिका	-	50 से 150 तक
3. नगर निगम	-	5 हजार से 20 हजार जनसंख्या तक
4. नगर पालिका के सदस्यों की संख्या	-	1 लाख से अधिक आबादी होने पर
5. नगर निगम के सदस्यों की संख्या	-	20 हजार से 1 लाख की आबादी होने पर

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. नगर पालिका के सदस्यों को कौन चुनता है ?
2. मुख्य नगर पालिका अधिकारी का क्या काम है ?
3. शहर के किसी मोहल्ले में पानी या सफाई आदि की कोई समस्या है, तो आप किससे कहेंगे ?
4. आप एक पार्षद होते तो अपने मोहल्ले में क्या-क्या करवाते ?
5. स्थानीय संस्थाओं के कौन-कौन से कार्य हैं ?
6. स्थानीय संस्थाओं की आय के क्या-क्या साधन हैं ?

(स) अपने पास के नगर की स्थानीय संस्था के बारे में निम्नांकित बातों का पता लगाइए-

1. शहर का नाम एवं जनसंख्या -
2. अध्यक्ष का नाम -
3. पार्षदों की संख्या -

अध्याय 12

आधारभूत लोकतंत्र — भाग 3: जिला प्रशासन

IUCJDP

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. जिलाधीश के क्या-क्या कार्य होते हैं?

2. राज्य को जिले और तहसील में क्यों बांटा जाता है?

अपना पता लिखिए –

नाम	–	....
मोहल्ला	–	....
गाँव / शहर	–	....
तहसील	–	....
जिला	–	....
प्रदेश	–	....

आप रहते तो एक ही जगह में हैं फिर आपके पते में इतनी जगहों के नाम कैसे आ गए? आखिर आप रहते कहाँ हैं गाँव/शहर में, तहसील में या जिले में?

इसे दूसरी तरह से समझ सकते हैं। आप अपने घर में रहते हैं, आपका घर एक मोहल्ले में है। आप का घर और आपके आस-पास के घरों को मिलाकर मोहल्ला बनता है। आपका मोहल्ला आपके गाँव/शहर में है। वह मोहल्ले और दूसरे कई मोहल्लों को मिलाकर आपका गाँव /शहर बनता है। आप अपने घर में रहते हुए अपने मोहल्ले में रहते हैं और अपने गाँव/शहर में भी।

इसी तरह आपका गाँव किसी तहसील में है। आपके गाँव और अन्य कई गाँवों को मिलाकर तहसील बनती है।

आपकी तहसील आपके जिले में है। तहसील और दूसरी कुछ तहसीलों को मिलाकर जिला बनता है।

पता करें कि आपका जिला कितनी तहसीलों से मिलकर बना है।

जिले के अधिकारी व कर्मचारी

वास्तव में प्रशासन की सुविधा के लिए राज्य को जिलों में और जिलों को तहसीलों में बाँटा गया है। ये जिले प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई हैं।

जिले में सरकार की नीतियों को लागू करने एवं कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन होता है जिसमें कलेक्टर (जिलाधीश) एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी शामिल होते हैं।

जिलाधीश

आपने कलेक्टर का नाम तो सुना ही होगा, इसे जिलाधीश भी कहते हैं। हर जिले का एक जिलाधीश होता है। वह अपने जिले की समस्त तहसीलों और ग्रामों की देखरेख करते हैं। वे जिले के सबसे बड़े अधिकारी होते हैं। जिले में हो रहे सभी कामों पर जिलाधीश नियंत्रण रखता है।

जिलाधीश के कार्य

जिलाधीश के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं -

1. जिलाधीश का सबसे प्रमुख कार्य जिले में कानून और व्यवस्था बनाए रखना है। इसके अंतर्गत उसे दंडाधिकारी के रूप में बहुत से अधिकार प्राप्त हैं।

2. भूमि का अभिलेख रखना और भूमि कर वसूल करना इनका दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। वे भूमि संबंधी मामलों की देखभाल तथा भूमि संबंधी झगड़ों का निपटारा करते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व बचाव कार्य भी करते हैं।

3. जिलाधीश संपूर्ण जिले में नागरिक सुविधाएँ तथा सेवाएँ प्रदान करते हैं और जिले का संपूर्ण विकास करते हैं। नागरिक सुविधाओं के अंतर्गत स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात का प्रबंध, सरकारी इमारतों, सड़कों आदि की देखभाल करना भी शामिल है।

4. देश और राज्य में होनेवाले विभिन्न प्रकार के चुनावों को जिले में सम्पन्न कराने में जिलाधीश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ सारे चुनाव उन्ही के निर्देशन में होते हैं। यह कार्य वे जिला निर्वाचन अधिकारी के रूप में करते हैं।

5. जिले की पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय संस्थाओं के कार्यों की निगरानी का कार्य भी जिलाधीश करते हैं।

क्या जिलाधीश अपने सभी कार्य अकेले कर सकते हैं? नहीं! जिले में कई विभाग होते हैं-शिक्षा विभाग, पुलिस विभाग, स्वास्थ्य विभाग,खाद्य विभाग, राजस्व विभाग आदि। इन विभागों के अपने-अपने अधिकारी और कर्मचारी होते हैं, जो जिलाधीश के अधीन पूरे जिले में काम करते हैं। किसी भी विभाग के संबंधित अधिकारी और कर्मचारी के काम से संतुष्ट न होने पर जिलाधीश से शिकायत की जा सकती है। जैसे, किसी किसान की जमीन पर किसी ने कब्जा कर लिया हो और उससे संबंधित अधिकारी कुछ सुनवाई न कर रहे हों तो किसान जिलाधीश को अर्जी दे सकता है। बाढ़ आने, आग लगने, बीमारी फैलने या अचानक कोई बड़ी दुर्घटना होने पर सीधे जिलाधीश से मदद माँगी जा सकती है।

प्रत्येक जिला मुख्यालय में जिलाधीश इन कार्यों को संपन्न करते हैं। परंतु इसका मतलब यह नहीं कि वे केवल अपने कार्यालय में ही बैठकर सब काम करते हैं। इसके लिए उन्हें समय-समय पर जिले के विभिन्न गाँवों में जाना पड़ता है। एक ही दिन में उन्हें कई तरह के काम करने पड़ते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी कार्य वे राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नियमों-कानूनों और योजनाओं के अंतर्गत ही करते हैं। वे स्वयं न तो कोई कानून बना सकते हैं और न ही किसी कानून को बदल सकते हैं।

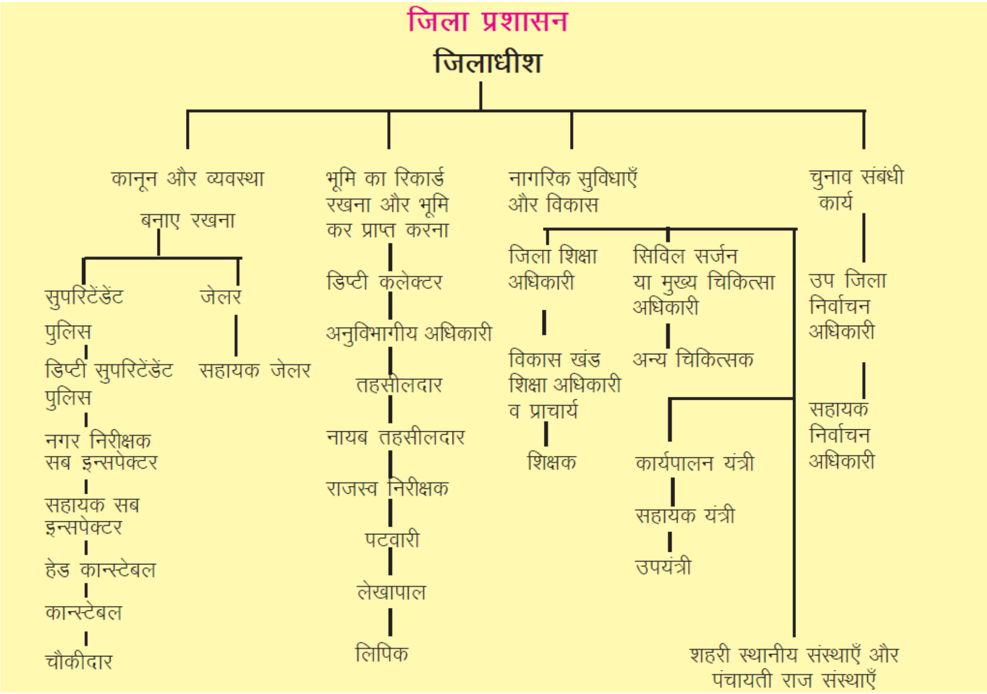

जिले में न्यायिक व्यवस्था

यद्यपि जिलाधीश को दंडाधिकारी (मजिस्ट्रेट) के रूप में कुछ न्यायिक अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी प्रत्येक जिले में अलग से स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था होती है। जिले के सभी न्यायालय उच्च न्यायालय की देखरेख में काम करते हैं। हमारे प्रदेश का उच्च न्यायालय बिलासपुर में है।

दिए गए चार्ट में जिले के उन अधिकारियों और कर्मचारियों के क्रम को देखिए जो जिले के विभिन्न स्थानों में जिलाधीश के अधीन काम करते हैं।

1. आपके जिले में जिलाधीश कौन हैं ?
2. चार्ट में दिए कौन-कौन से अधिकारी और कर्मचारी आपके गाँव या शहर में कार्य करते हैं ?
3. पटवारी को अपनी कक्षा में बुलाकर पता लगाइए कि जिलाधीश भूमि संबंधी अभिलेख किस प्रकार रखते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) सही जोड़ी बनाइए-

क		ख
शिक्षा विभाग	-	सब-इंसपेक्टर
राजस्व विभाग	-	चिकित्सक
पुलिस विभाग	-	नायब तहसीलदार
चिकित्सा विभाग	-	सहायक यंत्री
सिंचाई विभाग	-	जिलाशिक्षा अधिकारी

(ब) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. राज्य को जिलों और तहसीलों में क्यों बाँटा जाता है ?
2. जिलाधीश के प्रमुख कार्य लिखिए।
3. आपके जिले में कौन-कौन सी स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
4. जिला प्रशासन के अंतर्गत आने वाले प्रमुख विभागों के नाम लिखिए।

(स) शिक्षक से चर्चा करें -

छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद नये जिले क्यों बनाये जा रहे है? इसका क्या लाभ होगा।

कार्य का महत्व

अध्याय 13

जब आप कोई काम कर रहे हों, उससे बाहर कुछ न सोचें। उसे पूजा की तरह करें, सबसे बड़ी पूजा की तरह और उस समय अपना पूरा जीवन उसे समर्पित कर दें।

— स्वामी विवेकानंद

महत्वपूर्ण प्रश्न?

1. *लोग विभिन्न प्रकार की किन-किन गतिविधियों में सम्मिलित होते हैं?*
2. *हमारे दैनिक जीवन में इनका क्या योगदान है?*

0683CH13

अनु और मोहन उद्यान में खेल रहे थे, तभी उन्होंने अपने पड़ोस में रहने वाली गीता चाची को टैक्सी से उतरते हुए देखा। वह अपनी नौकरी से घर वापस आ रही थीं और अपनी गणवेश में थीं। वह भारतीय वायु सेना में पायलट (विमान चालक) का कार्य करती हैं और पूरा कस्बा उन पर गर्व करता है।

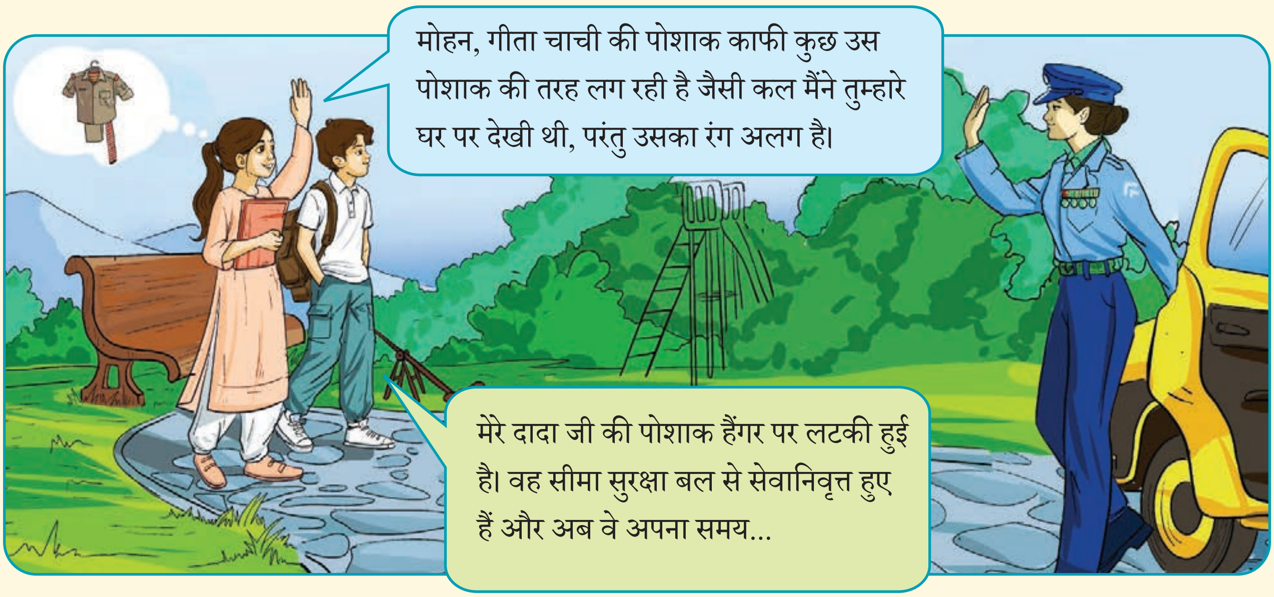

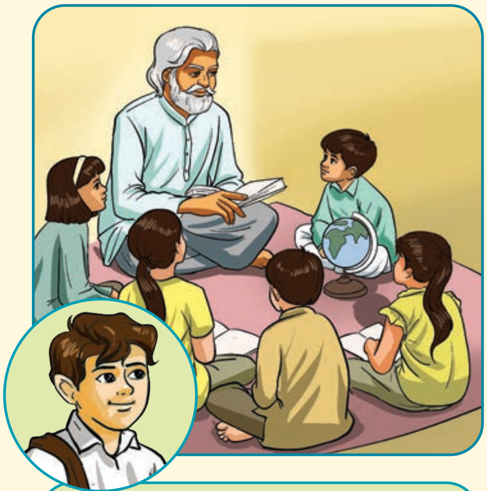

...आस-पास के बच्चों को नि:शुल्क भूगोल पढ़ाने में...

...हमारे सब्जी उद्यान में काम करने में और...

...घर के अन्य काम करने में व्यतीत करते हैं।

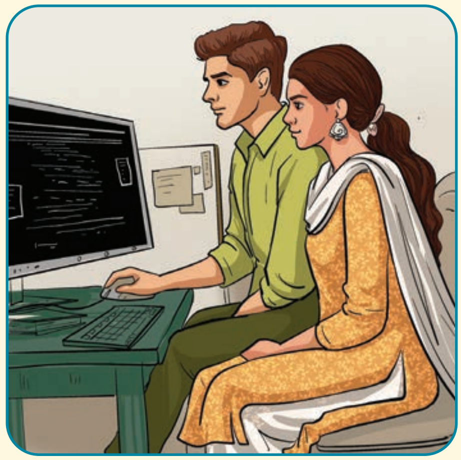

मेरे माता-पिता दुकान चलाते हैं जिसमें कई तरह की वेशभूषा और सिले हुए वस्त्रों की बिक्री की जाती है। पिताजी, सुबह चले जाते हैं और माँ हमारे विद्यालय जाने के बाद दुकान में उनका सहयोग करती हैं।

सामान्यतया माँ हमारे विद्यालय से आने से पहले घर आ जाती हैं। वह एक स्वैच्छिक समूह के साथ भी कार्य करती हैं जहाँ महिलाओं को बुनाई सिखाई जाती है।

क्या तुम्हें मेरे बड़े भाई रोहन स्मरण हैं? तुम उनसे मिले थे, जब वह मुझे विद्यालय लेने आए थे। वह सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और कंप्यूटर एप्लीकेशन बनाने वाली कंपनी में काम करते हैं। वह सप्ताह के अंत में पास के एक महाविद्यालय में युवा विकास कार्यक्रम में सम्मिलित लोगों को स्वेच्छा से कंप्यूटर से संबधित कौशल भी सिखाते हैं।

क्या बात है अनु, हमारे आस-पास के लोग कितने प्रकार के कार्य करते हैं!

आइए पता लगाएँ

अनु और मोहन की कहानी में भिन्न-भिन्न पात्र कौन-कौन से कार्य कर रहे थे? नीचे दी गई तालिका में लिखिए—

कहानी के पात्र	वे कौन-कौन से कार्य करते हैं?	

उपरोक्त विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को दो समूहों या श्रेणियों में विभाजित किया गया है— आर्थिक गतिविधियाँ और गैर-आर्थिक गतिविधियाँ।

आर्थिक गतिविधियाँ वे हैं जिनमें अर्थ (द्रव्य, मुद्रा) सम्मिलित होता है अथवा जिन्हें अर्थोपार्जन के लिए किया जाता है अथवा जो सम्मिलित पक्षों के लिए **वस्तु के नकद मूल्य** से संबंधित होती हैं। उदाहरण के लिए, व्यापारी **बाजार** में स्कूल बैग बेचते हैं, किसान अपनी उपज बाजार में बेचते हैं, वकील अभियोजन का **शुल्क** लेते हैं, ट्रक चालक वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं, श्रमिक कार बनाने वाले कारखाने में काम करते हैं, इत्यादि।

वस्तु का नकद मूल्य
किसी वस्तु का व्यक्ति द्वारा तय किया गया मौद्रिक मूल्य जो कि उस वस्तु से मिलने वाले लाभ पर आधारित होता है।

बाजार— वह स्थान जहाँ व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं का लेन-देन करते हैं। व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं के बदले अन्य वस्तुओं का लेन-देन कर सकते हैं, किंतु अधिकांशतः बाजारों में इनका लेन-देन धनराशि के लिए किया जाता है।

शुल्क— किसी व्यावसायिक परामर्श या सेवाओं के लिए एक व्यक्ति या संगठन को किया गया भुगतान; उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक या वकील को दिया गया शुल्क।

गैर-आर्थिक गतिविधियाँ वे हैं जिनमें आय अथवा संपत्ति अर्जित नहीं होती है, बल्कि इन्हें कृतज्ञता, स्नेह, सेवा और आदर जैसी अनुभूतियों के साथ किया जाता है। उदाहरण के लिए, अभिभावकों द्वारा परिवार के लिए भोजन बनाना या बच्चों की उनके

बाएँ से दाएँ, ऊपर से नीचे—

बाजार में एक व्यापारी स्कूल बैग की बिक्री करते हुए

बाजार में अपनी उपज बेचते हुए किसान

केस पर बहस करती हुई वकील

ट्रक चालक एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान ले जाते हुए

मोटरगाड़ी के कारखाने में एक श्रमिक

विद्यालय के कार्य में सहायता करना, युवाओं द्वारा दादा-दादी, नाना-नानी आदि की सेवा करना, परिवार के सदस्यों द्वारा घर के नवीनीकरण में सहायता करना आदि।

बाएँ से दाएँ—

परिवार के लिए भोजन बनाते हुए अभिभावक

बच्चों को उनके विद्यालय के कार्य में सहायता करती माँ

स्वच्छता अभियान - छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के कोटाभर्री गाँव में 104 वर्षीय कुंवर बाई ने अपनी बकरियाँ बेच कर स्वच्छता अभियान के तहत अपने घर में शौचालय बनवाया, यह जागरूकता की मिसाल है। जिन्हें भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने चरणस्पर्श कर सम्मानित किया।

कुंवर बाई

बाएँ से दाएँ—

दादी का सहयोग करती युवती

घर के नवीनीकरण में सहायता करते हुए परिवार के सदस्य

आइए पता लगाएँ

पृष्ठ 189 पर दी गई तालिका में क्या आपने तीसरा रिक्त स्तंभ देखा? इस स्तंभ में 'आर्थिक या गैर-आर्थिक गतिविधि' को अंकित कीजिए। अब इन्हें गतिविधि के प्रकार के अनुसार भी वर्गीकृत कीजिए।

अनु और मोहन की कहानी में, गीता चाची, जो वायु सेना में विमान चालक हैं, उनको **वेतन** मिलता है। वह देश की सेवा करती हैं और यह एक आर्थिक गतिविधि में सम्मिलित है। अनु का भाई रोहन, एक सॉफ्टवेयर कंपनी में कार्य करता है और उसे भी इस कार्य के लिए वेतन मिलता है। सप्ताह के अंत में वह पास के महाविद्यालय के युवा विकास कार्यक्रम में स्वेच्छा से काम करता है। यहाँ वह युवा विद्यार्थियों को कंप्यूटर संबधित कौशल सिखाता है। कुंवर बाई का स्वच्छता अभियान जो एक गैर-आर्थिक गतिविधि है।

वेतन
एक नियोक्ता द्वारा कर्मचारी को नियमित रूप से प्रतिमाह किया जाने वाला नियत भुगतान।

आइए विचार करें

- मोहन के दादाजी आस-पास के बच्चों को स्वैच्छिक रूप से नि:शुल्क पढ़ाते हैं। यह आर्थिक गतिविधि है या गैर-आर्थिक? यह गतिविधि आपके अध्यापक द्वारा विद्यालय में पढ़ाए जाने से किस प्रकार भिन्न है? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
- आप और आपके परिवार के लिए कौन-सी गैर-आर्थिक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं? ये क्यों बहुमूल्य हैं?

आर्थिक गतिविधियों के प्रकार

काव्या अपनी चाची के घर कमलापुर गाँव जाने के लिए बहुत उत्साहित थी। रास्ते में उसने देखा कि गाँव के पास एक राजमार्ग (हाइवे) बनाया जा रहा था और निर्माण स्थल पर बहुत चहल-पहल थी। वहाँ तकनीशियन खोदने वाली और बुलडोजर जैसी बड़ी मशीनें चला रहे थे।

इस राजमार्ग के बनने से अब निकट के नगर तक जाने का समय पाँच घंटे से घटकर केवल दो घंटे हो जाएगा। काव्या ने सोचा कि जब यह राजमार्ग बन जाएगा तो वह अपनी चाची के घर बार-बार जा सकेगी। फिर प्रसन्न होकर काव्या अपनी चाची को बधाई देने और उनके द्वारा बनाई हुई स्वादिष्ट जलेबी खाने चल पड़ी। काव्या के चाचाजी उसी समय काम से लौटे थे। वह निर्माण कंपनी में तकनीशियन हैं और बुलडोजर चलाते हैं। उन्हें अपनी सेवाओं के बदले प्रतिमाह वेतन मिलता है।

अगले दिन, काव्या की चाची सुबह उठीं और अपना घरेलू काम निपटाने के बाद काम पर चली गईं। वह अपने गाँव के डाकघर में कार्यरत हैं और उन्हें प्रतिमाह वेतन मिलता है। कार्यालय के बाद वह शाम को ऑनलाइन कक्षाएँ लेती हैं, जिसमें वह विद्यार्थियों को

विद्यालय की परीक्षा की तैयारी कराती हैं। वह इन कक्षाओं के लिए साप्ताहिक शुल्क लेती हैं।

सप्ताह के अंत में, काव्या अपनी चाची के साथ स्वादिष्ट आम खाने के लिए आम के बगीचे में गई। वहाँ उसे खेत में काम करने वाला एक श्रमिक, रामू मिला जो ट्रैक्टर से खेत को जोत रहा था। इस कार्य के लिए उसे दैनिक **मजदूरी** के बदले कुछ धनराशि मिलती है और शेष भुगतान आमों के रूप में मिलता है। इस कार्य के लिए आम के रूप में जो भुगतान हुआ, उसे **वस्तु के रूप में भुगतान** कहा जाता है।

मजदूरी
एक विशिष्ट समय अवधि के लिए नियोक्ता द्वारा श्रमिक को किया गया भुगतान।

वस्तु के रूप में भुगतान
किए गए कार्य के लिए प्राप्त किया गया गैर-मौद्रिक भुगतान।

आइए विचार करें

क्या आप अपने घर से विद्यालय जाने के मार्ग में लोगों द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों का स्मरण कर सकते हैं? आपके विचार से इन लोगों को किस प्रकार भुगतान किया जाता है?

जैसा कि अब हम समझते हैं कि आर्थिक गतिविधियाँ वे होती हैं जिनमें मौद्रिक मूल्य सम्मिलित है। आर्थिक गतिविधियों से किसी वस्तु के अन्य रूपों में रूपांतरण की प्रक्रिया के प्रत्येक चरण पर उसके मूल्य में भी वृद्धि होती है। इसे मूल्य संवर्धन कहते हैं।

आइए, काव्या के पिता, राजेश के उदाहरण से इसे समझें।

राजेश एक बढ़ई हैं जो विभिन्न प्रकार की लकड़ी के फर्नीचर को बनाने के लिए समीप के बाजार से ₹600 की लकड़ी खरीदते हैं।

वे लकड़ी का फर्नीचर बनाने के लिए विशेष प्रकार के उपकरणों का उपयोग करते हैं।

राजेश बाजार में प्रत्येक कुर्सी को ₹1000 में बेचते हैं।

कुर्सी बनाने के लिए लकड़ी की लागत ₹600 है, तो शेष राशि ₹400 (₹1000–₹600) किसके लिए है? यह राजेश के कौशल, समय और प्रयास का मौद्रिक मूल्य है जो उन्हें उस कुर्सी को बनाने में लगा था। राजेश ने लकड़ी से फर्नीचर बनाकर लकड़ी का मूल्य संवर्धन किया। लकड़ी खरीदने से लेकर कुर्सी के बेचने तक की गतिविधियों में भुगतान सम्मिलित है। इसलिए यह सब आर्थिक गतिविधियों के भाग हैं।

आइए पता लगाएँ

आपके विचार से जो गतिविधियाँ या व्यवसाय मौद्रिक मूल्य का सृजन करते हैं, उनके सामने सही (✓) का निशान लगाइए।

क्या आप अंतिम दो रिक्त पंक्तियों में दो गतिविधियाँ और उनके मूल्य सृजन से संबंधित धनराशि के दो उदाहरण जोड़ सकते हैं?

क्र.सं.	गतिविधि/व्यवसाय	मूल्य सृजन संबंधी धनराशि के उदाहरण
1.	बेकर	
2.	दर्जी	
3.	किसान द्वारा अपने ट्रैक्टर की मरम्मत	
4.	चिकित्सक	
5.	परिवार के लिए भोजन बनाने वाले अभिभावक	
6.	वैज्ञानिक	
7.	बीमार दादा-दादी एवं नाना-नानी की देखभाल करने वाला व्यक्ति	
8.		
9.		

गैर-आर्थिक गतिविधियों का महत्व

गैर-आर्थिक गतिविधियों में धनराशि सम्मिलित नहीं होती है, फिर भी इनसे उत्पन्न मूल्य हमारे जीवन में महत्व रखते हैं।

सेवा

हमें मंदिरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों और गिरजाघरों आदि अनेक स्थानों पर सेवा कार्य देखने का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए, गुरुद्वारे में दर्शन हेतु आने वाले सभी श्रद्धालुओं को 'लंगर' या सामुदायिक रसोई में नि:शुल्क भोजन कराया जाता है। इन सेवा कार्यों से

हमें संतुष्टि और कृतज्ञता की अनुभूति होती है और ये सेवा कार्य नि:स्वार्थ भाव से समाज में योगदान देते हैं।

मंदिर में भक्तों में प्रसाद वितरण

स्वर्ण मंदिर में लंगर

स्वच्छ भारत अभियान

वन महोत्सव

सामुदायिक सहभागिता का महत्व

स्वच्छ भारत अभियान अपने आस-पास सफाई रखने के लिए सभी भारतीय नागरिकों द्वारा सामूहिक प्रयासों पर आधारित है। हम लोग अपने घरों और आस-पास के स्थानों को साफ रखते हैं। लोग मिल-जुलकर गलियों, सड़कों, पार्कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों या सामुदायिक क्षेत्रों को भी साफ रखते हैं। इन सामूहिक प्रयासों से घर, आस-पास के क्षेत्र, समाज और राष्ट्र स्वच्छ रहता है।

सामूहिक सामुदायिक सहभागिता का एक और उदाहरण भारत में वृक्षों के महत्व और वन संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए वन महोत्सव का आयोजन है। इस प्रयास से वृक्षारोपण अभियानों के लिए समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाया जाता है।

आइए विचार करें

- भारत के अनेक समुदायों में सामुदायिक सहभागिता की समान परंपराएँ हैं। क्या आप अपने क्षेत्र की कुछ ऐसी परंपराओं के बारे में बता सकते हैं?
- हम भारत में कई त्योहार मनाते हैं। इन त्योहारों के अवसर पर लोग मिलकर अनेक गतिविधियाँ करते हैं। वे मिल-जुलकर स्थान की सजावट करते हैं और व्यंजनों को बनाते हैं। क्या ये गैर-आर्थिक गतिविधियाँ हैं? आपके विचार से इनमें क्या जीवन-मूल्य समाहित हैं।
- क्या आप उन सामुदायिक कार्यक्रमों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें आपके विद्यालय या आस-पास आयोजित किया गया हो? इन कार्यक्रमों में आपने क्या देखा?

आगे बढ़ने से पहले...

→ इस अध्याय में हमने आर्थिक और गैर-आर्थिक गतिविधियों के बारे में सीखा।

→ हमने आर्थिक गतिविधियों से उत्पन्न मूल्य संवर्धन के बारे में भी सीखा।

→ हमने समझा कि गैर-आर्थिक गतिविधियाँ किस प्रकार सामाजिक कल्याण एवं निजी कल्याण में योगदान देती हैं और जीवन की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाती हैं।

प्रश्न, गतिविधियाँ और परियोजनाएँ

1. आर्थिक गतिविधियाँ किस प्रकार गैर-आर्थिक गतिविधियों से भिन्न होती हैं?
2. लोग किस प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में सम्मिलित होते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. सामुदायिक सेवा गतिविधियों में लगे लोग अत्यधिक सम्माननीय हैं। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।
4. विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए लोगों को किस-किस प्रकार से पारिश्रमिक दिया जाता है? उदाहरण दीजिए।

नूडल्स

*नोट्स (Notes) और डूडल्स (Doodles) को मिलाकर बना शब्द-संक्षेप।
इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

हमारे आस-पास की आर्थिक गतिविधियाँ

अध्याय 14

आर्थिक गतिविधि से ही समृद्धि आती है, इसका अभाव भौतिक तनाव देता है। सार्थक आर्थिक गतिविधि का अभाव वर्तमान समृद्धि और भावी प्रगति में बाधक होता है।

— कौटिल्य (अर्थशास्त्र)

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *आर्थिक गतिविधियों को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?*
2. *विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को क्षेत्रकों (सेक्टरों) में समूहबद्ध करने का क्या आधार है?*
3. *यह तीन क्षेत्रक (सेक्टर) आपस में किस प्रकार संबंधित हैं?*

0683CH14

परिचय

अध्याय 13 में हमने दो प्रकार की गतिविधियों के बारे में सीखा— आर्थिक और गैर-आर्थिक। जिन गतिविधियों में **मौद्रिक मूल्य** का अर्जन होता है, उन्हें आर्थिक गतिविधियाँ कहते हैं। हमने गैर-आर्थिक गतिविधियों के महत्व के बारे में भी जाना है। इन गतिविधियों को भलीभाँति समझने के लिए इस अध्याय में हम जानेंगे कि इन आर्थिक गतिविधियों को कैसे वर्गीकृत किया जाता है और यह एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं।

मौद्रिक मूल्य
किसी वस्तु का मूल्य जिसे मुद्रा के मूल्य के रूप में मापा जा सकता है।

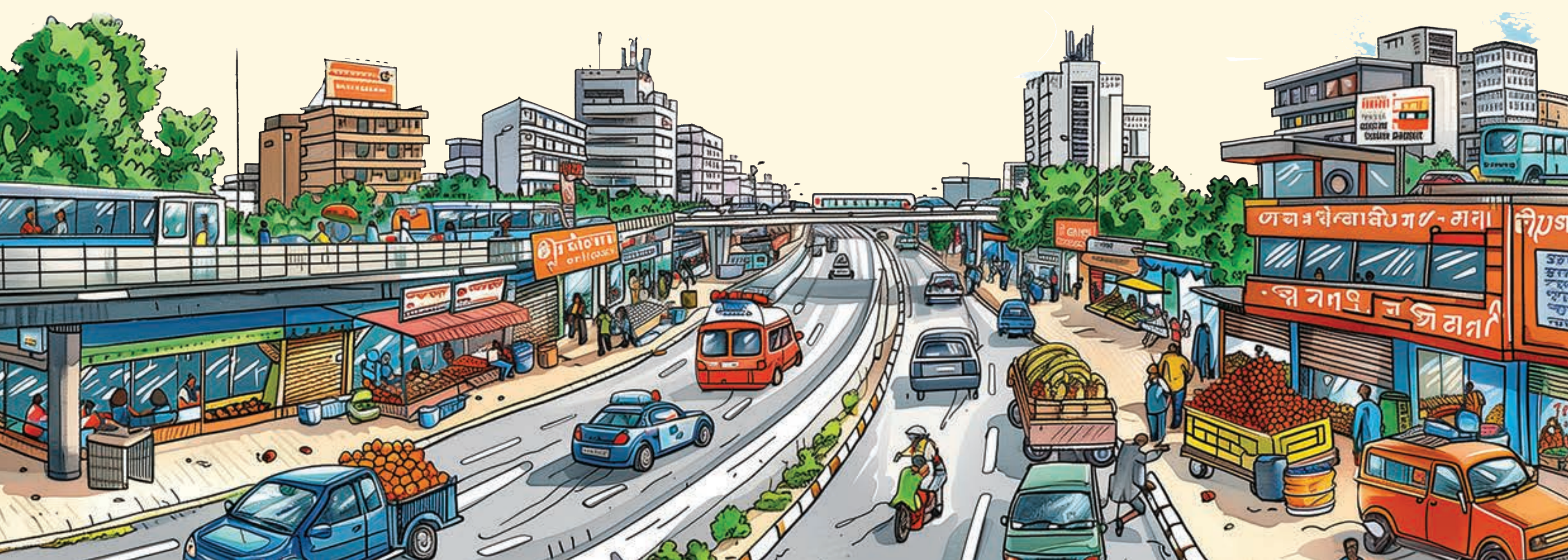

बीते दशकों में आर्थिक गतिविधियों की संख्या तीव्र गति से बढ़ी है। उदाहरण के लिए, पहले के समय में लोग कृषि, पशुपालन, औजारों का निर्माण, मिट्टी के बर्तन बनाना और कपड़े बुनना इत्यादि गतिविधियों में सम्मिलित होते थे। जैसे-जैसे समाज में प्रगति हुई, उन आर्थिक गतिविधियों में भी वृद्धि हुई जिनके माध्यम से लोग अपनी आजीविका चलाते हैं।

आज अनेक प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ हैं, जैसे – कंप्यूटर, मोबाइल फोन और ड्रोन का निर्माण; बैंक, विद्यालय और होटल में कार्य करना; परिवहन के लिए विभिन्न प्रकार के वाहन चलाना; फर्नीचर तैयार करना; मशीन से कपड़े सिलना; सॉफ्टवेयर बनाना; रेफ्रिजरेटर और वॉशिंग मशीन की मरम्मत करना आदि। इन सभी गतिविधियों के वर्गीकरण से हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि ये कैसे कार्य करती हैं और इनके मध्य क्या संबंध है।

आर्थिक क्षेत्रकों में आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण

कुछ आर्थिक गतिविधियों में समान विशेषताएँ होती हैं और इनके आधार पर इन्हें एक समूह या व्यापक समूह में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन्हें **आर्थिक क्षेत्रक** कहते हैं। प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक तीन प्रकार के मुख्य आर्थिक क्षेत्रक हैं। इन क्षेत्रकों की मुख्य गतिविधियों को पृष्ठ 197 पर दिए गए चित्रों में दिखाया गया है।

आर्थिक क्षेत्रक

व्यापक समूह, जिनमें ऐसी विभिन्न गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जिनसे एक राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में सहायता मिलती है।

(क) प्राथमिक गतिविधियाँ

जिन आर्थिक गतिविधियों में लोग प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं, उन्हें **प्राथमिक गतिविधियाँ** या **प्राथमिक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधियाँ** कहते हैं।

उदाहरण के लिए, कृषि क्षेत्र में अन्न और सब्जियों की खेती, जंगलों से लकड़ी एकत्रित करना, खदानों से कोयला निकालना, मत्स्य पालन से मछलियाँ, कुक्कुट पालन फार्म से अंडे प्राप्त करना आदि सभी प्राथमिक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधियाँ हैं।

प्राथमिक क्षेत्रक — उन गतिविधियों का समूह, जिसमें प्रकृति से सीधे कच्चे माल का निष्कर्षण शामिल होता है, जैसे – कृषि, मत्स्य पालन, वानिकी आदि।

आर्थिक गतिविधियों में आर्थिक क्षेत्रकों का वर्गीकरण

प्राथमिक क्षेत्रक

कृषि

खनन

मछली पकड़ना

कुक्कुट पालन

वानिकी

द्वितीयक क्षेत्रक

निर्माण

विनिर्माण

जल-आपूर्ति

सौर ऊर्जा

विद्युत उत्पादन

तृतीयक क्षेत्रक

स्वास्थ्य देखभाल

व्यापार और उपयोगी सामग्री

संचार

बैंकिंग

परिवहन

कृषि, खनन, मछली पकड़ना, पशु पालन, वानिकी इत्यादि कुछ मुख्य प्राथमिक गतिविधियाँ हैं। नीचे प्राथमिक क्षेत्रकों की विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ दी गई हैं।

ग्रीनहाउस कृषि

खनन

मत्स्य पालन (मात्स्यिकी)

वानिकी

पशु पालन

आइए विचार करें

क्या आप ऐसी प्राथमिक गतिविधियों के बारे में सोच सकते हैं, जिन्हें आपने पहले देखा है? इन गतिविधियों में कौन-से प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग हुआ है? इनमें से दो के नाम बताइए और अपने अनुभवों को सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

1.

2.

(ख) द्वितीयक गतिविधियाँ

ऐसी आर्थिक गतिविधियाँ जिनमें लोग प्राथमिक क्षेत्रक पर आधारित वस्तुओं को रूपांतरित करके अन्य वस्तु का उत्पादन करते हैं, उन्हें **द्वितीयक गतिविधियाँ** या **द्वितीयक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधियाँ** कहते हैं। द्वितीयक क्षेत्रक में भवनों, सड़कों आदि का निर्माण तथा पानी, बिजली, गैस जैसी आवश्यक वस्तुओं को प्रदान करना सम्मिलित है। इसमें उद्योगों तथा उत्पादन इकाइयों में उत्पादों का विनिर्माण भी सम्मिलित है, जिसमें प्राथमिक क्षेत्रक से कच्ची सामग्री को रूपांतरित करके बेचते हैं या स्वयं उपभोग करते हैं। द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरणों में कृषि क्षेत्र से प्राप्त अनाज से मिलों में आटा तैयार करना, मूंगफली से तेल निकालना तथा चाय की पत्तियों से चाय तैयार करना सम्मिलित है। इसी प्रकार जंगल से प्राप्त लकड़ी से फर्नीचर और कागज बनाते हैं, कपास से कपड़े तैयार किए जाते हैं और लौह अयस्क से इस्पात बनता है, जिससे कार, ट्रक इत्यादि जैसे मोटर वाहन बनाए जाते हैं।

द्वितीयक क्षेत्रक उन गतिविधियों का समूह, जिनमें प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त कच्ची सामग्रियों के प्रसंस्करण द्वारा इसे बिक्री या उपभोग हेतु उत्पादों में परिवर्तित करना सम्मिलित है।

मोटर वाहन कारखाना

वस्त्र कारखाना

औषधि कारखाना

फर्नीचर निर्माण इकाई

ध्यान रखें

मोटर वाहन के प्रकार	भारत में 2022 के दौरान उत्पादित इकाइयों की संख्या
यात्री वाहन जैसे – कारें	45 लाख
वाणिज्यिक वाहन जैसे – ट्रक	10.3 लाख
तिपहिया वाहन	8.6 लाख
दोपहिया वाहन	2 करोड़

(स्रोत — सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स, https://www.siam.in/statistics.aspx?mpgid=8&pgidtrail=13)

आइए पता लगाएँ

हमने द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण देखे हैं, क्या आप द्वितीयक क्षेत्रक में दो अन्य आर्थिक गतिविधियों के नाम बता सकते हैं?

1.

2.

तृतीयक क्षेत्रक
उन गतिविधियों का समूह, जिसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्रकों के संपूरक के रूप में इन्हें सहायता प्रदान करने वाली सेवाओं का प्रावधान है, जैसे – परिवहन, बैंकिंग, व्यवसाय प्रबंधन आदि।

(ग) तृतीयक गतिविधियाँ

वे सभी आर्थिक गतिविधियाँ, जो प्राथमिक और द्वितीयक गतिविधियों में सम्मिलित लोगों को सहायता प्रदान करती हैं, उन्हें **तृतीयक गतिविधियाँ** या **तृतीयक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधियाँ** कहते हैं। इनमें ऐसी सेवाएँ सम्मिलित हैं, जिन्हें देखा नहीं जा सकता लेकिन यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए, एक ट्रक चालक अनाज और सब्जियों को खेत से उद्योग या बाजार में ले जाता है।

फल या सब्जियों के विक्रेता कृषि उपज को घरेलू उपभोक्ताओं को बेचते हैं। इसी प्रकार चिकित्सक, नर्स, शिक्षक, अधिवक्ता और विमान चालक अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं, जहाँ लोगों को इनकी आवश्यकता होती है। तकनीशियन इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं जैसे – मोबाइल फोन और टेलीविजन इत्यादि की भी मरम्मत और सुधार का कार्य करते हैं। मैकेनिक, जो कार तथा ट्रैक्टर जैसे वाहनों की मरम्मत करते हैं और बिजली मिस्त्री (इलेक्ट्रिशियन), जो बिजली की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं — इनकी सेवाएँ

हमारे जीवन को सरल बनाती हैं। इसी प्रकार मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से संचार सेवाएँ, सॉफ्टवेयर तैयार करना और होटलों, रेस्तरां, बैंक, विद्यालय, चिकित्सालय, हवाई अड्डे, दुकानें, **गोदाम (वेयरहाउस)** इत्यादि, यह सभी तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के उदाहरण हैं। इस क्षेत्रक को **सेवा क्षेत्रक** भी कहते हैं।

गोदाम (वेयरहाउस)
विशाल इमारतें जिसमें उत्पादों को बेचने, उपयोग करने या दुकानों में किराए पर देने से पहले रखा जाता है।

सॉफ्टवेयर तैयार करना

रेस्तरां में सेवाएँ

हवाई अड्डों पर सेवाएँ

खुदरा (रिटेल) भंडार

क्षेत्रकों में परस्पर निर्भरता

तीनों प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ या आर्थिक क्षेत्रक, प्राकृतिक कच्चे माल को अंतिम उत्पाद में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आइए, गुजरात के आणंद जिले में एक गाँव का काल्पनिक भ्रमण करते हैं और एक रोचक उदाहरण का अध्ययन करते हैं, जहाँ हम यह समझेंगे कि ये तीनों क्षेत्रक कैसे परस्पर संबंधित हैं तथा एक-दूसरे को सहयोग करते हैं।

डेयरी
एक ऐसा स्थान जहाँ दूध को एकत्रित तथा उसका भंडारण किया जाता है।

बिचौलिए
व्यक्ति, जो उत्पादकों से सामान खरीदते हैं और उपभोक्ताओं को बेचते हैं। बिचौलिए इस सेवा के लिए शुल्क लेते हैं।

डेयरी सहकारिता — खेत से थाली तक

इन दिनों गुजरात के किसान प्रात:काल दूध की बाल्टियाँ टकराते और अपने सबसे अच्छे मित्रों — गायों या भैंसों के खुशी में रँभाने की आवाज सुनते हैं। किसानों और उनके परिवारों के जीवन में गायों का एक विशेष स्थान है। किसान गायों का दूध दुहते हैं और अपने आस-पास की **डेयरी** में बेचते हैं। माह के अंत में उन्हें दूध की गुणवत्ता और तौल के आधार पर इसका भुगतान किया जाता है, हालाँकि 50 साल पहले ऐसी स्थिति नहीं थी।

यह आणंद मिल्क यूनियन लिमिटेड (अमूल) नाम के एक दुग्ध सहकारी संघ की रोचक कहानी है। 1940 के आरंभ में आणंद जिले के किसान अपना दूध आस-पास के गाँवों में बेचते थे।

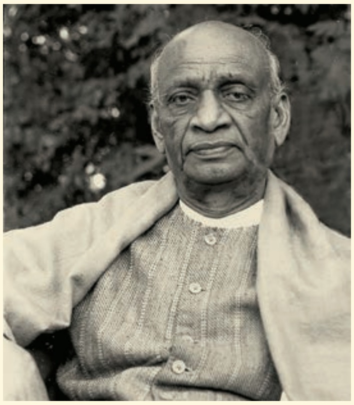

वे चिलचिलाती गरमी में दूध बेचने के लिए नजदीक के गाँव तक साइकिल से या पैदल जाया करते थे। आप जानते हैं कि बहुत गर्म मौसम में दूध जल्दी खराब हो जाता है या फट जाता है। किसानों को दूध खराब होने से पहले जल्द से जल्द बेचना पड़ता था। उन्हें कठिन परिश्रम करने के बाद भी बेहद कम आमदनी होती थी। इसलिए उन्हें **बिचौलिए** पर निर्भर रहना पड़ता था, जो किसानों से बहुत कम कीमत पर अधिक मात्रा में दूध खरीदते और इसे बाजार में बेच देते थे। कई बार किसान बिचौलियों के कारण ठगा या उत्पीड़ित अनुभव करते थे।

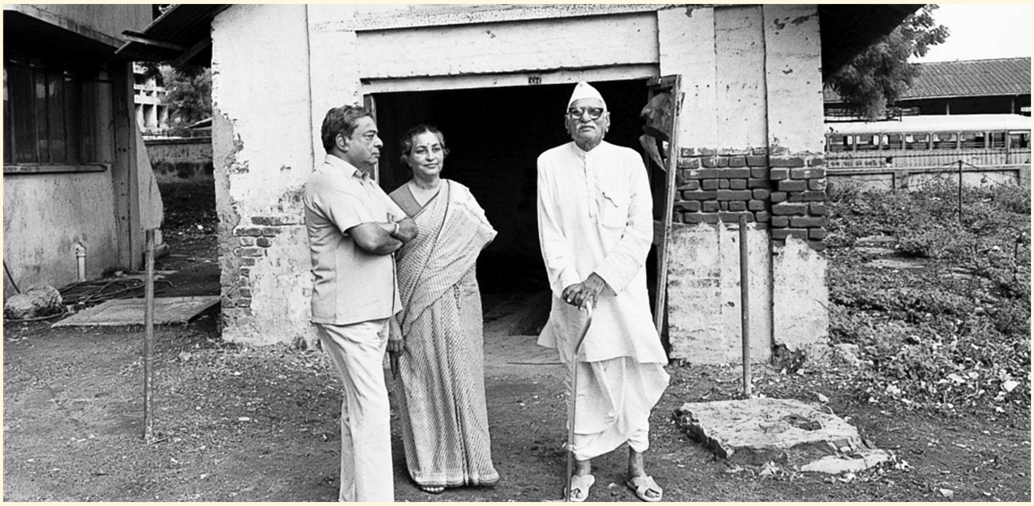

वर्गीज कुरियन (बाएँ) तथा त्रिभुवनदास पटेल (दाएँ)

एक दिन सभी किसान मिलकर देश के एक बड़े नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल के पास अपनी समस्याएँ लेकर मिलने गए। उन्होंने स्वेच्छा से कार्य करने और बिचौलियों पर निर्भरता को रोकने के लिए एक **सहकारी संगठन** बनाने का परामर्श दिया। एक सहकारी संगठन की तरह किसान एक समूह के रूप में दूध की बिक्री और खरीद कर सकते थे तथा दूध के संग्रह, प्रसंस्करण और वितरण के लिए इस पूरी प्रक्रिया को अच्छी तरह संभाल सकते थे। किसानों ने सरदार पटेल का परामर्श माना।

अमूल की स्थापना 1946 में श्री त्रिभुवन दास पटेल (अधिवक्ता और स्वतंत्रता सेनानी) तथा डॉ. वर्गीज कुरियन (एक इंजीनियर, जो मुंबई के एक डेयरी कारखाने में काम करते थे) के नेतृत्व में की गई।

इस प्रयास ने किसानों, विशेषकर महिलाओं को एकजुट किया तथा दूध के उत्पादन और बिक्री पर उनका नियंत्रण बढ़ा। दूध उत्पादकों ने सभी मामलों पर सामूहिक रूप से निर्णय लिए, जैसे– दूध का उत्पादन, **पाश्चुरीकरण** और बिक्री। इन कार्यों को सभी ने आपस में साझा किया जिसके कारण इन सभी की आमदनी बढ़ी। उन्हें अब बिचौलियों की जरूरत नहीं थी और वे एक बड़ा परिवार बन गए।

जैसे-जैसे किसानों ने सहकारी संगठन के लाभों को देखा, वे साथ में जुड़ते चले गए। जब दूध की मात्रा अधिक हो गई, तब किसानों ने इससे अन्य उत्पाद भी बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने आणंद में एक दुग्ध प्रसंस्करण **कारखाना** स्थापित किया तथा मक्खन और दूध का पाउडर बनाना आरंभ किया।

वर्तमान में इस सहकारी संगठन के पास अनेक दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र और कारखाने हैं, जो भारत के सभी भागों में अनेक प्रकार के उत्पाद तैयार करते हैं। इसके बाद इन

सहकारी संगठन
व्यक्तियों का एक समूह जब स्वेच्छा से एक साथ आकर औपचारिक तरीके से अपनी आर्थिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। समूह के सभी सदस्य सहकारी संगठन के स्वामी होते हैं और उनके द्वारा सामूहिक रूप से निर्णय लिए जाते हैं।

पाश्चुरीकरण
ऐसी प्रक्रिया जिसमें दूध को एक निश्चित तापमान तक गर्म किया जाता है, ताकि इसके हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करके इसे संरक्षित किया जा सके।

कारखाना
भवन या भवनों का समूह, जहाँ वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, या विभिन्न घटकों को एक साथ मिलाकर अंतिम उत्पाद तैयार किया जाता है।

खुदरा
माल की बिक्री को थोड़ी मात्रा में अंतिम उपभोगकर्ताओं तक पहुँचाना और जिसका उद्देश्य माल का पुनर्विक्रय नहीं है।

निर्यात
वस्तुएँ और सेवाएँ, जो किसी एक देश में उत्पादित होती हैं और इन्हें किसी अन्य देश के क्रेताओं या उपभोक्ताओं को बेचा जाता है।

उत्पादों का विपणन किया जाता है और पूरे देश की छोटी और बड़ी **खुदरा** दुकानों में इनकी बिक्री होती है। वास्तव में ये विश्व के अनेक देशों में अपने उत्पादों का **निर्यात** भी करते हैं। है न आश्चर्य की बात? क्या आप इनमें से कुछ का नाम बता सकते हैं?

इस रोचक कहानी में इस सहकारी संगठन के किसान अपनी गायों को दूध बेचने के लिए दुहते हैं। इस प्रकार की आर्थिक गतिविधि को प्राथमिक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधि कहते हैं क्योंकि दुग्ध उत्पादन एक प्राकृतिक स्रोत (गाय या मवेशी) से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया जाता है।

इसके बाद दूध को प्रसंस्कृत किया जाता है और कारखानों में इसे एक रूप (तरल) से अन्य खाद्य रूपों, जैसे – दूध का पाउडर, घी, पनीर, मक्खन और अनेक अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। इन आर्थिक गतिविधियों को द्वितीयक क्षेत्रक की आर्थिक गतिविधियाँ कहते हैं।

अमूल अपने द्वारा निर्मित सभी उत्पादों का क्या करता है? यह इन्हें विभिन्न स्थानों पर बेचता है। अमूल अपने उत्पादों को बिक्री के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने हेतु ट्रकों व लॉरियों, रेल, वायुयान एवं परिवहन का प्रयोग करता है। इसके द्वारा खुदरा भंडारों की स्थापना की जाती है जिससे गुजरात एवं भारत के अन्य राज्यों के कस्बों, नगरों और गाँवों की दुकानों में दूध तथा दूध के उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। यहाँ परिवहन, विपणन और खुदरा (फुटकर) विक्रेता तृतीयक गतिविधि में सम्मिलित हैं।

ध्यान रखें

अमूल के समान कर्नाटक से नंदिनी, दिल्ली – राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से मदर डेयरी, तमिलनाडु से आविन, आंध्र प्रदेश से विजया, नागालैंड से केवी, बिहार से सुधा, पंजाब से वरका आदि

नाम से अन्य अनेक सहकारी दुग्ध संगठन हैं। क्या आप अपने आस-पास के किसी एक सहकारी संगठन का नाम बता सकते हैं जिसने किसानों, अशक्त लोगों और महिलाओं को एकत्रित करके उनके जीवन को समृद्ध किया हो?

नीचे दिए गए चित्रों के माध्यम से, आइए जानें कि आपकी पाठ्यपुस्तकें कैसे बनती हैं। यह चित्र दर्शाते हैं कि कैसे लुगदी (पेड़ के काष्ठीय रेशे) को कागज और उसके बाद इस कागज पर मुद्रण कर इसे पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तित करते हैं।

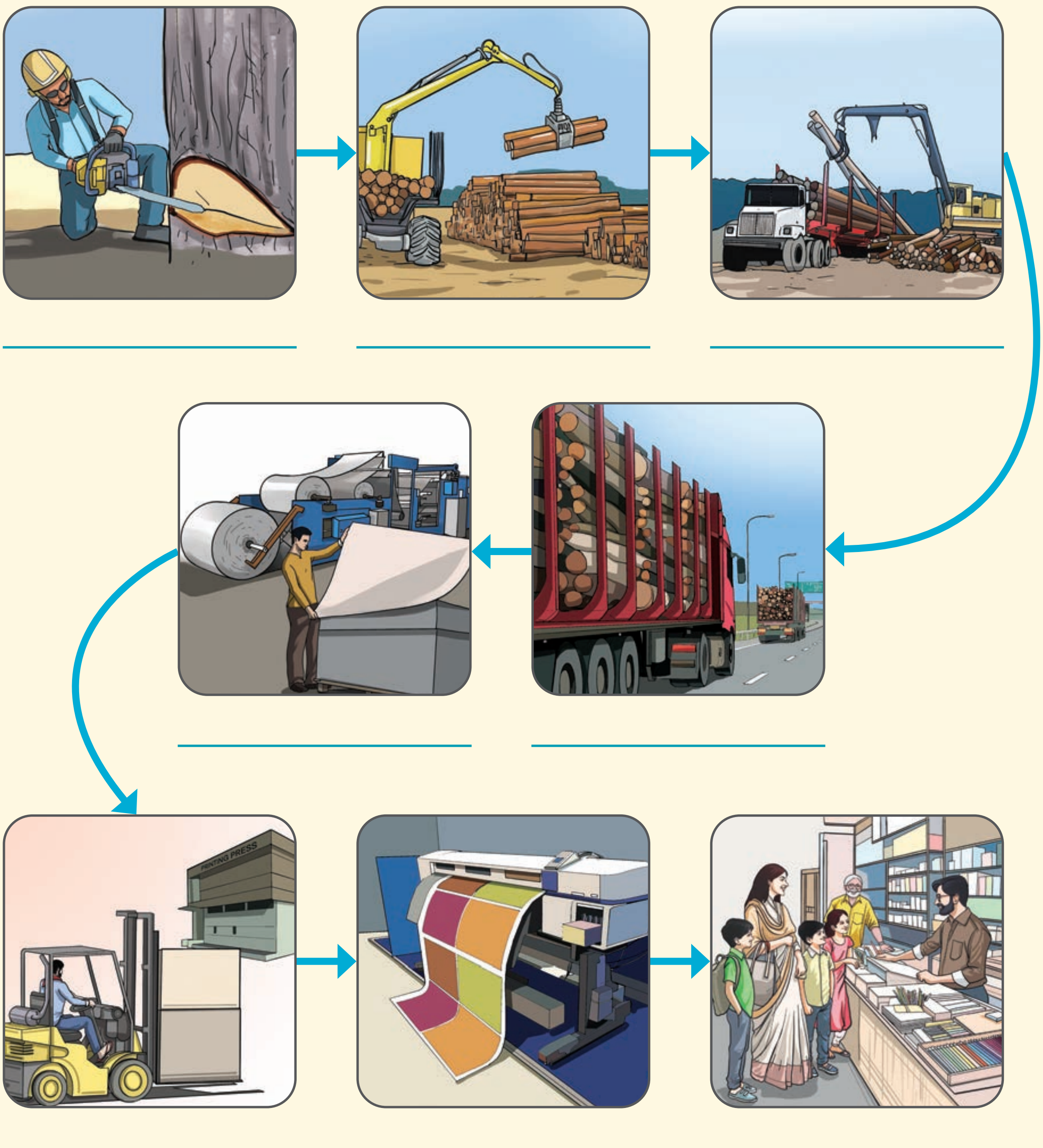

चित्र 14.1

पेड़ों से लुगदी निकालने से लेकर अंतत: पाठ्यपुस्तकें तैयार करने तक की इस प्रक्रिया की कोई भी गतिविधि संभव नहीं होती, अगर यह तीनों क्षेत्रक एक साथ कार्य नहीं करते।

आइए विचार करें

पृष्ठ 209 पर चित्र 14.1 में प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को देखिए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

आइए पता लगाएँ

पृष्ठ 209 पर दिए गए चित्र 14.1 में दर्शाए गए कार्यों को क्षेत्रकों में वर्गीकृत कीजिए—

1. प्राथमिक क्षेत्रक
2. द्वितीयक क्षेत्रक
3. तृतीयक क्षेत्रक

ध्यान रखें

इन दिनों, प्रयोग किए हुए कागज को पुनर्चक्रण (रिसाइकिलिंग) कर नया कागज बनाया जाता है। केवल एक टन कागज का पुनर्चक्रण (रिसाइकिलिंग) करने से 17 पेड़ों एवं 2.5 घन मीटर लैंडफिल स्थान की बचत की जा सकती है, जहाँ अपशिष्ट को डाला जाता है। पेड़ों को काटकर कागज के नए उत्पाद बनाने की जगह पुनर्चक्रित किए गए कागज का उपयोग करने से 70 प्रतिशत ऊर्जा और पानी की बचत होती है।

आइए पता लगाएँ

अपने आस-पास की आर्थिक गतिविधियों की एक सूची बनाइए और प्राथमिक, द्वितीयक या तृतीयक गतिविधियों के रूप में उन्हें वर्गीकृत कीजिए। इसके उपरांत तीर लगाकर दर्शाइए कि वे एक-दूसरे से किस प्रकार संबंधित और परस्पर आश्रित हैं; यदि इनमें से किसी एक गतिविधि का अंत हो जाता है, तो क्या होगा?

आगे बढ़ने से पहले...

- इस अध्याय में हमने आर्थिक गतिविधियों के तीन क्षेत्रकों के बारे में सीखा है।
- विभिन्न उदाहरणों और चित्रों से तीनों प्रकार की आर्थिक गतिविधियों या क्षेत्रकों — प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक की भिन्नता और उनकी परस्पर निर्भरता को समझने में सहायता मिली है।

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

1. प्राथमिक क्षेत्रक क्या है? यह द्वितीयक क्षेत्रक से किस प्रकार भिन्न है? दो उदाहरण दीजिए।
2. द्वितीयक क्षेत्रक किस प्रकार से तृतीयक क्षेत्रक पर निर्भर है? उदाहरणों द्वारा समझाइए।
3. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों के बीच परस्पर निर्भरता का एक उदाहरण दीजिए। इसको प्रवाह चित्र (फ्लोचार्ट) का प्रयोग करते हुए समझाइए।

नूडल्स

अध्याय 15

सामान्य चेतना

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. यातायात नियमों का पालन करना क्यों आवश्यक हैं?

2. जल भंडारण क्या है?

J8JZ6S

दुर्घटना से देर भली

आपने सड़क के किनारे बोर्ड पर पढ़ा होगा, 'दुर्घटना से देर भली', 'सड़क पर बाएँ चलें', 'घर पर कोई आपका इंतज़ार कर रहा है', 'सीमित वेग सुरक्षित जीवन', 'यातायात के नियमों का पालन करें।' 'दो पहिया दो सवारी', 'वाहन आपका सड़क आपकी', 'यातायात आपका सुरक्षा आपकी।' आपको इन नारों का अर्थ भी मालूम होगा।

विद्यालय जाते समय आपने परिवहन के विभिन्न साधनों जैसे साइकिल, रिक्शा, स्कूटर, मोटर साइकिल या कार, बस, ट्रक आदि को सड़क पर चलते देखा होगा। शहरों में वाहनों की अधिकता ने आवागमन को कठिन बना दिया है।

क्या आप शहर या बाजार की व्यस्त सड़क पर कभी गए हैं? आपने देखा होगा कि कई जगह पर पहुँचने के लिए घंटों भीड़ में खड़ा रहना पड़ता है। सड़क पर भीड़-भाड़, गलत ढंग से वाहनों को सड़क पर रखने, भवन निर्माण या अन्य सामग्रियों का सड़क पर बिखरे रहना, आवारा मवेशियों का सड़क पर घूमना, वाहनों की गति पर नियंत्रण का न होना, पहुँचने के लिए पास के रास्ते का चुनाव करना भले ही वह सड़क की गलत दिशा हो, ये सारी बातें अक्सर गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं।

यातायात के इस दबाव को कम करने के लिए और सड़क पर चलने के लिए कुछ नियम बनाए गए हैं- जैसे सड़क पर हमेशा बाएँ तरफ चलिए। यदि आप गलत दिशा की ओर चलेंगे तो स्वयं समझ जाएँगे कि चलने में असुविधा हो रही है। सड़क यातायात के इन नियमों के संबंध में जानकारी देने के लिए सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया जाता है। यातायात के नियमों का पालन करने से दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

सड़क सुरक्षा सप्ताह क्या है?

सड़क पर सबसे छोटा वाहन आपका दुपहिया वाहन है। दुर्घटना में सबसे अधिक क्षति दुपहिया वाहन एवं उसके चालकों को ही उठानी पड़ती है। दुपहिया होने के कारण असंतुलित होने वाला वाहन भी यही है। इसलिए वाहन चलाते समय ध्यान रखें कि -

1. आवश्यकता से अधिक रफ्तार में मत चलिए। सड़क की हालत देखते हुए नियंत्रित रफ्तार में चलिए। कहीं ऐसा न हो कि आपकी तेज़ रफ्तार ही आपके प्राण ले बैठे।

2. दुपहिया वाहन चालक एवं पीछे बैठनें वाला व्यक्ति दोनों अनिवार्यतः हेल्मेट का उपयोग करें।
3. किसी गाड़ी या कार से आगे बढ़ने की कोशिश मत कीजिए। जहाँ ओव्हरटेक की मनाही हो वहाँ कभी ओव्हरटेक मत करिए।
4. हर तिराहे-चौराहे, मोड़ और उतार पर धीमी गति से आगे बढ़िए, ऐसी जगह पर ट्रैफिक को इशारा देना न भूलिए। जहाँ ट्रैफिकमैन हो वहाँ उसके इशारे से चलिए।
5. पैदल यात्री जहाँ से सड़क पार कर रहे हों वहाँ गाड़ी रोककर उन्हें सड़क पार करने दीजिए।
6. सड़क के बाएँ किनारे पर चलिए। सड़क की सेंटर लाइन को कभी भी पार न करें। उसे हमेशा अपनी दाहिनी तरफ रखिए।

शहरों में सड़क पार करने से पहले रूकिए दाहिने देखिए, बाएँ देखिए दाहिने देखते हुए आधी सड़क और बाएँ देखते हुए आधी सड़क पार करनी चाहिए।

शहरों में सड़क पार करते समय यातायात को सुगम बनाने के लिए सिग्नल्स (आने जाने का रास्ता) की व्यवस्था होती है। हरा प्रकाशवाला सिग्नल हमें आगे चलने का संकेत देता है। सड़क के दोनों किनारों पर बने फुटपाथ पर चलना ज्यादा सुविधाजनक व आसान होता है। संकेत मिलते ही सड़क पार करने हेतु सड़क पर बनी सफेद पट्टियाँ होती हैं, जिन्हें हम जेब्रा क्रासिंग कहते हैं। जेब्रा क्रासिंग पैदल चलने वालों के लिए निर्धारित होती हैं। सड़क पर बने यातायात के विभिन्न संकेत न केवल हमारी सुविधा के लिए होते हैं, बल्कि हमारी यात्रा को सुरक्षित व सुखद बनाने में हमारी सहायता करते हैं।

आपके विद्यालय के स्काउट गाईड के विद्यार्थी समय-समय पर यातायात नियंत्रण में सहयोग प्रदान करते है। चर्चा कर ज्ञात करें कि वे किस प्रकार यातायात विभाग को सहयोग करते हैं।

गतिविधि - दिये गए सड़क संकेतों को ध्यान से देखिए। सड़क पर बने संकेतों को आपने कभी देखा है यदि हाँ तो वह कौन-कौन से है ।

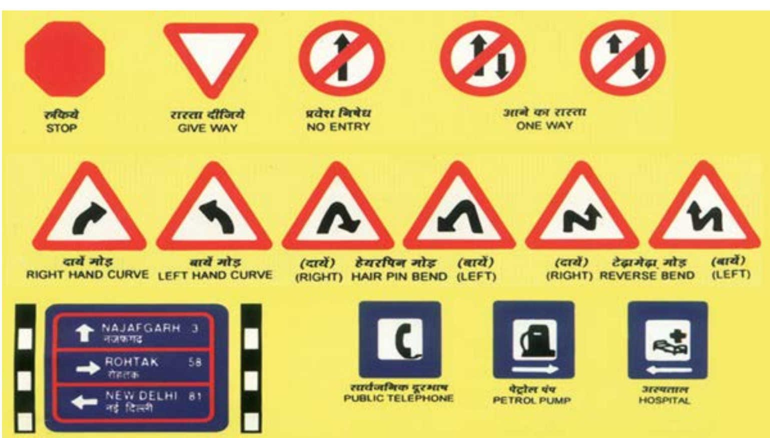

आवश्यक बातें

1. सड़क पर चलते समय या वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना आवश्यक है।
2. 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के व्यक्ति को ही वाहन चलाने का अधिकार है।
3. वाहन चलाते समय ड्राइविंग लाइसेंस एवं आवश्यक कागज़ात हमेशा अपने पास रखने चाहिए।
4. दुपहिया वाहनों में तीन सवारी बैठाना मना है।
5. निर्धारित गति के अनुसार ही वाहन चलाना चाहिए।
6. यातायात के नियमों के उल्लंघन पर दंड का प्रावधान है।

संकेत बताइए

गोपाल एक दिन अपने मामा के घर जाने के लिए निकला सड़क पर कुछ दूरी के बाद वह ''दाएँ मुड़ा''। 1 किलोमीटर के बाद उसे एक ''तंग पुलिया'' मिली। 1 किलोमीटर के बाद उसे ऊबड़-खाबड़ सड़क मिली। कुछ दूर जाने के बाद एक विद्यालय मिला। विद्यालय के पास ही उनके मामा जी का घर था।

सड़क संकेत के चित्र को ध्यान से देखिए और मोटे अक्षर में लिखे संकेतों का चित्र अपनी कापी में बनाइए।

1. जेब्रा क्रासिंग क्या है?
2. सड़क पर चलते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

कर्ज एवं बचत

किशन को अपने घर के बैलों से बहुत लगाव था। वह रोज उन बैलों को नहलाता और चारा डालता था। बैल भी किशन को अपना अच्छा मित्र समझते थे। पिता जी सुबह उन बैलों को साथ लेकर जाते थे और बैल भी दिन भर मेहनत करने के बाद उनके साथ घर लौटते। एक दिन किशन ने अपनी माँ और पिता को आपस में बात करते सुना। वे किशन की दीदी के विवाह के बारे में चर्चा कर रहे थे।

पिता जी -किशन की माँ, कुछ ही दिनों के बाद हमारी बिटिया का विवाह है। मुझे रोज़ इस बात की चिंता होती है कि शादी के लिए पैसों का इंतज़ाम कहाँ से होगा।

माँ - हम क्यों न अपनी बिटिया का विवाह पूरी सादगी से करें। पड़ोस में लाला जी के यहाँ भी तो कुछ दिन पहले शादी हुई थी। उन्होंने तो बहुत अच्छी तरह से केवल आवश्यक संस्कारों को पूरा किया।

पिता जी - आज समाज में इसी तरह का चलन है। तीन-चार दिनों तक चलनेवाले कार्यक्रमों के स्थान पर एक दिन में ही आवश्यक रस्मों को पूरा करके हम फिजूलखर्ची से बच सकते हैं।

माँ - आप हिसाब लगा कर देखिए, कितने रुपयों की जरूरत होगी ?

पिता जी - मैंने हिसाब लगा लिया है। हमें कम-से-कम दस से बारह हजार रुपयों की आवश्यकता होगी। प्राथमिक साख सहकारी समिति से जो खाद, बीज, दवा के लिए पैसे मिले थे उसका ऋण भी तो वापस करना है।

माँ - आप किशन के मामा जी से बात क्यों नहीं करते।

पिता जी - किशन के मामा जी ने कुछ सहायता तो सहकारी समिति से करवाई है, उसके बाद भी इतने पैसों की आवश्यकता है।

उसी समय किशन के भैया बिशन और उनकी पत्नी देवकी वहाँ आ गये। किशन के भैया ने कहा- पिता जी, मैंने कुछ पैसे बचाकर रखे हैं, जोकि लगभग ढाई से तीन हजार हैं।

पिता जी - (बड़े दुखी मन से) बिशन ! तुम चिंता मत करो। हम बाकी के पैसों का इंतजाम बैलों को बेचकर कर लेंगे।

किशन वहाँ बैठा सारी बातें सुन रहा था। उसने रोते हुए कहा - नहीं मैं अपने बैंलों को बिकने नहीं दूँगा। ये मेरे बहुत प्यारे दोस्त हैं।

किशन की माँ और भाभी ने किशन को समझाया और कहा, ''बैलों को तो बेचने की जरूरत ही नहीं है और इतना कहकर वे मुस्कुराने लगीं।

पिता जी - किशन की माँ, तुम इस बात को गंभीरता से नहीं सोच रही हो।

माँ - आप हमेशा यह कहा करते थे मैं और आपकी बहू गाँव की महिला मंडली की बैठक में क्या करती हैं।

भाभी - पिता जी, आपको याद होगा कुछ समय पहले तक हमारे क्षेत्र की वनोपज जैसे-इमली, आम, चार को व्यापारी या दलाल बड़ी होशियारी से सस्ते दामों पर खरीद कर लाभ का बड़ा हिस्सा खुद ले लेते थे। इससे हमें बहुत नुकसान सहना पड़ता था।

माँ - हम लोगों ने कुछ समय पहले सहकारी समिति बनाकर अपनी उपज को बेचा जिससे हमें पहले की अपेक्षा अधिक लाभ हुआ।

भाभी - हम लोगों ने साथ-साथ एक महिला बचत समूह भी बनाया है। समूह की सभी बहनें कुछ राशि हर महिने बचत कर बैंक में जमा करती हैं। यदि हमारी किसी ग्रामीण बहन को किसी वक्त पैसों की आवश्यकता होती है, तो उसे ऋण के रूप में पैसे मिल जाते हैं।

माँ - मैं और आपकी बहू हम दोनों महिला बचत समूह की सदस्या हैं। हम दोनों के माँगने पर लगभग 10 हजार रुपये ऋण मिल जाएँगे।

पिता जी - तब तो हम अपनी बिटिया का विवाह बड़ी आसानी के साथ कर सकते हैं।

किशन सभी बातों को सुन रहा था वह बड़ा खुश हुआ। इस तरह बैलों की जोड़ी बिकने से बची।

क्या तुम्हारे गाँव में महिला बचत समूह है ? यदि है तो वह किस तरह के कार्य करता है? शिक्षक से चर्चा करें।

जल ही जीवन है

घर के सभी लोग प्रतिदिन की तरह अपने-अपने कामों की तैयारी कर रहे थे। प्रियंका जो पास की ही पूर्व माध्यमिक शाला में पढ़ती थी, वह सुबह अखबार पढ़ते-पढ़ते चौंक पड़ी और आवाज देकर अपनी माँ से बोली,

प्रियंका - माँ, कल नल में पानी नहीं आएगा।

माँ - लो एक तो वैसे ही कुछ दिनों से नल में पानी कम आ रहा था। कल आएगा ही नहीं। क्या बात हो गई प्रियंका?

प्रियंका - कल पानी इसलिए नहीं आएगा क्योंकि नलघर में सफाई चल रही है।

पिता जी - तुम लोग एक दिन पानी के न आने की बात से परेशान हो गए। हमारे ही शहर में ऐसी जगह भी हैं जहाँ पानी के लिए लोगों को भटकते देखा जा सकता है।

माँ - अब पीने के पानी की व्यवस्था के लिए तो नगर निगम ही जिम्मेदार है। कई दिनों से चौक के पास का पाइप फटा है, पानी का कितना नुकसान होता है।

बाबू जी - नगर निगम तो अपनी ओर से पीने के पानी की व्यवस्था के लिए पूरी कोशिश करता है, जहाँ पानी की समस्या है, वहाँ टैंकरों से पानी की आपूर्ति की जाती है।

माँ - पानी के कम आने का कारण एक यह भी है कि लोग अपने घरों में बिना अनुमति के पंप लगाकर अधिक पानी ले लेते हैं। दूसरों की सुविधाओं का ध्यान नहीं रखते। इन लोगों को रोकने के लिए क्या नगर निगम कुछ नहीं करता?

बाबू जी - यदि शिकायत की जाए तो नगर निगम न केवल पंप जब्त कर लेता है, बल्कि वह नल का कनेक्शन भी काट सकता हैं।

आज संपूर्ण विश्व के सामने पेयजल संकट बढ़ता जा रहा है। आज उपलब्ध प्राकृतिक जल- स्रोतों में दिनों-दिन पानी की मात्रा कम होती जा रही है। भू-जल स्तर का लगातार घटना चिंता का विषय है। पर्यावरण के असंतुलन ने पूरे विश्व का ध्यान इस ओर खींचा है, कि लोग पानी का पर्याप्त सदुपयोग व जल संरक्षण के विषय में गंभीरता से सोचें।

आपके शहर के आसपास पानी इकट्ठा कर रखने के लिए बाँध तालाब इत्यादि बनाए गए हैं। कुछ समय से सरकार ने भी अनेक गाँवों में लघु स्तर पर जगह-जगह पानी को रोककर इकट्ठा किए जाने की योजना बनाई है। शिक्षक से चर्चा कर ज्ञात करें कि पानी को रोकने की व्यवस्था कैसे बनाई जा रही है।

सरकार ने अपने जल संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत राजीव गांधी जल ग्रहण मिशन नामक योजनाएँ बनाई हैं।

आपस में चर्चा करके जल की उपयोगिता पर एक सूची बनाइए।

1. आपके घर में जल के भंडारण की क्षमता कितनी है ?
2. जल के भंडारण के लिए किन बर्तनों का उपयोग करते हैं ?
3. नहाने व कपड़ा धोने के लिए कितने पानी की आवश्यकता होती है ?
4. आपके घर के सामने आँगन की फुलवारी व बगीचे में कितने पानी की जरूरत होती है ?

छात्र लगभग एक सप्ताह तक पानी के भंडारण व उसकी उपयोगिता के आधार पर सारणी का निर्माण करें।

सारणी

दिन	कुल पानी भंडारण लीटर में	साधन नल, कुआँ	पीने लायक पानी	नहाने के लिए पानी	कपड़ा धोने के लिए	शौचालय के लिए	फुलवारी के लिए
सोम							
मंगल							
बुध							
गुरु							
शुक्र							
शनि							
योग							

उपर्युक्त जाँच के आधार पर प्रत्येक छात्र यह निष्कर्ष निकाले कि एक सप्ताह तक घर में कितने लीटर पानी का भंडारण हुआ, कितना लीटर पानी पीने और नहाने में उपयोग हुआ। कितना लीटर पानी शौचालय और फुलवारी में उपयोग हुआ।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. जेब्राक्रासिंग --------------- चलने वाले लोगों के लिए बनाया जाता है।
2. सड़क के किनारों पर पैदल चलने के लिए --------------- बनाया जाता है।
3. सड़क पर गलत दिशा में चलने से --------------- की संभावना बढ़ जाती है।
4. प्रियंका को पानी न आने की खबर --------------- से मिली।
5. शहरों में पानी की व्यवस्था की जिम्मेदारी --------------- की होती है।
6. किशन की माँ और भाभी --------------- से ऋण ले सकती थीं।

(ब) हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए-

1. सड़क पर हमें दाएँ चलना चाहिए।
2. यातायात संकेत पैदल चलने वालों के लिए नहीं होता।
3. 18 वर्ष से कम उम्र के लोगों को वाहन नहीं चलाना चाहिए।
4. विद्यालय या विद्यालय के बाहर हम साइकिल कहीं भी रख सकते हैं।
5. लाल लाइटवाला सिग्नल हमें आगे बढ़ने का संकेत देता है।

(स) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. जेब्राक्रासिंग क्यों बनाया जाता है ?
2. दुर्घटना से बचने के लिए हमें किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए ?
3. किशन के पिता को पैसों की आवश्यकता क्यो हुई ?
4. महिला मंडली को वनोपज का लाभ क्यों नहीं मिलता था ?
5. महिला समूह के सदस्य को ऋण के रूप में कितनी राशि दी जाती है ?
6. प्राथमिक साख सहकारी समिति से किन-किन कार्यों के लिए ऋण लिया जाता है ?
7. जल संरक्षण कैसे किया जा सकता है? उपाय लिखिए।
8. आज सारे विश्व में पेयजल संरक्षण आवश्यक क्यों हो गया है ?

ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग

IULFFC

मीता, उसके भैया और माँ, मीता के स्कूल की गतिविधियों पर चर्चा कर रहे थे। तभी मीता के पिताजी आए। उनके पूछने पर मीता ने उन्हें भी अपने स्कूल की बातें बतायीं। पिताजी ने बताया कि वे एक ऐसे कार्यक्रम में गए थे जहाँ एक परिचर्चा हो रही थी। मीता ने पूछा परिचर्चा क्या होती है? तब पिताजी ने बताया इसमें लोग मिल-जुल कर किसी विषय पर बातचीत कर अपनी राय बताते हैं। आज की परिचर्चा उन लोगों के बारे में थी जो तीसरे जेण्डर या ट्रांस जेण्डर कहलाते हैं। मीता के पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसे लोगों में जन्म के समय के जेण्डर (लड़की या लड़का होना) और बड़े होने के बाद के जेण्डर में अंतर हो सकता है। यह भी उतना ही प्राकृतिक होता है जितना हमारा गोरा, काला या सांवला होना। इसमें किसी का कोई दोष नहीं होता। माँ, भैया और मीता की उत्सुकता को देखकर पिताजी ने आगे बताया कि -

- ऐसे लोगों का पहनावा, बोलचाल, रहन-सहन का तरीका वे जैसे दिखते हैं उससे अलग हो सकता है।
- ऐसे लोगों की अक्सर समाज में उपेक्षा की जाती है। लोग उन पर हँसते हैं, उन्हें छेड़ते हैं, परेशान करते हैं और उनके लिए गंदी बातें करते हैं।
- कभी-कभी इनके माँ-पिताजी या रिश्तेदार भी उन्हें अपनाने से मना कर देते हैं जिससे वे बड़ी कठिनाई से अपना जीवन-यापन करते हैं।
- कभी-कभी परिवार या दूसरे लोगों के बुरे/गलत व्यवहार के कारण ये आत्महत्या भी कर लेते हैं।

भैया ने दुखी होकर कहा- लोग क्यों नहीं समझते कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के साथ जीने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है। हमें सभी के साथ सामान्य और सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए, हो सके तो उनकी सहायता भी करना चाहिए।

पिताजी ने कहा -

- वे भी हमारे जैसे ही हैं।
- वे हमारे जैसा सब कुछ कर सकते हैं।
- उनकी जरूरतें भी हमारे जैसी ही होती हैं।
- हमें इनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- उन्हें भी हमारे जैसे सभी अधिकार हैं।
- वे भी हमारे जैसे ही प्यार, अपनापन और सम्मान पाने के हकदार हैं।
- उनके साथ भी हमारा व्यवहार इतना अच्छा होना चाहिए जैसा हम दूसरों के साथ करते हैं और अपने लिए चाहते हैं।

मीता और भैया ने कहा- पिताजी हम इन बातों का हमेशा ध्यान रखेंगे और अपने साथियों को भी बताएंगे।

शब्दावली

प्रचुर (Abundance)— किसी वस्तु की पर्याप्त मात्रा।

प्रशंसा (Accolade)— उत्तम कार्य के लिए आभार प्रकट करना।

अनुकूलन (Adaptation)— वह प्रक्रिया जिसमें एक प्रजाति बदलते पर्यावरण के अनुरूप स्वयं को ढाल लेती है।

मरणोपरांत जीवन (Afterlife)— जीवन जो मृत्यु के बाद आरंभ हो।

आवंटन (Allotment)— देने या बाँटने की प्रक्रिया।

तुंगता (Altitude)— सुमद्र तल से एक स्थान की ऊँचाई।

प्राचीन, पुरातन (Ancient)— बहुत पुराने समय का या उससे संबंधित।

पुरातत्व विज्ञानी (Archaeologist)— वह व्यक्ति, जो पुरातत्व स्थलों की खुदाई और भौतिक अवशेषों के विश्लेषण से मानव इतिहास और प्रागैतिहासिक काल का अध्ययन करता है।

संन्यासी (Ascetic)— परम चेतना को प्राप्त करने के लिए घोर आध्यात्मिक तपस्या करने वाला व्यक्ति।

अंतरिक्ष यात्री (Astronaut)— अंतरिक्ष यान से अंतरिक्ष की यात्रा करने में प्रशिक्षित व्यक्ति

आसक्ति (Attachment)— किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के साथ गहरा संबंध, सामान्यत: भावना या मोह।

मांगलिक, शुभ (Auspicious)— अनुकूल अथवा सौभाग्यशाली जैसे – शुभारंभ

हिमधाव, हिमस्खलन (Avalanche)— पर्वत या पहाड़ की ढलान से हिम अथवा बर्फ का अचानक गिरना; यह घटना प्राय: बर्फ के पिघलने के दौरान होती है।

खाड़ी (Bay)— समुद्र का चौड़े मुख वाला भाग जिसके चारों ओर भूमि अंदर की ओर धँसी हुई होती है।

विस्मयकारी (Bewildering)— भ्रम अथवा उलझन।

बिटुमन (Bitumen)— काला चिपचिपा पदार्थ जैसे– तारकोल या डामर।

बंधन (Bonds)— संबंध/जुड़ाव।

बुलडोजर (Bulldozer)— भारी-भरकम वाहन जिसके आगे बहुत बड़ा ब्लेड लगा होता है जो मिट्टी या चट्टानों को हटाने को काम करता है।

प्रधान दिग्बिंदु (Cardinal Direction)— चार मुख्य दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में से एक।

उत्कीर्ण, तराशना (Carve)— कोई वस्तु या डिजाइन बनाने के लिए किसी कठोर सामग्री को काटना।

भजन, जप (Chant)— सुर में मंत्र अथवा स्तुति गाना; लयबद्ध और बार-बार।

दम घुटना (Choke)— गला अवरुद्ध होने के कारण या वायु की कमी से सांस लेने में भारी कठिनाई होना।

घरेलू कार्य (Chore)— प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य, विशेषकर घर के काम।

झंकार, खनखनाहट (Clink)— घंटी की तेज आवाज।

** शब्दावली में दिए गए शब्द/पद अंग्रेजी शब्दों के वर्णक्रमानुसार दिए गए हैं।*

वृष्टि विस्फोट, बादल फटना (Cloudburst)— एक ही स्थान पर अचानक प्रचंड वर्षा का होना।

सहयोग करना (Collaborate)— किसी कार्य या परियोजना पर संयुक्त रूप से कार्य करना।

ढह जाना (Collapse)— अचानक गिर जाना।

स्मरणोत्सव मनाना (Commemorate)— किसी व्यक्ति या किसी की स्मृति को समारोहपूर्वक मनाना।

समानता (Commonality)— विशेषताओं या विशिष्टता को साझा करना।

विचार करना, सोचना (Conceive)— किसी बात की मानसिक रूप से कल्पना करना।

अधिहरण करना (Confiscate)— जब कोई प्राधिकारी किसी की संपत्ति का अधिग्रहण करता है।

संगम, प्रयाग (Confluence)— दो या दो से अधिक नदियों के मिलने का स्थान।

चेतना, होश (Consciousness)— किसी बात से स्वयं अवगत होने की स्थिति।

संरक्षण (Conservation)— संसाधनों के अनावश्यक उपयोग को रोकना।

तारामंडल (Constellation)— तारों का ऐसा समूह जो आकाश में आसानी से पहचाने जाने वाली आकृति बनाते हैं।

संविधान (Constitution)— ऐसा प्रलेख या दस्तावेज जिसमें राष्ट्र के आधारभूत सिद्धांतों, नियमों का संग्रह होता है।

परामर्श (Consult)— किसी से सलाह लेना अथवा किसी विषय पर वार्तालाप करना।

उपभोग (Consumption)— किसी वस्तु या संसाधन का उपयोग करना अथवा उसका सेवन करना।

संदर्भ, प्रसंग, परिस्थिति (Context)— किसी घटना, कथन या विचार की पृष्ठभूमि या स्थिति, जिसके आधार पर उसे पूरा समझा जा सकता है।

समझौता (Convention)— जिसमें किसी बात पर सहमति होती है।

पारंपरिक (Conventional)— रीति परंपरा के अनुसार।

दोषी (Convicted)— किसी अपराध के लिए न्यायाधीश या जूरी द्वारा अपराधी घोषित व्यक्ति।

सहकारी समिति (Cooperative)— व्यक्तियों का एक औपचारिक समूह जिसमें आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे स्वत: मिलकर काम करते हैं।

ब्रह्मांड, विश्व (Cosmos)— व्यापक रूप से सुव्यवस्थित एवं संतुलित व्यवस्था जिसमें ग्रह, तारे, आकाशगंगाएँ सम्मिलित हैं।

निर्णायक (Crucial)— अति महत्व का

खेती, जोतना (Cultivate)— फसलों या बागवानी के लिए भूमि या स्थान तैयार करना।

दुग्धशाला, डेयरी (Dairy)— ऐसा स्थान जहाँ दूध एकत्रित और संचित किया जाता है।

विकेंद्रीकृत (Decentralise)— स्थानीय कार्यालयों या प्राधिकरण को नियंत्रण देना।

समर्पित (Dedicated)— किसी कार्य या उद्देश्य के प्रति निष्ठापूर्वक कार्य करना।

अवज्ञा (Defy)— खुले रूप से आज्ञा की अवहेलना करना।

देवता/देवी (Deity)— एक अलौकिक या दिव्य शक्ति।

जान-बूझकर किया हुआ कार्य (Deliberate)— निहित प्रयोजन से किया गया कार्य।

आनंदप्रद (Delightful)— अत्यधिक प्रसन्न।

चित्रित करना (Depict)— शब्दों या चित्रकारी आदि द्वारा व्यक्त करना।

उतरना, नीचे आना (Descending)— ऊपर से नीचे की तरफ चलना या उतरना।

नियति, भाग्य (Destiny)— किसी व्यक्ति के साथ अनिवार्य रूप से घटने वाली घटनाएँ या वह शक्ति, जो भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं को नियंत्रित करती है।

विचलित होना, पथ से हटना (Deviate)— पहले से जिस रास्ते पर चल रहे थे, उसे बदलना।

खोदना (Digging)— भूमि की खुदाई कर वस्तुएँ निकालना।

विवाद (Dispute)— विरोध या असहमति।

दुख, कष्ट (Distress)— अत्यधिक चिंता, दुख या पीड़ा।

विविधता (Diverse)— विभिन्न प्रकार का, बहुमुखी।

आर्थिक क्षेत्रक (Economic Sectors)— कार्यों के बड़े समूह जो देश की आर्थिक समृद्धि में सहायक होते हैं।

हटा देना (Eliminate)— पूरे तरीके से निकाल देना।

श्रेष्ठजन, विशिष्टि वर्ग (Elite)— समाज का उच्च वर्ग जैसे– शासक, उच्च अधिकारी, प्रशासक और धर्मगुरु।

सशक्त करना, अधिकार देना (Empower)— किसी व्यक्ति या समूह को अधिकार देना या कोई कार्य करने की शक्ति देना।

सशक्तीकरण (Empowerment)— किसी व्यक्ति या समूह को अधिकार, क्षमता, संसाधन देने की प्रकिया।

सामना करना, मुठभेड़ (Encounter)— किसी प्रतिकूल परिस्थिति से अकस्मात सामना या संघर्ष होना।

संकट में डालना (Endanger)— किसी को क्षति पहुँचने की स्थिति में डालना।

लागू करना, बाध्य करना (Enforce)— बलपूर्वक कोई कार्य करवाना।

उकेरना, उत्कीर्ण करना (Engrave)— पत्थर या धातु-सी किसी कठोर वस्तु पर कोई चित्र उकेरना अथवा अभिकल्प को काटकर उभारना।

सुधारना (Enhance)— किसी वस्तु की गुणवत्ता, मूल्य और मात्रा में और सुधार करना।

समृद्ध बनाना (Enrich)— किसी वस्तु की गुणवत्ता अथवा मूल्य को बढ़ाना।

संरक्षित करना अथवा पवित्र मानकर रखना (Enshrine)— अत्यंत श्रद्धावान किसी वस्तु को किसी विशेष स्थान पर या पाठ्यसामग्री में संभालकर रखना।

महाकाव्य (Epic)— एक लंबी कविता जिसमें प्रायः पूर्वकाल के नायकों और अन्य महान व्यक्तियों की वीरता का वर्णन होता है।

भूमध्य रेखा (Equator)— पृथ्वी की सतह पर 0° अक्षांश पर खींची गई काल्पनिक रेखा जो पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध में विभाजित करती है।

युग, संवत् (Era)— समय की विशिष्टि अवधि।

अपरदन (Erosion)— समुद्र, पवन और वर्षा से मिट्टी, चट्टान या भूमि का कटाव।

उद्गार (Eruption)— अचानक फटना, सामान्यत: अप्रिय शोर के साथ फटना।

मुहाना, ज्वारनद मुख (Estuary)— वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में मिलती है।

विकास, उद्भव (Evolution)— पृथ्वी के इतिहास में आदिकाल से विभिन्न प्राणियों के क्रमिक विकास की प्रक्रिया।

उत्खनन (Excavate)— एक ऐसी प्रक्रिया, जिसमें भूमि को खोदकर प्राकृतिक संसाधन निकाले जाते हैं।

उत्खननकर्ता अथवा उत्खनन मशीन (Excavator)— वह व्यक्ति जो पुरातात्विक स्थलों में खुदाई करते हैं; बहुत बड़ी मशीन जो भूमि की खुदाई करती है।

भ्रमण (Excursion)— आनंद के उददेश्य से की गई छोटी यात्रा।

दृष्टांत (Exemplify)— उदाहरण देते हुए समझाना।

प्रयास करना (Exert)— शारीरिक और मानसिक बल लगाना।

विस्तार (Expanse)— विस्तृत व्यापक क्षेत्र।

शोषण, स्वार्थ साधन (Exploitation)— किसी के कार्य से अनुचित लाभ उठाने के लिए अन्यायपूर्ण व्यवहार।

अन्वेषण, पर्यवेक्षण (Exploration)— किसी जगह/वस्तु के बारे पता लगाने या खोजने का कार्य।

निर्यात, बाहर भेजना (Export)— एक देश द्वारा अपने यहाँ निर्मित वस्तुएँ या सेवाएँ दूसरे देश को बेचना।

निष्कर्षण, सार (Extraction)— किसी खास पदार्थ अथवा सूचना को किसी वस्तु से अलग करना या प्राप्त करना।

सरल बनाना (Facilitate)— किसी प्रक्रिया या कार्य को सुगम बनाना।

कारखाना (Factory)— ऐसा भवन या भवनों का समूह जहाँ उत्पाद तैयार किए जाते हैं या संयोजित किए जाते हैं।

प्राणी समूह (Fauna)— किसी विशेष स्थान या काल में पाए जाने वाला प्राणी जीवन।

अनुकूल, सहायक (Favourable)— किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति सकारात्मक परिस्थिति।

शुल्क (Fee)— व्यावसायिक परामर्श या सेवाओं के बदले में की जाने वाली भुगतान राशि।

प्रतिमा (Figurine)— मानव आकार की लघु मूर्ति।

वित्तीय (Financial)— मुद्रा संबंधी।

तैयार माल (Finished Goods)— वह वस्तुएँ, जिनकी उत्पादन प्रक्रिया पूर्ण हो गई हो।

आकस्मिक बाढ़ (Flash Flood)— अचानक आई स्थानीय बाढ़, जो प्रायः बादल फटने से आती है।

वनस्पति समूह (Flora)— किसी विशेष स्थान या काल में पाए जाने वाले पौधे या वनस्पतियाँ।

लोक-कथाएँ (Folklore)— पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से या अन्य माध्यमों से संचरित कथाएँ, लोकगीत और परंपराएँ।

तलहटी (Foothills)— पर्वत या पर्वत शृंखला के आधार पर स्थित नीची पहाड़ियाँ।

प्रतिपादित करना (Formulate)— सुव्यवस्थित तरीके से व्यक्त या तैयार करना।

किलेबंदी (Fortification)— सामान्यतः सुरक्षा की दृष्टि से किसी बस्ती या नगर के चारों ओर बनाई गई विशाल दीवार।

जीवाश्म (Fossils) — मिट्टी या चट्टानों की सतहों के बीच संरक्षित वनस्पतियाँ या पशुओं के अस्थि अवशेष।

प्रोत्साहन (Foster)— उत्साहित करना, बढ़ावा देना।

कच्चा, सहजता से टूट जाने वाला (Fragile)— आसानी से टूट जाने वाला या क्षतिग्रस्त होने वाला।

रूपरेखा (Framework)— किसी प्रणाली, अवधारणा या विषय की आधारभूत संरचना।

विशेष अधिकार (Franchise)— किसी व्यक्ति अथवा समूह को विशेष व्यवसायिक कार्य करने के लिए अधिकार देना।

संपूर्ण (Full-fledged)— पूर्ण विकसित या स्थापित।

मौलिक (Fundamental)— अत्यंत महत्वपूर्ण, किसी वस्तु का मूल आधार।

पीढ़ी (Generation)— लगभग एक समय में पैदा होने वाले और पहले से मौजूद लोगों का समूह।

आनुवंशिकी विज्ञान (Genetics)— जीव विज्ञान की शाखा, जिसके अंतर्गत वनस्पतियों, पशुओं और मानव के निश्चित लक्षण और विशिष्टताओं का अध्ययन किया जाता है।

सुस्पष्ट (Glaring)— चमकीला, साफ-साफ दिखाई देने वाला।

कृतज्ञता (Gratitude)— धन्यवाद प्रकट करना, दयालुता के प्रति सराहना।

ग्रीन हाउस खेती (Greenhouse Farming)— कृषि उपज में सुधार लाने हेतु किसी नियंत्रित पर्यावरण, जैसे कि काँच या प्लास्टिक के ढाँचे के भीतर की जाने वाली खेती।

ग्रिनिच माध्य समय (Greenwich Mean Time (GMT))— ग्रिनिच, लंदन की रॉयल वेधशाला में माध्य सौर समय को विश्व के लिए संदर्भ समय के रूप में प्रयोग किया जाता है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर (Gregorian Calendar)— इस कैलेंडर का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है।

गल्फ, खाड़ी (Gulf)— समुद्र का वह भाग जो लगभग धरती से घिरा होता है।

ओला (Hailstone)— आकाश से गिरने वाले बर्फ के छोटे गोले।

पल्ली (Hamlet)— छोटी बस्ती या छोटा-सा गाँव।

परेशान करना/सताना (Harass)— मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक कष्ट या असुविधा पहुँचाना।

सौहार्दपूर्ण (Harmoniously)— मिल-जुल कर, सद्भावपूर्ण ढंग से आपसी तालमेल।

मित्रभाव, मेल-मिलाप (Harmony)— बिना किसी विवाद या मतभेद की स्थिति, कोई भी अनुकूल स्थिति।

आरोग्यकर्ता (Healer)— जो परंपरागत तरीकों से रोग को ठीक करता हो या रोग से आराम दिलाता हो।

झुंड (Herd)— पशुओं का बड़ा समूह।

ऐतिहासिक या पारंपरिक धरोहर (Heritage)— किसी परिवार, समुदाय या देश की बहुमूल्य वस्तुएँ, परंपराएँ और संस्कृति।

इतिहासकार (Historian)— वह व्यक्ति जो मानव के अतीत पर अध्ययन करता है।

इतिहास (History)— मानव के अतीत का अध्ययन करने वाला

गृहिणी (Homemaker)— घर और घर के समस्त कार्य संभालने के लिए उत्तरदायी।

सदन (House)— ऐसी सभा जहाँ कानून बनाने पर चर्चा की जाती है और उसे पारित किया जाता है।

विस्तार (Immense)— विस्तृत व्यापक क्षेत्र।

कार्यान्वयन (Implementation)— किसी निर्णय या योजना को लागू करने की प्रक्रिया।

आयात (Import)— दूसरे देश द्वारा क्रय की जाने वाली वस्तुएँ।

भारतीय मानक समय (Indian Standard Time) (IST)— संपूर्ण भारत में देखे जाने वाला आधिकारिक समय जो ग्रिनिच माध्य समय से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

संघटक, अवयव (Ingredient)— किसी वस्तु के संघटक; प्राय: किसी खाद्य सामग्री या वस्तु में प्रयुक्त होने वाली सामग्री।

निवासी (Inhabitants)— किसी विशेष स्थान पर रहने वाले लोग।

शिलालेख (Inscriptions)— शिला अथवा धातु पर अंकित किए गए शब्द या पाठ्यसामग्री।

अन्योन्याश्रय (Interdependence)— परस्पर निर्भरता।

अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा (International Date Line)— पृथ्वी की सतह पर 180° देशांतर पर खींची गई काल्पनिक रेखा, जिसके पार जाते समय कैलेंडर दिवस बदल जाता है।

डराना (Intimidating)— भय अथवा भयभीत करना।

जिज्ञासा (Intrigue)— किसी वस्तु के बारे में उत्सुकता या कौतुहल होना।

आक्रांता (Invaders)— किसी सेना अथवा समूह का अन्य देश में बलपूर्वक घुसना।

प्रार्थना (Invocation)— किसी सर्वशक्तिमान को सहायता के लिए पुकारना।

विवेकपूर्ण ढंग से (Judiciously)— सुविचारित रूप से सार्थक निर्णय लेना।

भू-दृश्य, प्राकृतिक घटा (Landscape)— भूमि के किसी क्षेत्र में दिखाई देने वाले परिदृश्य।

भूस्खलन (Landslide)— पर्वत के किनारों से अचानक मिट्टी या चट्टानों का गिरना।

लावा (Lava)— पिघली चट्टानों का द्रव्य, जो ज्वालामुखी के विस्फोट के दौरान पहाड़ से निकलता है।

लाइकेन (Lichen)— वनस्पति की एक प्रजाति जो प्राय: चट्टानों, दीवारों या पेड़ों से चिपकी होती है।

पशुधन (Livestock)— पशुसंपत्ति, कृषि में प्रयोग होने वाले जानवर।

अभिव्यक्ति (Manifest)— प्रत्यक्ष रूप से क्रियाओं, घटनाओं का घटित होना।

पांडुलिपि, हस्तलिपि (Manuscript)— पेड़ की छाल, कपड़ा, ताड़पत्र या कागज पर हस्तलिखित दस्तावेज।

समुद्री (Marine)— महासागरों और सागरों में पाए जाने वाले जैविक और अजैविक पदार्थ।

बाजार (Market)— ऐसा स्थान जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय किया जाता है।

चमत्कार, अद्‌भुत (Marvel) — अत्यंत आश्चर्यचकित और अद्वितीय करने वाली घटना या वस्तु।

अपर्याप्ति, अल्प (Meagre)— मात्रा या गुणवत्ता में कमी।

यंत्र रचना (Mechanism)— मशीन के कलपुर्जे या मशीन में एक साथ काम करने वाली क्रियाविधि।

देशांतर की मध्याह्न रेखा (Meridian of longitude)— काल्पनिक अर्धवृत्त जो धरती की सतह पर उत्तर ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक होता है और यह दर्शाता है कि धरती पर पूर्वी व पश्चिमी बिंदु से प्रमुख मध्याह्न रेखा की दूरी कितनी है।

धातु विज्ञान (Metallurgy)— प्रकृति से धातुओं को निकालने, शुद्ध करने अथवा आपस में मिलाने की तकनीक, साथ ही धातुओं की विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन।

अत्यंत कुशल, निपुण (Meticulous)— सावधान और विवरण पर ध्यान देकर कार्य करने वाला।

बिचौलिया (Middlemen)— वे व्यक्ति जो उत्पादकों से माल खरीदकर उपभोक्ताओं को बेचते हैं।

प्रवास, प्रव्रजन (Migrate)— किसी व्यक्ति, समूह अथवा जीव का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होना।

मौद्रिक (Monetary)— धनराशि या मुद्रा से संबधित।

मौद्रिक मूल्य (Monetary value)— वस्तु अथवा सेवा का मूल्य जिसे मुद्रा में मापा जा सके।

वस्तु का नकद मूल्य (Money's worth)— किसी वस्तु अथवा सेवा से लाभ प्राप्त करने के लिए उस पर अंकित किया गया मूल्य।

साधु/भिक्षु (Monk) — वह व्यक्ति जो अपना घर-परिवार छोड़कर धार्मिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए जीवन जीता है।

पर्वतीय वन (Montane forest)— ऐसे वन जो पर्वतीय क्षेत्रों में होते हैं।

काई (Moss)— बिना फूल या जड़ वाली एक प्रकार की छोटी हरे रंग की वनस्पति, जो गद्‌देदार आवरण की तरह फैली हुई होती है।

आदर्श वाक्य (Motto)— किसी व्यक्ति, परिवार अथवा संस्थान के विश्वास या आदर्श को दर्शाता लघु वाक्य, वचन अथवा वाक्यांश।

आख्यान (Narrative)— कहानी या घटनाओं, अनुभवों या आपसी विमर्श का विशेष रूप से रचनात्मक वर्णन।

मूल निवासी (Native)— किसी विशेष क्षेत्र या देश में जन्मा और पला-बढ़ा व्यक्ति, जो अभी भी उसी स्थान पर रहता हो।

संचालन (Navigate)— समुद्री जहाज, हवाई जहाज आदि का मार्ग निर्देशन अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने का मार्ग खोजने का विज्ञान।

मार्ग निर्देशन (Navigation)— किसी यात्रा के मार्ग का निर्देशन करना।

नाम मात्र, औपचारिक (Nominal)— सिर्फ नाम के लिए।

उत्तर ध्रुव (North Pole)— उत्तरी गोलार्ध में वह स्थान, जहाँ पृथ्वी के घूर्णन का अक्ष 90° उ० पर पृथ्वी की सतह से मिलता है।

एकल परिवार (Nuclear family)— ऐसा परिवार जिसमें केवल माता-पिता और बच्चे होते हैं।

अनगिनत (Numerous)— बहुत या अनेक।

धर्म संघिनी (Nun)— महिला भिक्षु, भिक्खुनी।

उपशाखा (Offshoot)— किसी मुख्य रूप से विकसित होने वाली शाखा।

फलोद्यान (Orchard)— भूमि का हिस्सा, जहाँ फलदार पेड़ लगाए जाते हैं।

निरीक्षण, सर्वेक्षण (Oversee)— किसी व्यक्ति या व्यक्तियों और उनके कार्यों का निरीक्षण करना।

अक्षांश वृत्त, अक्षांश समांतर (Parallels of Latitude)— पृथ्वी की सतह पर पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली काल्पनिक रेखाएँ जिससे यह पता चलता है कि भूमध्य रेखा से पृथ्वी की सतह पर उत्तर या दक्षिण का कोई स्थान उससे कितनी दूर है।

संक्षिप्त व्याख्या (Paraphrase)— लिखी गई अथवा कही गई बात के अर्थ की व्याख्या करना, भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए और अधिक संक्षेप में समझाना।

पाश्चुरीकरण (Pasteurisation)— दूध को संरक्षित करने की प्रक्रिया, जिसमें हानिकारक जीवाणुओं को मारने के लिए निर्धारित तापमान पर दूध को उबाला जाता है।

वस्तु के रूप में भुगतान (Payment in kind)— किए गए कार्य के लिए धनराशि न देकर वस्तु के रूप में भुगतान करना।

अनुभव करना (Perceive)— किसी वस्तु या व्यक्ति को समझना।

इंद्रियगोचर (Perceptible)— जिसे देखा, सुना, चखा, सूंघा या महसूस किया जा सके अथवा प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके।

दृष्टिकोण (Perspective)— अपना नजरिया व्यक्त करना।

रंगद्रव्य (Pigment)— एक प्राकृतिक अथवा कृत्रिम पदार्थ जो रंग देने के लिए उपयोग किया जाता है।

तीर्थयात्री (Pilgrim)— धार्मिक कारणों से तीर्थस्थलों की यात्रा करने वाला व्यक्ति।

सहायता करना, शामिल होना (Pitch in)— किसी वस्तु से सहयोग देते हुए सहायता करना।

परिशुद्ध, सुस्पष्ट, यथातथ्य (Precise)— किसी विवरण को सटीक व स्पष्ट तरीके से व्यक्त करना।

प्रमुख याम्योत्तर (Prime Meridian)— पृथ्वी पर 0° देशांतर पर निर्दिष्ट की गई मध्याह्न रेखा जो इंग्लैंड के ग्रीनिच से गुजरती है।

अनुपात (Proportion)— संपूर्ण की तुलना में उसके बाकी के भाग, अंश या संख्या।

समृद्धि (Prosperous)— धन और सफलता की प्राप्ति।

दलहन (Pulses)— दालों के प्रकार जिसमें सेम, मटर आदि सम्मिलित हैं।

विकीर्ण (Radiate)— किरणों या तरंगों (विशेषकर ऊर्जा) के रूप में प्रकाश या उष्मा का प्रसारण।

नियमन (Regulate)— नियमों और अधिनियमों के माध्यम से नियंत्रित करना।

उकेरी गई आकृति (Relief)— पत्थर, लकड़ी मृस्तिका (सेरेमिक) आदि की बनी सतह पर उकरी हुई डिजाइन।

नवीकरण, मरम्मत (Renovation)— किसी वस्तु (जैसे कि भवन) का नवप्रवर्तन।

प्रसिद्ध (Renowned)— जाना-माना, विख्यात।

जलाशय (Reservoir)— जलापूर्ति के लिए प्राकृतिक अथवा कृत्रिम झील।

लचीलापन (Resilience)— चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता।

संकल्प करना (Resolve)— किसी समस्या का हल या समाधान पाना।

खुदरा (Retail)— अंतिम उपयोगकर्ता के प्रयोग के लिए कम मात्रा में वस्तुओं का विक्रय।

आदर (Reverence)— किसी व्यक्ति के लिए श्रद्धा भाव।

लूटना (Rob)— किसी व्यक्ति अथवा स्थान से गैर-कानूनी ढंग से संपत्ति लेना।

निकटतम पूर्णांक (Rounded off)— अनुमानित सरल अंक।

वेतन (Salary)— नियोक्ता द्वारा अपने कर्मचारी को प्रतिमाह दिए जाने वाला नियत नियमित भुगतान।

अध्येता/विद्वान (Scholar)— अध्ययन की किसी विशेष शाखा का विशेषज्ञ।

झुलसना (Scorching)— अत्यंत गरम।

समुद्र तल (Sea level)— महासागरों की सतह का औसत तल; यह माध्य समुद्र तल भी कहलाता है।

समुद्र (Sea)— खारे जल का विशाल भाग जो महासागर से छोटा होता है और पूर्णत: या आंशिक रूप से धरातल से घिरा हुआ होता है।

द्वितीयक क्षेत्रक (Secondary Sector)— गतिविधियों का वह समूह, जो प्राथमिक क्षेत्रक से लिए गए कच्चे माल को संसाधित करके बिक्री और उपभोग योग्य बनाता है।

अन्वेषक, जिज्ञासु, साधक (Seeker)— संत, योगी, दार्शनिक या बुद्धिजीवी जो इस संसार में सत्य की खोज में लगा हुआ है।

वियोजन (Segregation)— किसी व्यक्ति अथवा लोगों के समूह या वस्तु को दूसरों से अलग करने का कार्य या स्थिति।

बस्ती (Settlement)— वह स्थान जहाँ लोग समुदाय में रहते हैं।

तीर्थ (Shrine)— पवित्र स्थल।

इतिहास का स्रोत (Source of History)— स्थान, व्यक्ति, ग्रंथ या वस्तु जिससे हम अतीत की जानकारियाँ प्राप्त करते हैं।

दक्षिण ध्रुव (South Pole)— दक्षिणी गोलार्ध में वह स्थान जहाँ पृथ्वी के घूर्णन का अक्ष 90° दक्षिण पर पृथ्वी की सतह से मिलता है।

प्रजाति (Species)— मिलते-जुलते प्राणियों का समूह जिसमें एक-सी विशेषताएँ होती हैं।

प्रभावशाली, शानदार (Spectacular)— सुंदर और नयनाभिराम।

आध्यात्मिक (Spiritual)— स्वयं से ऊपर उठकर आत्मा-परमात्मा को जानना।

आध्यात्मिकता (Spirituality)— सामान्य व्यक्तित्व के परे गहरे या उच्च आयामों की प्राप्ति या खोज।

मानक समय-क्षेत्र (Standard Time Zone)— 15° देशांतर का एक क्षेत्र (जोन) जो अगले समय-क्षेत्र से एक घंटे का अंतर रखता है।

शासन-कला (Statecraft)— राज्य के मामलों के प्रबंधन का राजनीतिक कौशल।

खड़ी ढाल (Steep)— तीखी चढ़ान और उतराई।

उत्तेजना (Stirring)— अत्यधिक उत्साहित या भावातिरेक में होना।

उपमहाद्वीप (Subcontinent)— महाद्वीप का एक बड़ा भाग, जो उससे अलग विशिष्टता रखता है।

डुबोना (Submerge)— पानी के अंदर किसी वस्तु का जाना।

महोर्मि, तरंगख, लहर (Surge)— किसी वस्तु, की मात्रा या तीव्रता में उछाल या अचानक वृद्धि, जैसे भीड़ या प्राकृतिक बल से तरंगों का उठना।

कृत्रिम (Synthetic)— अप्राकृतिक, बनावटी।

वेदिका (सीढ़ीदार कृषि) (Terrace Farming)— पर्वतों की ढालों पर सीढ़ी के आकार में काटकर की जाने वाली कृषि।

भूभाग (Terrain)— भौतिक विशेषताओं की दृष्टि से भूमि का एक टुकड़ा।

स्थलीय/पार्थिव (Terrestrial)— पृथ्वी से संबंधित/भूमि पर आधारित।

तृतीयक क्षेत्रक (Tertiary Sector)—गतिविधियों का ऐसा समूह जो प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रक को सेवा उपलब्ध करवाकर उन्हें संपूर्ण बनाता है, जैसे कि परिवहन, बैंकिंग आदि।

साक्ष्य (Testimony)— किसी वस्तु, घटना अथवा व्यक्ति से संबधित सबूत या प्रमाण।

रूपांतरण (Transform)— रूप, व्यवहार या प्रकृति में स्पष्टतया दृष्टिगोचर होने वाला परिवर्तन।

ट्रांसजेंडर (Transgender)— जिसका जन्म एक अलग लिंग में हुआ हो, परंतु वह स्वयं को अन्य लिंग से अधिक संबंधित अनुभव करे।

प्रेषित करना/प्रसारित करना (Transmit)— एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना अथवा प्रसारित करना जैसे– ध्वनि, वीडियो, रोगाणु, बीमारी इत्यादि।

सहायक नदी (Tributary)— एक नदी अथवा धारा जो किसी बड़ी नदी में सम्मिलित हो जाए।

अंतर्निहित (Underlying)— किसी कथन अथवा सूचना में पहले से समाहित होना।

सुविधा-वंचित (Underprivileged)— ऐसा समूह जिसके पास बुनियादी सुविधाओं तक सीमित या कोई पहुँच नहीं होती।

तरंगति (Undulating)— गति के अनुरूप ऊपर अथवा नीचे होना।

यूनेस्को (UNESCO)— ये शब्द संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन का लघु रूप है। यह संस्था लोगों एवं देशों के मध्य शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति के माध्यम से संवाद स्थापित करती है।

सिलाई रहित (Unstitched)— ऐसी वस्तु जिसे सिला न गया हो।

उत्थान (Upliftment)— किसी के स्तर में सकारात्मक सुधार।

नगरीकरण (Urbanization)— नगरों अथवा कस्बों की निर्माण प्रक्रिया और विकास।

घाटी (Valley)— पर्वत अथवा पहाड़ों का निचला क्षेत्र; प्राय: इस क्षेत्र से नदी अथवा धारा बहती है।

विभेद (Variation) — दो वस्तुओं अथवा संस्करणों में अंतर।

महत्वपूर्ण (Vital)— अति आवश्यक।

स्वेच्छा (Voluntary)— अपनी इच्छा से कोई कार्य करना।

मजदूरी (Wage)— किसी विशेष कार्याविधि में नियोक्ता द्वारा प्रदान की गई धनराशि।

गोदाम (Warehouse) — ऐसा स्थान जहाँ वस्तुओं को उपयोग करने, बेचने अथवा किराए पर देने से पहले उनका भंडारण किया जाता है।

संपत्ति (Wealth) — किसी व्यक्ति या समूह के पास बड़ी मात्रा में मूल्यवान संसाधनों और वस्तुओं का कुल योग।

बुनना (Weaving) — वस्त्र निर्माण की एक कला।

कल्याण (Welfare) — किसी व्यक्ति, समूह या समाज के कष्ट निवारण की स्थिति।

वैश्विक दर्शन (Worldview) — विश्व के उद्भव एवं उसकी कार्य प्रणाली की समझ का एक निश्चित दृष्टिकोण।

नोट — *इस शब्दावली में दिए शब्दों को विद्यार्थियों की कक्षा के अनुरूप एवं पाठ्यपुस्तक में उनके संदर्भ के अनुसार सरलीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।*

बाह्य स्रोतों से चित्र और मानचित्र

रा.शै.अ.प्र.प, निम्नलिखित संगठनों और व्यक्तियों को उनके चित्रों का उपयोग करने की अनुमति प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता है—

1. संगठन और व्यक्ति

- चित्र 1.6—पृष्ठ 18, सर्वे ऑफ इंडिया के सौजन्य से
- चित्र 2.1—पृष्ठ 27, https://www.lroc.asu.edu/images/940, NASA/GSFC/ArizonaState के सौजन्य से
- पृष्ठ 28—भारतीय नौसेना का प्रतीक, भारतीय नौसेना के सौजन्य से
- चित्र 2.4—पृष्ठ 33, सर्वे ऑफ इंडिया के सौजन्य से
- चित्र 3.9—पृष्ठ 54, नासा (NASA) के सौजन्य से
- अध्याय 4—पृष्ठ 59, https://commons.wikimedia.org/wiki/File:India_national_museum_01.jpg से लिया गया।
- चित्र 4.1—पृष्ठ 60, Wikimedia Commons https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Timeline_evolution_of_life.svg से लिया गया।
- पृष्ठ 69—सभी चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 5.1—पृष्ठ 75, राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 5.2—पृष्ठ 76, प्रोफेसर वी.एन. प्रभाकर के सौजन्य से
- चित्र 5.3—पृष्ठ 77, प्रोफेसर वी.एन. प्रभाकर के सौजन्य से
- चित्र 5.4—पृष्ठ 79, प्रोफेसर वी.एन. प्रभाकर के सौजन्य से
- चित्र 5.5—पृष्ठ 82, स्रोत – लोक सभा सचिवालय, नई दिल्ली, 1999 (हिंदी प्रतिलिपि—प्रबंधक, भारत सरकार, फोटो लिथो मुद्रणालय, नई दिल्ली द्वारा निर्मित की गई।)
- पृष्ठ 83—ज़ुआनज़ैंग की छवि, स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Xuanzang_w.jpg
- चित्र 6.1—पृष्ठ 85, डॉ. आर.एस. बिष्ट और ए.एस.आई. के सौजन्य से

- चित्र 6.3 — पृष्ठ 88 और 89, प्रोफेसर वी.एन. प्रभाकर के सौजन्य से
- चित्र 6.4 — पृष्ठ 92, ए.एस.आई. और https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kalibangan_2_Main_street.jpg के सौजन्य से
- चित्र 6.5 — पृष्ठ 92, डॉ. आर.एस. बिष्ट और ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 6.7 — पृष्ठ 94, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.8 — पृष्ठ 95, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.9 — पृष्ठ 96, ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 6.10 — पृष्ठ 98, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Indus_Valley_Civilization_carnelian_beads_excavated_in_Susa.jpg
- चित्र 6.11 और 6.12 — पृष्ठ 98, डॉ. डेनिस फ्रेनेज के सौजन्य से
- चित्र 6.13.1 — पृष्ठ 99, राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से, http://courtesy National Museum https://museumsofindia.gov.in/repository/record/nat_del-180-9-8919
- चित्र 6.13.2 और 6.13.3 — पृष्ठ 99, ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 6.14.1, 6.14.2, 6.14.3, 6.14.4, 6.14.5 — पृष्ठ 100, डॉ. आर.एस. बिष्ट और ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 6.14.6 — पृष्ठ 100, प्रोफेसर वी.एन. प्रभाकर और ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 6.15.1 — पृष्ठ 101, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Priest-King_%28sculpture%29#/media/File:Mohenjo-daro_Priesterk%C3%B6nig.jpeg, On display at National Museum, Karachi, Pakistan
- चित्र 6.15.2, 6.15.4, 6.15.5 — पृष्ठ 101, राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 6.15.3, 6.15.6 — पृष्ठ 101, ए.एस.आई. के सौजन्य से
- एक ऋषि (हम्पी, कर्नाटक) — पृष्ठ 105, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- बुद्ध (भूटान) — पृष्ठ 105, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से

- महावीर (बिहार) — पृष्ठ 105, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Bhagwan_Mahaveer.jpg फाइल : Bhagwan_Mahaveer.jpg
- बुद्ध की शिक्षाओं को दर्शाता एक पत्थर का भित्ति चित्र — पृष्ठ 114, राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से https://Delhi._2004.jpg
- महावीर की एक पारंपरिक पेंटिंग — पृष्ठ 115, https://garystockbridge617.getarchive.net/media/mahvra-ecb11c
- मध्य प्रदेश के भरहुत में एक पत्थर का पैनल जिसमें वानर-राज की कहानी को दर्शाया गया है — पृष्ठ 117, https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mahakapi_Jataka_in_Bharhut.jpg
- नई दिल्ली के एक जैन मंदिर से चित्र — पृष्ठ 118, स्रोत https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/db/Ahinsa.jpg
- एलोरा (महाराष्ट्र) में चट्टान को काटकर बनाई गई गुफाएँ — पृष्ठ 119, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- तमिलनाडु के नीलगिरि की टोडा जनजाति — पृष्ठ 121, डॉ. तरुण छाबड़ा के सौजन्य से
- जाली की छवि — पृष्ठ 125, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 8.2 — पृष्ठ 128, ए.एस.आई. के सौजन्य से
- चित्र 8.4 — पृष्ठ 130 और 131, श्री के. मरुथाचलम के सौजन्य से
- चित्र 8.6 — पृष्ठ 134, राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 8.7 — पृष्ठ 135, डॉ. एम. अमृतलिंगम और सी.पी.आर. पर्यावरण शिक्षा केंद्र, चेन्नई के सौजन्य से
- हलमा परंपरा (सभी चित्र) — पृष्ठ 145, शिवगंगा, झाबुआ, मध्य प्रदेश के सौजन्य से
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम — पृष्ठ 158, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/A._P._J._Abdul_Kalam
- उदाहरणात्मक सरपंच — ज्ञानेश्वर कांबले — पृष्ठ 166, इंडियन एक्सप्रेस के सौजन्य से
- उदाहरणात्मक सरपंच — वंदना बहादुर मैदा — पृष्ठ 166, हिंदुस्तान टाइम्स के सौजन्य से
- उदाहरणात्मक सरपंच — पोपटराव बागुजी पवार — पृष्ठ 166, पोपटराव बागुजी पवार के सौजन्य से

- चित्र 12.1 — पृष्ठ 174 के सौजन्य से, https://www.flickr.com/photos/anappaiah/3033906173 (CC BY-SA 2.0)
- चित्र 12.3 — पृष्ठ 177, https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Ripon_Building_panorama.jpg
- चित्र 12.4 सी.आर.एम. — अग्निशमन सेवाएँ — पृष्ठ 178, https://commons.wikimedia.org/wiki/File:MFDFiretruckold.JPG
- अध्याय 14, कोलाज (जल आपूर्ति) — पृष्ठ 197, https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Brass_water_tap.jpg
- पृष्ठ 203 से 205 तक के सभी चित्र अमूल के सौजन्य से

2. Dreamstime.com से रॉयल्टी मुक्त स्टॉक

- प्रारंभिक पृष्ठ xx
- परिचय, पृष्ठ 2 और 3
- अध्याय 1, परिचयात्मक छवि — पृष्ठ 7
- अध्याय 2, महासागरीय जीवन पर कोलाज के भीतर की सभी तस्वीरें — पृष्ठ 30
- अध्याय 3, चित्र 3.2 में सभी छवियाँ — पृष्ठ 44; चित्र 3.4 — पृष्ठ 47; चित्र 3.6 — पृष्ठ 50
- अध्याय 3, चित्र 3.3 — पृष्ठ 45, चित्र 3.5 — पृष्ठ 48, चित्र 3.7 — पृष्ठ 52, चित्र 3.10 — पृष्ठ 56
- अध्याय 4, चित्र 4.1 में समय रेखा के अंदर छोटी छवियाँ — पृष्ठ 62–63
- अध्याय 5, परिचयात्मक छवि — पृष्ठ 75
- अध्याय 6, समय रेखा के अंदर छोटी छवियाँ, चित्र 6.2 — पृष्ठ 87, चित्र 6.6 — पृष्ठ 93
- अध्याय 7, बुद्ध की छवि — पृष्ठ 113, वरली पेंटिंग — पृष्ठ 120, वट वृक्ष — पृष्ठ 123
- अध्याय 8, चित्र 8.3 — पृष्ठ 129
- अध्याय 12, चित्र 12.4 (जल शुल्क, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, व्यवसाय, होर्डिंग्स, व्यापार लाइसेंस, जल टैंकर, मलबा निकासी, पेड़ों की काटाई और पेड़ों का परिवहन और सार्वजनिक शौचालय) — पृष्ठ 178

- अध्याय 13, स्वर्ण मंदिर में भक्तों को प्रसाद और लंगर वितरित करना — पृष्ठ 192
- अध्याय 14, कोलाज (कृषि, निर्माण, स्वास्थ्य सेवा, खनन, मत्स्य पालन, सौर ऊर्जा, बिजली उत्पादन) — पृष्ठ 197; खुदाई, मछली पालन, वानिकी, पशुपालन — पृष्ठ 198, पोस्टर छवि — पृष्ठ 206

3. Freepik.com से रॉयल्टी मुक्त स्टॉक

- अध्याय 12, चित्र 12.4 (विवाह प्रमाण पत्र, विभिन्न लाइसेंस, शिकायतें, जल टैंकर, आॅडिटोरियम, चल शौचालय, एंबुलेंस) — पृष्ठ 178
- अध्याय 14, कोलाज — व्यापार और रसद, संचार, परिवहन — पृष्ठ 197

4. ए.आई. द्वारा उत्पन्न छवियाँ

- अध्याय 3, परिचयात्मक पृष्ठ — पृष्ठ 41
- अध्याय 4, चित्र 4.2.1, 4.2.2, 4.2.3, 4.2.4 — पृष्ठ 61
- अध्याय 10, चित्र 10.1 (दोनों छवियाँ) — पृष्ठ 151
- अध्याय 11, परिचयात्मक छवि — पृष्ठ 163
- अध्याय 12, सभी छवियाँ — पृष्ठ 163
- अध्याय 12, चित्र 12.4 (संपत्ति कर) — पृष्ठ 178
- अध्याय 13, सभी चित्र — पृष्ठ 186–187; स्वच्छ भारत, वन महोत्सव — पृष्ठ 192
- अध्याय 14, परिचयात्मक चित्र — पृष्ठ 195, कोलाज (विनिर्माण, कुक्कुट पालन, बैंकिंग, वानिकी) — पृष्ठ 197, ग्रीनहाउस खेती — पृष्ठ 198, मोटर वाहन कारखाना, वस्त्र कारखाना — पृष्ठ 199, औषधि कारखाना, फर्नीचर निर्माण इकाई — पृष्ठ 199, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, रेस्तरां में सेवाएँ — पृष्ठ 201, हवाई अड्डों पर सेवाएँ, खुदरा भंडार — पृष्ठ 201

टिप्पणी *— (1) ए.एस.आई. — आर्किओलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण)*

(2) सभी इंटरनेट लिंक जून 2024 में एक्सेस किए गए हैं।

छत्तीसगढ़ के मानचित्र में अपने जिले को पहचानिए, अपने जिले के पड़ोसी जिलों के नाम लिखिए? छत्तीसगढ़ में कितने जिले हैं, गणना कीजिए?

आपातकालीन वाहन
Emergency Vehicles

आगजनी की घटना होने पर तत्काल आग बुझाने हेतु उपयोग में लाए जाने वाले वाहन को फायर ब्रिगेड वाहन कहते हैं।

Fire Brigade

Ambulance

घायल एवं बीमार व्यक्तियों को हॉस्पिटल तक सुरक्षित पहुँचाने वाले वाहन को एम्बूलेंस कहते हैं।

विदेशी ताकतों से देश की रक्षा हेतु सीमा में तैनात जवानों तक राशन, हथियार एवं जवानों को परिवहन करने वाले वाहन को आर्मी वाहन कहते हैं।

Army Van

Police Van

जिस प्रकार सेना विदेशी शक्तियों/आतंकवादियों से हमारी रक्षा करती है, उसी प्रकार पुलिस हमारे देश के भीतर के अपराधियों से हमारी सुरक्षा करती है।